

मनोवैज्ञानिक तकनीक चार प्रभावी मनोवैज्ञानिक तकनीकें!



Kathleen Peterson

मनोवै

मनोवै

मनोचिकित्सा, अर्थात् आत्मा का उपचार और आत्मा का उपचार, अभी भी समाज के व्यापक वर्गों में मनोविश्लेषण के साथ पहचाना जाता है।

"मनोविश्लेषण" शब्द इतनी सार्वजनिक संपत्ति बन गया है कि जो कोई भी इसका उपयोग करता है वह समझता है कि इसका क्या अर्थ है। लेकिन वास्तव में इस शब्द का क्या अर्थ है, शौकिया नहीं जानता। यह निरूपित करता है - अपने निर्माता के आदेश पर - फ्रायड द्वारा आविष्कार की गई विधियों को कुछ दमित मानसिक प्रक्रियाओं के लिए मानसिक लक्षण परिसरों को कम करने के लिए। और चूंकि यह प्रक्रिया उचित समझ के बिना असंभव है, "मनोविश्लेषण" की अवधारणा में कुछ सैद्धांतिक आधार भी शामिल हैं, अर्थात् कामुकता का सिद्धांत, जिस पर लेखक ने स्पष्ट रूप से जोर दिया। हालांकि, इसके बावजूद, शौकिया "मनोविश्लेषण" की अवधारणा का उपयोग केवल वैज्ञानिक-पद्धतिगत तरीके से आत्मा तक पहुंचने के सभी आधुनिक प्रयासों के लिए करता है। इस प्रकार, एडलर के स्कूल को मनोविश्लेषण में भी शामिल किया गया है, इस तथ्य के बावजूद कि एडलर का दृष्टिकोण और फ्रायड की पद्धति एक दूसरे के असंगत रूप से विरोधी प्रतीत होते हैं। इसलिए, एडलर खुद अपने मनोविज्ञान को "मनोविश्लेषण" नहीं बल्कि "व्यक्तिगत मनोविज्ञान" कहते हैं, जबकि मैं "विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान" अभिव्यक्ति को पसंद करता हूं, जिसका अर्थ है एक नई अवधारणा जिसमें "मनोविश्लेषण", "व्यक्तिगत मनोविज्ञान" और अन्य दिशाएं शामिल हैं। जटिल मनोविज्ञान के क्षेत्र में।

चूंकि केवल एक मानव आत्मा है, तो, शायद, एक ही मनोविज्ञान भी है, यह एक शौकिया लगता है। इसलिए, वह दृष्टिकोण में मतभेदों को या तो व्यक्तिपरक आविष्कारों के रूप में लेता है या छोटे लोगों द्वारा स्वयं सिंहासन पर चढ़ने के प्रसिद्ध प्रयासों के रूप में लेता है। मैं आसानी से "मनोविज्ञान" की सूची जारी रख सकता हूं यदि मैंने अन्य दिशाओं का भी उल्लेख किया है जो "विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान" की अवधारणा में शामिल नहीं हैं। वास्तव में, कई अलग-अलग तरीके, दृष्टिकोण, विचार और विश्वास हैं जो एक-दूसरे से लड़ते हैं, मुख्यतः क्योंकि वे एक-दूसरे को नहीं समझते हैं, और इसलिए एक-दूसरे के साथ तालमेल नहीं रखना चाहते हैं। हमारे समय की मनोवैज्ञानिक राय की बहुमुखी प्रतिभा और विविधता अद्भुत है, लेकिन शौकीनों के लिए यह असीम और भ्रमित करने वाली है।

यदि पैथोलॉजी की एक पाठ्यपुस्तक में पाया जाता है कि एक ही बीमारी के लिए सबसे विविध प्रकृति के कई उपचार पेश किए जाते हैं, तो यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि उनमें से कोई भी विशेष रूप से प्रभावी नहीं है। और अगर कई अलग-अलग रास्ते भी बताए जाएं जो हमें आत्मा की ओर ले जाएं, तो यह सुरक्षित रूप से माना जा सकता है कि उनमें से कोई भी लक्ष्य तक नहीं ले जाएगा, कम से कम वह पथ जिसकी इतनी कट्टर प्रशंसा की जाती है। वास्तव में, आधुनिक मनोविज्ञान का एक बहुत कुछ समस्या की

कठिनाई की अभिव्यक्ति है। नीत्शे की अभिव्यक्ति का उपयोग करने के लिए आत्मा और आत्मा के दृष्टिकोण को धीरे-धीरे "सींग के साथ समस्या" के रूप में एक कठिन कार्य के रूप में प्रकट किया जाता है। इसलिए, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि एक दुरूह पहेली तक पहुंचने के लिए, दूसरी तरफ से बार-बार प्रयास किए जा रहे हैं। यह अनिवार्य रूप से विभिन्न दृष्टिकोणों और मतों में अंतर्विरोधों से भरा हुआ है।

आइए हम अपने साथ स्वीकार करें कि यदि हम "मनोविश्लेषण" की बात करते हैं, तो हम खुद को इसकी संकीर्ण परिभाषा तक सीमित नहीं रखेंगे, बल्कि सामान्य रूप से उन सभी प्रयासों की सफलताओं और विफलताओं के बारे में बात करेंगे जो आज तक समस्या को हल करने के लिए किए गए हैं। आत्मा की। और जिसे हम विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान की अवधारणा में अपनाते हैं।

हालाँकि, मानव आत्मा आज अचानक ज्ञान के लिए इतना दिलचस्प तथ्य क्यों बन गई है? आखिरकार, हजारों सालों से इसने इतनी दिलचस्पी नहीं जगाई है। मैं केवल इस प्रतीत होने वाले अपरिवर्तनीय प्रश्न को पूछना चाहता हूँ, इसका उत्तर देने के लिए नहीं। जाहिर है, आज के मनोवैज्ञानिक हित के अंतिम लक्ष्य इस मुद्दे से जुड़े हुए हैं।

"मनोविश्लेषण" की शौकिया अवधारणा में आज जो कुछ भी शामिल है, उसका स्रोत चिकित्सा पद्धति में है, इसलिए यह सब चिकित्सा मनोविज्ञान से ज्यादा कुछ नहीं है। डॉक्टर के परामर्श कक्ष ने इस मनोविज्ञान पर एक छाप छोड़ी है जिसे कम करके नहीं आंका जा सकता है। यह न केवल शब्दावली को प्रभावित करता है, बल्कि सैद्धांतिक विचारों के गठन को भी प्रभावित करता है। सबसे पहले, हर जगह हम डॉक्टर की प्राकृतिक-वैज्ञानिक जैविक मान्यताओं से रूबरू होते हैं। इस वजह से, मुख्य रूप से, आधुनिक मनोविज्ञान से अकादमिक मानवतावादियों का अलगाव पैदा हुआ है, क्योंकि उत्तरार्द्ध एक तर्कहीन प्रकृति से सब कुछ समझाता है, जबकि पूर्व आत्मा पर आधारित है। प्रकृति और आत्मा के बीच यह पहले से ही दुर्जेय दूरी बायोमैडिकल शब्दावली द्वारा और बढ़ा दी गई है, जो अक्सर वास्तव में पेशेवर प्रतीत होती है, लेकिन अक्सर इसे समझना बहुत मुश्किल होता है।

हालाँकि मुझे लगता है कि इस क्षेत्र में अवधारणाओं के भ्रम के बारे में यहाँ की गई सामान्य टिप्पणियाँ अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं हैं, फिर भी मैं अब अपने स्वयं के कार्यों की ओर मुड़ना चाहूंगा, अर्थात् विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान की उपलब्धियों का पता लगाना।

हमारे मनोविज्ञान में प्रवृत्तियों की अत्यधिक विविधता को देखते हुए, केवल कठिनाई के साथ ही एक सामान्य दृष्टिकोण निर्धारित किया जा सकता है। इसलिए, यदि मैं इस क्षेत्र में दिशाओं और काम को वर्गों में विभाजित करने की कोशिश करता हूँ, या इसे बेहतर तरीके से चरणों में रखता हूँ, तो मैं इसे समझने योग्य आरक्षण के साथ करता हूँ कि हम एक प्रारंभिक प्रयास के बारे में बात कर रहे हैं, जिसकी शायद निंदा की जा सकती है

उसी मनमानी के लिए और ग्लोब को कवर करने वाले समन्वय ग्रिड के लिए। किसी भी मामले में, मैं चार चरणों, अर्थात् मान्यता, स्पष्टीकरण, शिक्षा और परिवर्तन के दृष्टिकोण से समग्र परिणाम पर विचार करने के लिए उद्यम करना चाहूंगा। आगे, मैं इन, शायद विदेशी अवधारणाओं पर चर्चा करने का प्रयास करूंगा।

आत्मा के किसी भी विश्लेषणात्मक उपचार का अग्रदूत स्वीकारोक्ति है। हालाँकि, चूंकि इस तरह की स्वीकारोक्ति कार्य-कारण से नहीं, बल्कि तर्कहीन, मानसिक संबंधों द्वारा निर्धारित की जाती है, इसलिए बाहरी व्यक्ति के लिए मनोविश्लेषण की नींव को स्वीकारोक्ति की धार्मिक संस्था के साथ तुरंत सहसंबंधित करना मुश्किल है।

जैसे ही मानव आत्मा पाप के विचार का आविष्कार करने में सफल हुई, मानसिक रूप से छिपा हुआ, विश्लेषणात्मक भाषा में, दमित का उदय हुआ। छिपा एक रहस्य है। रहस्य का आधिपत्य एक मानसिक विष की तरह कार्य करता है जो रहस्य के वाहक को समाज से दूर कर देता है। छोटी खुराक में यह जहर एक अमूल्य उपाय हो सकता है, यहां तक कि मनुष्य के व्यक्तिगत भेदभाव के लिए एक आवश्यक प्रारंभिक स्थिति भी हो सकती है, और इतना आवश्यक है कि पहले से ही विकास के प्रारंभिक चरण में एक व्यक्ति को रहस्यों का आविष्कार करने की आवश्यकता महसूस होती है, उनके कब्जे के लिए धन्यवाद, अपनी आत्मा को नश्वर खतरे से बचाने के लिए। इसे समुदाय के साथ अचेतन में फैलाना। भेदभाव की यह वृत्ति, जैसा कि सर्वविदित है, व्यापक प्राचीन पवित्रताओं द्वारा उनके गुप्त रहस्यों के साथ परोसा जाता है। यहां तक कि प्राचीन चर्च में ईसाई भोज को रहस्यमय माना जाता था और केवल संकेत में, रूपक भाषा में इसका उल्लेख किया गया था।

एक रहस्य कई कृत्यों के साथ साझा किया जाता है जैसे कि एक व्यक्तिगत रहस्य विनाशकारी रूप से कार्य करता है। यह अपराध बोध की तरह है जो अपने दुर्भाग्यपूर्ण मालिक को अन्य लोगों के साथ समुदाय से अलग करता है। यदि उसी समय दूसरों से छिपा हुआ महसूस किया जाता है, तो नुकसान निस्संदेह विपरीत मामले की तुलना में कम होता है, अर्थात् जब छिपे हुए को दबा दिया जाता है। इस बाद के मामले में, छिपी हुई सामग्री को अब होशपूर्वक गुप्त नहीं रखा जाता है, बल्कि स्वयं से भी छिपाया जाता है; यह चेतना से एक स्वतंत्र परिसर के रूप में अलग हो जाता है और अचेतन आत्मा के क्षेत्र में एक विशेष प्रकार के अस्तित्व की ओर जाता है, जो सचेत हस्तक्षेप और सुधार के लिए दुर्गम है। जटिल रूप, इसलिए बोलने के लिए, एक छोटा पृथक मानस, जो अनुभव से पता चला है, अपने आप में कल्पना की एक अजीब गतिविधि विकसित करता है। दूसरी ओर, फंतासी, आत्मा की एक स्वतंत्र गतिविधि है, जो जहां कहीं भी बाधित चेतना की क्रिया कमजोर होती है या पूरी तरह से समाप्त हो जाती है, उदाहरण के लिए, एक सपने में। स्वप्न में प्रेत एशिया स्वप्न के रूप में प्रकट होता है। लेकिन जागने के दौरान भी हम चेतना की

दहलीज से नीचे सपने देख सकते हैं, खासकर दमित या अन्य अचेतन परिसरों के कारण। यह ध्यान दिया जाना चाहिए, अन्य बातों के अलावा, अचेतन सामग्री में केवल पहले के सचेत परिसर शामिल नहीं होते हैं जो बाद में दमन के परिणामस्वरूप बेहोश हो गए। अचेतन की भी अपनी विशेष सामग्री होती है, जो धीरे-धीरे चेतना तक पहुंचने के लिए अज्ञात गहराइयों से आती है। किसी भी तरह से अचेतन मानस को केवल उन सामग्रियों के भंडार के रूप में नहीं माना जाना चाहिए जिन्हें चेतना द्वारा स्वीकार नहीं किया जाता है।

सभी अचेतन सामग्री जो या तो नीचे से चेतना की दहलीज तक पहुंच गई है, या उससे थोड़ा नीचे ही डूब गई है, चेतना को प्रभावित करने की आदत है। लेकिन चूंकि इन प्रभावों की सामग्री वास्तव में वह नहीं है जो ऐसा लगता है, वे आवश्यक रूप से मध्यस्थता कर रहे हैं। चेतना के तथाकथित गलत कार्यों में से अधिकांश खुद को विकारों में प्रकट करते हैं जिन्हें पारंपरिक रूप से *गैर-न्यूरोटिक लक्षण कहा जाता है*, जो कि चिकित्सा के दृष्टिकोण से, आमतौर पर प्रकृति में मनोवैज्ञानिक होते हैं। (अपवाद ऐसे सदमे प्रभाव हैं, उदाहरण के लिए, विस्फोट ग्रेनेड, आदि।) न्यूरोसिस के सबसे हल्के रूप चेतना की गलत क्रियाएं हैं, उदाहरण के लिए, जीभ की फिसलन, नामों और तिथियों का अप्रत्याशित रूप से गिरना, अप्रत्याशित अजीबता जिससे क्षति हुई या चोट, गलतफहमी और, इसलिए बोलने के लिए, स्मृति का मतिभ्रम (ऐसा लगता है कि यह कथित रूप से कहा या इस तरह से किया गया था), जो सुना या पढ़ा गया था, उसके बारे में गलत राय।

इन सभी मामलों में, सावधानीपूर्वक जांच के माध्यम से, कुछ सामग्री के अस्तित्व को साबित किया जा सकता है कि अप्रत्यक्ष और अनजाने में चेतना के काम में बाधा उत्पन्न हुई है।

सामान्य तौर पर, एक अचेतन रहस्य का नुकसान एक सचेत व्यक्ति की तुलना में अधिक होता है। मैं ऐसे कई रोगियों से मिला हूँ, जिन्होंने जीवन की कठिन परिस्थितियों के कारण, जिनमें कमजोर स्वभाव केवल कठिनाई से ही आत्महत्या करने के आवेग से खुद को रोक सकता है, वही प्रवृत्ति विकसित कर ली है। हालांकि, विवेक के लिए धन्यवाद, उन्होंने फिर भी इस आवेग को रोका, जिससे एक बेहोश आत्मघाती परिसर बना। अब से, आत्महत्या की अचेतन इच्छा ने ऐसे अनुभवों और घटनाओं को जन्म दिया, उदाहरण के लिए, चक्कर आना के अप्रत्याशित हमले, सड़क पार करते समय अनिर्णय, खांसी के मिश्रण के बजाय उदात्त का गलत उपयोग, कलाबाजी से अप्रत्याशित आनंद, और बहुत अधिक खतरनाक। यदि एक। ऐसे मामलों में, आत्महत्या की इच्छा को सचेत करना संभव था, तब सचेत समझ ने इस परिसर को समाप्त कर दिया, आत्महत्या की संभावना को महसूस किया और समाप्त कर दिया।

कोई भी व्यक्तिगत रहस्य अपराध और पाप की तरह कार्य करता है, भले ही वह आम तौर पर स्वीकृत नैतिकता के दृष्टिकोण से ऐसा हो या न हो।

दूसरा रूप संयम है। आमतौर पर जो पीछे रखा जाता है वह प्रभाव होता है। यहां भी सबसे पहले इस बात पर जोर दिया जाना चाहिए कि संयम एक उपयोगी और उपचारात्मक गुण है। हम आत्म-अनुशासन को पहले से ही आदिम लोगों के बीच सबसे शुरुआती कलाओं में से एक मानते हैं, जहां यह दीक्षा के अनुष्ठान का हिस्सा है, मुख्य रूप से दर्द और भय और एक संदेहपूर्ण संयम के रूप में। लेकिन यहाँ संयम गुप्त संघ के भीतर दूसरों के साथ साझा किए गए कार्य के रूप में प्रकट होता है। लेकिन अगर संयम व्यक्तिगत है - किसी धार्मिक विश्वास से जुड़ा नहीं है - तो यह व्यक्तिगत गोपनीयता की तरह हानिकारक हो सकता है। अत्यधिक दयालुता खराब मूड और चिड़चिड़ापन का एक स्रोत है। एक संयमित प्रभाव भी कुछ ऐसा है जो छिपा हुआ है, जिसे स्वयं से भी छुपाया जा सकता है, एक कला जो मुख्य रूप से पुरुषों को अलग करती है, जबकि महिलाओं में, कुछ अपवादों को छोड़कर, भावनाओं को दिखाने में शर्मिली नहीं होने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। एक संयमित प्रभाव एक अचेतन रहस्य के रूप में अलग-थलग और अव्यवस्थित है। प्रकृति, जैसे भी थी, हम पर अपराध करती है, जब एक रहस्य के लिए धन्यवाद, हम मानवता से ऊपर उठते हैं। अगर हम अपनी भावनाओं को दूसरे लोगों से छुपाते हैं तो भी वह हम पर गुस्सा हो जाती है। इस अर्थ में प्रकृति भयावहता में निहित है vacui (खालीपन का डर (अव्या।)। - अनुवाद), और इसलिए संयमित प्रभावों पर आधारित एक उदासीन सद्भाव से अधिक असहिष्णु कुछ भी नहीं है। ऐसा होता है कि दमित भावनाएं रहस्य के समान ही होती हैं। अधिक बार, हालांकि, यहां उल्लेख के लायक कोई रहस्य नहीं है, लेकिन केवल अनजाने में दबाए गए प्रभाव जो उनके मूल को पूरी तरह से सचेत स्थिति के लिए देते हैं।

रहस्य या प्रभाव की प्रबलता संभवतः विभिन्न प्रकार के न्यूरोसिस का कारण बनती है। प्रभाव से भरपूर हिस्टीरिया मुख्य रूप से रहस्य पर आधारित होता है, जबकि अडिग मनोरोगी प्रभाव के पाचन में गड़बड़ी से पीड़ित होता है।

गोपनीयता और संयम - इन हानिकारक चीजों के लिए प्रकृति अंततः बीमारी के साथ प्रतिक्रिया करती है। बेशक, वे केवल हानिकारक हैं यदि वे विशुद्ध रूप से व्यक्तिगत हैं। लेकिन अगर उन्हें समाज में अन्य लोगों के साथ साझा किया जाता है, तो प्रकृति संतुष्ट होती है, और फिर वे उपयोगी गुण भी हो सकते हैं। एक व्यक्ति में अंधेरा, अपूर्ण, मूर्ख, दोषी आत्मरक्षा के लिए छिपे हुए हैं। अपनी हीनता को छिपाना जीवन के समान ही मूल पाप है, जो इस हीनता के द्वारा ही विशेष रूप से सिद्ध होता है। कि हर कोई जो कभी भी, कहीं भी, अपने आत्म-संयम पर गर्व करना बंद नहीं करता है और अपने मानव स्वभाव को नहीं पहचानता है, त्रुटियों में समृद्ध है, उसे मूर्त रूप से दंडित किया जाता है - यह मानव विवेक की एक तरह की अभिव्यक्ति है। इसके बिना, एक दुर्गम दीवार उसे अन्य लोगों के बीच एक आदमी होने की जीवनदायिनी भावना से अलग करती है।

यह सच्चे स्वीकारोक्ति के असाधारण महत्व की व्याख्या करता है , एक ऐसा सत्य जो शायद प्राचीन काल के सभी दीक्षाओं और गुप्त पंथों के लिए जाना जाता था, जो-प्राचीन पवित्र कहावत को साबित करता है: "जो आपके पास है उससे छुटकारा पाएं, और आपको स्वीकार किया जाएगा।"

अब हम इस कहावत को मनोचिकित्सा संबंधी समस्याओं के पहले चरण का आदर्श वाक्य बना सकते हैं। वास्तव में, संक्षेप में, मनोविश्लेषण की उत्पत्ति वैज्ञानिक रूप से फिर से खोजे गए पुराने सत्य से ज्यादा कुछ नहीं है; वही नाम जो पहली विधि को दिया गया था, अर्थात् रेचन = शुद्धि, प्राचीन दीक्षाओं की एक प्रसिद्ध अवधारणा है। रेचन की मूल विधि, संक्षेप में, इस तथ्य में शामिल है कि रोगी, कृत्रिम निद्रावस्था के सामान के साथ या उसके बिना, अपनी चेतना की पृष्ठभूमि में चला जाता है, अर्थात्, इस स्थिति में कि योग की पूर्वी प्रणाली में ध्यान की स्थिति मानी जाती है। , या चिंतन। लेकिन योग के विपरीत, चिंतन का उद्देश्य विचारों के गोधूलि निशान का छिटपुट रूप है, चाहे छवियां हों या भावनाएं, जो अचेतन की अदृश्य सामग्री से अलग हो जाती हैं ताकि कम से कम एक छाया के रूप में अंदर की ओर मुड़ी हुई दिखाई दे। इस तरह जो दबा हुआ और खो गया वह फिर से वापस आ जाता है। यह पहले से ही एक उपलब्धि है - भले ही कभी-कभी अप्रिय - क्योंकि अब हीन और निंदनीय भी मेरा है, मुझे सार और शरीर देता है; यह मेरी छाया है। क्या मैं छाया डाले बिना भी अस्तित्व में रह सकता हूँ? अँधेरा भी मेरी पूर्णता का है, और जिस क्षण मुझे अपनी छाया का स्वयं के हिस्से के रूप में पता चलता है, मुझे फिर से याद आता है कि मैं अन्य सभी की तरह एक इंसान हूँ। किसी भी मामले में, इसकी मदद से किसी की अपनी पूर्णता की प्रारंभिक रूप से मौन पुनर्खोज, पूर्व स्थिति जिसमें से न्यूरोसिस उत्पन्न हुआ, यानी विभाजित परिसर, फिर से बनाया गया है। मौन के साथ, अलगाव जारी रहता है, और केवल आंशिक सुधार हो सकता है। हालाँकि, मान्यता के माध्यम से, मैं नैतिक निर्वासन के बोझ से मुक्त होकर, अपनी मानवता को पुनः प्राप्त करता हूँ। रेचन की विधि में पूर्ण मान्यता, अर्थात् मन के साथ पदार्थ के सार का बौद्धिक कथन ही नहीं, बल्कि संयमित प्रभावों का संकल्प, हृदय से मामले की स्थिति का कथन भी शामिल है।

भोली आत्मा पर इस तरह के एक स्वीकारोक्ति का प्रभाव बहुत अच्छा है, उपचार की सफलता आश्चर्यजनक रूप से अक्सर होती है। मैं इस स्तर पर हमारे मनोविज्ञान की मुख्य सफलता देखना चाहता हूँ , न केवल इस तथ्य में कि कुछ बीमारियां ठीक हो जाती हैं, बल्कि मान्यता पर व्यवस्थित जोर देने में अधिक हद तक। यह हम सभी पर लागू होता है। सभी रहस्यों से एक-दूसरे से अलग हो गए हैं, और विचारों और भ्रम के भ्रामक पुल मान्यता के एक ठोस पुल के बजाय लोगों के बीच रसातल में ले जाते हैं।

मैं इस तरह दुनिया में हर किसी के लिए कबूलनामे की मांग को सामने नहीं रखना

चाहता। यह कल्पना करना भी असंभव है कि पापों की सार्वभौमिक और व्यापक स्वीकारोक्ति के लिए यह कितना अशिष्ट होगा। मनोविज्ञान केवल यही कहता है कि यहाँ पहले क्रम का एक आश्चर्यजनक तथ्य निहित है। इस तथ्य को सीधे उपचार से नहीं लिया जा सकता है, क्योंकि तब यह फिर से अपने आप में एक समस्या होगी, जिसमें पूरी तरह से अलग तरीके से नुकीले सींग होंगे, क्योंकि अगला कदम, अर्थात् स्पष्टीकरण, हमें स्पष्ट कर देगा।

जाहिर है, नए मनोविज्ञान को सार्वभौमिक रूप से मान्यता दी जाएगी यदि रेचन एक सर्व-उपचार उपाय साबित हुआ। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, रोगियों को अचेतन के इतने करीब लाना हमेशा संभव नहीं होता है कि वे छाया का अनुभव कर सकें। बल्कि, इसके विपरीत, कई - और ये विशेष रूप से विकसित चेतना के साथ जटिल प्रकृति हैं - चेतना से इस कदर चिपके हुए हैं कि वे खुद को इससे दूर नहीं कर सकते। वे चेतना को दबाने के किसी भी प्रयास के लिए एक मजबूत प्रतिरोध विकसित करते हैं, वे डॉक्टर के साथ सचेत स्तर पर बात करना चाहते हैं और तर्कसंगत रूप से राज्य करते हैं और उनकी कठिनाइयों पर चर्चा करते हैं। उनके लिए चेतन को पहचानना ही काफी है, इसके लिए उन्हें अचेतन की ओर नहीं मुड़ना चाहिए। ऐसे रोगियों को अचेतन तक पहुँचने के लिए एक विशेष तकनीक की आवश्यकता होती है,

यह तथ्य कैथर्टिक विधि के अनुप्रयोग को तुरंत सीमित कर देता है। एक और सीमा बाद में उत्पन्न होती है, जो हमें दूसरे चरण की समस्याओं से परिचित कराती है - स्पष्टीकरण। आइए मान लें कि एक विशेष मामले में एक कैथर्टिक मान्यता हुई, न्यूरोसिस गायब हो गया, यानी लक्षण अदृश्य हो गए। रोगी स्वस्थ प्रतीत होता है और इसलिए-उपचार बंद कर सकता है। लेकिन वह - या विशेष रूप से वह - नहीं छोड़ सकता। स्वीकारोक्ति का तथ्य रोगी को डॉक्टर से जोड़ता प्रतीत होता था। यदि यह प्रतीत होता है कि अर्थहीन संबंध जबरन टूट जाता है, तो रोग का एक पुनरावर्तन होता है। यह महत्वपूर्ण और आश्चर्य की बात है कि कुछ मामलों में डॉक्टर के साथ संबंध नहीं हो सकता है; रोगी बाहरी रूप से स्वस्थ हो जाता है, लेकिन अब से वह अपनी आत्मा की पृष्ठभूमि से इतना मोहित हो जाता है कि वह स्वतंत्र रूप से रेचन की मदद से जीवन के अनुकूलन की लागतों का सामना करना जारी रखता है। वह अनजाने में खुद से जुड़ा है, लेकिन डॉक्टर से नहीं। जाहिर है, ऐसे रोगियों के साथ भी ऐसा ही होता है कि एक बार थेसियस और उनके साथी पेरीफॉय के साथ हुआ था, जो अंडरवर्ल्ड के नग्न देवताओं को उठाने के लिए पाताल लोक के राज्य में उतरे, और वंश से थक गए, वे बैठ गए आराम करने के लिए और फिर उठ नहीं सकते थे क्योंकि वे दृढ़ता से चट्टान से जड़े हुए थे।

कि शुरुआत में उल्लेखित मामलों में होता है, यानी ऐसे मामले जो रेचन के अच्छे इरादों के लिए दुर्गम हो जाते हैं। यद्यपि रोगियों की दो श्रेणियां पूरी तरह से भिन्न प्रतीत

होती हैं, दोनों को स्पष्टीकरण की आवश्यकता है, जैसा कि फ्रायड ने सही ढंग से पहचाना था। यह तथ्य दूसरे प्रकार के मामलों में काफी स्पष्ट हो जाता है, खासकर अगर, एक सफल रेचन के बाद, रोगी डॉक्टर से जुड़ा हो। एक समान संबंध पहले से ही कृत्रिम निद्रावस्था के उपचार के अवांछनीय परिणाम के रूप में देखा गया था, लेकिन इस संबंध के अंतर्निहित तंत्र अस्पष्ट रहे। अब यह ज्ञात है कि जिस संबंध में हम रुचि रखते हैं वह अनिवार्य रूप से पिता और बच्चे के बीच के संबंध के समान है। इस मामले में, रोगी खुद को एक प्रकार की बचकानी निर्भरता में पाता है, जिससे वह तर्क की मदद से अपना बचाव नहीं कर पाता है। इस तरह का निर्धारण बेहद मजबूत और इतना मजबूत हो सकता है कि, शायद, यहां काफी असामान्य उद्देश्यों को ग्रहण किया जा सकता है। इस तरह का जुड़ाव एक ऐसी प्रक्रिया है जो चेतना के बाहर होती है। इसलिए, रोगी के ज्ञान से, उसके बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं है। सवाल उठता है: इस नई समस्या से कैसे संपर्क करें? जाहिर है, यह एक विक्षिप्त तस्वीर है, एक नया लक्षण जो केवल उपचार द्वारा उकसाया गया था। निस्संदेह बाहरी संकेत यह है कि पिता की भावनात्मक रूप से तीव्र स्मृति डॉक्टर को स्थानांतरित कर दी गई थी, जिसके कारण डॉक्टर नकारता है volens (विली-निली, इसे पसंद करें या नहीं [Lat]। - Transl) एक पिता लगता है और इस तरह , एक निश्चित सीमा तक, रोगी को एक बच्चे में बदल देता है। निःसंदेह रोगी का बचपना अभी ही नहीं पैदा हुआ था, बल्कि हमेशा से था, लेकिन उससे पहले उसका दमन किया जा चुका था। अब वह सतह पर उठती है और बाल-पारिवारिक स्थिति को फिर से बनाने की कोशिश करती है, क्योंकि लंबे समय से खोए हुए पिता को फिर से मिल गया है। फ्रायड ने इस लक्षण संक्रमण को ठीक ही कहा है । तथ्य यह है कि मदद के लिए तैयार डॉक्टर पर रोगी की कुछ निर्भरता है, आखिरकार, एक पूरी तरह से सामान्य और मानवीय रूप से समझने योग्य घटना है। यहाँ जो असामान्य और अप्रत्याशित है , वह केवल उसकी असाधारण-लचीलापन और सचेत सुधार की दुर्गमता है।

फ्रायड की मुख्य उपलब्धियों में से एक यह है कि उन्होंने इस संबंध की प्रकृति को कम से कम इसके जैविक पहलू में समझाया, और इस तरह मनोवैज्ञानिक ज्ञान के विकास में योगदान दिया। आज, यह निर्णायक रूप से सिद्ध हो गया है कि ऐसा संबंध अचेतन कल्पनाओं के अस्तित्व के कारण होता है। ये कल्पनाएँ मुख्यतः, इसलिए बोलने के लिए, एक अनाचारी चरित्र की हैं। यह इस तथ्य को पूरी तरह से स्पष्ट करता है कि कल्पनाएं बेहोश रहती हैं, यहां तक कि सबसे ईमानदार स्वीकारोक्ति से उन कल्पनाओं को व्यक्त करने की उम्मीद नहीं की जा सकती है जो शायद ही कभी सचेत थीं। और यद्यपि फ्रायड हमेशा व्यभिचारी कल्पनाओं को दमित के रूप में बोलता है, अनुभव से पता चलता है कि कई मामलों में वे या तो कभी भी चेतना की सामग्री नहीं थे, या कम से कम केवल सबसे सूक्ष्म संकेतों के प्रति सचेत थे, जिसके परिणामस्वरूप उनका दमन नहीं किया जा सकता

था। दिमाग से। सचेत उद्देश्य। आधुनिक शोध के अनुसार, यह अधिक संभावना है कि अनाचारिक कल्पनाएँ काफी हद तक बेहोश थीं और तब तक बनी रहीं जब तक कि उन्हें वास्तव में विश्लेषणात्मक पद्धति द्वारा दिन के प्रकाश में नहीं लाया गया। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि अचेतन की ऊपर की ओर गति प्रकृति में एक निंदनीय हस्तक्षेप है। यह निश्चित रूप से आत्मा के सर्जिकल ऑपरेशन जैसा कुछ है, जो, हालांकि, नितांत आवश्यक है, क्योंकि अनाचार कल्पनाएं एक संक्रमण लक्षण परिसर को जन्म देती हैं। और यद्यपि यह, जाहिरा तौर पर, एक कृत्रिम उत्पाद है, फिर भी इसका एक नकारात्मक पहलू है।

जबकि रेचन विधि उन सामग्रियों के "I" को वापस लाती है जिनकी जागरूकता सैद्धांतिक रूप से संभव है और जो सामान्य रूप से चेतना का हिस्सा होना चाहिए, स्थानांतरण की व्याख्या, बदले में, सामग्री को प्रकट करती है कि इस रूप में शायद ही कभी जागरूक हो सकता है . यह मान्यता और स्पष्टीकरण के चरणों के बीच मूलभूत अंतर है ।

अब तक हम मामलों की दो श्रेणियों के बारे में बात कर रहे हैं: वे जिनमें रोगी रेचन के लिए दुर्गम थे, और जिनमें, एक सफल रेचन के बाद, रोगियों ने खुद को स्थिर पाया, या बल्कि स्थानांतरित कर दिया। हम पहले ही दूसरे प्रकार के मामलों पर चर्चा कर चुके हैं। लेकिन इसके साथ ही ऐसे मरीज भी होते हैं, जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है, जिनका संबंध डॉक्टर से नहीं, बल्कि उनके अपने अचेतन से होता है। इन मामलों में, माता-पिता की छवि को मानव वस्तु में स्थानांतरित नहीं किया जाता है, लेकिन एक काल्पनिक प्रतिनिधित्व बना रहता है, लेकिन इस प्रतिनिधित्व में एक ही आकर्षक शक्ति होती है और इस तरह के संबंध को हस्तांतरण के रूप में कारण बनता है। रोगियों की पहली श्रेणी, जो निश्चित रूप से रेचन के लिए दुर्गम है, को फ्रायड के शोध के प्रकाश में इस तथ्य से समझाया गया है कि वे उपचार शुरू करने से पहले ही अपने माता-पिता के साथ अपनी पहचान बनाते हैं, जो उन्हें वह अधिकार, स्वतंत्रता और आलोचना देता है, जिसके लिए धन्यवाद। वे सफलतापूर्वक रेचन का विरोध करते हैं। ये, एक नियम के रूप में, शिक्षित, विभेदित व्यक्तित्व हैं जो अपने माता-पिता की छवि की अचेतन गतिविधि के शिकार नहीं हुए हैं। बल्कि, इसके विपरीत, वे अनजाने में अपने माता-पिता के साथ अपनी पहचान बनाकर इस गतिविधि में महारत हासिल कर लेते हैं।

स्थानांतरण की घटना के संबंध में, केवल मान्यता अनुपयुक्त हो जाती है, जो-फ्रायड के ब्रेयर की मूल कैथर्टिक पद्धति में महत्वपूर्ण परिवर्तन का कारण था। फ्रायड ने अब से जो करना शुरू किया, उसे उन्होंने "व्याख्या की विधि" कहा।

यह आगे का विकास काफी तार्किक है, क्योंकि स्थानांतरण संबंधों को विशेष रूप से स्पष्टीकरण की आवश्यकता होती है। यह कितना महत्वपूर्ण है, शौकिया, और इससे भी

अधिक डॉक्टर, जो अचानक खुद को समझ से बाहर, शानदार धारणाओं के कपड़े में खींचा हुआ पाता है, शायद ही महसूस कर सकता है। रोगी डॉक्टर को क्या स्थानांतरित करता है, इसकी व्याख्या की जानी चाहिए, अर्थात् स्पष्ट किया जाना चाहिए। चूंकि रोगी स्वयं भी अपने स्थानांतरण की सामग्री को नहीं जानता है, इसलिए डॉक्टर को उसकी कल्पनाओं के उपलब्ध अंशों की व्याख्या करनी चाहिए। इस तरह के सबसे तात्कालिक और महत्वपूर्ण उत्पाद सपने हैं। फ्रायड ने सपनों के दायरे की खोज की, जो विशेष रूप से दमित की सामग्री से जुड़ा हुआ है, और, स्वाभाविक रूप से, ऐसा करने में उन्होंने उन अनाचार सामग्री को प्रकट किया जिनके बारे में मैंने पहले बात की थी। बेशक, इस तरह की जांच से, शब्द के संकीर्ण अर्थों में न केवल अनाचार सामग्री प्राप्त की गई थी, बल्कि सामान्य तौर पर सभी संभावित आधार जो मानव प्रकृति में सक्षम हैं। इनकी लिस्ट बहुत लंबी है। इसे कुछ हद तक खत्म करने में भी पूरी जिंदगी लग जाती है।

स्पष्टीकरण की फ्रायडियन पद्धति का परिणाम मनुष्य के छाया पक्षों का एक पांडित्यपूर्ण विकास है, जिस पर हमें पहले संदेह नहीं था। मनुष्य के सार के बारे में सभी आदर्शवादी भ्रमों के लिए यह शायद सबसे प्रभावी मारक है। इसलिए, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि फ्रायड और उनके स्कूल को हर जगह सबसे शक्तिशाली विद्रोह का सामना करना पड़ता है। मैं उन लोगों के बारे में बात नहीं करना चाहता जिन्हें मनुष्य की प्रकृति के बारे में भ्रम है, लेकिन मैं इस बात पर जोर देना चाहूंगा कि व्याख्या की विधि के विरोधियों में से कई ऐसे हैं जिन्हें इस तरह के भ्रम नहीं हैं, लेकिन फिर भी यह मानना है कि यह असंभव है। किसी व्यक्ति को एकतरफा समझाएं - विशेष रूप से उसकी छाया पार्टियों द्वारा। अंत में, यह छाया नहीं है जो मायने रखती है, बल्कि शरीर जो इस छाया को डालता है।

फ्रायड की व्याख्या की विधि, इसलिए बोलने के लिए, एक रिडक्टिव स्पष्टीकरण है। लेकिन अगर ऐसी व्याख्या एकतरफा है और उपाय नहीं जानता है, तो यह विनाशकारी हो जाता है। फिर भी मानव प्रकृति पर फ्रायड के कार्य से यह निष्कर्ष निकला कि इस प्रकृति का भी एक छाया पक्ष है, और न केवल स्वयं मनुष्य, बल्कि उसकी रचनाएँ, उसकी संस्थाएँ और विश्वास भी, यह निष्कर्ष मनोवैज्ञानिक विचार विकसित करने के लिए बहुत उपयोगी था। हमारे शुद्धतम और पवित्रतम विचार गहरे, अंधेरे नींव पर टिके हुए हैं, और आखिरकार, घर को न केवल छत के रिज से, बल्कि तहखाने से भी समझाया जा सकता है, और बाद की व्याख्या का अतिरिक्त लाभ है कि जीन सैद्धांतिक रूप से, यह अधिक सत्य है, क्योंकि घर छत से नहीं, बल्कि नींव से बनते हैं, और, इसके अलावा, वे हमेशा सबसे सरल और सबसे कठिन से निर्माण शुरू करते हैं। एक समझदार व्यक्ति इस बात से इनकार नहीं करेगा कि सॉलोमन रीनाच के आदिम कुलदेवता के विचारों को साम्यवाद के लिए लागू करना अर्थहीन नहीं है। न ही वह देवताओं के बारे में ग्रीक मिथकों के लिए

अनाचार की परिकल्पना को लागू करने की संभावना को खारिज करेगा। बेशक, इंद्रियों के लिए अपने छाया पक्ष के माध्यम से उज्ज्वल चीजों की व्याख्या करना दर्दनाक है और इस तरह उन्हें कुछ हद तक, शुरुआत की उदास मिट्टी तक कम कर देता है। लेकिन मैं इसे "सुंदर चीजों" की कमजोरी और मनुष्य की कमजोरी मानता हूं, अगर, एक व्याख्यात्मक सिद्धांत के रूप में छाया का उपयोग करके, इस तरह की किसी भी चीज को नष्ट किया जा सकता है। फ्रायडियन व्याख्या की भयावहता हममें पैदा होती है और पूरी तरह से हमारे बर्बर या बचकाने भोलेपन के कारण होती है, जो अभी तक नहीं जानती है कि शीर्ष हमेशा नीचे का अर्थ है और वह "चरम खुद स्पर्शक" (चरम अभिसरण (फ्रेंच)। - पहले।) - एक-पूर्ण सत्य। हालांकि, यह मान लेना गलत होगा कि प्रकाश, चूंकि इसे छाया पक्ष द्वारा समझाया गया है, अब से मौजूद नहीं है। यह दुःखद त्रुटि स्वयं फ्रायड की विशेषता है। प्रकाश के बिना कोई छाया नहीं है, अच्छाई के बिना कोई बुराई नहीं है, और इसके विपरीत। इसलिए, मुझे इस सदमे का पछतावा नहीं हो सकता है कि इस स्पष्टीकरण ने हमारे भ्रम और हमारी सीमाओं को जन्म दिया है। इसके विपरीत, मैं इसकी जय करता हूं एक आवश्यक और, शायद, इसके महत्व में अभूतपूर्व ऐतिहासिक और प्रशासन के रूप में; आखिरकार, इसके साथ, दार्शनिक सापेक्षवाद पेश किया गया है, आइंस्टीन द्वारा आधुनिक भौतिकी और गणित में सन्निहित है, और वास्तव में पूर्वी ज्ञान है जो हमारे लिए दुर्गम है, संबंध में जिससे यह भविष्यवाणी करना असंभव है कि यह हमारे लिए क्या होगा।

बौद्धिक विचारों से बढ़कर कुछ भी निष्फल नहीं है। लेकिन अगर स्वयं का विचार आत्मा का तथ्य है। जो, स्पष्ट ऐतिहासिक कारण संबंध के बिना, विभिन्न क्षेत्रों में रेंगता है, तो मामला ध्यान देने योग्य है। एक विचार के लिए, जो आत्मा का एक तथ्य है, तार्किक और नैतिक रूप से, एक अकाट्य शक्ति है जो मनुष्य और उसके कारण से अधिक शक्तिशाली है। मनुष्य सोचता है कि वह इन विचारों को बनाता है, लेकिन वास्तव में वे उसे बनाते हैं, ताकि वह अनजाने में उनका मुखपत्र बन जाए।

निर्धारण की हमारी समस्या पर फिर से लौटने के लिए, अब मैं इस प्रश्न पर चर्चा करना चाहूंगा कि स्पष्टीकरण का क्या प्रभाव पड़ता है। एक अंधेरे पृष्ठभूमि के साथ निर्धारण को बदलना रोगी की स्थिति का अवमूल्यन करता है; वह अपने ढोंगों के अनुपयुक्त शिशुवाद को देखने में असफल नहीं हो सकता, जिसके आधार पर वह एक काल्पनिक ऊंचाई से स्व-विनियोजित अधिकार से एक मामूली स्तर तक और एक निश्चित, शायद उपचारात्मक आत्म-संदेह तक उतरता है, और दूसरे में वह होगा स्वीकार करते हैं कि दूसरों के प्रति दावा करना एक सहज और बचकाना रवैया है, जिसे अधिक आत्म-जिम्मेदारी द्वारा प्रतिस्थापित किया जाना चाहिए।

जिसके लिए इसकी समझ कुछ कहती है, वह उचित नैतिक निष्कर्ष निकालेगा और, अपनी अपर्याप्तता के ज्ञान से लैस होकर, अस्तित्व के लिए संघर्ष में भाग लेगा ताकि

उन ताकतों और ड्राइवों को समाप्त कर दिया जा सके जो उसे पहले से निपटाए गए थे, या तो हठपूर्वक उसे बचपन के जन्नत में हिरासत में लेना, या कम से कम उसे वहां झांकने के लिए मजबूर करना। भावुकता और मायावी प्रकृति की संभावना के बिना किसी की अपनी अपर्याप्तता के लिए सामान्य समायोजन और सहनशीलता उसके प्रमुख नैतिक विचार बन जाएंगे। इसका आवश्यक परिणाम कमजोरी और प्रलोभन के क्षेत्र के रूप में अचेतन से एक व्याकुलता है, जिसमें नैतिक और सामाजिक हार शामिल है।

अब रोगी के सामने जो समस्या है वह है सामाजिक व्यक्ति की शिक्षा। इस प्रकार, हम तीसरे चरण पर पहुँच गए हैं। सरल समझ, जिसमें कई नैतिक रूप से संवेदनशील प्रकृति के लिए पर्याप्त प्रेरक शक्ति होती है, कम नैतिक कल्पना वाले लोगों के लिए अस्थिर साबित होती है। ऐसे लोगों को केवल वास्तविक प्रतिकूलता से ही प्रेरित किया जा सकता है; उनके लिए समझ पर्याप्त नहीं है, भले ही ये रोगी इसके गहरे सत्य के प्रति आश्चस्त हों। मैं उन सभी के बारे में बात नहीं कर रहा हूँ जो स्पष्ट व्याख्या को समझते हैं, लेकिन संक्षेप में, इसमें संदेह है। और ये फिर से आध्यात्मिक रूप से अलग-अलग लोग हैं, जो रिडक्टिव स्पष्टीकरण की सच्चाई को पहचानते हैं, लेकिन केवल अपनी आशाओं और आदर्शों का अवमूल्यन करने से संतुष्ट नहीं हो सकते। और यहाँ मन भी शक्तिहीन है। स्पष्टीकरण की विधि संवेदनशील प्रकृति के लिए डिज़ाइन की गई है, जो समझने के लिए धन्यवाद, स्वतंत्र रूप से नैतिक निष्कर्ष निकाल सकते हैं। बेशक, स्पष्टीकरण एक सरल, बिना व्याख्या वाले स्वीकारोक्ति से आगे जाता है, क्योंकि यह कम से कम आत्मा को प्रबुद्ध करता है और इस तरह निष्क्रिय शक्तियों को जागृत करता है जिनका सकारात्मक प्रभाव हो सकता है। लेकिन तथ्य वही रहता है, और कई मामलों में एक स्पष्टीकरण एक ऐसे बच्चे को छोड़ देता है जो बुद्धिमान है, लेकिन फिर भी अनुकूलित नहीं है। इसके अलावा, फ्रायड का आनंद का मूल व्याख्यात्मक सिद्धांत, जैसा कि आगे के विकास ने दिखाया है, एकतरफा है और इसलिए अपर्याप्त है। इस तरफ से सभी लोगों को समझाना असंभव है। इसमें कोई शक नहीं, हर किसी का यह पक्ष होता है, लेकिन यह हमेशा मुख्य नहीं होता है। मान लीजिए कि एक भूखे व्यक्ति को उपहार के रूप में एक सुंदर तस्वीर मिलती है, लेकिन वह रोटी का एक टुकड़ा पसंद करेगा। या, उदाहरण के लिए, एक प्रेमी को संयुक्त राज्य का राष्ट्रपति चुना जाता है, लेकिन वह अपने प्रिय को गले लगाना पसंद करेगा। कुल मिलाकर, वे सभी लोग जो सामाजिक समायोजन और सामाजिक स्थिति में कठिनाइयों का अनुभव नहीं करते हैं, उन्हें आनंद सिद्धांत के संदर्भ में उन अन्य लोगों की तुलना में अधिक तेज़ी से समझाया जा सकता है, जिन्हें ऐसी कठिनाइयाँ हैं, या दूसरे शब्दों में, जो सामाजिक असंतोष के कारण, मान्यता और अधिकारियों की आवश्यकता। बड़ा भाई, अपने पिता के नक्शेकदम पर चलते हुए और सामाजिक सत्ता में शामिल होने से, आनंद लेने की एक असंतुष्ट आवश्यकता से समाप्त हो जाएगा, और छोटा भाई, अपने

पिता और बड़े भाई द्वारा प्रताड़ित और आहत, महत्वाकांक्षा और स्वयं की आवश्यकता को चिढ़ाएगा। पुष्टि. वह अन्य सभी जुनूनों को इसके अधीन कर देगा, और इसलिए वे उसके लिए एक बड़ी समस्या नहीं होंगी, कम से कम महत्वपूर्ण महत्व की समस्या,

यहाँ स्पष्टीकरण की प्रणाली में एक स्पष्ट अंतर है, जिसे फ्रायड के पूर्व छात्र एडलर ने समाप्त कर दिया था। उन्होंने दृढ़ता से साबित कर दिया कि न्यूरोसिस के कई मामलों-को आनंद सिद्धांत की तुलना में शक्ति की आवश्यकता से बेहतर और अधिक संतोषजनक ढंग से समझाया जा सकता है। उनकी व्याख्या का उद्देश्य रोगी को यह दिखाना है कि वह कैसे लक्षणों को "व्यवस्थित" करता है और एक काल्पनिक स्वीकारोक्ति प्राप्त करने के लिए अपने न्यूरोसिस का उपयोग करता है। यहां तक कि स्थानांतरण, साथ ही अन्य निर्धारण, यहां सत्ता हासिल करने के लक्ष्य की सेवा करते हैं और इस संबंध में कथित उत्पीड़न के खिलाफ "मानव विरोध" का प्रतिनिधित्व करते हैं। एडलर का अर्थ स्पष्ट रूप से सामाजिक सफलता से वंचित या उत्पीड़ितों का मनोविज्ञान है, जिसकी एकमात्र आकांक्षा आत्म-पुष्टि की आवश्यकता है। ऐसे मामले विक्षिप्त हैं क्योंकि ये लोग खुद को उत्पीड़ित होने की कल्पना करते हैं और, इस कल्पना की शक्ति में, पवनचक्की के खिलाफ लड़ते हैं, अपने आप को उस लक्ष्य को प्राप्त करने के अवसर से वंचित करते हैं जो उनके लिए सबसे अधिक वांछनीय है,

अनिवार्य रूप से, एडलर का सिद्धांत स्पष्टीकरण के चरण में क्षेत्र में प्रवेश करता है, अर्थात्, स्पष्ट अर्थ में स्पष्टीकरण, और इस संबंध में यह फिर से तर्क की अपील करता है। हालाँकि, एडलर की एक विशेषता यह है कि वह एक साधारण समझ से बहुत अधिक अपेक्षा नहीं करता है और इससे आगे बढ़ते हुए, सामाजिक शिक्षा की आवश्यकता को स्पष्ट रूप से पहचानता है। जबकि फ्रायड पुनः खोजकर्ता और दुभाषिया है, एडलर मुख्य रूप से शिक्षक है। वह अपने मूल्यवान, सच्चे, समझ से बच्चे को बीमारी में असहाय नहीं छोड़ता, बल्कि सभी शैक्षिक साधनों का उपयोग करके उसे सामान्य रूप से अनुकूलित व्यक्ति बनाने की कोशिश करता है। यह, स्पष्ट रूप से, इस विश्वास के आधार पर किया जाता है कि सामाजिक अनुकूलन और सामान्यीकरण एक वांछनीय लक्ष्य है, मानव सार की निर्विवाद रूप से आवश्यक और वांछनीय पूर्ति है। एडलर स्कूल की इस बुनियादी सेटिंग से प्रभाव की सामाजिक शक्ति और अचेतन की अस्वीकृति पर मुख्य जोर देने के उन्मुखीकरण का अनुसरण किया जाता है, जो मुझे लगता है, अनजाने में अचेतन के इनकार में बदल जाता है। अचेतन की भूमिका पर फ्रायड के जोर से हटना एक अपरिहार्य प्रतिक्रिया प्रतीत होती है, जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, किसी भी बीमार व्यक्ति के प्राकृतिक प्रतिकर्षण से मेल खाती है जो वसूली और समायोजन चाहता है। क्योंकि यदि अचेतन वास्तव में मानव प्रकृति के सभी सामान्य छायादार पक्षों का एक मात्र भंडार है, एक विशेष रूप से प्रागैतिहासिक कीचड़ जमा है, तो यह वास्तव में समझ से बाहर है कि

किसी को दलदल में क्यों रहना चाहिए, जिसमें एक बार गिर गया है, लंबे समय तक से आवश्यक है। एक शोधकर्ता के लिए, एक पोखर एक अद्भुत दुनिया की तरह लग सकता है, लेकिन एक सामान्य व्यक्ति के लिए, यह कुछ ऐसा है जो इसके आसपास जाना बेहतर है। प्राचीन बौद्ध धर्म की तरह, जिसमें कोई देवता नहीं है क्योंकि इसे दो मिलियन देवताओं के साथ एक देवता द्वारा बनाई गई पृष्ठभूमि से बाहर खड़ा होना था, मनोविज्ञान को अपने आगे के विकास में निश्चित रूप से फ्रायडियन अचेतन जैसी नकारात्मक चीज से दूर होना चाहिए। एडलरियन प्रवृत्ति के शैक्षिक लक्ष्य उस समय दिखाई देते हैं जब फ्रायड इसे छोड़ देता है, और इस तरह वे सामान्य जीवन का रास्ता खोजने के लिए अब अर्जित समझ के परिणामस्वरूप रोगी की समझने योग्य जरूरतों को पूरा करते हैं। यह बिना कहे चला जाता है कि वह खुद यह पता लगाने का प्रबंधन नहीं करता है कि बीमारी कैसे और कहाँ से आई है, और शायद ही कभी कारण की समझ के साथ बीमारी का उन्मूलन हो जाता है। इस बात को नज़रअंदाज नहीं किया जाना चाहिए कि झूठे विक्षिप्त तरीके अंतर्निहित आदतें बन जाते हैं और यह कि, सभी समझ के बावजूद, वे तब तक गायब नहीं होते जब तक कि उन्हें अन्य आदतों द्वारा प्रतिस्थापित नहीं किया जाता है जिन्हें केवल प्रशिक्षण के माध्यम से हासिल किया जा सकता है। यह कार्य स्वयं के पालन-पोषण से ही किया जा सकता है। रोगी को शब्द के पूर्ण अर्थ में अन्य रास्तों पर "स्थानांतरित" किया जाना चाहिए, जो केवल तभी किया जा सकता है जब उसकी अपनी इच्छा हो। अब यह स्पष्ट है कि एडलरियन दिशा शिक्षकों और मानवतावादियों के बीच सबसे बड़ी प्रतिक्रिया क्यों पाती है, जबकि फ्रायडियन मुख्य रूप से डॉक्टरों और बुद्धिजीवियों को आकर्षित करता है, जो बिना किसी अपवाद के - बुरे शिक्षक हैं।

हमारे मनोविज्ञान के विकास के प्रत्येक चरण में एक प्रकार की पूर्णता होती है। रेचन, जो आत्मा के उच्छेदन पर आधारित है, कुछ लोगों को सोचने की अनुमति देता है: अब यह यहाँ है, इससे सब कुछ बहता है, सब कुछ ज्ञात है, सभी भय पीछे हैं, सभी आँसू बहाए जाते हैं, अब सब कुछ बेहतर होना चाहिए। स्पष्टीकरण उतना ही आश्चर्य रूप से बोलता है: अब हम जानते हैं कि न्यूरोसिस कहाँ से आया है, सबसे पुरानी यादें खोदी गई हैं, आखिरी जड़ें मिल गई हैं, और संक्रमण बचपन की एक कामुक कल्पना या पारिवारिक रोमांस की वापसी से ज्यादा कुछ नहीं था। ; एक गैर-भ्रमपूर्ण जीवन का मार्ग, अर्थात् सामान्य अस्तित्व के लिए, खुला है। और अंत में, शिक्षा इंगित करती है कि एक कुटिल रूप से उगाया गया पेड़ मान्यता और स्पष्टीकरण के लिए एक सीधी रेखा में नहीं खिंचेगा, लेकिन केवल माली की कला के लिए धन्यवाद सामान्य ट्रेलिस के नीचे लाया जा सकता है। अब मैं बस उस सामान्य समायोजन तक पहुँच जाऊँगा।

यह अद्भुत पूर्णता, भावनात्मक रूप से प्रत्येक चरण में निहित है, यही कारण है कि आज ऐसे डॉक्टर हैं जो रेचन का अभ्यास करते हैं, जिन्होंने स्पष्ट रूप से सपनों की

व्याख्या के बारे में कुछ भी नहीं सुना है, फ्रायड के अनुयायी जो एडलर के एक शब्द को नहीं समझते हैं, और एडलरिस्ट जो नहीं करते हैं अचेतन के बारे में कुछ भी नहीं जानना चाहता। हर कोई अपने मंच की पूर्णता से आगे बढ़ता है, और इसलिए विचारों और विचारों का भ्रम आता है, जिससे इस क्षेत्र में नेविगेट करना बेहद मुश्किल हो जाता है।

हालाँकि, पूर्णता की भावना क्यों है जो सभी स्तरों पर इतनी अधिक सत्तावादी हठ को जन्म देती है?

मैं इसे प्रत्येक चरण में निहित अंतिम सत्य के अलावा किसी और चीज से नहीं समझा सकता, और इस तथ्य से कि मामले बार-बार ज्ञात हो रहे हैं जो इस सत्य को सबसे ठोस तरीके से साबित करते हैं। सच्चाई, हालाँकि, हमारी दुनिया में, बेहद धोखेबाज, एक ऐसा खजाना है जिसे कोई भी मना नहीं करना चाहता, सिवाय कुछ के, तो बोलने के लिए, अपवाद जो इससे सहमत नहीं होना चाहते हैं। और जो कोई भी सत्य पर संदेह करता है वह अनिवार्य रूप से एक विश्वासघाती कीट के रूप में प्रकट होता है, जबकि कट्टरता और असहिष्णुता का एक नोट हर जगह चर्चा में मिश्रित होता है।

और फिर भी हर कोई ज्ञान के प्रकाश को पथ के एक निश्चित खंड पर ही ले जाता है, जब तक कि कोई और उसे स्वीकार नहीं कर लेता। यदि इस प्रक्रिया को व्यक्तिगत से अलग समझा जाता, यदि यह स्वीकार करना संभव होता कि हम अपने सत्य के व्यक्तिगत निर्माता नहीं हैं, बल्कि इसके प्रतिनिधि, आधुनिक आध्यात्मिक आवश्यकताओं के मात्र प्रवक्ता हैं, तो, शायद, दोनों से बचना संभव होगा जहर और कड़वाहट, और हमारी निगाहें मानव आत्मा के गहरे और पारस्परिक संबंधों को देखने में सक्षम होंगी।

रेचन का अभ्यास करने वाला चिकित्सक केवल एक अमूर्त विचार नहीं है जो स्वतः ही रेचन के अलावा कुछ भी उत्पन्न करने में असमर्थ है। रेचन का अभ्यास करने वाला डॉक्टर भी एक व्यक्ति होता है, और यद्यपि उसकी सोच एक निश्चित क्षेत्र तक सीमित होती है, लेकिन अपने कार्यों में, वह, किसी भी व्यक्ति की तरह, अपने व्यक्तित्व को पूर्ण रूप से दिखाता है। वह अनायास ही स्पष्ट और शिक्षित करने का कार्य बिना नाम लिए करता है और तदनुसार, इस बात से स्पष्ट रूप से अनभिज्ञ, उन सभी की तरह जो मुख्य रूप से रेचन में इस कार्य को नहीं करते हैं।

सभी जीवित चीजें जीवन का इतिहास हैं। यहां तक कि ठंडे खून वाले अभी भी जारी हैं sous - entendu (हाल ही में (फ्रेंच)। - अनुवाद) हम में रहते हैं। साथ ही, विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के जिन तीन चरणों के बारे में हमने बात की है, वे किसी भी तरह से सत्य नहीं हैं, जिनमें से अंतिम दो पिछले चरणों को अवशोषित और प्रतिस्थापित करता है; वे एक ही समस्या के मूलभूत पहलू हैं, और वे किसी भी तरह से एक-दूसरे का खंडन नहीं करते हैं, जैसे मुक्ति स्वीकारोक्ति का खंडन नहीं करती है,

चौथे चरण पर भी यही बात लागू होती है - परिवर्तन । और उसे परम सत्य होने

का दिखावा नहीं करना चाहिए। यह चरण पिछले वाले द्वारा छोड़े गए अंतर को भरता है; यह बस एक और जरूरत को पूरा करता है जो पिछले वाले पर फैल गई है।

यह स्पष्ट करने के लिए कि परिवर्तन के चरण का उद्देश्य क्या है और सामान्य रूप से "रूपांतरण" की अजीब अवधारणा का क्या अर्थ है, हमें पहले यह समझना होगा कि पिछले चरणों से मानव आत्मा की क्या आवश्यकता नहीं समझी गई थी; दूसरे शब्दों में, यदि सामान्य रूप से अनुकूलित होने की इच्छा तक सीमित न हो तो और क्या मांगें संभव हैं? एक सामान्य व्यक्ति होना सबसे उपयोगी और समीचीन चीज है जिसके बारे में आप सोच सकते हैं। हालांकि, "सामान्य व्यक्ति" की अवधारणा, "अनुकूलन" की अवधारणा की तरह, कुछ औसत मानकर सीमित है। अनुकूलन एक वांछनीय लक्ष्य है, उदाहरण के लिए, उन लोगों के लिए जिन्हें दुनिया के साथ मिलना मुश्किल है या जो अपने न्यूरोसिस के कारण सामान्य अस्तित्व का नेतृत्व करने में असमर्थ हैं। "सामान्य व्यक्ति" दलितों के लिए एकदम सही लक्ष्य है - उन सभी के लिए जो समायोजन के सामान्य स्तर से नीचे हैं। हालांकि, उन लोगों के लिए जो औसत व्यक्ति से अधिक सक्षम हैं, जिनके लिए सफलता हासिल करना मुश्किल नहीं है, मामूली उपलब्धियों से अधिक हासिल करना, उनके लिए विचार या नैतिक मजबूरी "सामान्य" से अलग नहीं है। लोग, वास्तव में, एक प्रोक्रस्टियन झूठ, एक असहनीय घातक ऊब, एक बंजर, निराशाजनक नरक है। इसलिए, जबकि कई न्यूरोटिक्स हैं जो बीमार पड़ते हैं क्योंकि वे सामान्य हैं, वहीं कुछ ऐसे भी हैं जो इसके विपरीत बीमार हैं क्योंकि वे सामान्य नहीं हो सकते हैं। यह विचार कि कोई भी पूर्व को सामान्य बनाने के बारे में सोच सकता है, इन लोगों द्वारा एक बुरे सपने के रूप में लिया जाएगा, क्योंकि उनकी सबसे गहरी जरूरत वास्तव में एक असामान्य जीवन जीना है।

जो उसके पास अभी तक नहीं है, और, वैसे, जो बहुतायत में है और जिसके साथ वह पर्याप्त नहीं मिल सकता है, दोनों में संतुष्टि और इच्छाओं की पूर्ति की तलाश करने के लिए। सामाजिक अनुकूलन प्राप्त करना उन लोगों के लिए प्रोत्साहन नहीं है जिन्हें यह बचकाना सहजता से दिया जाता है। हमेशा सही व्यवहार करने वाले के लिए सही कार्य हमेशा उबाऊ होंगे, जबकि हमेशा गलत करने वाले के लिए, दीर्घकालिक लक्ष्य, गुप्त इच्छा, सही ढंग से कार्य करना सीखना है।

अलग-अलग लोगों की जरूरतें और जरूरतें अलग-अलग होती हैं। कुछ के लिए जो मुक्ति है वह दूसरों के लिए जेल है। यह सामान्यता और फिटनेस पर भी लागू होता है। यदि जीव विज्ञान की स्थिति कहती है कि मनुष्य एक झुंड का जानवर है और अपने सामाजिक सार की प्राप्ति के माध्यम से ही पूर्ण वसूली प्राप्त करता है, तो बाद वाला मामला इस स्थिति को उल्टा कर देता है और हमें यह साबित करता है कि एक व्यक्ति पूरी तरह से तभी ठीक हो जाता है जब वह असामान्य और असामाजिक रूप से रहता है। इस तरह के निष्कर्ष सामान्य प्रभावी व्यंजनों या मानदंडों की कमी के कारण आधुनिक

मनोविज्ञान में निराशा का कारण बन सकते हैं। सभी संभावित जरूरतों और मांगों के साथ केवल व्यक्तिगत मामले हैं, और वे इतने अलग हैं कि वास्तव में, कोई भी पहले से कभी नहीं जान सकता कि प्रत्येक विशेष मामला किस दिशा में विकसित होगा। इसलिए, डॉक्टर किसी भी पूर्वकल्पित धारणा को छोड़ने की पूरी कोशिश करेंगे। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि इसे पानी में फेंक दिया जाना चाहिए; कभी-कभी, इसे संभावित स्पष्टीकरण के लिए एक परिकल्पना के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। और व्याख्यान या मनाने के लिए नहीं, बल्कि रोगी को यह दिखाने के लिए कि डॉक्टर उसके विशेष मामले पर कैसे प्रतिक्रिया करता है। हालांकि अक्सर इससे बचने की कोशिश की जाती है, डॉक्टर और मरीज के बीच का संबंध चिकित्सा कार्य के अवैयक्तिक ढांचे के भीतर एक व्यक्तिगत संबंध है। इस बात से केवल चालाकी से इनकार किया जा सकता है कि उपचार आपसी प्रभाव का एक उत्पाद है, जिसमें रोगी का पूरा अस्तित्व, साथ ही साथ डॉक्टर भी भाग लेते हैं। उपचार में, दो तर्कहीन गिवेन मिलते हैं, अर्थात् दो लोग जो सीमित नहीं हैं, मापने योग्य मात्राएं हैं, लेकिन जो उनके साथ, उनकी संभावित निश्चित चेतना के साथ, अचेतन के एक अनिश्चित रूप से विस्तारित क्षेत्र को साथ लाते हैं। इसलिए, मानसिक उपचार के परिणाम के लिए, चिकित्सक (साथ ही रोगी) का व्यक्तित्व अक्सर चिकित्सक के कहने और सोचने से कहीं अधिक महत्वपूर्ण होता है, हालांकि बाद वाले को हानिकारक या उपचार के दृष्टिकोण से उपेक्षित नहीं किया जा सकता है। कारक। दो व्यक्तित्वों का मिलन दो अलग-अलग रसायनों के मिश्रण की तरह है: यदि वे बिल्कुल भी मिल जाते हैं, तो वे दोनों बदल जाते हैं। आत्मा पर उपचारात्मक प्रभाव के हर मामले में, चिकित्सक से रोगी को प्रभावित करने की अपेक्षा की जानी चाहिए। हालांकि, यहां विपरीत प्रभाव भी हो सकता है - रोगी-के डॉक्टर पर प्रभाव के मामले में। यदि चिकित्सक रोगी के प्रभाव से अपना बचाव करता है और अपने आप को पैतृक-पेशेवर अधिकार के बादलों में लपेटता है, तो इससे उसका कोई भला नहीं होगा। ऐसा करने से, वह केवल ज्ञान के सबसे महत्वपूर्ण अंग के उपयोग से स्वयं को इनकार कर देगा। आखिरकार, रोगी अनजाने में डॉक्टर को प्रभावित करता है और उसके अचेतन में परिवर्तन का कारण बनता है; कई मनोचिकित्सकों के लिए जाना जाता है, उनके अपने, वास्तव में पेशेवर, और परिवर्तन या यहां तक कि आत्मा को नुकसान सबसे अधिक विश्वसनीय रूप से साबित होता है, इसलिए बोलने के लिए, रोगी का रासायनिक प्रभाव। इस तरह की सबसे प्रसिद्ध घटनाओं में से एक संक्रमण-प्रेरित प्रतिसंक्रमण है। लेकिन अधिक बार प्रभाव अधिक सूक्ष्म प्रकृति के होते हैं, और उन्हें रोग को स्वस्थ लोगों में स्थानांतरित करने के प्राचीन विचार के अलावा अन्यथा विशेषता नहीं दी जा सकती है, जिन्हें अपने स्वास्थ्य के साथ रोग के दानव को दूर करना चाहिए, हालांकि, नकारात्मक रूप से स्वयं के स्वास्थ्य को प्रभावित करता है।

डॉक्टर और रोगी के बीच संबंध कुछ तर्कहीन कारकों से प्रभावित होते हैं जो

पारस्परिक परिवर्तन (रूपांतरण) का कारण बनते हैं। इस मामले में, एक स्थिर मजबूत व्यक्तित्व निर्णायक होगा। हालांकि, मेरी आंखों के सामने कई मामले ऐसे गुजरे हैं जब एक मरीज, सभी सिद्धांतों और पेशेवर इरादों के विपरीत, डॉक्टर को आत्मसात कर लेता है, कभी-कभी उसे कुछ नुकसान भी पहुंचाता है।

परिवर्तन का चरण इन तथ्यों पर आधारित है, जिसकी स्पष्ट प्राप्ति एक चौथाई सदी से अधिक के व्यावहारिक अनुभव से पहले हुई थी। इन तथ्यों को स्वीकार करते हुए, फ्रायड ने स्वयं डॉक्टर के विश्लेषण के अधीन होने की मेरी मांग का समर्थन किया।

इस आवश्यकता का क्या अर्थ है? इसका मतलब यह है कि चिकित्सक के लिए "विश्लेषण के तहत" होने की आवश्यकता से ज्यादा कुछ नहीं है जितना कि रोगी के लिए। पहला मानसिक उपचार की प्रक्रिया का उतना ही अभिन्न हिस्सा है जितना कि बाद वाला, और इसलिए उसी डिग्री के परिवर्तनकारी प्रभावों के अधीन है। यदि डॉक्टर इस तरह के प्रभाव के लिए दुर्गम हो जाता है, तो वह रोगी को प्रभावित करने का अवसर भी खो देता है, और परिणामस्वरूप वह केवल अनजाने में प्रभावित होता है, उसकी चेतना के क्षेत्र में एक रिक्त स्थान बनता है, जो उसे अनुमति नहीं देता है रोगी को सही ढंग से देखने के लिए। ऐसे में इलाज की सफलता संदेह के घेरे में है।

इसलिए डॉक्टर उसी कार्य के बोझ तले दब जाता है जिसके साथ वह रोगी पर बोझ डालना चाहता है, उदाहरण के लिए, एक सामाजिक रूप से समायोजित व्यक्ति, या, एक अन्य मामले में, एक ठीक से समायोजित व्यक्ति। चिकित्सक के दृष्टिकोण के आधार पर, चिकित्सीय मांग निश्चित रूप से एक हजार विभिन्न नुस्खे का रूप ले सकती है। व्यक्ति शिशुवाद पर काबू पाने में विश्वास करता है, इसलिए उसे अपने शिशुवाद पर विजय प्राप्त करनी चाहिए। दूसरा सभी प्रभावों की प्रतिक्रिया में विश्वास करता है, इसलिए, उसे स्वयं अपने सभी प्रभावों पर प्रतिक्रिया करनी चाहिए। तीसरा पूर्ण चेतना में विश्वास करता है, इसलिए उसे अपनी चेतना प्राप्त करनी चाहिए, या कम से कम लगातार अपनी चिकित्सीय आवश्यकता को पूरा करने का प्रयास करना चाहिए, यदि उसे अपने रोगियों पर सही प्रभाव के बारे में सुनिश्चित होना है। ये सभी बुनियादी चिकित्सीय विचार मोटे तौर पर नैतिक आवश्यकताएं हैं जो सामूहिक रूप से सत्य में परिणत होती हैं: *"आपको स्वयं वही होना चाहिए जो आप दूसरों को चाहते हैं।"* इस प्रसिद्ध अभिव्यक्ति को लंबे समय से खाली माना जाता है, क्योंकि अभी तक ऐसा चतुर उपकरण नहीं आया है जो इस सरल सत्य पर लंबे समय तक भरोसा कर सके। इसलिए नहीं कि वे आश्वस्त क्यों हैं, बल्कि वे क्या आश्वस्त हैं - यह हर समय मुख्य प्रश्न था।

विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के चौथे चरण में डॉक्टर के लिए उपयुक्त चुनी गई प्रणाली के विपरीत आवेदन की आवश्यकता होती है, और यह उसी निर्ममता, निरंतरता और धैर्य के साथ किया जाना चाहिए जिसके साथ डॉक्टर रोगी के प्रति कार्य करता है।

यदि आप विचार करें कि आत्मा के मरहम लगाने वाले को अपने झूठे रास्तों और गलत निष्कर्षों, अपने शिशु रहस्यों को प्रकट करने के लिए किस ध्यान और आलोचना के साथ अपने रोगी का अनुसरण करना चाहिए, तो अपने लिए ऐसा करना उसके लिए वास्तव में कोई छोटी उपलब्धि नहीं होगी। हालांकि, ज्यादातर मामलों में, यह हमारे लिए बहुत कम दिलचस्पी का है, और हमारे इन आत्मनिरीक्षण प्रयासों का मूल्यांकन करने वाला कोई नहीं है। इसके अलावा, मानव आत्मा की उपेक्षा अभी भी हर जगह इतनी महान है कि आत्म-अवलोकन और स्वयं के साथ व्यस्तता को लगभग दर्दनाक घटना माना जाता है। जाहिरा तौर पर, कुछ लोग अपनी आत्मा में स्वास्थ्य महसूस नहीं करते हैं, यही वजह है कि इसमें रुचि का प्रकटीकरण भी अस्पताल के वार्ड की तरह महकता है। डॉक्टर को अपने आप में इन अंतर्विरोधों को दूर करना चाहिए, क्योंकि अगर वह खुद को शिक्षित नहीं करता है तो वह दूसरे को कैसे शिक्षित कर सकता है, अगर वह अपने लिए अंधेरे से ढका हुआ है तो वह कैसे समझा सकता है और अगर वह खुद ही शुद्ध नहीं है तो वह कैसे शुद्ध हो सकता है?

शिक्षा से स्व-शिक्षा की ओर कदम एक तार्किक कदम है, जो पिछले सभी चरणों का पूरक है। परिवर्तन के एक चरण की मांग, यानी डॉक्टर स्वयं बदल जाए, जिससे रोगी को भी बदलने में सक्षम हो, जैसा कि यह समझना आसान है, इस तथ्य के कारण बहुत अलोकप्रिय है कि, सबसे पहले, यह अव्यवहारिक लगता है, और दूसरा, स्वयं का व्यवसाय एक अप्रिय पूर्वाग्रह से जुड़ा हुआ है और तीसरा, कभी-कभी अपने आप में वह सब कुछ खोजना बहुत दर्दनाक होता है जो इस मामले में किसी के रोगी में खोजने की उम्मीद करता है। अंतिम बिंदु विशेष रूप से इस मांग की अलोकप्रियता में योगदान देता है, क्योंकि जो कोई भी खुद को शिक्षित और ठीक करना चाहता है, उसे जल्द ही पता चलेगा कि उसके अस्तित्व में कुछ विशेषताएं हैं जो सामान्यीकरण को रोकती हैं। वह इन सुविधाओं का क्या करेगा? यद्यपि वह हमेशा जानता है - उसका पेशा उसे ऐसा करने के लिए बाध्य करता है - रोगी को उनके साथ क्या करना चाहिए। लेकिन फिर भी, वह खुद इसके साथ क्या करेगा, खासकर अगर वह खुद इस बात से बहुत आश्चस्त है और खुद इस पर आ गया है? या, शायद, उनके सबसे करीबी लोग इस बात के कायल थे? इस तरह की आत्म-परीक्षा में, वह अपने आप में एक हीनता की खोज कर सकता है जो उसे रोगी के साथ समान करने की धमकी देता है और संभवतः उसके अधिकार को कमजोर करता है। वह इस अप्रिय खोज से कैसे निपटेगा? यह कुछ हद तक "विक्षिप्त प्रश्न" उसे सबसे गहरे तरीके से प्रभावित करेगा, चाहे वह खुद को कितना भी सामान्य लगे। उसे यह भी पता चलेगा कि जो प्रश्न उन पर उतना ही भार डालते हैं जितना कि उनके रोगियों पर हैं, वे बिना उपचार के हल नहीं हो सकते हैं, कि दूसरों के माध्यम से समाधान बचकाना है, और यदि समाधान नहीं मिल सकता है, तो प्रश्न फिर से दमित हो जाएगा।

मैं आत्मनिरीक्षण की प्रक्रिया से उत्पन्न होने वाली समस्याओं में और अधिक नहीं जाना चाहता, क्योंकि उनका दायरा आत्मा के विशाल अज्ञात के साथ अनुत्तरीय है।

इसके विपरीत, मैं इस बात पर जोर देना चाहूंगा कि विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान में हाल के विकास हमें मानव व्यक्तित्व में तर्कहीन कारकों के महत्वपूर्ण प्रश्न पर लाते हैं और चिकित्सक के व्यक्तित्व को उपचारात्मक कारक या इसके विपरीत के रूप में सामने लाते हैं। इस प्रकार, बदले में, डॉक्टर को स्वयं बदलने की मांग की जाती है, अर्थात् शिक्षक की स्व-शिक्षा / अब से, हमारे मनोविज्ञान के इतिहास में जो कुछ भी वस्तुनिष्ठ रूप से मौजूद था - मान्यता, स्पष्टीकरण और शिक्षा - विषय के स्तर तक बढ़ जाता है, दूसरे शब्दों में, रोगियों के साथ जो कुछ भी किया गया था वह डॉक्टर के साथ किया जाना चाहिए, ताकि उसका व्यक्तित्व का रोगियों पर नकारात्मक सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ेगा। एक डॉक्टर के लिए यह अनुमति नहीं है कि वह अपनी कठिनाइयों से आंखें मूंदने की कोशिश करे, इस तथ्य का जिक्र करते हुए कि वह दूसरों की कठिनाइयों का इलाज कर रहा है, जबकि उसे खुद ये समस्याएं नहीं हैं।

जिस तरह पहले फ्रायडियन स्कूल, अपनी दूरगामी खोज के सिलसिले में, अप्रत्याशित रूप से धार्मिक-मनोवैज्ञानिक मुद्दों पर भी विवाद में शामिल होना पड़ता था, इसलिए नवीनतम मोड़ इस तथ्य की ओर ले जाता है कि डॉक्टर का नैतिक रवैया एक ऐसी समस्या बन जाती है जो नहीं कर सकती बचे रहें। आत्म-आलोचना और आत्म-विश्लेषण, जो इस प्रश्न से अटूट रूप से जुड़े हुए हैं, पूर्व की तुलना में आत्मा के बारे में पूरी तरह से अलग राय विकसित करना आवश्यक बना देंगे, विशुद्ध रूप से जैविक। आखिरकार, मानव आत्मा, न केवल प्राकृतिक-वैज्ञानिक रूप से उन्मुख चिकित्सा की वस्तु है, यह न केवल एक रोगी है, बल्कि एक डॉक्टर भी है, न केवल एक वस्तु है, बल्कि एक विषय भी है, न केवल एक निश्चित कार्य है मस्तिष्क, लेकिन हमारी चेतना की एक पूर्ण स्थिति भी।

यहां इलाज की जो चिकित्सा पद्धति हुआ करती थी, वह आत्म-शिक्षा की एक विधि बन जाती है, और इस तरह हमारे मनोविज्ञान का क्षितिज अचानक अप्रत्याशित सीमा तक फैल जाता है। यह अब डॉक्टर का डिप्लोमा नहीं है जो निर्णायक है, बल्कि मानवीय गुण हैं। ऐसा मोड़ अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह आत्मा को ठीक करने की कला के लिए साधन प्रदान करता है, जो बीमारों के साथ निरंतर अभ्यास में विकसित, परिष्कृत और व्यवस्थित है और जो आत्म-शिक्षा और आत्म-सुधार की सेवा बन गई है। इस तरह विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान ने जो बेड़ियों को जकड़ रखा था उसे तोड़ देता है उसे पहले डॉक्टर के परामर्श कक्ष में। यह अपने आप पर कदम रखता है और उन विशाल अंतरालों को भरता है जो पहले पूर्वी लोगों की तुलना में पश्चिमी यूरोपीय संस्कृतियों की हीनता की गवाही देते थे। हम केवल आत्मा की अधीनता और शांति को जानते थे, लेकिन आत्मा और उसके कार्यों के व्यवस्थित विकास को नहीं। आखिरकार, हमारी संस्कृति अभी

भी युवा है, और युवा संस्कृतियों को कम से कम कुछ हद तक जंगली और बर्बर सब कुछ विनियमित करने के लिए सभी कलाओं की आवश्यकता होती है, जो बिना लड़ाई के अपने पदों को छोड़ने का इरादा नहीं रखता है। हालांकि, संस्कृति के उच्च स्तर पर, विकास को जबरदस्ती की जगह लेनी चाहिए और होगी। इसके लिए एक पथ, एक विधि की आवश्यकता है, जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है, हमारे पास अभी भी कमी है। मुझे ऐसा लगता है कि विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान का ज्ञान और अनुभव कम से कम इसके लिए एक आधार के रूप में काम कर सकता है, क्योंकि जहां चिकित्सा मनोविज्ञान शुरू में डॉक्टर को अध्ययन के विषय के रूप में लेता है, वह तुरंत रोगी के इलाज का एक सरल तरीका बन जाता है। वह अब उन लोगों के साथ व्यवहार करती है जो स्वस्थ हैं, या कम से कम उन लोगों के साथ जो मानसिक स्वास्थ्य का दावा करते हैं, और उन लोगों के साथ भी जो उन्हें पीड़ा देते हैं। इसलिए, ऐसा मनोविज्ञान पिछले चरणों की तुलना में कहीं अधिक सामान्य संपत्ति बनने का दावा करता है, जिनमें से प्रत्येक अपने आप में पहले से ही कुछ सामान्य सत्य का वाहक है। हालाँकि, इस दावे और आज की वास्तविकता के बीच अभी भी एक खाई है कि कोई भी पुल उस पार नहीं जाता है। इसे पत्थर से पत्थर बनाया जाना चाहिए।

फ्रायड और जंग के बीच विरोधाभास

फ्रायड और मेरे अपने विचारों के बीच के अंतर को किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा लिखा जाना चाहिए जो "फ्रायड" और "जंग" कहे जाने वाले विचारों के प्रभाव के क्षेत्र से बाहर, बाहर खड़ा हो। मुझे नहीं पता कि मैं अपनी निष्पक्षता पर भरोसा कर सकता हूँ या नहीं और यह मुझे अपने विचारों के बारे में भी कितनी निष्पक्षता से बात करने की अनुमति देगा। क्या यह संभव भी है? मुझे शक है। और अगर कोई इस मुनचौसेनियन चाल को करने में सफल होता है, तो मैं तर्क देने के लिए तैयार हूँ कि उसके विचार, अंत में, उसके नहीं थे।

बेशक, जिन विचारों के कई अनुयायी हैं, वे उनके तथाकथित निर्माता से संबंधित नहीं हैं; अधिक हद तक, वह स्वयं अपने विचार के बंधन में है। आकर्षक, या तथाकथित सत्य, विचारों में कुछ विशेष होता है: वे अपने मूल को अविनाशी, हमेशा-मौजूदा, मातृ प्रथम कारणों के लिए देते हैं, जिससे व्यक्ति की अल्पकालिक भावना एक पौधे की तरह बढ़ती है जो खिलता है, फल और बीज देता है, मुरझा जाता है मन। चिढ़ विचारों की उत्पत्ति व्यक्ति से बड़ी किसी चीज़ से होती है। हम उन्हें नहीं बनाते हैं; इसके विपरीत, हम उनके द्वारा बनाए गए हैं।

एक ओर, विचार अपरिहार्य मान्यता है कि न केवल हम में सर्वोच्च, बल्कि हमारी अपूर्णता और हमारी व्यक्तिगत तुच्छता भी दिन के उजाले में फूटती है। विचार निरपेक्ष हैं, वे मनोविज्ञान से ऊपर हैं! वे व्यक्तिपरक से नहीं तो और कहां से आ सकते हैं? क्या अनुभव हमें व्यक्तिपरक पूर्वाग्रह से बचा सकता है? क्या सभी अनुभव, यहां तक कि अपने सर्वोत्तम स्तर पर भी, कम से कम आधा व्यक्तिपरक व्याख्या नहीं है? दूसरी ओर, हालांकि, विषय भी एक उद्देश्य दिया गया है, दुनिया का एक कण, और जो उससे निकलता है, अंत में, दुनिया की नींव से निकलता है, क्योंकि यहां तक कि सबसे दुर्लभ और सबसे अविश्वसनीय जीव भी सहन करता है और हम सभी के लिए सामान्य पृथ्वी का पोषण करता है। यह वास्तव में सबसे व्यक्तिपरक विचार हैं जो प्रकृति और सार के सबसे करीब हैं, और इसलिए उन्हें सबसे सत्य भी कहा जा सकता है। लेकिन "सच्चाई क्या है"?

मनोविज्ञान में, मैं सबसे पहले इस विचार को छोड़ दूंगा कि हम आधुनिक लोग आम तौर पर आत्मा के सार के बारे में कुछ भी "सत्य" या "सही" कहने की स्थिति में हैं। हम जो सबसे अच्छा कर सकते हैं वह है सच बोलना। "सच्चाई से व्यक्त करना" का अर्थ है विषयगत रूप से समझना और विवरण देना। एक दिए गए को आकार देने पर जोर देगा और इसलिए खुद को उसके दिए गए निर्माता पर विचार करेगा, दूसरा *चिंतन पर जोर देगा*, और इसलिए जो *प्रकट होता है, उसके बारे में बात करेगा*, जबकि वह खुद को एक बोधगम्य प्राणी के रूप में जानता है। सच्चाई शायद बीच में है: सच्ची अभिव्यक्ति

रचनात्मक चिंतन है ।

मनोवैज्ञानिकों के सबसे महत्वाकांक्षी ढोंग भी दावा कर सकता है। हमारा मनोविज्ञान कुछ लोगों का कमोबेश सुव्यवस्थित ज्ञान है, लेकिन चूंकि ये लोग पर्याप्त रूप से विशिष्ट हैं, ऐसे ज्ञान का उपयोग कई अन्य लोगों के पूर्ण विवरण का वर्णन करने के लिए भी किया जा सकता है। हालांकि, जो दूसरे प्रकार की खोज करते हैं वे भी मानव जाति के हैं, और इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि वे भी, हालांकि कुछ हद तक इस ज्ञान से प्रभावित हैं। फ्रायड कामुकता की भूमिका के बारे में क्या कहता है, शिशु सुख के बारे में और "वास्तविकता सिद्धांत" के साथ इसके संघर्ष के बारे में, अनाचार और उसी संघर्ष के बारे में - यह सब सबसे पहले, उनके व्यक्तिगत मनोविज्ञान की सबसे सटीक अभिव्यक्ति है। यह विषयगत रूप से दी गई एक अच्छी तरह से बनाई गई अभिव्यक्ति है। मैं फ्रायड का विरोधी नहीं हूँ, हालांकि उनकी अपनी अदूरदर्शिता और उनके छात्रों की अदूरदर्शिता मुझ पर ऐसा कलंक लगाना चाहती है। कोई भी अनुभवी आत्मा मरहम लगाने वाला इस बात से इनकार नहीं कर सकता कि कम से कम ऐसे दर्जनों मामले हैं जिनमें मनोविज्ञान सभी मुख्य बिंदुओं पर फ्रायड से सहमत है। इसलिए, यह अपने व्यक्तिपरक ज्ञान के माध्यम से था कि फ्रायड ने एक महान मानव सत्य के जन्म में योगदान दिया। वह स्वयं अपने मनोविज्ञान का एक स्पष्ट उदाहरण हैं और उन्होंने अपना जीवन और कार्य इस कार्य के लिए समर्पित कर दिया।

आदमी खुद क्या है, वही देखता है। और चूंकि अलग-अलग लोगों का मानसिक संगठन अलग-अलग होता है, इसलिए वे अलग-अलग तरह से देखते हैं और अलग-अलग चीजें व्यक्त करते हैं। और यह किसी और के सामने फ्रायड के शुरुआती छात्रों में से एक, अल्फ्रेड एडलर द्वारा प्रदर्शित किया गया था; उन्होंने एक ही प्रयोगात्मक सामग्री को पूरी तरह से अलग दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया, और चीजों को देखने का उनका तरीका कम से कम फ्रायड के रूप में आश्चर्य करने वाला है, क्योंकि एडलर स्वयं एक प्रकार के मनोविज्ञान का प्रतिनिधित्व करता है जो कि काफी सामान्य भी है। इन दोनों विद्यालयों के प्रतिनिधि, जैसा कि मैं जानता हूँ, निःसंदेह मुझे गलत मानते हैं, लेकिन मुझे विश्वास है कि इतिहास और सभी खुले विचारों वाले लोग मेरी सहीता को पहचानेंगे। मनुष्य को उसके दोषों और विकृति के दृष्टिकोण से देखने की अत्यधिक प्रवृत्ति के लिए मैं दोनों स्कूलों को फटकारने में विफल नहीं हो सकता। इसका एक सम्मोहक उदाहरण फ्रायड की धार्मिक अनुभव को समझने में असमर्थता है (सीपी : एफ आर और तुम घ . मरना जुकुन्फटेनर भ्रम । - प्रामाणिक),

इसके विपरीत, मैं एक व्यक्ति को उसके स्वास्थ्य के संदर्भ में समझना पसंद करता हूँ और यहां तक कि फ्रायड के कार्यों के प्रत्येक पृष्ठ पर निर्धारित मनोविज्ञान से बीमारों को मुक्त करने का प्रयास करता हूँ। मुझे ऐसे किसी भी मामले की जानकारी नहीं है जहां

फ्रायड किसी भी तरह से अपने स्वयं के मनोविज्ञान की सीमाओं से परे जाकर अपने रोगी को उस बीमारी से बचाए जिससे, इसके अलावा, डॉक्टर खुद पीड़ित है। उनका मनोविज्ञान एक निश्चित सिक्के की विक्षिप्त अवस्था का मनोविज्ञान है, और इसलिए यह वास्तव में केवल संबंधित अवस्था की सीमा के भीतर ही सच है। इन सीमाओं के भीतर, फ्रायड सही और कानूनी है - भले ही वह गलत हो। इसके लिए भी बड़ी तस्वीर के अंतर्गत आता है, और इसलिए अपने धर्म के साथ काफी संगत है। लेकिन ऐसा मनोविज्ञान, जो भी आधारित है - और यह रुग्णता का एक लक्षण है - एक अनियंत्रित, अचेतन विश्वदृष्टि पर, जो अनुभव और दृष्टि के क्षितिज को महत्वपूर्ण रूप से संकीर्ण करता है - ऐसा मनोविज्ञान स्वस्थ लोगों का मनोविज्ञान नहीं हो सकता है। फ्रायड कई मायनों में गलत थे जब उन्होंने दर्शनशास्त्र को त्याग दिया। वह कभी भी अपनी धारणाओं की आलोचना नहीं करता, ठीक उसी तरह जैसे उसने कभी अपने स्वयं के मनोवैज्ञानिक आधार की आलोचना नहीं की। मेरे पिछले तर्क के आलोक में, इसे एक आवश्यकता के रूप में आसानी से समझा जा सकता है; आखिरकार, उनके अपने पदों की आलोचना शायद उन्हें भोलेपन से अवसर से वंचित कर देगी (तुलना करें: फ्रायड , डाई ट्रौमदेउटुंग । - प्रामाणिक।) अपनी मूल मनोवैज्ञानिक-प्रणाली को बताने के लिए। किसी भी मामले में, मुझे लगता है, इसके लिए उसे बहुत काम करना पड़ेगा। मैंने कभी भी आलोचनात्मक दर्शन के कड़वे पेय की उपेक्षा नहीं की है और विवेकपूर्ण ढंग से इसे लिया है, कम से कम अपवर्तन में खुराक (छोटी खुराक (अव्य। - अनुवाद।)। बहुत कम , मेरे विरोधी कहेंगे। बहुत अधिक , मेरी अपनी भावना कहती है। आसानी से, बहुत आसानी से, आत्म-आलोचना भोलेपन की परिष्कृत दया से जहर है, वह उपहार जो है हर रचनात्मक व्यक्ति के लिए इतना आवश्यक । किसी भी मामले में, दार्शनिक आलोचना ने मुझे किसी भी मनोविज्ञान के ज्ञान की व्यक्तिपरक प्रकृति को देखने में मदद की , जिसमें मेरा भी शामिल है। हालांकि, मुझे अपनी आलोचना को अपनी खुद की औपचारिकता से वंचित करने के लिए मना करना चाहिए। और हालांकि मुझे पता है कि मेरे द्वारा बोले जाने वाले प्रत्येक शब्द के पीछे मेरा विशेष और अपनी विशिष्ट दुनिया और इतिहास के साथ एक तरह का स्वयं है, मैं अभी भी तथाकथित प्रयोगात्मक सामग्री के भीतर अपने आप से बोलने की आवश्यकता का पालन करूंगा। ऐसा करके, मैं केवल लक्ष्य की सेवा करता हूं मानव ज्ञान, जिसे फ्रायड भी सेवा करना चाहता था और जिसे उसने सब कुछ होते हुए भी परोसा। ज्ञान न केवल सत्य पर, बल्कि त्रुटि पर भी आधारित है।

किसी भी मनोविज्ञान के व्यक्तिपरक चरित्र को समझना शायद विशिष्ट विशेषता है जो मुझे फ्रायड से सबसे गंभीर रूप से अलग करती है।

एक और विशिष्ट विशेषता मुझे यह तथ्य प्रतीत होती है कि मैं बेहोश नहीं होने की कोशिश करता हूं और इसके परिणामस्वरूप, विश्वदृष्टि के लिए प्रस्थान के गैर-महत्वपूर्ण

बिंदु। मैं कहता हूँ "कोशिश" क्योंकि कौन निश्चित रूप से जानता है कि उसके पास बेहोश प्रारंभिक परिसर नहीं है? कम से कम मैं घोर पूर्वधारणाओं से बचने की कोशिश करता हूँ और इसलिए मैं सभी संभावित देवताओं को पहचानने के लिए इच्छुक हूँ, यह मानने के लिए कि वे सभी मानव आत्मा में स्वयं को प्रकट करते हैं। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि प्राकृतिक प्रवृत्ति, चाहे एरोस हो या शक्ति की लालसा, मानसिक क्षेत्र में खुद को बड़ी ताकत के साथ दिखाती है; मुझे इसमें संदेह भी नहीं है कि ये वृत्ति *आत्मा के विरोध में हैं*, क्योंकि वे हमेशा किसी चीज़ के विरोध में रहती हैं, और फिर इस चीज़ को "आत्मा" क्यों नहीं कहा जा सकता है? जितना कम मुझे पता है कि "आत्मा" अपने आप में क्या है, उतना ही कम मुझे पता है कि "वृत्ति" क्या हैं। एक मेरे लिए उतना ही रहस्यमय है जितना कि दूसरा, और मैं दोनों में से एक को गलतफहमी के रूप में घोषित करने में असमर्थ हूँ; इस तथ्य के लिए कि पृथ्वी में केवल एक चंद्रमा है, कोई गलतफहमी नहीं है: प्रकृति में कोई गलतफहमी नहीं है, वे केवल उस क्षेत्र में मौजूद हैं जिसे मनुष्य "कारण" कहता है। किसी भी मामले में, वृत्ति और आत्मा मेरी समझ से परे हैं; ये सभी अवधारणाएँ हैं जिनका उपयोग हम अज्ञात के लिए करते हैं, लेकिन शक्तिशाली रूप से अभिनय करते हैं।

इसलिए सभी धर्मों के प्रति मेरा दृष्टिकोण सकारात्मक है। उनकी शिक्षाओं की सामग्री में मैं अपने मरीजों के सपनों और कल्पनाओं में मिलने वाले आंकड़ों को फिर से पहचानता हूँ। उनकी नैतिकता में मुझे ऐसा ही एक प्रयास दिखाई देता है जिसके द्वारा मेरे रोगी सहज रूप से अपनी आत्मा की शक्तियों से निपटने का सही तरीका खोजने का प्रयास करते हैं। *पवित्र कर्म*, कर्मकांड, दीक्षा और तपस्या मेरे लिए प्लास्टिक और सही मार्ग बनाने की विविध तकनीकों के रूप में बेहद दिलचस्प हैं। जीव विज्ञान के प्रति और सामान्य तौर पर, सभी प्राकृतिक-वैज्ञानिक अनुभववाद के प्रति मेरा दृष्टिकोण जितना सकारात्मक है, जो मुझे बाहर से आत्मा को गले लगाने का एक शक्तिशाली प्रयास लगता है, और इसके विपरीत, धार्मिक सूक्ति मुझे उतना ही विशाल प्रयास लगता है मानव आत्मा इसे भीतर से जानने के लिए। संसार के मेरे चित्र में एक विशाल बाह्य और समान रूप से विशाल आंतरिक है, और उनके बीच एक व्यक्ति है जो एक या दूसरे ध्रुव की ओर मुड़ा हुआ है, ताकि स्वभाव और झुकाव के आधार पर, एक या दूसरे को निरपेक्ष माना जाए सत्य, और इस पर निर्भर करते हुए एक को दूसरे के लिए नकारना, या उस दूसरे के लिए पूर्व का बलिदान करना।

यह तस्वीर, निश्चित रूप से, एक धारणा है, लेकिन एक जिससे मैं विचलित होने का इरादा नहीं रखता, क्योंकि यह मेरे लिए एक परिकल्पना के रूप में बहुत मूल्यवान है। मुझे इस धारणा के लिए अनुमानी और अनुभवजन्य दोनों समर्थन मिलते हैं, और सर्वसम्मति से जेंटियम (सभी की सहमति (अव्य।)। - अनुवाद।) यह मेरे लिए आम तौर पर निर्विवाद है। इस परिकल्पना से, जिसका स्रोत निस्संदेह स्वयं है, मेरे प्रकार के सिद्धांत उत्पन्न हुए हैं -

भले ही मैं कल्पना करता हूँ कि मैंने इसे अनुभव से प्राप्त किया है - और अलग-अलग दृष्टिकोणों के साथ मेरा सामंजस्य भी, उदाहरण के लिए, उसी फ्रायड के साथ .

मानसिक ऊर्जा के बारे में मेरा विचार भी दुनिया की एक विरोधाभासी तस्वीर के विचार पर आधारित है, जो कि एक भौतिक घटना की ऊर्जा की तरह विपरीतों की बातचीत से पैदा होना चाहिए, जो गर्म जैसे विरोध के अस्तित्व का सुझाव देता है। - ठंडा , उच्च - निम्न, आदि। यदि शुरुआत में फ्रायड के लिए कामुकता लगभग एकमात्र मानसिक सहज शक्ति थी, और मेरे अलग होने के बाद ही उन्होंने अन्य कारकों को ध्यान में रखना शुरू किया, तो मैं कमोबेश ऊर्जा की अवधारणा को स्वीकार करता हूँ। हॉक (इसके लिए, एक निश्चित अवसर के लिए (अव्यय। - अनुवाद।)) सामान्य ऊर्जा मनोविज्ञान के मनमाने प्रावधानों को बाहर करने के लिए निर्मित आत्मा आग्रह या बल , जिससे दूर होना लगभग असंभव है। इसलिए, मैं अब ताकतों या व्यक्तिगत ड्राइव की बात नहीं करता; अब मैं "मूल्य तीव्रता" के बारे में बात कर रहा हूँ (cf. *Uber* मानसिक अरिनबर्ग -und दास वेसेना डीईआर आघात। - प्रामाणिक।) लेकिन यह मानसिक घटनाओं में कामुकता के महत्व को नकारता नहीं है, क्योंकि फ्रायड मुझे हठपूर्वक बताता है। कामुकता की शब्दावली के साथ आत्मा की बाढ़ को बस बांध दिया जाना चाहिए, और कामुकता को ही उसके उचित स्थान पर रखा जाना चाहिए।

आखिरकार, यह है - और कोई भी समझदार व्यक्ति इससे इनकार नहीं करेगा - केवल जैविक प्रवृत्ति में से एक, केवल मनो -शारीरिक कार्यों में से एक , भले ही बहुत महत्वपूर्ण और परिणामों में समृद्ध हो। लेकिन, उदाहरण के लिए, अगर हम खाना बंद कर दें तो क्या होगा? निस्संदेह वर्तमान समय में कामुकता से संबंधित मानसिक क्षेत्र बहुत परेशान है, लेकिन अगर एक दांत भी इतना परेशान कर सकता है, तो समग्र रूप से आत्मा की तुलना रोगग्रस्त दांतों से भरे जबड़े से की जा सकती है। फ्रायड द्वारा वर्णित कामुकता का प्रकार निस्संदेह एक यौन जुनून है जो तब होता है जब रोगी को अनुपयुक्त स्थिति या दृष्टिकोण से लुभाने या धकेलने की आवश्यकता होती है। यह एक प्रकार की स्थिर-कामुकता है जो विकास का रास्ता साफ होते ही सामान्य अनुपात में वापस आ जाती है। अक्सर यह तथाकथित "पारिवारिक रोमांस" की भावनात्मक झुंझलाहट में, आक्रोश की पारिवारिक भावना में फंस जाता है, जिससे महत्वपूर्ण ऊर्जा का नुकसान होता है, जो कि ठहराव है जो अनिवार्य रूप से खुद को इस तरह के रूप में प्रकट करता है। -कहा जाता है और शिशु कामुकता। इस मामले में, हम मूल प्राकृतिक कामुकता के बारे में बात नहीं कर रहे हैं, बल्कि तनाव के अप्राकृतिक बहिर्वाह के बारे में बात कर रहे हैं जो जीवन के किसी अन्य क्षेत्र में अपनी जगह पर होता। फिर इस बाढ़ वाले क्षेत्र में क्यों तैरना चाहिए? आखिरकार, यह बहुत अधिक महत्वपूर्ण है - कम से कम यह एक सीधा दिमाग लगता है - सीवर खोलने के लिए , यानी उन संभावनाओं या प्रतिष्ठानों को खोजने के लिए जो ऊर्जा

की रिहाई सुनिश्चित करेंगे, अन्यथा एक सर्कुलस से ज्यादा कुछ नहीं होगा। viteosus (दुष्चक्र (अव्य। - पहले), जैसा कि फ्रायडियन मनोविज्ञान मुझे लगता है। इसके पास जैविक घटनाओं के दयनीय जुए से खुद को मुक्त करने का कोई तरीका नहीं है। हताश, हमें पॉल के साथ कहना चाहिए: "मैं एक गरीब आदमी हूँ, जो होगा मुझे इस मौत के बोझ से छुड़ाओ? और हमारे आध्यात्मिक आदमी, अपना सिर हिलाते हुए, फॉस्ट के साथ कहते हैं: "आप केवल आकर्षण के निचले हिस्से के बारे में जानते हैं," यानी शारीरिक बेड़ियां जो पिता और माता की ओर वापस जाती हैं या आगे बढ़ती हैं जो बच्चे हमारे शरीर से आए हैं - अतीत के साथ "अनाचार" और भविष्य के साथ "अनाचार", "पारिवारिक रोमांस" को बनाए रखने का वंशानुगत पाप। दुनिया की घटनाएं; मांस के बच्चे नहीं, बल्कि "भगवान के बच्चे" स्वतंत्रता का अनुभव करते हैं। अर्न्स्ट बारलाच के द डे ऑफ द टोटेम में, राक्षसी मां एक पारिवारिक रोमांस के दुखद अंत में कहती है: "एकमात्र आश्चर्य है वह आदमी भगवान को अपने पिता के रूप में नहीं पहचानना चाहता। "यह वही है जो फ्रायड कभी नहीं चाहता था" स्वीकार करने के लिए, और इसका उसके सभी सहयोगी विरोध करते हैं, या कम से कम वे इसकी कुंजी नहीं खोज सकते। धर्मशास्त्र साधकों से नहीं मिलता, क्योंकि इसके लिए विश्वास की आवश्यकता होती है, जो बदले में एक लंबा और सच्चा करिश्मा है, जिसे कोई भी अपने लिए नहीं बना सकता है। हम, आधुनिक लोग, आत्मा को फिर से अनुभव करने के लिए मजबूर हैं, यानी पिछले अनुभव में महारत हासिल करने के लिए। जैविक घटनाओं के दुष्चक्र को तोड़ने का यही एकमात्र तरीका है।

यह प्रावधान तीसरा बिंदु है जो मेरे दृष्टिकोण को फ्रायड के विचारों से अलग करता है। इस वजह से, मुझ पर अक्सर रहस्यवाद का आरोप लगाया जाता है। लेकिन मैं इस तथ्य के लिए खुद को जिम्मेदार नहीं मानता कि मनुष्य ने हमेशा और हर जगह धार्मिक कार्य को स्वाभाविक रूप से विकसित किया है और इसलिए मानव आत्मा लंबे समय से धार्मिक भावनाओं और विचारों से आच्छादित और व्याप्त है। जो मनुष्य की आत्मा के इस पहलू को नहीं देखता है, उसे कुछ भी दिखाई नहीं देता है, और जो इसे पूरी तरह से समझाने या समझाने की कोशिश करता है, उसे वास्तविकता की भावना का अभाव होता है। या क्या पिता का परिसर, जो सिर से पांव तक पूरे फ्रायडियन स्कूल में व्याप्त है, यह साबित करता है कि पारिवारिक रोमांस की घातकता से उल्लेखनीय मुक्ति मिली है? यह-फादर कॉम्प्लेक्स, अपनी कट्टर कठोरता और बहुत अधिक संवेदनशीलता के साथ, एक अतुलनीय धार्मिक कार्य है, एक रहस्यवाद जिसने जैविक और पारिवारिक पर कब्जा कर लिया है। "सुपररेगो" की अपनी अवधारणा के साथ फ्रायड अपने मनोवैज्ञानिक सिद्धांत में अय्यूब की प्राचीन छवि को निचोड़ने का एक डरपोक प्रयास करता है। ऐसी बातों के बारे में स्पष्ट रूप से बोलना बेहतर है। इसलिए, मैं चीजों को उन नामों से बुलाना पसंद करता हूँ जिन्हें वे हमेशा से बुलाए गए हैं।

इतिहास का पहिया वापस नहीं किया जा सकता है, और आध्यात्मिकता की ओर मानवता के कदम, जो आदिम दीक्षाओं के साथ शुरू हुआ, को नकारा नहीं जाना चाहिए। बेशक, विज्ञान न केवल सीमित परिकल्पनाओं के साथ विशेष क्षेत्रों का निर्माण कर सकता है, बल्कि इसे बनाना चाहिए; हालाँकि, आत्मा चेतना की तुलना में एक उच्च अखंडता है, एक माँ है और चेतना के लिए एक पूर्व शर्त है, इसलिए विज्ञान भी इसके अंतर्निहित कार्यों में से एक है, जो कभी भी अपने जीवन की पूर्णता को समाप्त नहीं करेगा। आत्मा के मरहम लगाने वाले को विकृति विज्ञान के कोने के पीछे नहीं छिपना चाहिए और इस समझ के लिए अनुचित रूप से बहरा होना चाहिए कि एक बीमार आत्मा भी अभी भी मानव है और अपनी बीमारी के बावजूद, यह अभी भी अनजाने में मानव जीवन की सार्वभौमिकता में भाग लेती है। इसके अलावा, उसे यह भी पहचानने में सक्षम होना चाहिए कि "मैं" न केवल सामान्य से अलग होने के कारण, और इसलिए मानवता से, बल्कि आध्यात्मिकता के नुकसान के कारण भी पीड़ित है। "मैं" वास्तव में "भय का केंद्र" है, जैसा कि फ्रायड ने ठीक ही कहा है (दासो आईसीएच -und दास उदा . - प्रामाणिक।), अर्थात्, जब तक कि वह फिर से पिता और माता के पास वापस न आ जाए। फ्रायड निकोडेमस के प्रश्न से टूट गया है: "क्या वह वास्तव में अपनी मां के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश कर सकता है और जन्म ले सकता है?" (

हेब। जॉन: 3,4। - अनुवाद।) इतिहास खुद को दोहराता है - हॉ लाइसेंस पर्व लिखें मैग्निस () - आधुनिक मनोविज्ञान के घरेलू विवाद के रूप में।

प्राचीन काल से ही दीक्षाएं अध्यात्म से जन्म की शिक्षा देती रही हैं , और मनुष्य आश्चर्यजनक रूप से बार-बार ईश्वरीय धारणा को भूल जाता है। इस तरह की विस्मृति मन की किसी विशेष शक्ति का संकेत नहीं देती है, इसके अलावा, इसके परिणाम विक्षिप्त अविकसितता, क्रोध, रुचियों की संकीर्णता, शून्यता में व्यक्त किए जाते हैं। आत्मा से छुटकारा पाना मुश्किल नहीं है, लेकिन सूप में नमक नहीं होगा, "पृथ्वी का नमक।" आखिरकार, आत्मा बार-बार अपनी ताकत साबित करती है कि पूर्वजों की सबसे महत्वपूर्ण शिक्षाओं और दीक्षाओं को पीढ़ी से पीढ़ी तक प्रेषित किया जाता है। बार-बार ऐसे लोग हैं जो ईश्वर को अपने पिता के रूप में रखने का अर्थ समझते हैं। भौतिक और आध्यात्मिक का संतुलन आत्मा के क्षेत्र को अक्षुण्ण छोड़ देता है।

फ्रायड और मेरे बीच के अंतर्विरोध मुख्यतः मौलिक पूर्वधारणाओं में अंतर पर आधारित हैं। लेकिन प्रारंभिक प्रावधान अपरिहार्य हैं, और चूंकि ऐसा है, इसलिए यह ढोंग करने की कोई आवश्यकता नहीं है कि उनका अस्तित्व ही नहीं था। मैंने यहां, सबसे पहले, हमारी स्थिति के मूलभूत पहलुओं पर प्रकाश डाला है, क्योंकि, उनके आधार पर, मेरे और फ्रायड के दृष्टिकोणों के बीच सभी विशेष अंतरों को समझना आसान है।

मनोवैज्ञानिक टाइपोलॉजी

चरित्र मानव अस्तित्व का एक स्थिर व्यक्तिगत रूप है, और शारीरिक और मानसिक प्रकृति दोनों का रूप है। इसलिए, सामान्य लक्षण विज्ञान शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार के संकेतों का सिद्धांत है। एक जीवित प्राणी की अकथनीय एकता यही कारण है कि एक भौतिक संकेत सिर्फ एक भौतिक नहीं है, और एक मानसिक सिर्फ एक आध्यात्मिक नहीं है, क्योंकि प्रकृति की निरंतरता उन असंगतियों और अंतरालों को नहीं जानती है जो मानव मन को होती है कुछ भी जानने में सक्षम होने के लिए दूर। आत्मा से शरीर का अलग होना एक कृत्रिम क्रिया है, विवेक है, जो निस्संदेह, चीजों के सार की तुलना में जानने वाले मन की खासियत पर अधिक आधारित है। वास्तव में, शारीरिक और मानसिक विशेषताओं की पारस्परिक पैठ इतनी गहरी है कि हम न केवल शरीर के गुणों से आत्मा के गुणों के बारे में दूरगामी निष्कर्ष निकाल सकते हैं, बल्कि हम शरीर के गुणों से भी संबंधित शारीरिक रूपों का न्याय कर सकते हैं। आत्मा। उत्तरार्द्ध, निश्चित रूप से, हमारे द्वारा अतुलनीय रूप से अधिक प्रयासों की आवश्यकता होगी, लेकिन, शायद, इसलिए नहीं कि आत्मा का शरीर पर शरीर की तुलना में आत्मा पर कम प्रभाव पड़ता है, बल्कि इसलिए कि अगर हम आत्मा से शुरू करते हैं, तो हमें आकर्षित करना होगा ज्ञात के बारे में अज्ञात से निष्कर्ष, जबकि अन्यथा हमें फायदा होता है, क्योंकि यहां हम ज्ञात से शुरू कर सकते हैं, यानी शरीर से हम देखते हैं। मनोवैज्ञानिक सिद्धांत के विपरीत, जो आज हमारे पास माना जाता है, आत्मा अभी भी शरीर की दृश्य सतह की तुलना में बहुत अधिक अनंत और गहरा है। आत्मा अभी भी एक विदेशी, बेरोज़गार देश है, जहाँ से हम केवल अप्रत्यक्ष समाचार प्राप्त करते हैं, जो सभी प्रकार के भ्रमों के अधीन चेतना के कार्यों के माध्यम से प्रेषित होता है,

इसलिए, बाहरी से आंतरिक तक, ज्ञात से अज्ञात तक, शरीर से आत्मा तक का मार्ग सुरक्षित लगता है। इसलिए, चरित्र निर्माण के सभी प्रयास बाहर से शुरू हुए। इनमें पूर्वजों के ऐसे तरीके शामिल हैं, उदाहरण के लिए, ज्योतिष, जो कि भाग्य की उन पंक्तियों को समझने के लिए सितारों की ओर मुड़ गया, जिसकी शुरुआत, सेन्या वालेंस्टीन के अनुसार, स्वयं व्यक्ति में होती है, साथ ही हस्तरेखा विज्ञान, गैल की फ्रेनोलॉजी और लैवेटर की फिजियोलॉजी। इस तरह के हाल के प्रयासों को ग्राफोलॉजी, क्रेट्चमर की शारीरिक टाइपोलॉजी और रोर्शच की स्याही धब्बा विधि द्वारा दर्शाया गया है। जैसा कि आप देख सकते हैं, बाहरी से आंतरिक तक, शरीर से आत्मा तक के रास्ते काफी हैं।

बाहरी से भीतर की ओर यह दिशा जांच का एक मार्ग होना चाहिए जब तक कि मन की कुछ प्रारंभिक अवस्थाएँ पर्याप्त निश्चितता के साथ स्थापित नहीं हो जातीं। लेकिन एक बार ऐसा हो जाने पर रास्ता उल्टा हो सकता है। तब हम प्रश्न पूछ सकते हैं: मन की

एक विशेष अवस्था की शारीरिक अभिव्यक्ति क्या है? दुर्भाग्य से, हम अभी तक इस क्षेत्र में इतना आगे नहीं बढ़े हैं कि इस प्रश्न को बिल्कुल भी छू सकें, क्योंकि मूल शर्त, अर्थात् मन की स्थिति का एक संतोषजनक कथन, अभी भी पूरा होने से बहुत दूर है। इसके अलावा, हमने अभी-अभी मानसिक सूची की व्यवस्था का अभ्यास करना शुरू किया है, और फिर भी हमेशा सफलतापूर्वक नहीं।

केवल यह कहना कि कुछ लोग आप जैसे या उस तरह दिखते हैं, इसका कोई मतलब नहीं होगा यदि यह हमें प्रासंगिक सामग्री का अनुमान लगाने की अनुमति नहीं देता है। हम तभी संतुष्ट होंगे जब हमें पता चलेगा कि किस तरह की आत्मा कुछ भौतिक गुणों से मेल खाती है। आत्मा के बिना शरीर हमें कुछ नहीं बताता, जैसे - आत्मा के दृष्टिकोण को लें - शरीर के बिना आत्मा का कोई मतलब नहीं हो सकता। यदि हम अब किसी भौतिक गुण के आधार पर उसके अनुरूप आध्यात्मिक गुण का न्याय करने जा रहे हैं, तो हम ऐसा करते हैं, जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है, अज्ञात के बारे में ज्ञात के अनुसार।

दुर्भाग्य से, मैं इस विचार पर जोर देने के लिए मजबूर हूँ, क्योंकि मनोविज्ञान सभी विज्ञानों में सबसे छोटा है और इसलिए पूर्वाग्रहों की चपेट में है। तथ्य यह है कि, वास्तव में, हाल ही में मनोविज्ञान की खोज की गई थी, यह प्रत्यक्ष प्रमाण है कि हमें मानसिक को विषय से अलग करने में बहुत समय लगा और इस प्रकार इसे वस्तुनिष्ठ ज्ञान की वस्तु के रूप में अलग कर दिया। एक प्राकृतिक विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान वास्तव में सबसे हाल के समय का अधिग्रहण है, क्योंकि अब तक यह मध्ययुगीन प्राकृतिक विज्ञान की तरह ही मनमानी का एक शानदार उत्पाद रहा है। यह माना जाता था कि मनोविज्ञान को नियंत्रित किया जा सकता है। और यह पूर्वाग्रह स्पष्ट रूप से हमारा पीछा करता है। आखिरकार, हमारे लिए आध्यात्मिक कुछ सबसे तात्कालिक है, और इसलिए यह सबसे परिचित लगता है, परिचित से भी अधिक: यह हमारे चेहरे पर जम्हाई लेता है, यह हमें अपने अंतहीन रोजमर्रा के प्रतिबंध से परेशान करता है, हम भी इससे पीड़ित हैं और इसके बारे में न सोचने के लिए हर संभव प्रयास करें। इस तथ्य के कारण कि आत्मा सबसे तात्कालिक घटना है, क्योंकि हम स्वयं आत्मा हैं, हम शायद ही इसके अलावा कुछ भी मान सकते हैं कि हम इससे गहराई से, पूरी तरह से और लंबे समय से परिचित हैं। इसलिए, मनोविज्ञान के बारे में हर किसी की न केवल अपनी राय है, बल्कि यह भी आश्चर्य है कि वह निश्चित रूप से इसे सबसे अच्छी तरह समझता है। मनोचिकित्सक, जिन्हें अपने रोगियों के रिश्तेदारों और अभिभावकों से लड़ना पड़ता है, जिनकी समझ (रिश्तेदार और अभिभावक) पहले से ही शहर की चर्चा बन गई है, शायद वे पहले लोग थे, जिन्होंने एक पेशेवर समूह के रूप में, जनता में प्रचलित अंध पूर्वाग्रह का सामना किया। कि मनोवैज्ञानिक प्रश्नों में प्रत्येक व्यक्ति किसी और से अधिक समझता है, जो, हालांकि, मनोचिकित्सक को स्वयं इस राय को साझा करने से नहीं रोकता है। और यह इस बिंदु पर

आता है कि उसे यह स्वीकार करने के लिए मजबूर होना पड़ता है: "इस शहर में केवल दो सामान्य लोग हैं। व्यायामशाला में प्रोफेसर वी। - वह दूसरे स्थान पर है।

मनोविज्ञान में, आखिरकार, यह समझने के लिए आवश्यक है कि आत्मा पूरी तरह से अज्ञात है, हालांकि यह बिल्कुल परिचित लगता है, और यह कि हर कोई दूसरे की आत्मा को जानता है, शायद, अपने से बेहतर। किसी भी मामले में, यह शुरू करने के लिए एक बहुत ही उपयोगी अनुमानी होगा। क्योंकि मानसिक घटनाओं की तात्कालिकता के कारण ही मनोविज्ञान की खोज इतनी देर से हुई थी। और चूँकि हम अभी भी केवल विज्ञान के मूल में हैं, इसलिए हमारे पास ऐसी अवधारणाएँ और परिभाषाएँ नहीं हैं जिनकी मदद से हम अपने ज्ञात तथ्यों को कवर कर सकें। पूर्व हमसे अनुपस्थित हैं, बाद वाले (तथ्य) नहीं हैं; इसके अलावा, वे हमें हर तरफ से दबाते हैं, हम उनके साथ भी डूबे हुए हैं, अन्य-विज्ञानों के विपरीत, जो उन्हें देखने के लिए मजबूर हैं, और उनमें से प्राकृतिक समूह, उदाहरण के लिए, रासायनिक तत्व या पौधे परिवार, मध्यस्थता है दृश्य अवधारणा द्वारा हमारे द्वारा a पश्च (अनुभव के आधार पर (अव्य। - अनुवाद।)। काफी अलग, हालांकि, मानस के मामले में है; यहाँ, हमारे अनुभवजन्य-दृश्य दृष्टिकोण के साथ, हम बस अपने व्यक्तिपरक के निरंतर प्रवाह में आते हैं मानसिक घटना, और अगर इस प्रवाह से एक सर्वव्यापी सामान्य अवधारणा अचानक उभरती है, तो यह एक साधारण लक्षण से ज्यादा कुछ नहीं है। चूँकि हम स्वयं आत्मा हैं, इसलिए आत्मा की प्रक्रिया को पूरा करने की अनुमति देते हुए, हम लगभग अनिवार्य रूप से इसमें विलीन हो जाते हैं और इस तरह समझने और तुलना करने की क्षमता खो देते हैं।

यह एक कठिनाई प्रस्तुत करता है; एक और तथ्य यह है कि जैसे-जैसे हम स्थानिक घटना से दूर जाते हैं और आत्मा की अंतरिक्षहीनता की ओर बढ़ते हैं, हम सटीक मात्रात्मक माप की संभावना खो देते हैं। तथ्य बताना भी मुश्किल हो जाता है। उदाहरण के लिए, यदि मैं किसी चीज की अमान्यता पर जोर देना चाहता हूँ, तो मैं कहता हूँ कि मैंने केवल सोचा था, "अगर यह नहीं होता तो मेरे पास ऐसे विचार भी नहीं होते ... और मैंने ऐसा बिल्कुल नहीं सोचा।" इस तरह की टिप्पणियाँ साबित करती हैं कि आत्मा के तथ्य कितने अस्पष्ट हैं, या वे कितने अस्पष्ट व्यक्तिपरक लगते हैं, क्योंकि वे वास्तव में किसी भी अन्य घटना की तरह ही उद्देश्यपूर्ण और निश्चित हैं। "मैंने वास्तव में यह और वह सोचा था, और अब से यह हमेशा मेरे कार्यों में मौजूद रहेगा।" यहां तक कि, कोई कह सकता है, स्व-स्पष्ट मान्यता, कई लोगों को शाब्दिक रूप से आगे बढ़ना चाहिए, कभी-कभी नैतिक शक्ति के एक बड़े तनाव के साथ। जब हम आत्मा की स्थिति के बारे में एक ज्ञात बाहरी घटना से निष्कर्ष निकालते हैं तो इन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

अब से, मेरे शोध का क्षेत्र नैदानिक अवलोकन से, व्यापक अर्थों में, बाहरी संकेतों के अध्ययन और उन सभी मानसिक अवस्थाओं के वर्गीकरण तक सीमित है जिन्हें आम

तौर पर पहचाना और स्थापित किया जा सकता है। इस काम से सबसे पहले एक मानसिक घटना उत्पन्न होती है जो संबंधित संरचनात्मक सिद्धांत के उद्भव को संभव बनाता है, और संरचनात्मक सिद्धांत के अनुभवजन्य अनुप्रयोग से अंत में एक मनोवैज्ञानिक टाइपोलॉजी का अनुसरण करता है।

नैदानिक घटना विज्ञान रोगसूचकता है। रोगसूचकता से मानसिक घटना विज्ञान तक के कदम की तुलना विशुद्ध रूप से रोगसूचक विकृति विज्ञान से कोशिकीय विकृति विज्ञान और चयापचय विकृति विज्ञान के ज्ञान के संक्रमण के साथ की जा सकती है, क्योंकि मानसिक घटना विज्ञान हमें आत्मा की पृष्ठभूमि प्रक्रियाओं को देखने की अनुमति देता है जो उत्पन्न होने वाले लक्षणों को रेखांकित करते हैं। यह आमतौर पर ज्ञात है कि यह विश्लेषणात्मक पद्धति के अनुप्रयोग के कारण संभव हुआ। आज हमें मानसिक प्रक्रियाओं का वास्तविक ज्ञान है जो मनोवैज्ञानिक लक्षण उत्पन्न करते हैं। यह ज्ञान और कुछ नहीं बल्कि संकुलों का सिद्धांत है, जो वास्तव में मानसिक घटना विज्ञान का आधार बन जाता है। जो कुछ भी आत्मा की अंधेरे उप-भूमि में संचालित होता है - बेशक, इस विषय पर विभिन्न राय हैं - कम से कम एक बात निश्चित है: सबसे पहले, ये विशेष भावात्मक सामग्री हैं, तथाकथित कॉम्प्लेक्स, जिनकी एक निश्चित स्वायत्तता है। हम पहले से ही एक से अधिक बार "स्वायत्त परिसर" अभिव्यक्ति में आ चुके हैं, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि इसका अक्सर दुरुपयोग किया जाता है, जबकि अचेतन की कुछ सामग्री वास्तव में ऐसा व्यवहार प्रदर्शित करती है जिसे मैं "स्वायत्त" के अलावा कुछ भी नहीं कह सकता, इस प्रकार उनकी क्षमता पर जोर देता है सचेत इरादों का विरोध करें, जैसे वे चाहें प्रकट और गायब हो जाएं। जैसा कि आप जानते हैं, कॉम्प्लेक्स मुख्य रूप से ऐसी मानसिक मात्राएँ हैं जो चेतना के नियंत्रण से रहित होती हैं। वे इससे अलग हो जाते हैं और आत्मा के अंधेरे क्षेत्र में एक विशेष प्रकार के अस्तित्व का नेतृत्व करते हैं, जहां से वे लगातार चेतना के काम में बाधा डाल सकते हैं या सहायता कर सकते हैं।

परिसरों के सिद्धांत को और गहरा करना हमें लगातार परिसरों के उद्भव की समस्या की ओर ले जाता है। इसको लेकर तरह-तरह की थ्योरी भी हैं। लेकिन जैसा भी हो, अनुभव से पता चलता है कि परिसरों में हमेशा संघर्ष जैसा कुछ होता है, या कम से कम इसका कारण या प्रभाव होता है। किसी भी मामले में, परिसरों को संघर्ष, सदमे, सदमे, अजीबता, असंगति के संकेतों की विशेषता है। ये तथाकथित "पीड़ादायक बिंदु" हैं, फ्रेंच में "बेटेस" नोयर्स", अंग्रेजी में "कंकाल में अलमारी", जिसे आप वास्तव में याद नहीं रखना चाहते हैं और इससे भी कम दूसरों द्वारा याद दिलाना चाहते हैं, लेकिन जो अक्सर सबसे अप्रिय तरीके से आपको खुद की याद दिलाता है। उनमें हमेशा यादें, इच्छाएं, भय, कर्तव्य, आवश्यकताएं या विचार होते हैं जिनसे छुटकारा नहीं पाया जा सकता है, और इसलिए वे लगातार हस्तक्षेप करते हैं और नुकसान पहुंचाते हैं, हमारे सचेत जीवन में

हस्तक्षेप करते हैं।

जाहिर है, कॉम्प्लेक्स व्यापक अर्थों में एक तरह का अधूरा मूल्य है, और मुझे तुरंत ध्यान देना चाहिए कि एक कॉम्प्लेक्स या कॉम्प्लेक्स होने का मतलब हीनता नहीं है। इसका केवल इतना ही अर्थ है कि कुछ असंगत, असम्बद्ध, शायद किसी प्रकार की बाधा भी है, लेकिन यह महान आकांक्षाओं के लिए एक प्रोत्साहन भी है और इसलिए, संभवतः, सफलता का एक नया अवसर भी है। नतीजतन, इस अर्थ में, परिसर वास्तव में मानसिक जीवन के केंद्र या नोडल बिंदु हैं, उन्हें दूर नहीं किया जा सकता है, इसके अलावा, उन्हें उपस्थित होना चाहिए, क्योंकि अन्यथा मानसिक गतिविधि परिणामों से भरा एक ठहराव पर आ जाएगी। लेकिन वे व्यक्ति में अपूर्णता को भी इंगित करते हैं, वह क्षेत्र जहां, कम से कम अभी के लिए, वह पराजित हो गया है, जहां कुछ भी दूर या महारत हासिल नहीं किया जा सकता है; अर्थात्, निस्संदेह, यह शब्द के हर अर्थ में एक कमजोर स्थान है।

परिसर का यह चरित्र काफी हद तक इसकी घटना के कारणों को उजागर करता है। जाहिर है, यह अनुकूलन की आवश्यकता और व्यक्ति की एक विशेष संपत्ति के टकराव के परिणामस्वरूप इस आवश्यकता के संबंध में अनुपयुक्त प्रतीत होता है। इस प्रकार जटिल हमारे लिए एक व्यक्तिगत स्वभाव का नैदानिक रूप से मूल्यवान लक्षण बन जाता है।

पहली नज़र में, ऐसा लगता है कि परिसरों के अनंत प्रकार हैं, लेकिन उनकी सावधानीपूर्वक तुलना से अपेक्षाकृत कम संख्या में बुनियादी रूप मिलते हैं, और वे सभी बचपन के पहले अनुभवों पर आधारित होते हैं। यह वैसा ही है जैसा होना चाहिए, क्योंकि व्यक्तिगत स्वभाव जीवन के दौरान बिल्कुल भी अर्जित नहीं किया जाता है, लेकिन, जन्मजात होने के कारण, बचपन में ही स्पष्ट हो जाता है। इसलिए, माता-पिता का परिसर वास्तविकता और इस अर्थ में अनुपयुक्त संपत्ति और व्यक्ति के बीच टकराव की अभिव्यक्ति के अलावा और कुछ नहीं है। इसलिए, परिसर का पहला रूप माता-पिता का परिसर होना चाहिए, क्योंकि माता-पिता पहली वास्तविकता हैं जिसके साथ बच्चा संघर्ष में आ सकता है।

इसलिए, माता-पिता के परिसर का अस्तित्व, और कुछ नहीं की तरह, हमें एक व्यक्ति में विशेष गुणों की उपस्थिति के साथ धोखा देता है। व्यवहार में, हालांकि, हम जल्द ही देखते हैं कि मुख्य बात माता-पिता के परिसर की उपस्थिति का तथ्य नहीं है, बल्कि यह है कि यह परिसर व्यक्ति में कैसे प्रकट होता है। यहां कई भिन्नताएं हैं, और शायद उनमें से केवल एक छोटा सा हिस्सा माता-पिता के प्रभाव की खासियत के लिए कम किया जा सकता है, क्योंकि कई बच्चे अक्सर एक ही प्रभाव के संपर्क में आते हैं और फिर भी पूरी तरह से अलग तरीके से प्रतिक्रिया करते हैं।

इसलिए, मैंने इन अंतरों पर ध्यान देना शुरू किया, अपने आप से यह कहते हुए

कि यह उनके लिए धन्यवाद है कि कोई व्यक्ति अपनी मौलिकता में व्यक्तिगत स्वभाव को पहचान सकता है। एक विक्षिप्त परिवार में एक बच्चा हिस्टीरिया के साथ माता-पिता के प्रभावों पर प्रतिक्रिया क्यों करता है, दूसरा जुनूनी-बाध्यकारी विकार के साथ, तीसरा मनोविकृति के साथ, और चौथा बिल्कुल भी प्रतिक्रिया नहीं करता है? "एक न्यूरोसिस चुनने" की यह समस्या, जो फ्रायड का भी सामना करती है, माता-पिता के परिसर को इस तरह के एटिऑलॉजिकल महत्व के रूप में देती है, जिससे प्रश्न को प्रतिक्रिया करने वाले व्यक्ति और उसके विशेष स्वभाव को स्थानांतरित कर दिया जाता है।

फ्रायड ने इस समस्या के समाधान के लिए संपर्क करने की कोशिश की, लेकिन उनके प्रयास पूरी तरह से असंतोषजनक निकले, और मैं खुद अभी भी इस सवाल का जवाब देने में सक्षम नहीं हूँ। सामान्य तौर पर, मैं न्यूरोसिस की पसंद के सवाल को उठाना समय से पहले मानता हूँ। क्योंकि इससे पहले कि हम इस अत्यंत कठिन समस्या का सामना करें, हमें इस बारे में और अधिक जानना चाहिए कि व्यक्ति कैसे प्रतिक्रिया करता है, अर्थात् वह बाधाओं पर कैसे प्रतिक्रिया करता है। उदाहरण के लिए, हमें एक ऐसी धारा को पार करने की आवश्यकता है जो एक पुल से पार न हो और जो इतनी चौड़ी हो कि उस पर कदम न रखा जा सके। तो हमें ऊपर कूदना होगा। ऐसा करने के लिए, हमारे पास हमारे निपटान में एक जटिल कार्यात्मक प्रणाली है, अर्थात् साइकोमोटर्स, एक पूर्ण रूप से गठित कार्य जिसे केवल उपयोग करने की आवश्यकता है। लेकिन ऐसा होने से पहले, विशुद्ध रूप से मानसिक कुछ और होता है: निर्णय लिया जाता है कि क्या करने की आवश्यकता है। यह यहाँ है कि निर्णायक व्यक्तिगत घटनाएं होती हैं, जो प्रकट रूप से, विषय द्वारा शायद ही कभी विशिष्ट के रूप में पहचानी जाती हैं या बिल्कुल भी पहचानी नहीं जाती हैं, क्योंकि, एक नियम के रूप में, उन्हें या तो बिल्कुल भी नहीं माना जाता है, या उन पर ध्यान दिया जाता है केवल अंतिम स्थान पर। जैसे साइकोमोटर उपकरण आदतन खुद को कूदने के लिए तैयार करता है, वैसे ही मानसिक तंत्र आदतन (और इसलिए अनजाने में) खुद को यह निर्णय लेने के लिए तैयार करता है कि क्या करना है।

इस उपकरण की संरचना के बारे में राय काफी हद तक भिन्न है। केवल एक ही बात निश्चित है - कि प्रत्येक व्यक्ति का निर्णय लेने और कठिनाइयों से निपटने का अपना विशिष्ट तरीका होता है। अगर तुम एक से पूछो, तो वह कहेगा कि वह धारा के ऊपर से कूद गया क्योंकि उसे कूदना पसंद है; दूसरा कहेगा कि उसके पास और कोई विकल्प नहीं था; तीसरी बात यह है कि जब कोई बाधा आती है, तो उसे दूर करने की इच्छा होती है। चौथा कूद नहीं पाया क्योंकि वह बेकार प्रयासों को बर्दाश्त नहीं कर सका, पांचवां क्योंकि दूसरी तरफ पार करने की तत्काल आवश्यकता नहीं थी।

मैंने जानबूझकर इस सामान्य उदाहरण को यह दिखाने के लिए चुना कि इस तरह की प्रेरणाएँ कितनी महत्वहीन लगती हैं। वे इतने सतही लगते हैं कि हम उन सभी को एक

तरफ धकेल देते हैं और सब कुछ अपने तरीके से समझाते हैं। और फिर भी वे ठीक वे विविधताएँ हैं जो अनुकूलन की व्यक्तिगत मानसिक प्रणालियों पर एक वास्तविक नज़र डालने की अनुमति देती हैं। यदि हम पहले मामले पर विचार करें - जहां कूदने के आनंद के लिए धारा को पार किया जाता है - जीवन की अन्य स्थितियों में, हम शायद पाएंगे कि इस व्यक्ति के अधिकांश कार्यों को आनंद के लिए किया जाता है। दूसरा, जो कूदता है क्योंकि उसे पार करने का कोई दूसरा रास्ता नहीं दिखता है, वह चौकस और चिड़चिड़ा है और जैसा कि हम देखेंगे कि हम उसके जीवन के माध्यम से यात्रा करते हैं, हमेशा *fute - de - mieux* के सिद्धांत द्वारा निर्देशित होता है। (एक बेहतर (फ्रेंच) की कमी के लिए। - अनुवाद।), आदि। सभी ने पहले से ही एक विशेष मानसिक प्रणाली विकसित की है, जो निर्णय लेती है। यह कल्पना करना आसान है कि ऐसे प्रतिष्ठानों की संख्या लीजन है। उनकी व्यक्तिगत विविधता को समाप्त नहीं किया जा सकता है, जैसे कि क्रिस्टल की व्यक्तिगत विविधताएं अटूट हैं, जो बिना किसी संदेह के, एक प्रणाली या किसी अन्य से संबंधित हैं।

लेकिन जिस तरह क्रिस्टल अपेक्षाकृत सरल बुनियादी कानूनों की ओर इशारा करते हैं, उसी तरह दृष्टिकोण कुछ समूहों में निहित कुछ बुनियादी गुणों की ओर इशारा करते हैं।

मानव आत्मा के प्रयास एक टाइपोलॉजी बनाने और इस तरह व्यक्ति की अराजकता में व्यवस्था लाने के लिए - एक निश्चितता के साथ कह सकते हैं - पुरातनता में निहित हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इस तरह का पहला प्रयास ज्योतिष द्वारा किया गया था, जो प्राचीन पूर्व में चार तत्वों - वायु, धुआं, पृथ्वी और अग्नि के तथाकथित त्रिकोणों में उत्पन्न हुआ था। कुंडली में एयर ट्राइन राशि चक्र, कुंभ, मिथुन और तुला के तीन तथाकथित वायु राशियों से मिलकर बना है; अग्नि त्रिकोण - मेष, सिंह और धनु आदि से। प्राचीन धारणाओं के अनुसार, जो इन त्रिनेत्रों में पैदा हुआ था, उसका आंशिक रूप से हवादार या उग्र स्वभाव होता है, और यह बदले में संबंधित स्वभाव और भाग्य को निर्धारित करता है। इसलिए, पुरातनता की शारीरिक टाइपोलॉजी, अर्थात्, चार विनोदी स्वभावों में विभाजन, प्राचीन ब्रह्माण्ड संबंधी विचारों के निकट संबंध में है। राशि चक्र के नक्षत्रों द्वारा जो समझाया जाता था वह अब प्राचीन चिकित्सकों की शारीरिक भाषा में व्यक्त किया गया है, विशेष रूप से कफ, सेंगुइन, *कोलेरिक और उदासीन शब्दों में*, जो शारीरिक तरल पदार्थों के नाम के अलावा और कुछ नहीं हैं। यह बाद की टाइपोलॉजी कम से कम 1800 तक बनी रहने के लिए जानी जाती है। जहां तक ज्योतिषीय टाइपोलॉजी का संबंध है, आश्चर्यजनक रूप से यह अभी भी सभी पर कायम है और आज भी एक नए फूल का अनुभव कर रहा है।

सहज तरीकों पर लौटने की अनुमति नहीं देता है। हमें इस समस्या का समाधान स्वयं खोजना होगा, ऐसा समाधान जो विज्ञान की मांगों को पूरा करे।

यहीं से टाइपोलॉजी की समस्या की मुख्य कठिनाई उत्पन्न होती है - तराजू या

मानदंड का प्रश्न। ज्योतिषीय मानदंड सरल था: यह जन्म के समय सितारों की वस्तुनिष्ठ स्थिति थी। राशि चक्र नक्षत्रों और ग्रहों ने स्वभाव के गुणों को कैसे प्राप्त किया, यह सवाल अतीत के धूसर कोहरे में फैला हुआ है और अनुत्तरित है। चार पुराने शारीरिक स्वभावों की कसौटी व्यक्ति का रूप और व्यवहार था - मानदंड बिल्कुल वैसा ही है जैसा कि आज के शारीरिक प्रकार का है। लेकिन, मनोवैज्ञानिक टाइपोलॉजी की कसौटी क्या होनी चाहिए?

पहले दिए गए उदाहरण को याद कीजिए जिसमें विभिन्न व्यक्तियों को एक धारा पार करनी थी। हमें उनकी आदतन प्रेरणाओं को कैसे और किस दृष्टिकोण से वर्गीकृत करना चाहिए? कोई सुख पाने के लिए करता है, कोई इसलिए करता है क्योंकि कर्म के बिना यह और भी कष्टदायक होता है, तीसरा ऐसा बिल्कुल नहीं करता, क्योंकि वह इस मामले में विपरीत राय रखता है, इत्यादि। संभावनाओं की सीमा अनंत और निराशाजनक लगती है,

दूसरों ने शायद इस समस्या से अलग तरीके से संपर्क किया होगा, मुझे नहीं पता कि कैसे। मैं इस संबंध में केवल एक ही बात कह सकता हूँ: चूंकि मैंने यह व्यवसाय किया है, मुझे इस तथ्य के लिए अपमानित होने पर सहना होगा कि समस्या को हल करने का मेरा तरीका सिर्फ मेरा व्यक्तिगत पूर्वाग्रह है। और यह आपत्ति इतनी सत्य है कि मैं यह भी नहीं जानता कि इससे अपने आप को कैसे बचाया जाए। मैं केवल पुराने कोलंबस का उल्लेख कर सकता हूँ, जिन्होंने एक व्यक्तिपरक धारणा के आधार पर, एक झूठी परिकल्पना पर, और समकालीन शिपिंग द्वारा उनके लिए छोड़े गए मार्ग का अनुसरण करते हुए, अमेरिका की खोज की ... हम अभी भी केवल अपनी आंखों को देखते हैं। इसलिए विज्ञान एक दिन के व्यक्ति द्वारा नहीं, बल्कि बहुतों द्वारा किया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति केवल योगदान देता है, और केवल इसी अर्थ में मैं चीजों को देखने के अपने तरीके के बारे में बोलने की हिम्मत करता हूँ।

मेरे पेशे ने मुझे लंबे समय से व्यक्तियों की विशिष्टताओं को ध्यान में रखने के लिए मजबूर किया है, और विशेष परिस्थिति कि कई वर्षों तक - मुझे नहीं पता कि कितने - मुझे पति-पत्नी के साथ व्यवहार करना पड़ा और एक पुरुष और एक महिला को पारस्परिक रूप से स्वीकार्य बनाना, और भी अधिक जोर देता है कुछ औसत सत्य स्थापित करने की आवश्यकता है। मुझे कितनी बार यह कहना पड़ा है: "आप देखते हैं, आपकी पत्नी एक बहुत सक्रिय व्यक्ति है, और आप वास्तव में उसके पूरे अस्तित्व के केवल घर में होने की उम्मीद नहीं कर सकते।" यह पहले से ही एक टंकण है, और यह एक प्रकार का सांख्यिकीय सत्य व्यक्त करता है। सक्रिय और निष्क्रिय प्रकृति हैं। हालाँकि, इस सामान्य सत्य ने मुझे संतुष्ट नहीं किया। मेरा अगला प्रयास यह मानने का था कि एक प्रकार की सोच और अचिंत्य प्रकृति है, क्योंकि मैंने देखा कि कई प्रकृति, जो पहली नज़र में निष्क्रिय लगती हैं, वास्तव में इतनी निष्क्रिय नहीं हैं जितनी विवेकपूर्ण हैं। वे पहले स्थिति के बारे में

सोचते हैं - फिर वे कार्य करते हैं, और चूंकि यह उनकी सामान्य क्रिया है, वे उन मामलों को याद करते हैं जहां प्रतिबिंब के बिना प्रत्यक्ष कार्रवाई आवश्यक है, और इस प्रकार उनकी निष्क्रियता के बारे में एक राय बनती है। अचिंतन मुझे हमेशा से वे लोग लगे हैं, जो बिना सोचे-समझे दोनों पैरों से एक स्थिति में कूद जाते हैं, केवल बाद में महसूस करते हैं कि वे दलदल में उतर गए हैं। इस प्रकार, उन्हें शायद अचिंत्य के रूप में चित्रित किया जा सकता है, जिसे गतिविधि में उचित रूप से दिखाया गया था; कई मामलों में दूसरों की समझदारी अंततः एक बहुत ही महत्वपूर्ण गतिविधि है और केवल दक्षता के एक विचारहीन क्षणभंगुर विस्फोट की तुलना में एक बहुत ही जिम्मेदार कार्रवाई है। हालाँकि, मुझे जल्द ही पता चला कि अनिर्णय हमेशा दूरदर्शिता के कारण नहीं होता है, और त्वरित कार्रवाई हमेशा विचारहीन नहीं होती है। पूर्व की अनिश्चितता अक्सर अंतर्निहित समयबद्धता पर आधारित होती है, या कम से कम किसी कार्य से पहले सामान्य वापसी की तरह कुछ पर आधारित होती है, और दूसरे की तत्काल गतिविधि अक्सर स्वयं की तुलना में वस्तु में अधिक विश्वास के कारण होती है। यह अवलोकन मुझे इस प्रकार टाइपिफिकेशन तैयार करने के लिए प्रेरित करता है: ऐसे लोगों का एक पूरा वर्ग है, जो किसी दिए गए स्थिति पर प्रतिक्रिया के क्षण में, चुपचाप "नहीं" कहते हुए पीछे हटते हैं, और उसके बाद ही प्रतिक्रिया करते हैं, और लोग हैं एक अन्य वर्ग से संबंधित है जो एक ही स्थिति में सीधे प्रतिक्रिया करता है, जाहिरा तौर पर, पूर्ण विश्वास में है कि उनकी कार्रवाई निस्संदेह सही है। यही है, पहले वर्ग को वस्तु के प्रति एक निश्चित नकारात्मक दृष्टिकोण की विशेषता है, बाद वाला बल्कि-सकारात्मक है।

जैसा कि आप जानते हैं, प्रथम श्रेणी अंतर्मुखी से मेल खाती है, और अंतिम - बहिर्मुखी रवैया ।

बुर्जुआ " की खोज जितना ही कम हासिल हुआ gentilhomme "कि वह आमतौर पर गद्य में बोलते हैं। इन प्रकारों का अर्थ और महत्व तभी होगा जब हम जानते हैं कि उनमें से प्रत्येक में और क्या निहित है।

आखिरकार, हर तरह से एक हुए बिना कोई अंतर्मुखी नहीं हो सकता। अंतर्मुखी की अवधारणा का अर्थ है: आध्यात्मिक सब कुछ एक अंतर्मुखी में प्रकट होता है जिस तरह से उसके लिए प्रासंगिक कानूनों द्वारा निर्धारित किया जाता है। यदि ऐसा नहीं होता, तो एक निश्चित व्यक्ति का बहिर्मुखी के रूप में लक्षण वर्णन उतना ही महत्वहीन होगा जितना कि यह कथन कि उसके शरीर की लंबाई 175 सेंटीमीटर है या वह भूरा या ब्राचीसेफेलिक है। जैसा कि सर्वविदित है, इस तरह के बयानों में उनके द्वारा दर्शाए गए तथ्य से थोड़ा अधिक होता है। हालाँकि, बहिर्मुखी अभिव्यक्ति बहुत अधिक दावा करती है, क्योंकि यह व्यक्त करने का प्रयास करती है कि बहिर्मुखी की चेतना, साथ ही साथ उसके अचेतन में कुछ गुण होने चाहिए, कि बहिर्मुखी के सभी व्यवहार, लोगों के प्रति

उसका दृष्टिकोण, यहां तक कि पाठ्यक्रम भी। उनके जीवन के कुछ विशिष्ट गुणों की ओर इशारा करते हैं,

अंतर्मुखता और बहिर्मुखता के प्रकार के रूप में एक स्वभाव को नामित करते हैं जो पूरी मानसिक प्रक्रिया को काफी हद तक निर्धारित करता है, क्योंकि वे एक पूर्वनिर्धारित प्रतिक्रिया की विशेषता रखते हैं और इस तरह न केवल क्रिया का तरीका और व्यक्तिपरक अनुभव के प्रकार को निर्धारित करते हैं, बल्कि बेहोश मुआवजे की प्रकृति भी निर्धारित करते हैं। .

नतीजतन, आदतन प्रतिक्रिया (Reaktionshabitus) की परिभाषा को सिर पर कील ठोकना चाहिए, क्योंकि पूर्वाभास (Habitus) एक निश्चित सीमा तक केंद्रीय स्विचिंग बिंदु है, जहां से एक ओर, बाहरी व्यवहार को विनियमित किया जाता है, और दूसरी ओर , प्रभाव डाला जाता है । विशिष्ट अनुभव के गठन पर । एक निश्चित व्यवहार उचित परिणाम देता है, और इन परिणामों की व्यक्तिपरक समझ के लिए धन्यवाद, अनुभव प्रकट होता है, जो अपने हिस्से के लिए, एक बार फिर व्यवहार को प्रभावित करता है और इस प्रकार, कहावत के अनुसार "हर कोई अपनी खुशी का लोहार है" , व्यक्तिगत भाग्य में परिलक्षित होता है।

जहां तक आदतन प्रतिक्रिया का संबंध है, इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता है कि यहां हम समस्या की केंद्रीय कड़ी को समझते हैं। लेकिन यहां एक और कांटेदार सवाल उठता है: क्या हम (पर्याप्त रूप से) आदतन प्रतिक्रियाओं की विशेषता बता सकते हैं? इस विषय पर कई तरह की राय हो सकती है, भले ही किसी को इस विशेष क्षेत्र में घनिष्ठ ज्ञान हो। जिन तथ्यों को मैं अपने दृष्टिकोण के पक्ष में खोजने में सक्षम था, वे मेरे द्वारा प्रकारों पर एक पुस्तक में संयुक्त हैं, और मुझे पूरी तरह से पता है कि मेरी टाइपिंग एकमात्र सत्य या एकमात्र संभव नहीं है,

अंतर्मुखता और बहिर्मुखता के विपरीत आकर्षित करना आसान है, लेकिन सरल सूत्र, दुर्भाग्य से, सबसे अधिक बार संदेहास्पद होते हैं। वे वास्तविक कठिनाइयों को भी आसानी से ढक लेते हैं। मैं यह अपने अनुभव से कह रहा हूं, क्योंकि जैसे ही मैंने अपने मानदंड का पहला सूत्रीकरण प्रकाशित किया (तुलना करें: साइकोलॉजी ट्यूरेप/1, पैरा। 931) एफ.एफ. _ [यीशु _ वेर्के VI (1960 - 1967)]। - ऑटो।) - यह घटना जल्द ही बीस साल पुरानी हो जाएगी - कैसे, अपनी नाराजगी के लिए, उसने पाया कि वह किसी तरह गड़बड़ हो गया। कुछ फिट नहीं हुआ। जाहिर है, मैंने सरल तरीकों से बहुत कुछ समझाने की कोशिश की, जैसा कि अक्सर खोज के पहले आनंद के साथ होता है।

मैंने एक तथ्य की खोज की जिसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता था, अर्थात्, अंतर्मुखी और बहिर्मुखी के समूहों के भीतर वास्तव में बहुत बड़े अंतर थे, मतभेद इतने महान थे कि मुझे संदेह होने लगा कि क्या मैंने कुछ भी सही देखा है। इन शंकाओं को दूर

करने के लिए लगभग दस वर्षों का अवलोकन और तुलना की गई।

यह सवाल कि एक प्रकार के भीतर भारी अंतर कहां से आता है, मुझे अप्रत्याशित कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, जिससे मैं लंबे समय तक संपर्क नहीं कर सका। इनमें से कुछ कठिनाइयाँ भिन्नताओं के अवलोकन और धारणा पर आधारित थीं, लेकिन उनका मुख्य कारण, पहले की तरह, मानदंड की समस्या, यानी चरित्र अंतर के लिए उपयुक्त पदनाम की समस्या थी। और यहाँ पहली बार मैंने स्पष्ट रूप से समझा कि युवा मनोविज्ञान कैसा है। यह मनमानी शिक्षाओं की अराजकता के अलावा कुछ भी नहीं हो सकता है, जिसका एक अच्छा हिस्सा निस्संदेह पीढ़ी के कारण अलग-थलग होने के कारण होता है। ऐक्विवोका और इस प्रकार एक वैज्ञानिक के मस्तिष्क ज़ीउस की तुलना की। मैं अपमानजनक नहीं होना चाहता, लेकिन फिर भी मैं मनोविज्ञान के एक प्रोफेसर को एक महिला, एक चीनी और एक दक्षिणी नीग्रो के मनोविज्ञान के साथ सामना करने का विरोध नहीं कर सकता। हमारे मनोविज्ञान को जीवन में आना चाहिए, अन्यथा हम मध्य युग में ही फंस जाएंगे।

मैंने महसूस किया कि आधुनिक मनोविज्ञान की अराजकता से स्पष्ट मानदंड निकालना असंभव है, कि उन्हें केवल बनाने की आवश्यकता है, न कि नीली हवा से, बल्कि उन लोगों के पिछले अमूल्य कार्यों के आधार पर जिनके नाम मनोविज्ञान के इतिहास में हैं। मौन में पारित नहीं किया जाएगा।

एक रिपोर्ट के ढांचे के भीतर, मेरे पास उन व्यक्तिगत टिप्पणियों का उल्लेख करने का अवसर नहीं है, जिन्होंने मुझे कुछ मानसिक कार्यों को विचाराधीन मतभेदों के मानदंड के रूप में अलग करने के लिए प्रेरित किया। सामान्य तौर पर, केवल एक ही बात कही जा सकती है, कि मतभेद, जहाँ तक वे अब मेरे लिए स्पष्ट हो गए हैं, इस तथ्य में निहित है कि एक अंतर्मुखी, उदाहरण के लिए, केवल एक वस्तु के सामने पीछे नहीं हटता है और झिझकता है, लेकिन करता है इसे पूरी तरह से विशेष तरीके से करता है, और वह अपने कार्यों को किसी अन्य अंतर्मुखी की तरह नहीं करता है, बल्कि एक विशेष तरीके से भी करता है। जिस तरह एक शेर अपने दुश्मन पर हमला करता है या अपनी पूंछ से नहीं, मगरमच्छ की तरह शिकार करता है, बल्कि अपने पंजे से शिकार करता है, जिसमें उसकी विशिष्ट ताकत होती है, उसी तरह प्रतिक्रिया देने का हमारा तरीका आमतौर पर हमारी ताकत से होता है, यानी हमारे सबसे विश्वसनीय का उपयोग और विकसित कार्य, जो हालांकि, यह हमें कभी-कभी अपनी विशिष्ट कमजोरियों के साथ प्रतिक्रिया करने से नहीं रोकता है। तदनुसार, हम कुछ स्थितियों की तैयारी करेंगे या उनकी तलाश करेंगे और दूसरों से बचेंगे, और इस तरह हम एक विशिष्ट अनुभव प्राप्त करेंगे जो दूसरों से अलग है। बुद्धिजीवी अपनी बुद्धि की सहायता से दुनिया के अनुकूल हो जाएगा, न कि छठे भार वर्ग के मुक्केबाज की तरह, हालांकि वह गुस्से में अपनी मुट्टी का इस्तेमाल कर सकता है।

अस्तित्व और अनुकूलन के संघर्ष में, प्रत्येक व्यक्ति सहज रूप से अपने सबसे विकसित कार्य का उपयोग करता है, जिसके परिणामस्वरूप प्रतिक्रिया के अभ्यस्त तरीके का मानदंड बन जाता है।

इस प्रश्न को अब इस प्रकार रखा जा सकता है: इन सभी कार्यों को सामान्य अवधारणाओं द्वारा कैसे अपनाया जाना चाहिए ताकि वे एक साधारण व्यक्तिगत अस्तित्व की अस्पष्टता से अलग हो सकें?

कलाकार, वैज्ञानिक, योद्धा, आदि के आंकड़ों में या सभी व्यवसायों की सूची में सामाजिक जीवन द्वारा इस तरह का एक मोटा प्रकार लंबे समय से बनाया गया है। लेकिन मनोविज्ञान का व्यावहारिक रूप से इस तरह के टाइपिफिकेशन से कोई लेना-देना नहीं है, क्योंकि विज्ञान के लोगों में, जैसा कि एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक ने एक बार व्यंग्यात्मक रूप से कहा था, ऐसे लोग हैं जो सिर्फ "बौद्धिक कुली" हैं।

यहाँ जो अर्थ है वह बहुत सूक्ष्म बात है। उदाहरण के लिए, बुद्धि की बात करना पर्याप्त नहीं है, क्योंकि यह अवधारणा बहुत सामान्य और अनिश्चित है; हर चीज जो सुचारू रूप से, जल्दी, कुशलता से और तेजी से कार्य करती है, उसे उचित कहा जा सकता है। बुद्धि और मूर्खता दोनों कार्य नहीं हैं, बल्कि तौर-तरीके हैं, और वे कभी भी किस बारे में बात नहीं करते हैं, लेकिन हमेशा कैसे के बारे में बात करते हैं। वही नैतिक और सौंदर्य मानदंडों के लिए जाता है। हमें यह निर्धारित करने में सक्षम होना चाहिए कि आदतन प्रतिक्रियाओं में सबसे पहले क्या कार्य करता है। इसलिए हम यहां कुछ ऐसा उपयोग करने के लिए मजबूर हैं जो पहली नज़र में अठारहवीं शताब्दी में क्षमताओं के मनोविज्ञान के रूप में भयानक लगता है। वास्तव में, हम सामान्य भाषा में पहले से उपलब्ध अवधारणाओं का सहारा लेते हैं, जो सभी के लिए सुलभ और स्पष्ट हैं। अगर, उदाहरण के लिए, मैं "सोच" की बात करता हूँ, केवल एक दार्शनिक नहीं जानता कि इसका क्या अर्थ है, लेकिन कोई शौकिया इसे समझ से बाहर नहीं पाएगा; क्योंकि हम हर दिन इस शब्द का इस्तेमाल करते हैं और हमेशा इसका मतलब एक ही होता है, लेकिन अगर हम शौकिया से सोच की स्पष्ट परिभाषा देने के लिए कहें, तो वह खुद को बहुत मुश्किल स्थिति में पाएगा। वही "स्मृति" या "भावना" के बारे में सच है। इस तरह की तात्कालिक मनोवैज्ञानिक अवधारणाओं को वैज्ञानिक रूप से परिभाषित करना जितना कठिन है, वे रोजमर्रा की भाषा में समझने में उतनी ही आसान हैं। समान भाषा उत्कृष्टता (अधिमानतः, मुख्य रूप से (फ्रेंच। - अनुवाद।) विजुअलाइज़ेशन का एक संग्रह है ; यही कारण है कि पोषित, बहुत अमूर्त अवधारणाएँ ऐसी कठिनाई के साथ तय की जाती हैं और बहुत आसानी से मर जाती हैं, क्योंकि उनका वास्तविकता से बहुत कम संपर्क होता है। सोच और भावनाएँ हमारे लिए ऐसी अविभाज्य वास्तविकताएँ हैं कि किसी भी गैर-आदिम भाषा में उनके लिए काफी निश्चित अभिव्यक्तियाँ होती हैं। इसलिए, हम यह सुनिश्चित कर

सकते हैं कि ये अभिव्यक्तियाँ बिल्कुल निश्चित मानसिक तथ्यों के साथ मेल खाती हैं, हालाँकि इन जटिल तथ्यों को वैज्ञानिक रूप से कहा जा सकता है। हर कोई कल्पना करता है कि क्या, उदाहरण के लिए, चेतना है, और यद्यपि विज्ञान अभी भी इसे जानने से दूर है, कोई भी संदेह नहीं कर सकता है कि चेतना की अवधारणा काफी निश्चित मानसिक तथ्यों को शामिल करती है।

यही कारण है कि मैंने भाषा में व्यक्त की गई केवल शौकिया अवधारणाओं को एक प्रकार के दृष्टिकोण के भीतर भेद करने के लिए मानदंड के रूप में लिया और उनके द्वारा संबंधित मानसिक कार्यों को नामित किया। उदाहरण के लिए, मैंने सोच लिया जैसा कि आमतौर पर समझा जाता है, क्योंकि इसने मुझे मारा कि कुछ लोग दूसरों की तुलना में अधिक सोचते हैं और तदनुसार, अपने निर्णयों में तर्क को अधिक महत्व देते हैं। वे दुनिया को समझने और उसके अनुकूल होने के लिए अपनी सोच का उपयोग करते हैं, और जो कुछ भी उनका सामना होता है वह प्रतिबिंब और प्रतिबिंब के अधीन होता है, या, बहुत कम से कम, पूर्व निर्धारित सामान्य सिद्धांतों के साथ संरेखण। अन्य लोग आश्चर्यजनक रूप से भावनात्मक कारक, यानी भावना के पक्ष में सोचने की उपेक्षा करते हैं। वे दृढ़ता से "भावना की राजनीति" कर रहे हैं और उन्हें सोचने के लिए एक वास्तविक आपातकाल की आवश्यकता होती है। ये लोग पहले प्रकार के बिल्कुल विपरीत होते हैं, जो विशेष रूप से तब हड़ताली होता है जब पहले दूसरे के व्यापारिक भागीदार होते हैं, या जब वे एक-दूसरे के साथ विवाह में प्रवेश करते हैं। साथ ही, उनमें से कोई भी अपनी सोच को वरीयता दे सकता है, भले ही वह बहिर्मुखी हो या अंतर्मुखी। तब तक वह इसे केवल अपने प्रकार के लिए उपयुक्त तरीके से उपयोग करता है।

हालाँकि, एक फ़ंक्शन या किसी अन्य की प्रबलता सभी अंतरों की व्याख्या नहीं करती है। आखिरकार, जिसे मैं सोच या भावनात्मक प्रकार कहता हूँ, वे लोग होते हैं, जिनमें फिर से कुछ ऐसा होता है जिसे मैं तर्कसंगतता शब्द से अलग नहीं कर सकता। तथ्य यह है कि सोच अनिवार्य रूप से तर्कसंगत है, शायद किसी के द्वारा विवादित नहीं होगा। लेकिन जब हम महसूस करते हैं, तो मजबूत प्रतिवाद होंगे कि मैं तुरंत एक तरफ नहीं हटूंगा। इसके विपरीत, मैं आपको आश्चस्त कर सकता हूँ कि भावना की समस्या ने मुझे कोई छोटी पहेली नहीं दी है। हालाँकि, मैं इस अवधारणा के बारे में विभिन्न वैज्ञानिक विचारों की प्रस्तुति के साथ अपनी रिपोर्ट को ओवरलोड नहीं करना चाहता, लेकिन मैं केवल इस मुद्दे पर अपना दृष्टिकोण संक्षेप में व्यक्त करूंगा। यहां मुख्य कठिनाई यह है कि "भावना" या "भावना" शब्दों का प्रयोग विभिन्न तरीकों से किया जाता है। यह जर्मन भाषा (जर्मन शब्द " das .) के लिए विशेष रूप से सच है Gefühl "का अनुवाद" भावना, सनसनी , स्वभाव "। - अनुवाद।), अंग्रेजी और फ्रेंच के लिए कुछ हद तक। शायद, सबसे पहले , हमें इस शब्द को "सनसनी "की अवधारणा से सख्ती से अलग करना चाहिए, जो

कि विशेषता है इंद्रियों का कार्य। फिर, शायद, किसी तरह से सहमत होना आवश्यक है कि अफसोस की भावना, उदाहरण के लिए, एक वैचारिक अर्थ में, इस भावना से अलग होनी चाहिए कि मौसम बदल जाएगा या एल्यूमीनियम चिंता के हिस्से होंगे वृद्धि। इसलिए, मैंने सुझाव दिया कि पहले अर्थ में महसूस करके हम इस तरह की भावना को समझते हैं और इसके विपरीत, बाद के मामले में इस्तेमाल किए गए शब्द "भावना" को मनोवैज्ञानिक शब्दकोष से हटा दिया जाना चाहिए और "सनसनी" की अवधारणा से प्रतिस्थापित किया जाना चाहिए। , अगर हम अवधारणात्मक अनुभव के बारे में बात कर रहे हैं, या "अंतर्ज्ञान" की अवधारणा के द्वारा जब यह एक प्रकार की धारणा की बात आती है जिसे सीधे सचेत अवधारणात्मक अनुभव में कम नहीं किया जा सकता है। इसलिए, मैंने संवेदना को इंद्रियों की मदद से सचेत धारणा के रूप में परिभाषित किया है, और अंतर्ज्ञान को अचेतन के माध्यम से धारणा के रूप में परिभाषित किया है।

बेशक, कोई भी समय के अंत तक इन परिभाषाओं की वैधता पर बहस कर सकता है, लेकिन इस तरह की चर्चा अंततः इस सवाल पर उबलती है कि किसी प्रसिद्ध जानवर को कैसे बुलाया जाए: गैंडा, गैंडा, या कुछ और, क्योंकि, संक्षेप में, आप बस यह जानने की जरूरत है और जैसा कि हम कहते हैं। मनोविज्ञान एक कुंवारी भूमि है जहाँ भाषा को अभी पैर जमाना है। तापमान, जैसा कि हम जानते हैं, रीमूर, सेल्सियस, या फ़ारेनहाइट में मापा जा सकता है, और यहां केवल एक ही काम करना है, यह कहना है कि प्रत्येक दिए गए मामले में मापने के लिए किस विधि का उपयोग किया गया था।

जैसा कि कहा गया है, मैं भावना को आत्मा के एक कार्य के रूप में मानता हूं, इसे संवेदना और पूर्वाभास या अंतर्ज्ञान से अलग करता हूं। वह जो इन विशेषताओं को कामुकता के साथ मिलाता है स्ट्रिक्टो (संकीर्ण अर्थ में (अव्य। - अनुवाद), बेशक, भावना की तर्कसंगतता को पहचानने में सक्षम नहीं है। लेकिन जो कोई भी उन्हें साझा करता है वह इस तथ्य की मान्यता से बच नहीं सकता है कि भावनात्मक मूल्यांकन, भावनात्मक निर्णय और सामान्य रूप से भावनाएं, न केवल तर्कसंगत हो सकता है, बल्कि तार्किक, सुसंगत और उचित भी हो सकता है, और इस अर्थ में बिल्कुल सोच के समान है। यह तथ्य सोच के प्रकार के लिए अजीब लगता है, लेकिन इसे आसानी से विशेषता विशेषता द्वारा समझाया जा सकता है कि एक विभेदित सोच समारोह के साथ , भावना हमेशा कम विकसित होती है, अर्थात् यह अधिक आदिम होती है, और इसलिए अन्य कार्यों से दूषित होती है, इसके अलावा, तर्कहीन, अतार्किक और अतिरिक्त-तर्कसंगत कार्यों के साथ, अर्थात् संवेदना और अंतर्ज्ञान के कार्य, जिनका कार्य नहीं है स्थिति का आकलन करें। बाद के दोनों कार्य तर्कसंगत कार्यों के विरोध में हैं, और एक कारण से जो उनके गहरे सार से मेल खाते हैं। जब हम सोचते हैं, तो हम इसे किसी निष्कर्ष पर पहुंचने के इरादे से करते हैं या निष्कर्ष, और जब हमें लगता है, यह एक सही आकलन पर पहुंचने के लिए है; अनुभूति

और अंतर्ज्ञान, धारणा के कार्यों के रूप में, दिए गए की धारणा को लक्षित करते हैं, न कि इसकी व्याख्या या मूल्यांकन पर। इसलिए, उन्हें बस दिए गए के लिए खुला होना चाहिए, और कुछ सिद्धांतों पर चुनिंदा रूप से कार्य नहीं करना चाहिए। दिया गया अनिवार्य रूप से तर्कहीन है, क्योंकि ऐसी कोई विधियाँ नहीं हैं जिनके द्वारा यह साबित करना संभव हो कि इतने सारे ग्रह या इतने प्रकार के गर्म रक्त वाले जानवर होंगे। तर्कहीनता वह है जो सोच और भावना में कमी है, तर्कसंगतता वह है जो संवेदना और अंतर्ज्ञान में कमी है।

ऐसे बहुत से लोग हैं जिनकी प्रतिक्रियाएँ मुख्य रूप से अतार्किकता पर आधारित होती हैं, यानी या तो संवेदना पर या अंतर्ज्ञान पर, लेकिन दोनों पर कभी नहीं, क्योंकि संवेदना अंतर्ज्ञान के प्रति उतनी ही विरोधी है जितनी कि सोच भावना के लिए है। . क्योंकि जब मैं अपने कानों और आंखों से यह स्थापित करना चाहता हूँ कि वास्तव में क्या चल रहा है, तो मैं एक ही समय में सपने देखने और कल्पना करने के अलावा कुछ भी कर सकता हूँ, लेकिन यह ठीक यही है कि अंतर्ज्ञानवादी को आपके अचेतन को जगह देने के लिए करना चाहिए या वस्तु। यही कारण है कि भावना प्रकार सहज ज्ञान युक्त प्रकार के विपरीत है। दुर्भाग्य से, समय मुझे उन दिलचस्प विविधताओं में जाने की अनुमति नहीं देता है जो तर्कहीन प्रकार के बहिर्मुखी या अंतर्मुखी रवैये से उत्पन्न होती हैं।

मैं उन प्राकृतिक परिणामों के बारे में कुछ और शब्द कहना चाहूँगा जो दूसरों पर किसी एक कार्य के प्रभुत्व की ओर ले जाते हैं, अर्थात्, यह अन्य कार्यों को कैसे प्रभावित करता है। एक व्यक्ति, जैसा कि ज्ञात है, कभी भी एक बार में सब कुछ नहीं हो सकता है और कभी भी पूर्ण रूप से पूर्ण नहीं हो सकता है। यह हमेशा केवल कुछ गुणों को विकसित करता है और बाकी को अविकसित छोड़ देता है। उन कार्यों का क्या होता है जिनका वह दैनिक उपयोग नहीं करता है, और इसलिए उन्हें व्यायाम द्वारा विकसित नहीं करता है? वे अलग-अलग डिग्री तक, एक आदिम, शिशु, अक्सर केवल अर्ध-चेतन, और कभी-कभी पूरी तरह से बेहोश अवस्था में भी रहते हैं; इस प्रकार वे प्रत्येक प्रकार की हीन भावना का निर्माण करते हैं, जो एक अभिन्न अंग के रूप में, चरित्र की सामान्य संरचना में प्रवेश करती है। सोच के लिए एकतरफा वरीयता हमेशा इंद्रियों की हीनता के साथ होती है, और उसी तरह एक विभेदित धारणा सहज ज्ञान युक्त संकाय को प्रभावित करती है, और इसके विपरीत।

कोई फ़ंक्शन विभेदित है या नहीं, इसकी ताकत, स्थिरता, स्थिरता, विश्वसनीयता और फिटनेस द्वारा काफी आसानी से निर्धारित किया जा सकता है। हालाँकि, इसकी हीनता अक्सर इतनी आसानी से वर्णित या पहचानी नहीं जाती है। यहां एक महत्वपूर्ण मानदंड इसकी स्वतंत्रता की कमी और परिस्थितियों और अन्य लोगों पर परिणामी निर्भरता, साथ ही साथ इसकी अनिश्चितता, उपयोग में अविश्वसनीयता, विचारोत्तेजकता और अस्पष्ट चरित्र है। उसका बलिदान।

दुर्भाग्य से, यहां मैं मनोवैज्ञानिक प्रकारों का विस्तृत विवरण देने में असमर्थ हूं, और इसलिए मुझे मनोवैज्ञानिक टाइपोलॉजी के मुख्य विचारों के संक्षिप्त सारांश के साथ खुद को संतुष्ट करना होगा।

इस क्षेत्र में मेरे पिछले काम का सामान्य परिणाम दो मुख्य प्रकार के रवैये के बीच अंतर करना है: बहिर्मुखता और अंतर्मुखता, साथ ही साथ चार प्रकार के कार्य: सोच, भावना, भावना और सहज ज्ञान, जो सामान्य दृष्टिकोण के आधार पर भिन्न होता है और इस प्रकार देता है कुल आठ विकल्पों में।

ठीक चार कार्यों के बारे में क्यों बात कर रहा हूं, न अधिक और न कम। क्या उनमें से ठीक चार हैं, यह सबसे पहले विशुद्ध रूप से अनुभवजन्य निकला। लेकिन यह कि उनके माध्यम से एक निश्चित डिग्री की पूर्णता हासिल की गई है, निम्नलिखित विचार द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है।

भावना स्थापित करती है कि वास्तव में क्या होता है। सोच हमें यह जानने की अनुमति देती है कि किसी दी गई भावना का क्या अर्थ है - इसका मूल्य क्या है, और अंत में, अंतर्ज्ञान संभावित "कहाँ" और "कहाँ" की ओर इशारा करता है जो इस समय निहित है। इसके लिए धन्यवाद, आधुनिक दुनिया में अभिविन्यास भौगोलिक निर्देशांक का उपयोग करके अंतरिक्ष में एक स्थान का निर्धारण करने जितना पूर्ण हो सकता है। चार कार्य क्षितिज के एक प्रकार के चार पक्ष हैं, जितने आवश्यक हैं उतने ही मनमाना। निर्देशांक बिंदु को एक दिशा या किसी अन्य में स्थानांतरित करने और आम तौर पर उन्हें अन्य नाम देने से कुछ भी नहीं रोकता है। यह सब इस बात पर निर्भर करता है कि हम कैसे सहमत हैं और यह कितना समीचीन है, लेकिन मुझे एक बात स्वीकार करनी चाहिए: मैं इस कम्पास के बिना अपना मनोवैज्ञानिक शोध अभियान कभी नहीं करना चाहूंगा, न कि आम मानवीय कारण के लिए कि हर कोई अपने विचारों से प्यार करता है, लेकिन इस वस्तुनिष्ठ तथ्य के कारण कि यह माप और अभिविन्यास की एक प्रणाली को जन्म देता है, और यह बदले में एक महत्वपूर्ण मनोविज्ञान के उद्भव को संभव बनाता है जो इतने लंबे समय से हमसे अनुपस्थित है।

आत्मा और पृथ्वी

प्रश्न रखना "आत्मा और पृथ्वी" कुछ काव्यात्मक लगता है। इसके विपरीत, आत्मा की "स्वर्गीय सशर्तता" का विचार अनैच्छिक रूप से यहां खुद को सुझाता है, जैसे कि आत्मा के बारे में चीनी शिक्षण में, शेन और गुई आत्माओं को प्रतिष्ठित किया जाता है, जिनमें से पहला स्वर्ग को संदर्भित करता है, और बाद वाला धरती। लेकिन चूंकि हम, पश्चिम के लोग, आत्मा के पदार्थों के बारे में कुछ नहीं जानते हैं, और इसलिए इस सवाल का जवाब नहीं दे सकते हैं कि क्या आत्मा में स्वर्ग से कुछ है और इसके विपरीत, कुछ सांसारिक, तो, जाहिरा तौर पर, हमें होना होगा इससे संतुष्ट हम देखने के दो अलग-अलग तरीकों के बारे में बात कर रहे हैं, या जटिल घटना के दो बाहरी पहलुओं के बारे में जिसे हम आत्मा कहते हैं। एक दिव्य आत्मा के बारे में बात करने के बजाय, कोई आत्मा को एक रचनात्मक इकाई के रूप में कार्य-कारण के रूप में मान सकता है, और एक गुई आत्मा को पोस्ट करने के बजाय, कोई इसे एक प्रकार के अस्तित्व के रूप में समझ सकता है जो कुछ कारणों और प्रभावों के कारण उत्पन्न हुआ। प्रश्न के हमारे सूत्रीकरण के अनुसार, विचार करने का बाद का तरीका, शायद, काफी उपयुक्त है; इसका मतलब है कि आत्मा को अनुकूली के रूप में समझा जाना चाहिए बाहरी स्थलीय कारणों से प्रणाली। शायद मुझे विशेष रूप से इस बात पर जोर नहीं देना चाहिए कि ऐसा दृष्टिकोण एकतरफा होगा; यदि वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर भी लेता है, तो भी आत्मा का केवल एक पक्ष ही सही मायने में समझा जाएगा। समस्या के दूसरे पक्ष पर ध्यान नहीं देना होगा, क्योंकि यह मेरे द्वारा उठाए गए प्रश्न से संबंधित नहीं है।

विचार के विषय के संबंध में, अर्थात्, मानसिक घटना, यह परिभाषित करना उपयोगी होगा कि "आत्मा" को क्या समझा जाना चाहिए। आखिरकार, ऐसे विचार हैं जिनमें "आध्यात्मिक" पूरी तरह से चेतना तक ही सीमित है। आज, हालांकि, हम शायद ही ऐसी सीमा को स्वीकार कर सकते हैं। आधुनिक साइकोपैथोलॉजी में मानसिक गतिविधि के अवलोकन की एक बड़ी संख्या है, जो पूरी तरह से चेतना के कार्य के अनुरूप है और फिर भी बेहोश है। कोई अनजाने में अनुभव कर सकता है, सोच सकता है, महसूस कर सकता है, याद रख सकता है, निर्णय ले सकता है और कार्य कर सकता है। चेतना में जो कुछ होता है वह अनजाने में भी हो सकता है। ऐसा क्यों है यह सबसे आसानी से समझा जा सकता है यदि कोई आत्मा के कार्यों और सामग्री को एक रात के दृश्य के रूप में देखता है जिस पर स्पॉटलाइट का प्रकाश शंकु गिरता है। जो प्रकाशित और माना जाता है वह सचेत है, और जो धारणा से परे है, अंधेरे में, वह अचेतन है, जो फिर भी रहता है और कार्य करता है। यदि प्रकाश शंकु को बाएँ या दाएँ स्थानांतरित किया जाता है, तो जो सामग्री सिर्फ सचेत थी वह अचेतन में डूब जाती है, और नई सामग्री चेतना के प्रकाश के

क्षेत्र में गिर जाती है। और जो सामग्री अंधेरे में गायब हो गई है, वह आगे भी काम करना जारी रखती है, लेकिन पहले से ही अप्रत्यक्ष रूप से, आमतौर पर खुद को लक्षणों के रूप में प्रकट करती है, जैसे कि फ्रायड द्वारा द साइकोपैथोलॉजी ऑफ एवरीडे लाइफ में वर्णित किया गया था। एक साहचर्य प्रयोग की सहायता से अचेतन मनोवृत्तियों और बाधाओं के अस्तित्व को प्रयोगात्मक रूप से भी सिद्ध किया जा सकता है।

इसलिए, यदि हम मनोविकृति के अनुभव को ध्यान में रखते हैं, तो आत्मा हमारे सामने तथाकथित मानसिक घटनाओं के एक विशाल क्षेत्र के रूप में प्रकट होती है, आंशिक रूप से सचेत, आंशिक रूप से अचेतन। बेशक, आत्मा का अचेतन स्थान प्रत्यक्ष अवलोकन के लिए सुलभ नहीं है - अन्यथा यह अचेतन नहीं होगा - यह केवल चेतना पर उन प्रभावों के आधार पर आंका जा सकता है जो अचेतन प्रक्रियाओं का परिणाम हैं। और हमारे निष्कर्ष हैं: "यह ऐसा है जैसे ..." - और कुछ नहीं।

यहां मुझे अचेतन की प्रकृति और संरचना पर अधिक विस्तार से ध्यान देना चाहिए, अन्यथा मैं आत्मा की सांसारिक कंडीशनिंग के प्रश्न का संतोषजनक उत्तर नहीं दे पाऊंगा। इस प्रश्न में, शायद, हमें आत्मा की उत्पत्ति और नींव के बारे में बात करनी चाहिए, यानी उन चीजों के बारे में जो प्राचीन काल से छिपी हुई हैं। हमें अंधेरे में, न कि हमारी इंद्रियों द्वारा धारणा के उन सामान्य तथ्यों और बाहरी दुनिया के प्रति सचेत अनुकूलन के बारे में। उत्तरार्द्ध चेतना के मनोविज्ञान का विषय है, और, जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, मैं आत्मा को चेतना में कम नहीं करना चाहता। चेतना के प्रकाश के कड़ाई से सीमित शंकु की तुलना में आत्मा अनुभव का एक बहुत बड़ा और अधिक समझ से बाहर का क्षेत्र है। अचेतन आत्मा पर भी लागू होता है ।

पिछले निबंध में मैंने अचेतन की संरचना का एक सामान्य विचार देने का प्रयास किया है। इसकी सामग्री हैं आर्कटाइप्स , इसलिए बोलने के लिए, गहराई में छिपी हुई सचेत आत्मा की नींव हैं, या , एक और तुलना का उपयोग करने के लिए , इसकी जड़ें, जो न केवल शब्द के संकीर्ण अर्थ में पृथ्वी में, बल्कि दुनिया में एक के रूप में कम हो जाती हैं। पूरे। आर्कटाइप्स दृष्टिकोण की प्रणालियाँ हैं जो चित्र और भावनाएँ दोनों हैं। वे मस्तिष्क की संरचना के साथ-साथ विरासत में मिले हैं, इसके अलावा, वे इसके मानसिक पहलू हैं। एक ओर, वे एक अत्यंत मजबूत सहज पूर्वाग्रह बनाते हैं, और दूसरी ओर, वे सहज अनुकूलन की प्रक्रिया में सबसे प्रभावी मदद करते हैं। संक्षेप में, वे प्रतिनिधित्व करते हैं, इसलिए बोलने के लिए, *आत्मा का शास्त्रीय हिस्सा*, यानी इसका वह हिस्सा जिसके माध्यम से आत्मा प्रकृति से जुड़ी हुई है, या कम से कम जिसमें पृथ्वी और दुनिया के साथ आत्मा का संबंध है सबसे अधिक ध्यान देने योग्य। पृथ्वी और उसके नियमों का आत्मा पर प्रभाव इन मूलरूपों में प्रकट होता है, शायद सबसे स्पष्ट रूप से।

यह समस्या न केवल बहुत भ्रामक है, बल्कि बहुत जटिल भी है। इस प्रश्न पर चर्चा

करते समय, हमें काफी असामान्य कठिनाइयों पर विचार करना चाहिए, और सबसे बढ़कर इस तथ्य के साथ कि मूलरूप और उसके कार्य को एक प्रागैतिहासिक, तर्कहीन मनोविज्ञान के हिस्से के रूप में समझा जाना चाहिए, न कि तर्कसंगत रूप से डिज़ाइन की गई प्रणाली के रूप में। मुझे यह तुलना करने दें: हमें एक इमारत का वर्णन और व्याख्या करने की आवश्यकता है जिसकी शीर्ष मंजिल 19 वीं शताब्दी में बनाई गई थी, भूतल 16 वीं शताब्दी की है, और चिनाई की एक करीबी परीक्षा से पता चलता है कि इसे 11 वीं शताब्दी से बनाया गया था। सदी टॉवर। तहखाने में हमें एक रोमन नींव मिलती है ; तहखाने के नीचे चट्टानों से भरी एक गुफा है, जिसकी मिट्टी की ऊपरी परतों में पत्थर के उत्पाद मिलते हैं , और गहरी परतों में उस समय के जीवों के अवशेष हैं। यह छवि हमारी मानसिक संरचना का एक विचार देती है: हम सबसे ऊपरी मंजिल पर रहते हैं और केवल अस्पष्ट रूप से जानते हैं कि नीचे की मंजिल बहुत प्राचीन है। सतह के नीचे जो है वह हमसे पूरी तरह अनजान है।

बेशक, यह तुलना, किसी भी अन्य की तरह, लंगड़ा है; क्योंकि आत्मा में कुछ भी मृत अवशेष नहीं है, सब कुछ जीवित है, और हमारी ऊपरी मंजिल - चेतना - एक जीवित और सक्रिय नींव के निरंतर प्रभाव में है। यह, पूरी इमारत की तरह, इस पर टिकी हुई है। और पृथ्वी के ऊपर स्वतंत्र रूप से उठ रहे एक भवन की तरह, हमारी चेतना भी एक निश्चित सीमा तक वायु अंतरिक्ष में पृथ्वी से ऊपर है, जिसके सामने विस्तृत विस्तार है। लेकिन हम जितने गहरे नीचे जाते हैं, क्षितिज उतना ही संकरा होता जाता है और जितना अधिक हम आस-पास की वस्तुओं के गोधूलि में डुबकी लगाते हैं और अंत में नंगी चट्टानी मिट्टी को छूते हैं और इस तरह प्राचीन काल के संपर्क में आते हैं, जब हिरण शिकारियों ने अपनी रक्षा करते हुए अपने दयनीय अस्तित्व को बाहर निकाला। मौलिक शक्तियों से। कठोर स्वभाव। ये लोग अपनी पशु प्रवृत्ति की दया पर थे, जिसके बिना उनका अस्तित्व संभव नहीं होता। वृत्ति का असीमित वर्चस्व एक मजबूत और विकसित चेतना के साथ नहीं होता है। आदिम मनुष्य की चेतना बच्चे की चेतना के समान है - इसकी छिटपुट प्रकृति है। और उसकी दुनिया एक बच्चे की दुनिया की तरह ही सीमित है। इसके अलावा, हमारे बचपन में, फाईलोजेनेटिक कानून के अनुसार, एक पूरे के रूप में जीनस और मानवता के विकास के प्रागैतिहास की एक प्रतिध्वनि फिर से सुनाई देती है। Phylogenetically, हम पृथ्वी के अंधेरे और तंग गहराई से बढ़ते हैं। इसके परिणामस्वरूप, सबसे तात्कालिक कारक मूलरूप बन गए हैं, और ये मूलरूप हैं जो हमें सबसे पहले प्रभावित करते हैं; इसलिए वे असामान्य रूप से मजबूत लगते हैं। मैं कहता हूं "लगता हूं" क्योंकि जो हमें मानसिक रूप से सबसे महत्वपूर्ण लगता है, वह होना नहीं था, या कम से कम जरूरी नहीं कि वास्तविकता में ऐसा ही रहे।

सबसे तात्कालिक मूलरूप क्या हैं? यह प्रश्न हमें सीधे मूलरूपों के कार्यों की

समस्या की ओर ले जाता है, और इस प्रकार समस्या के मूल तक। लेकिन वास्तव में, हमें इस प्रश्न का उत्तर किस ओर से देना चाहिए? बच्चे की स्थिति से, या आदिम व्यक्ति की स्थिति से, या अंत में, विकसित आधुनिक चेतना की स्थिति से? हम एक मूलरूप को कैसे पहचान सकते हैं? और सामान्य तौर पर हमें मदद के लिए अपनी परिकल्पना की ओर कब मुड़ना चाहिए?

मैं एक सुझाव देना चाहूंगा: कोई भी मानसिक प्रतिक्रिया जो इसका कारण बनती है, उससे अनुपातहीन है कारण , आवश्यक जांच करें कि क्या यह एक ही समय में मूलरूप द्वारा वातानुकूलित नहीं था (cf .: *Inslinkt* -und बेबस । - प्रामाणिक।)

उस। इससे मेरा क्या मतलब है, मैं निम्नलिखित उदाहरण के साथ समझाना चाहूंगा । एक बच्चा अपनी माँ से डरता था। यह मानते हुए कि इसका कोई तर्कसंगत कारण नहीं था, जैसे कि बच्चे में पछताना, या माँ की ओर से हिंसा, या उस तरह का कुछ भी, और यह भी कि बच्चे को ऐसा कुछ भी नहीं हुआ जो इस डर की व्याख्या कर सके, मैंने प्रस्ताव दिया कट्टरपंथियों के बारे में विचारों के चश्मे के माध्यम से स्थिति पर विचार करें । आमतौर पर ऐसे डर रात में आते हैं और, एक नियम के रूप में, सपनों में खुद को प्रकट करते हैं। नाका नुने की माँ ने बच्चों को सताने वाली डायन के रूप में एक बच्चे का सपना देखा। इस मामले में, सपने की सचेत सामग्री हंसल और ग्रेटेल की कहानी थी। इससे अक्सर यह निष्कर्ष निकलता है कि इस तरह के किस्से किसी बच्चे को नहीं बताना चाहिए, यह मानते हुए कि डर का कारण यही है। यह, निश्चित रूप से, केवल एक गलत युक्तिकरण है, और फिर भी सच्चाई का मूल यही है, क्योंकि डायन मोटिफ कम से कम बच्चों के डर के लिए अभिव्यक्ति का एक पूरी तरह से उपयुक्त और प्राचीन रूप है। यही कारण है कि सामान्य रूप से ऐसी परी कथा है। रात का शिशु भय एक विशिष्ट घटना है जो हमेशा और हर जगह होती है और लंबे समय से परियों की कहानियों के विशिष्ट रूपांकनों में व्यक्त की जाती है,

हालांकि, परियों की कहानियां आदिम मनुष्य के "रात के धर्म" से किंवदंतियों, कहानियों और अंधविश्वासों के शिशु रूपों के अलावा और कुछ नहीं हैं । जिसे मैं "नो ची का धर्म" कहता हूँ, वह धर्म का एक जादुई रूप है, जिसका अर्थ और उद्देश्य अंधेरे बलों, शैतानों, चुड़ैलों, जादूगरों और आत्माओं से निपटना है। जिस तरह बच्चों की परियों की कहानी रात के प्राचीन धर्म का एक फाईलोजेनेटिक दोहराव है, उसी तरह बच्चों का डर आदिम मनुष्य के मनोविज्ञान की पुनरावृत्ति है, एक फाईलोजेनेटिक अवशेष।

कि यह अवशेष एक निश्चित जीवन शक्ति को दर्शाता है , किसी भी तरह से एक विपथन नहीं है; आखिरकार, एक वयस्क के लिए भी सभ्यता की स्थितियों में निहित एक डिग्री या किसी अन्य के लिए रात का डर निश्चित रूप से एक असामान्य घटना नहीं है। केवल रात का अत्यधिक भय ही असामान्य माना जा सकता है। और अब सवाल यह है कि किन परिस्थितियों में यह कायरता बढ़ती है? क्या इस तरह की वृद्धि को परियों की कहानी

में व्यक्त डायन के मूलरूप द्वारा ही समझाया जा सकता है, या स्पष्टीकरण के लिए अन्य कारण बताए जाने चाहिए?

शायद हम मूलरूप को केवल कुछ मामूली, सामान्य स्तर की समयबद्धता के लिए जिम्मेदार बना सकते हैं; और इसके विपरीत, इसकी विशिष्ट और प्रतीत होने वाली असामान्य वृद्धि के विशेष कारण होने चाहिए। फ्रायड, जैसा कि आप जानते हैं, इस डर की व्याख्या अनाचार निषेध के साथ बच्चे की अनाचारपूर्ण आकांक्षाओं के टकराव से होती है। यानी वह बच्चे की पोजीशन से समझाते हैं। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि फ्रायड के शब्द के व्यापक अर्थों में बच्चे "अनाचार" कर सकते हैं। लेकिन मुझे संदेह है कि क्या इन प्रयासों को तुरंत सुई के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है जेनेरिस (एक प्रकार का, एक विशेष प्रकार का, एक प्रकार का {latl}। - अनुवाद।) बाल मनोविज्ञान का। यह मानने के लिए गंभीर आधार हैं कि बच्चे का मानस अभी भी माता-पिता के मानस पर निर्भर करता है, विशेष रूप से माँ पर, इतना अधिक कि उसे मुख्य रूप से माता-पिता के मानस के लिए एक कार्यात्मक उपांग के रूप में माना जाना चाहिए। चेतना की एक स्थिर निरंतरता स्थापित होने के बाद ही बच्चे का चैत्य व्यक्तित्व बाद में प्रकट होगा। यह तथ्य कि बच्चा पहले तीसरे व्यक्ति में अपने बारे में बोलता है, मेरी राय में, उसके मनोविज्ञान की अवैयक्तिकता का एक स्पष्ट प्रमाण है।

इसलिए, मैं माता-पिता के मनोविज्ञान के बजाय बच्चे की संभावित अनाचार प्रवृत्तियों की व्याख्या करने के लिए इच्छुक हूँ, जिस तरह किसी भी बचपन के न्यूरोसिस को मुख्य रूप से माता-पिता के मनोविज्ञान के प्रकाश में माना जाना चाहिए। इस प्रकार, अक्सर बढ़ते शिशु भय का कारण माता-पिता की विशेष "जटिलता" होती है, अर्थात् उनका दमन और जीवन की कुछ समस्याओं की अज्ञानता। अचेतन में जो कुछ भी जमा होता है वह किसी न किसी रूप में पुरातन रूप धारण कर लेता है। यदि, उदाहरण के लिए, एक माँ किसी ऐसे परिसर का दमन करती है जो उसके लिए अप्रिय है और उसके अंदर भय पैदा करता है, तो उसे ऐसा लगता है कि एक बुरी आत्मा उसका पीछा कर रही है - "ए कंकाल में अलमारी" (कोठरी में कंकाल (अंग्रेजी)। - अनुवाद।), - जैसा कि अंग्रेजी कहते हैं। इस सूत्रीकरण का अर्थ है कि परिसर पहले से ही एक मूलरूप का रूप ले चुका है। वह "दुःस्वप्न" से पीड़ित और प्रेतवाधित है। भले ही या नहीं, वह अब एक "रात" बताती है, यानी, अपने बच्चे को एक "भयानक" कहानी, वह उसे अपने मनोविज्ञान से संक्रमित करती है और बच्चे की आत्मा में भय की पुरातन छवियों को पुनर्जीवित करती है। शायद उसके पास किसी अन्य व्यक्ति से जुड़ी कामुक कल्पनाएं हैं . बच्चा अपने वैवाहिक संबंधों का एक स्पष्ट प्रमाण है। उनके प्रति उसका प्रतिरोध अनजाने में बच्चे पर निर्देशित है, जिसे अस्वीकार कर दिया जाना चाहिए। पुरातन स्तर पर, यह उसकी मृत्यु से मेल खाती है। इस प्रकार, माँ एक दुष्ट बच्चे को खाने वाली बन जाती है डायन।

माँ और बच्चा दोनों समान रूप से विचारों की पुरातन संभावनाओं से संपन्न हैं, और वह कारण जिसने मानव इतिहास के दौरान दुनिया में पहली बार मूलरूप को लाया और इसे बार-बार बनाया, आज भी मौजूद है, जो उस मूलरूप को फिर से जीवित कर रहा है जो अस्तित्व में है प्राचीन काल से।

यह कोई संयोग नहीं है कि मैंने मूलरूप की बचकानी अभिव्यक्ति के इस विशेष उदाहरण को चुना। आखिरकार, सबसे तात्कालिक प्रोटोटाइप, शायद, माँ है; बच्चे के लिए यह सभी तरह से निकटतम और सबसे शक्तिशाली अनुभव है, जो इसके अलावा, सबसे प्लास्टिक युग में उत्पन्न होता है। चूंकि बचपन में चेतना अभी भी बेहद खराब विकसित हुई है, व्यक्तिगत अनुभव की कोई बात नहीं हो सकती है: इसके विपरीत, माँ एक आदर्श अनुभव है; उसे कमोबेश अचेत अवस्था में माना जाता है, एक निश्चित, ठोस व्यक्ति के रूप में नहीं, बल्कि एक माँ के रूप में, एक आदर्श के रूप में, जिसका अर्थ सभी प्रकार की संभावनाओं से भरा होता है। बाद के जीवन में, यह प्राथमिक छवि फीकी पड़ जाती है और इसे एक सचेत, अपेक्षाकृत व्यक्तिगत छवि से बदल दिया जाता है, और फिर ऐसा लगता है कि यह माँ की एकमात्र संभव छवि है। अचेतन में, इसके विपरीत, माँ, पहले की तरह, एक शक्तिशाली प्रोटोटाइप बनी हुई है, जो रंग और यहाँ तक कि व्यक्तिगत और सचेत जीवन के दौरान महिला, समाज, भावनाओं और माँ के संबंध को निर्धारित करती है, लेकिन वह करती है यह, ज़ाहिर है, इतनी सूक्ष्मता से। वह चेतना आमतौर पर कुछ भी नोटिस नहीं करती है। कुछ लोग सोचते हैं कि यह सिर्फ एक रूपक है। हालांकि, तथ्य यह है कि कई पुरुष अपनी माँ से पत्नी चुनते हैं, केवल इस तथ्य के आधार पर कि वह दिखती है या इसके विपरीत, अपनी माँ की तरह नहीं दिखती है, यह पूरी तरह से ठोस तथ्य है।-जर्मनों के लिए मदर जर्मनी, जैसे 1a douc फ्रांस के लिए फ्रांस, एक ऐसी नीति के आधार का गठन करता है जिसे केवल जीवन के संपर्क से बाहर बुद्धिजीवियों द्वारा कम करके आंका और उपेक्षित नहीं किया जा सकता है। व्यापक आंत्र मेटर एक्लेसिया उतना ही छोटा रूपक है जितना कि धरती माँ, प्रकृति माँ, और सामान्य रूप से "पदार्थ"।

बच्चे के लिए माँ का आदर्श शायद सबसे तात्कालिक है। हालाँकि, अपनी चेतना के विकास के साथ, पिता भी अपनी दृष्टि के क्षेत्र में आ जाता है, मूलरूप को पुनर्जीवित करता है, जिसकी प्रकृति कई मायनों में माँ के आदर्श के विपरीत है। यदि मातृ मूलरूप-यिन की चीनी अवधारणा से मेल खाती है, तो पैतृक मूलरूप यांग की अवधारणा से मेल खाती है। यह मनुष्य के प्रति, कानून और राज्य के प्रति, मन और आत्मा के प्रति, प्रकृति की गतिशीलता के प्रति दृष्टिकोण को परिभाषित करता है। "पितृभूमि" का अर्थ है सीमाएँ, यानी एक निश्चित स्थान, लेकिन मिट्टी धरती माँ, आराम करने वाली और उपजाऊ है। राइन एक पिता है, नील की तरह, हवा, तूफान, गड़गड़ाहट और बिजली की तरह। पिता निर्माता और अधिकार है, और इसलिए कानून और राज्य है। वह वह है जो हवा की तरह

गति में खुद को स्थापित करता है , यह वह है जो अदृश्य विचारों - हवादार छवियों की मदद से बनाता है और नियंत्रित करता है । वह हवा की रचनात्मक सांस है - पनुमा - स्पिरिटस - आत्मान , आत्मा।

इस प्रकार, पिता भी एक शक्तिशाली आदर्श है जो बच्चे की आत्मा में रहता है। पिता भी सबसे पहले पिता है, ईश्वर की सर्वव्यापी छवि, गतिशील सिद्धांत। जीवन के दौरान, यह शक्तिशाली छवि भी पृष्ठभूमि में ढल जाती है: पिता एक सीमित, अक्सर बहुत मानवीय व्यक्ति बन जाता है। इसके विपरीत, पिता की छवि उसके अर्थ के अनुरूप सभी संभावित क्षेत्रों तक फैली हुई है। जिस प्रकार मनुष्य ने तुरंत अपने लिए प्रकृति की खोज नहीं की, बल्कि कुछ समय बाद ही, उसी तरह धीरे-धीरे वह अपने लिए राज्य, कानून, कर्तव्य, जिम्मेदारी और कारण की खोज करता है। जैसे-जैसे विकासशील चेतना जानने में सक्षम होती जाती है, माता-पिता के व्यक्तित्व का महत्व कम होता जाता है। लेकिन पिता के स्थान पर मानव समाज का कब्जा होने लगता है, माता का स्थान परिवार द्वारा ले लिया जाता है।

मेरी राय में, यह कहना गलत होगा कि माता-पिता की जगह लेने वाली हर चीज माता-पिता के प्रोटोटाइप के अपरिहार्य नुकसान के मुआवजे से ज्यादा कुछ नहीं है । उनकी जगह लेने वाली चीज सिर्फ एक विकल्प नहीं है, बल्कि माता-पिता से पहले से जुड़ी एक वास्तविकता है, जो माता-पिता के प्रोटोटाइप के लिए धन्यवाद, बच्चे की आत्मा में प्रवेश कर गई है। एक गर्म, सुरक्षात्मक, नर्सिंग मां भी एक चूल्हा, एक आश्रय गुफा, या एक झोपड़ी और आसपास की वनस्पति है। माँ भी उपजाऊ कृषि योग्य भूमि है, और उसका पुत्र दिव्य गेहूँ, मनुष्य का भाई और मित्र है। माँ दूध देने वाली गाय और झुंड है । बाप आगे-पीछे चलता है, दूसरे आदमियों से बात करता है, शिकार करता है, यात्रा करता है, लड़ता है, अपने खराब मिजाज को आंधी की तरह टूटने देता है, बाकी से छुपे हुए विचार, वह अचानक तूफानी हवा की तरह, पूरी स्थिति को बदल देता है . वह संघर्ष और हथियार है, सभी परिवर्तन का कारण है, वह बैल , चिड़चिड़ा और असाधारण रूप से सक्रिय, या उदासीन और आलसी है। वह मदद या चोट के लिए तैयार सभी तात्विक ताकतों की छवि है ।

बच्चा कम उम्र में ही इन सबका सामना करता है , आंशिक रूप से माता-पिता के माध्यम से, आंशिक रूप से उनके साथ। माता-पिता की छवि जितनी अधिक समतल और मानवीय होती है, उतनी ही मजबूत वे सभी चीजें सामने आती हैं जो पहले एक पृष्ठभूमि और एक साइड इफेक्ट की उपस्थिति थी। जिस धरती पर बच्चा खेला करता था, जिस आग ने उसे गर्म किया था, बारिश और तूफान जिसमें से वह जम गया था, हमेशा वास्तविकता थी, लेकिन पहले उन्हें उन लोगों द्वारा माना और समझा गया जो अपने माता-पिता के गुणों के रूप में ज्ञान के साथ जाग रहे थे। अब, हालांकि, भौतिक और गतिशील

पृथ्वी, जैसे थे, घूँघट फेंक देते हैं और स्वतंत्र बलों के रूप में प्रकट होते हैं जो पहले अपने माता-पिता का मुखौटा पहनते थे। इसलिए, वे एक विकल्प नहीं हैं , बल्कि एक अधिक विकसित चेतना के अनुरूप एक वास्तविकता हैं।

हालांकि, इस तरह के विकास की प्रक्रिया में, कुछ खो जाता है, अर्थात्, माता-पिता के साथ सीधे संबंध और एकता की एक अनिवार्य भावना। यह भावना केवल भावना नहीं है , बल्कि एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक तथ्य है, जिसे पूरी तरह से अलग संदर्भ में लेवी-ब्रुल ने " भागीदारी" कहा था। रहस्यवादी "। इस ईओ ipso द्वारा निरूपित (इस प्रकार, इस वजह से (अव्य।)। - अनुवाद) एक बहुत ही स्पष्ट अभिव्यक्ति में, तथ्य न केवल आदिम मनुष्य के मनोविज्ञान में, बल्कि हमारे विश्लेषणात्मक में भी एक बड़ी भूमिका निभाता है। संक्षेप में, यह तथ्य एक सामान्य बेहोशी में होने की एकता में निहित है । शायद मुझे इस पर थोड़ा और विस्तार से ध्यान देना चाहिए: यदि दो लोगों का एक ही समय में एक ही परिसर होता है, तो परिणाम एक असामान्य भावनात्मक प्रभाव होता है - एक प्रक्षेपण जो उनके बीच आकर्षण या प्रतिकर्षण का कारण बनता है। यदि, उदाहरण के लिए, मैं और अन्य व्यक्ति इस महत्वपूर्ण तथ्य से अवगत नहीं हैं, तो मैं उसके (व्यक्ति) के साथ कुछ हद तक पहचान करता हूँ और इसलिए उससे संबंधित होना शुरू कर देता हूँ क्योंकि मैं इस परिसर से संबंधित होता अगर मुझे इसके बारे में पता होता .

ऐसी भागीदारी माता-पिता और बच्चों के बीच रहस्य मौजूद है । एक प्रसिद्ध उदाहरण सास है जो अपनी बेटी के साथ अपनी पहचान बनाती है और इस प्रकार, अपने दामाद से शादी करती है; या पिता जो सोचता है कि वह अपने बेटे की देखभाल कर रहा है, उसे अपनी - यानी अपने पिता की इच्छाओं को पूरा करने के लिए मजबूर कर रहा है , जैसे कि पेशा चुनना या शादी करना। इसके विपरीत, एक समान रूप से प्रसिद्ध व्यक्ति पुत्र है, जो पिता के साथ अपनी पहचान रखता है। लेकिन माँ और बेटी के बीच एक विशेष रूप से घनिष्ठ संबंध मौजूद है, जिसे इस मामले में एक सहयोगी प्रयोग की मदद से भी साबित किया जा सकता है । एसोसिएशनस्टूडेंट II, बीट्राग एक्स. - प्रामाणिक।) हालांकि भागीदारी रहस्यवाद किसी व्यक्ति विशेष के लिए एक अचेतन तथ्य है, फिर भी, वह हमेशा उस क्षण को महसूस करता है जब उसका अस्तित्व समाप्त हो जाता है। जिस व्यक्ति के पिता अभी भी जीवित हैं और जिसके पिता की मृत्यु हो गई है, उसके मनोविज्ञान में हमेशा एक निश्चित अंतर होता है। जब तक भागीदारी है माता-पिता के साथ रहस्यवादी , अपेक्षाकृत शिशु जीवन शैली को बनाए रखा जा सकता है। भागीदारी के कारण ऐसे व्यक्ति को बाहर से अचेतन प्रेरणाओं के रूप में रहस्यमय जीवन दिया जाता है , जिसके लिए वह कोई जिम्मेदारी नहीं उठाता, क्योंकि वे सचेत नहीं होते हैं। फंतासी बेहोशी के लिए धन्यवाद , जीवन का बोझ हल्का हो सकता है, या कम से कम लग सकता है। ऐसा व्यक्ति अकेला नहीं होता, अनजाने में वह दो या तीन में मौजूद होता है। पुत्र अभी भी माँ के गर्भ में

है और पिता द्वारा संरक्षित है। पुत्र में पिता का पुनर्जन्म हुआ। माँ ने पिता का कायाकल्प किया और इस तरह अपनी जवानी नहीं खोई। शायद मुझे आदिम मनुष्य के मनोविज्ञान से प्रमाण देने की आवश्यकता नहीं है। उनका जिक्र करना ही काफी होगा।

चेतना के विस्तार और सुदृढीकरण के साथ, यह सब गायब हो जाता है। माता-पिता की छवियों का बाहरी दुनिया में सहवर्ती विस्तार, या यहां तक कि बचपन की धुंध में दुनिया की घुसपैठ, माता-पिता के साथ अचेतन एकता को नष्ट कर देती है। आदिम दीक्षाओं में, या पुरुषों में दीक्षा के संस्कारों में, यह प्रक्रिया चेतना के स्तर पर भी होती है। इस प्रकार पैतृक मूलरूप पृष्ठभूमि में आ जाता है; वह अब "नक्षत्र" नहीं है, इसलिए बोलने के लिए। अब, हालांकि, एक निश्चित भागीदारी है परिवार, समाज, चर्च या राष्ट्र के साथ रहस्य। हालांकि, यह भागीदारी सामान्य और गैर-व्यक्तिगत है और अचेतन को गतिविधि के लिए बहुत अधिक गुंजाइश नहीं देती है। यदि कोई अपने अचेतन को बहुत अधिक दे देता है और बहुत सरल हृदय वाला हो जाता है, तो कानून और समाज उसे जल्दी से होश में ले आता है। यौवन की शुरुआत के साथ, एक नई, व्यक्तिगत भागीदारी के गठन का अवसर होता है रहस्यवादी, और साथ ही माता-पिता के साथ पहचान में खोए हुए व्यक्तिगत घटक को बदलने की संभावना। नया मूलरूप इस प्रकार है: एक पुरुष में, एक महिला का आदर्श रूप प्रकट होता है, एक महिला में, एक पुरुष का आदर्श। और ये दो आंकड़े भी माता-पिता की छवि के मुखौटे के नीचे छिपे हुए थे, लेकिन अब वे प्रकट होते हैं, हालांकि वे अभी भी माता-पिता की छवि से एक मजबूत, अक्सर निर्णायक प्रभाव का अनुभव करते हैं। कुछ कारणों से, जिन पर नीचे चर्चा की जाएगी, मैंने महिला को एनिमा नाम दिया है, पुरुष में मूलरूप को, और एनिमस को महिला में पुरुष मूलरूप में रखा है।

माता-पिता की छवि का अचेतन प्रभाव जितना मजबूत होता है, उतनी ही बार किसी प्रियजन की आकृति को माता-पिता के लिए सकारात्मक या नकारात्मक विकल्प के रूप में चुना जाता है (तुलना करें: *मरो*) बेज़ीहंगेन ज़िविसचेन डेम आईसीएच -und डेम अनब्यूफस्टेन। - प्रामाणिक।) माता-पिता की छवि का महत्वपूर्ण प्रभाव आदर्श से विचलन नहीं है, इसके विपरीत, यह काफी सामान्य है, और इसलिए एक बहुत ही सामान्य घटना है। यह बहुत महत्वपूर्ण है कि ऐसा है, क्योंकि अन्यथा माता-पिता का बच्चों में पुनर्जन्म नहीं होगा, यानी माता-पिता की छवि इतनी खो जाएगी कि व्यक्ति के जीवन में निरंतरता समाप्त हो जाएगी। वह अपने बचपन को वयस्कता में स्थानांतरित करने में सक्षम नहीं होगा और परिणामस्वरूप, वह एक अचेतन स्तर पर एक बच्चा बना रहेगा, जो भविष्य में एक न्यूरोसिस के उद्भव के लिए सबसे अनुकूल आधार बनाता है। वह उन सभी बुराइयों से पीड़ित होगा जो अनैतिहासिक नवप्रवर्तनकर्ताओं पर पड़ती हैं, चाहे वे व्यक्ति हों या सामाजिक समूह।

तथ्य यह है कि बच्चे, जैसे थे, अपने माता-पिता से पुनर्विवाह करते हैं, एक निश्चित

अर्थ में, सामान्य है। मनोवैज्ञानिक रूप से, यह है जैविक दृष्टि से स्वस्थ नस्ल के विकास के लिए पूर्वजों की हानि जितनी ही महत्वपूर्ण है। इसके लिए धन्यवाद, निरंतरता उत्पन्न होती है, वर्तमान में अतीत के जीवन की एक उचित निरंतरता। केवल एक दिशा या किसी अन्य में गंभीर विचलन अस्वस्थ हैं।

चूंकि माता-पिता के लिए सकारात्मक या नकारात्मक समानता किसी प्रियजन को चुनने में निर्णायक कारक थी, माता-पिता की छवि से अलगाव, और इसलिए बचपन से, पूर्ण नहीं था। यद्यपि ऐतिहासिक निरंतरता के लिए बचपन को इसके साथ ले जाना था, तथापि, यह आगे के विकास की कीमत पर नहीं आना चाहिए। किसी दिन, जीवन के मध्य में, बचपन के भ्रम की आखिरी धुंधली रोशनी निकल जाएगी - बेशक, हम एक आदर्श काल्पनिक मामले के बारे में बात कर रहे हैं, क्योंकि बहुत से लोग अपने दिनों के अंत तक बच्चे बने रहते हैं - और एक वयस्क के आदर्श माता-पिता की छवि से, एक पुरुष की छवि से बाहर खड़े हो जाओ, एक महिला के रूप में उसे प्राचीन काल से जाना जाता है, और एक महिला की छवि, जिसे एक पुरुष हजारों सालों से अपने आप में ले रहा है।

ऐसे बहुत से पुरुष हैं जो विस्तार से कह सकते हैं कि एक महिला की छवि कैसी दिखती है जो वे अपने अंदर रखते हैं। लेकिन मैं शायद ही कभी ऐसी महिलाओं से मिला हूं जो एक पुरुष की सटीक छवि को चित्रित करने में सक्षम होंगी। जिस तरह माँ की मूल छवि अतीत की सभी माताओं की एक सामान्यीकृत छवि है, उसी तरह एनिमा की छवि एक सुपर-व्यक्तिगत छवि है, जो उन विशेषताओं को प्रकट करती है जो कई पुरुषों में बिल्कुल मेल खाती हैं जो व्यक्तिगत रूप से पूरी तरह से अलग हैं। यह संयोग यहां इतना महान है कि इन विशेषताओं के आधार पर लगभग एक निश्चित प्रकार की महिला को फिर से बनाना संभव होगा। चौंकाने वाली बात यह है कि इस प्रकार में शब्द के सामान्य अर्थों में मातृ का पूरी तरह से अभाव है। सबसे अच्छा, वह एक साथी और दोस्त है, सबसे खराब, एक असंतुष्ट महिला। अक्सर इन प्रकारों को, उनके सभी मानवीय और राक्षसी गुणों के साथ, शी एंड विजडम की बेटी "राइडर हैगार्ड द्वारा, बेनोइस द्वारा एल ' एटलांटाइड में, हेलेन की छवि में खंडित रूप से दूसरे भाग में काफी अच्छी तरह से वर्णित किया गया है। फॉस्टा, और साइमन मैगस की नोस्टिक कथा में सबसे संक्षिप्त और सटीक रूप से, जिसका कैरिकेचर भी प्रेरितों की कहानी में पाया जा सकता है। साइमन मैगस हमेशा हेलेना नाम की एक लड़की के साथ उसकी यात्रा पर था। साइमन ने उसे टायर में एक वेश्यालय में पाया। वह ट्रोजन हेलेन का एक नया अवतार था। मुझे नहीं पता कि गोएथे का हेलेना और फॉस्ट के लिए उद्देश्य किस सचेत स्तर पर साइमन की कथा पर आधारित है। वही कनेक्शन विस्डम की बेटी में पाया जा सकता है ", जहां है निरंतरता जानने के साथ अब निश्चित नहीं है।

शब्द के सामान्य अर्थों में मातृ की अनुपस्थिति इंगित करती है, एक ओर, माँ की

छवि से पूर्ण अलगाव, दूसरी ओर, विशुद्ध रूप से व्यक्तिगत-मानवीय संबंधों के विचार की उपस्थिति जो जुड़े नहीं हैं प्रजनन के प्राकृतिक लक्ष्य के साथ। संस्कृति के वर्तमान स्तर पर, अधिकांश पुरुष स्त्री के मातृ महत्व पर ध्यान देते हैं, यही कारण है कि अनिमा किसी भी तरह से एक असंतुष्ट महिला के शिशु-आदिम स्तर को पार नहीं कर पाएगी। यह इस प्रकार है कि वेश्यावृत्ति सभ्य विवाह का मुख्य उपोत्पाद है। हालांकि, साइमन की कथा और फॉस्ट के दूसरे भाग में, एक बिल्कुल वयस्क होने के प्रतीक मिल सकते हैं। यह वयस्क प्राणी प्रकृति के फ्रेम से परे जा रहा है। ईसाई और बौद्ध मठ भी इस समस्या को हल करने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन केवल मांस के बलिदान के माध्यम से। यहां देवी-देवता मानव व्यक्तित्व की जगह लेते हैं, जिसे एनिमा के प्रक्षेपण से भस्म किया जा सकता था।

इस प्रकार हम एक अत्यंत विवादास्पद क्षेत्र में प्रवेश कर रहे हैं जिसमें मैं यहां और आगे नहीं जाना चाहूंगा। शायद यह बेहतर होगा यदि हम एक सरल समस्या पर लौटते हैं, अर्थात् प्रश्न: हम इस तरह के एक स्त्रैण आदर्श के अस्तित्व को कैसे पहचान सकते हैं?

जब तक मूलरूप का अनुमान नहीं लगाया जाता है और किसी वस्तु में प्यार या घृणा नहीं होती है, तब भी यह व्यक्ति के साथ पूरी तरह से पहचाना जाता है और उसकी इच्छा के विरुद्ध, उसमें व्यक्त किया जाएगा। इस मामले में, इसलिए, उसका एनिमा एक आदमी में प्रकट होगा। हमारी भाषा में लंबे समय से एक ऐसा शब्द है जो इस अजीबोगरीब रवैये की विशेषता है - " एनीमोसिटैट " (चिड़चिड़ापन (जर्मन)। - अनुवाद) इस अभिव्यक्ति की सबसे अच्छी व्याख्या "एनिमा कब्जे" के रूप में की जाती है। यानी हम बात कर रहे हैं बेलगाम भावनाओं की। यद्यपि " एनीमोसिटैट " शब्द का प्रयोग एक अप्रिय भावनात्मक स्थिति के अर्थ में किया जाता है, वास्तव में, एनिमा भी सकारात्मक भावनाओं का कारण बन सकती है (जे तुम एन जी -und वू मैं 1 एच और 1 मी , दासो *Geheimnis* डीईआर गोल्डनन ब्लाइट , जे तुम एन जी , मरो बेज़ीहंगेन ज़िविसचेन डेम आईसीएच -und डेम बेबुनियाद । - प्रामाणिक।)

संयम एक आम तौर पर मर्दाना आदर्श है। यह भावनाओं को दबाने से हासिल होता है। दूसरी ओर, भावना एक विशेष रूप से स्त्री गुण है, और चूंकि एक पुरुष, अपने पुरुषत्व के आदर्श को प्राप्त करने के लिए, अपने पास मौजूद सभी स्त्रैण लक्षणों को दबा देता है, वह कुछ भावनाओं को भी दबाता है, उन्हें महिला कमजोरी की अभिव्यक्ति मानता है। इस प्रकार उसके अचेतन में पवित्र गुण या भावुकता जमा हो जाती है, जिसे तोड़कर आप उसमें स्त्री होने का अस्तित्व देते हैं। जैसा कि आप जानते हैं, यह बहुत ही मर्दाना पुरुष होते हैं जो अपने भीतर स्त्री भावनाओं के प्रति सबसे अधिक संवेदनशील होते हैं। इस तथ्य के आधार पर, शायद एक ओर, पुरुष आत्मघाती हत्यारों की संख्या काफी अधिक है, और दूसरी ओर, अक्सर सामना की जाने वाली ताकत और सहनशक्ति की व्याख्या की जा सकती है, जो बहुत ही स्त्री महिलाओं की विशेषता है। यदि हम ध्यान से किसी पुरुष की

अनियंत्रित भावनाओं का विश्लेषण करते हैं और साथ ही उस संभावित व्यक्तित्व का पुनर्निर्माण करने का प्रयास करते हैं जिससे ये भावनाएं आती हैं, तो सबसे अधिक संभावना है कि हम उस महिला आकृति पर आ जाएंगे जिसे मैं एनिमा कहता हूं। यही कारण है कि प्राचीन धर्म में महिला आत्मा, " मानस ", या "एनिमा" की अवधारणा भी बनाई गई थी, और चर्च मध्य युग, मनोवैज्ञानिक कारण के बिना, सवाल उठाया: " हैबेट मुलियर एनीमम ? "(क्या एक महिला में आत्मा होती है? (अव्य।)। - अनुवाद)

एक महिला के लिए, यह बिल्कुल विपरीत है। अगर उसकी दुश्मनी टूट जाती है, तो ये एक आदमी की तरह भावनाएँ नहीं होंगी। इस मामले में, वह चर्चाओं में प्रवेश करना शुरू कर देती है और जोर से कुछ साबित करती है। और कितनी मनमानी और मनमौजी है एनिमा की भावनाएं, ठीक वैसे ही जैसे अतार्किक और असंबद्ध महिला तर्क। कोई सीधे एनिमस की सोच के बारे में बात कर सकता है, जो किसी के अधिकार को नहीं पहचानता है, अंतिम शब्द सुरक्षित रखता है और हमेशा "क्योंकि!" वाक्यांश के साथ समाप्त होता है। एनिमा तर्कहीन भावना है, दुश्मनी तर्कहीन निर्णय है ।

जहाँ तक मेरा अनुभव अनुमति देता है, एक आदमी के लिए यह समझना हमेशा आसान होता है कि एनिमा क्या है। यहां तक कि उसकी एक बहुत ही निश्चित छवि है, और महिलाओं की एक बड़ी संख्या में वह हमेशा उन लोगों को पहचान सकता है जो एनिमा के प्रकार के लिए सबसे उपयुक्त हैं। लेकिन, एक नियम के रूप में, मुझे हमेशा एक महिला को यह समझाने में बहुत परेशानी होती थी कि एनिमस क्या था, और एक भी मामला ऐसा नहीं था जब कोई महिला मुझे एनिमस के व्यक्तित्व के बारे में विशेष जानकारी दे सके। इससे मैंने यह निष्कर्ष निकाला कि एनिमस का शायद कोई व्यक्तित्व नहीं है जिसे एक निश्चित तरीके से समझा जा सके; दूसरे शब्दों में, सबसे अधिक संभावना है, यह एक एकता नहीं, बल्कि एक भीड़ का प्रतिनिधित्व करता है। यह तथ्य, जाहिरा तौर पर, पुरुष और महिला मनोविज्ञान की खासियत से जुड़ा हुआ है। जैविक अवस्था में, एक महिला का मुख्य हित एक पुरुष को रखना है, जबकि एक पुरुष के लिए मुख्य रुचि एक महिला को जीतना है, और स्वभाव से वह शायद ही कभी एक विजय पर रुकता है । इस प्रकार, एक महिला के लिए, एक पुरुष व्यक्तित्व द्वारा निर्णायक भूमिका निभाई जाती है; और इसके विपरीत, एक पुरुष का एक महिला से संबंध कम निश्चित होता है, यानी वह अपनी पत्नी को भी दूसरों में से एक मान सकता है। वह हमेशा विवाह की कानूनी और सामाजिक प्रकृति पर भी जोर देता है, जबकि महिला इसे एक विशेष रूप से व्यक्तिगत संबंध देखती है। नतीजतन, एक महिला की चेतना, एक नियम के रूप में, एक पुरुष तक सीमित है, जबकि एक पुरुष की चेतना में व्यक्तिगत से परे जाने की इच्छा होती है, जो कुछ परिस्थितियों में, व्यक्तिगत सब कुछ के विपरीत चल सकती है। इसके आधार पर, हम यह मान सकते हैं कि अचेतन में इस प्रवृत्ति की भरपाई विपरीत द्वारा की जानी चाहिए। इसकी

एक उत्कृष्ट पुष्टि पुरुष में एनिमा की अपेक्षाकृत सख्ती से परिभाषित आकृति और महिला में एनिमस की समान रूप से अनिश्चित बहुरूपता है।

मैं यहां केवल सामान्य शब्दों में एनिमा और एनिमस को चित्रित करने के लिए खुद को सीमित करने के लिए मजबूर हूं। लेकिन अगर मैं एनिमा को केवल महिला के मूलरूप के रूप में वर्णित करता, जिसमें मुख्य रूप से तर्कहीन भावना होती है, और एनिमस केवल पुरुष के आदर्श के रूप में, विचारों से युक्त होता है, तो यह सीमा बहुत दूर चली जाएगी। दोनों आंकड़े विशाल समस्याएं पेश करते हैं, क्योंकि वे उन मानसिक घटनाओं के पुरातन रूप हैं जिनकी समग्रता प्राचीन काल से आत्मा कहलाती है। यही कारण है कि एक व्यक्ति को आत्माओं या राक्षसों के बारे में बिल्कुल भी बात करने की आवश्यकता महसूस होती है।

कोई भी स्वायत्त मानसिक सामग्री अतिरिक्त व्यक्तिगत या उद्देश्यपूर्ण नहीं है। वस्तुनिष्ठता, अवैयक्तिकता चेतना की एक श्रेणी है। फिर भी स्वायत्त मानसिक कारक प्रकृति में व्यक्तिगत हैं, मानसिक रूप से बीमार लोगों द्वारा सुनी गई आवाजों से लेकर माध्यमों के भूतों और मनीषियों के दर्शन तक। वही एनिमस और एनिमस पर लागू होता है, जिसमें एक व्यक्तिगत चरित्र भी होता है, जिसे केवल "आत्मा" शब्द के रूप में व्यक्त किया जा सकता है।

हालांकि, यहां मैं संभावित गलतफहमियों के प्रति सावधान करना चाहूंगा। आत्मा की अवधारणा, जिसका मैं यहां उपयोग करता हूं, की तुलना आदिम मनुष्य के दृष्टिकोण से की जा सकती है, उदाहरण के लिए, मिस्र के बा और का की आत्माओं के साथ, उदाहरण के लिए, "आत्मा" के ईसाई विचार के साथ।, जो पहले से ही आध्यात्मिक व्यक्तिगत पदार्थ की दार्शनिक समझ का प्रयास है। आत्मा की मेरी विशुद्ध रूप से अभूतपूर्व व्याख्या का इससे कोई लेना-देना नहीं है। मैं मनोवैज्ञानिक रहस्यवाद में नहीं लगा हूं, लेकिन केवल पुरातन मनोवैज्ञानिक घटनाओं को वैज्ञानिक रूप से समझने की कोशिश कर रहा हूं जो आत्मा में विश्वास का आधार हैं।

चूंकि एनिमस और एनिमा का वास्तविक परिसर हर समय और लोगों द्वारा आत्मा के रूप में वर्णित सबसे अधिक निकटता से मेल खाता है, इस तथ्य में आश्चर्यजनक कुछ भी नहीं है कि, जैसे ही आप दोनों परिसरों की सामग्री के करीब पहुंचना शुरू करते हैं, आप तुरंत सामना करते हैं रहस्यवाद का असाधारण वातावरण जो वे अपने साथ लाते हैं। . जहां एनिमा को प्रक्षेपित किया जाता है, वहां तुरंत ऐतिहासिक अपनेपन की एक अद्भुत भावना पैदा होती है, जिसे गोएथे ने शब्दों में पहना था: "आह, उस समय में जो पहले ही अप्रचलित हो चुके थे, आप मेरी बहन या मेरी पत्नी थीं" (कविता में "क्यों करते हैं" आप हमें गहरे विचारों की ओर ले जाते हैं? "(श्रीमती वॉन स्टीन के लिए। - प्रामाणिक।) और राइडर हैगार्ड और बेनोइट, अपरिहार्य ऐतिहासिक भावना को श्रद्धांजलि देने के लिए, ग्रीस

और मिस्र की ओर मुड़ें।

हैरानी की बात है, मेरे अनुभव में, इस तरह के रहस्यमय ऐतिहासिकता का एनिमस में अभाव है। मैं कहूंगा कि वह वर्तमान और भविष्य में अधिक व्यस्त हैं। वह विधायी झुकावों का प्रभुत्व है, वह इस बारे में बात करना पसंद करता है कि चीजें कैसी होनी चाहिए, या कम से कम तथ्यों के बारे में एक विवादास्पद दृष्टिकोण देता है, जो कि काफी विवादास्पद और स्पष्ट नहीं है, और वह इसे इतनी स्पष्ट रूप से करता है कि भविष्य में एक महिला उन विचारों से छुटकारा दिलाता है जो उसके लिए बहुत दर्दनाक हैं।

मैं इस अंतर को खुद को फिर से समझा सकता हूँ, इसके विपरीत मुआवजे के द्वारा। एक आदमी अपने दिमाग में पहले से ही योजना बना लेता है और भविष्य बनाने की कोशिश करता है, जबकि इस बात को लेकर उलझन में रहता है कि किसी की परदादी कौन थी, यह एक विशेष रूप से महिला पेशा है। लेकिन यह ठीक यही महिला वंशावली प्रवृत्ति थी जो राइडर हैगार्ड में अंग्रेजी भावुकता के साथ बहुत स्पष्ट रूप से प्रकट हुई थी, जबकि बेनोइट में उसी प्रवृत्ति ने "क्रोनिक" का तीखा स्वाद प्राप्त किया था। परिवार एट स्कैंडेल्यूज़ "(फैमिली क्रॉनिकल और स्कैंडल्स (फ्रेंच)। - परेड।)। पुनर्जन्म के विचार की एक तर्कहीन भावना के रूप में प्रकट होना एनिमा से निकटता से संबंधित है, जबकि एक महिला, क्योंकि वह बहुत अधिक अधीन नहीं है। मनुष्य का तर्कवाद, इन्हीं भावनाओं को काफी सचेत रूप से पहचानता है।

ऐतिहासिक भावना को हमेशा कुछ महत्वपूर्ण और भाग्य से जुड़ा हुआ महसूस किया जाता है। इसलिए, यह सीधे अमरता और परमात्मा की समस्याओं की ओर ले जाता है। तर्कसंगत रूप से संशयवादी बेनोइट्स के मामले में भी, जो लोग प्रेम से मर गए, वे ममीकरण की कुछ विशेष पद्धति के लिए अनंत काल का धन्यवाद पाते हैं, रहस्यवाद के उत्कर्ष का उल्लेख नहीं करने के लिए "वापसी का वह »राइडर हैगार्ड द्वारा - वैसे, पहले क्रम का एक मनोवैज्ञानिक दस्तावेज!

चूँकि शत्रुता स्वयं न तो कोई भावना है और न ही कोई झुकाव, यहाँ दर्शाया गया यह पहलू इससे पूरी तरह से अनुपस्थित है। और फिर भी, अपने गहरे सार में, यह ऐतिहासिक भी है। दुर्भाग्य से, एनिमस के लिए कोई अच्छे साहित्यिक उदाहरण नहीं हैं, क्योंकि महिलाएं पुरुषों की तुलना में कम लिखती हैं, और इसके अलावा, यदि वे लिखती हैं, तो उनमें कुछ हद तक भोले आत्मनिरीक्षण की कमी होती है, या कम से कम वे इस आत्मनिरीक्षण के परिणामों को संग्रहीत करना पसंद करते हैं। कहीं और - शायद ठीक इसलिए क्योंकि इससे कोई भावना जुड़ी नहीं है। एकमात्र दस्तावेज जिसके बारे में मुझे पता है, उसमें ये कमियां नहीं हैं, मैरी हे का उपन्यास The बुराई दाख की बारी। इस पूरी तरह से स्पष्ट कथा में, एनिमस का ऐतिहासिक क्षण कलात्मक रूप से छिपा हुआ प्रतीत होता है, जो निश्चित रूप से लेखक द्वारा अनजाने में किया गया था।

एनिमस उपलब्ध है प्राथमिकता , एक विचारहीन निर्णय के लिए अचेतन स्थिति । इस तरह के निर्णय के अस्तित्व को केवल उस दृष्टिकोण से जाना जा सकता है जो तब मन में कुछ चीजों के संबंध में उठता है। यहां मुझे एक छोटा सा उदाहरण देना चाहिए: एक परिवार में, एक माँ ने अपने बेटे को एक गंभीर माहौल से घेर लिया और उसे पूरी तरह से असंगत महत्व दिया, जिसने अंततः, यौवन की शुरुआत के तुरंत बाद, उसे विक्षिप्त बना दिया। इस मूर्खतापूर्ण स्थापना का कारण तुरंत स्पष्ट नहीं था। अधिक गहन शोध के बाद ही एक अचेतन हठधर्मिता का अस्तित्व था जो इस तरह लग रहा था: "मेरा बेटा आने वाला मसीहा है"। यह महिलाओं में सामान्य रूप से नायक के आदर्श की सबसे आम अभिव्यक्ति है, जिसे या तो पिता पर, या पति पर, या बेटे पर निर्णय के रूप में पेश किया जाता है, और फिर अनजाने में व्यवहार को नियंत्रित करता है। इसका एक उत्कृष्ट और प्रसिद्ध उदाहरण एनी बेसेंट हैं, जिन्होंने उद्धारकर्ता को भी पाया।

मैरी हे की कहानी में, नायिका अपने पति को अपनी मानसिकता से पागल कर देती है, बेहोशी पर आधारित और कभी भी यह धारणा व्यक्त नहीं की कि वह एक नीच अत्याचारी है, जिससे उसे सावधान रहना चाहिए ... वह इस अधूरा "कैसे" को छोड़ देती है पति को साबित करने के लिए, जो अंततः एक उपयुक्त सिंक्वेसेंटो अत्याचारी व्यक्ति पाता है और परिणामस्वरूप अपना दिमाग खो देता है। इस प्रकार, ऐतिहासिक चरित्र किसी भी तरह से दुश्मनी के लिए पराया नहीं है। लेकिन इसकी अभिव्यक्ति का रूप एनिमा से बिल्कुल अलग है। इसी तरह, धार्मिक समस्याओं में, शत्रुता का निर्णय मनुष्य की भावना पर भारी पड़ता है।

अंत में, मैं यह भी बताना चाहूंगा कि एनिमस और एनिमा केवल अचेतन के स्वायत्त आंकड़े या "आत्मा" नहीं हैं । लेकिन व्यावहारिक रूप से, वे सबसे करीबी और सबसे महत्वपूर्ण हैं। हालाँकि, चूंकि मैं आत्मा के जीवन की सांसारिक कंडीशनिंग की समस्या के एक और पक्ष को उजागर करना चाहूंगा, मैं शायद आंतरिक अनुभव के इस जटिल और नाजुक क्षेत्र को छोड़ कर दूसरी तरफ मुड़ूंगा, जहां हम नहीं होंगे लंबे समय तक श्रमसाध्य रूप से आत्मा की अंधेरी पृष्ठभूमि को देखें। लेकिन बाहर रोजमर्रा की चीजों की विस्तृत दुनिया को देखें।

जिस प्रकार विकास की प्रक्रिया में मानव आत्मा का निर्माण सांसारिक परिस्थितियों के प्रभाव में हुआ था, उसी प्रकार अब यह वही प्रक्रिया, कुछ हद तक, हमारी आंखों के सामने दोहराई जा सकती है। यदि हम मानसिक रूप से यूरोपीय जाति के एक महत्वपूर्ण हिस्से को एक विदेशी भूमि और जलवायु में ले जाते हैं, तो हम उम्मीद कर सकते हैं कि लोगों का यह समूह, भले ही विदेशी रक्त के साथ मिश्रण न हो, कई पीढ़ियों के बाद मानसिक परिवर्तन का अनुभव होगा, और संभवतः शारीरिक चरित्र। . काफी करीब , विभिन्न यूरोपीय देशों के यहूदियों के बीच , हम ध्यान देने योग्य अंतर देख सकते हैं, जो

मुख्य रूप से केवल मेजबान लोगों की विशिष्टता द्वारा समझाया गया है। एक स्पेनिश यहूदी को एक उत्तरी अफ्रीकी यहूदी से, या एक जर्मन यहूदी को एक रूसी से अलग करना मुश्किल नहीं है। यहां तक कि विभिन्न प्रकार के रूसी यहूदियों के भीतर, पोलिश, उत्तरी रूसी और कोसैक प्रकारों के बीच अंतर फिर से पाया जा सकता है। जाति की समानता के बावजूद, उल्लेखनीय अंतर हैं, जिनके कारण स्पष्ट नहीं हैं। बाह्य रूप से भी उन्हें ठीक-ठीक निर्धारित करना आसान नहीं है, हालाँकि लोगों का एक अच्छा पारखी इन अंतरों को एक ही बार में भांप लेता है।

"रेस ट्रांसप्लान्टेशन" में सबसे बड़ा प्रयोग मुख्य रूप से जर्मनिक आबादी द्वारा उत्तरी अमेरिकी महाद्वीप का अपेक्षाकृत हालिया समझौता है। चूंकि जलवायु परिस्थितियाँ पर्याप्त रूप से भिन्न हैं, इसलिए मूल नस्लीय प्रकार में सभी प्रकार के परिवर्तनों की अपेक्षा की जा सकती है। भारतीय रक्त में मिलाना नगण्य है, इसलिए यह महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभाता है। बोस इसे साबित मानते हैं कि, जाहिरा तौर पर, पहले से ही प्रवासियों की दूसरी पीढ़ी में, मुख्य रूप से खोपड़ी के आकार में शारीरिक परिवर्तन होते हैं। किसी भी तरह, बसने वालों ने एक प्रकार का यांकी इतना भारतीय विकसित किया कि, मध्य-पश्चिम में अपने पहले प्रवास के दौरान, जब मैंने एक कारखाने के गेट से श्रमिकों की एक धारा निकलती देखी, तो मैंने अपने साथी से कहा कि मैंने कभी नहीं सोचा होगा कि भारतीयों के रक्त का प्रतिशत इतना अधिक है। इस पर वे हंसे और शर्त रखी कि इन सभी सैकड़ों कार्यकर्ताओं को मिलाकर भारत के खून की एक बूंद भी नहीं बचेगी। वह कई साल पहले की बात है, जब मुझे अमेरिकी आबादी के अद्भुत "भारतीयकरण" के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। अमेरिकियों के साथ विश्लेषणात्मक मनोचिकित्सा में संलग्न होने के बाद ही मैंने इस रहस्य में प्रवेश किया। यह तब था जब यूरोपीय लोगों से उनके जिज्ञासु मतभेद सामने आए।

सबसे पहले, मैं नीग्रो के भारी प्रभाव से प्रभावित हुआ, मेरा मतलब है, निश्चित रूप से, मनोवैज्ञानिक प्रभाव, बिना रक्त के मिश्रण के। अमेरिकी का भावनात्मक खुलापन, विशेष रूप से उसकी हंसी, अमेरिकी समाचार पत्रों के सचित्र पूरक में सबसे अच्छा अध्ययन किया गया है; कि अद्वितीय रूजवेल्ट की हंसी अपने मूल रूप में अमेरिकी नीग्रो में पाई जा सकती है। थोड़ा आराम से अंगों के साथ अजीबोगरीब चाल, या कूल्हों का झूलना, जो अक्सर अमेरिकी महिलाओं में देखा जाता है, वह भी नीग्रो से आता है। और अमेरिकी संगीत के साथ-साथ नृत्य के लिए प्रेरणा का स्रोत नीग्रो है। धार्मिक भावना की अभिव्यक्ति, पुनरुद्धार बैठकें (" पवित्र रोलर्स "और अन्य असामान्यताएं), - मोटे तौर पर नीग्रो के प्रभाव में; और प्रसिद्ध अमेरिकी भोलेपन, आकर्षक और कम आकर्षक दोनों-रूपों में, नीग्रो के बचकानेपन के लिए काफी तुलनीय है। अधिकांश अमेरिकियों का असाधारण जीवंत स्वभाव, जो प्रकट होता है न केवल बेसबॉल के खेल में, बल्कि आनंद

की अजीबोगरीब भाषाई अभिव्यक्ति में भी, जैसा कि अमेरिकी समाचार पत्रों में बकबक के निरंतर और असीम प्रवाह द्वारा स्पष्ट रूप से गवाही दी गई है, शायद ही जर्मनिक पूर्वजों द्वारा समझाया जा सकता है। यह " बकबक " (बकबक करना) की तरह है (अंग्रेज़ी) - अनूदित) नीग्रो गांव। अंतरंगता का लगभग पूर्ण अभाव और सामूहिक समुदाय जो सभी को एक साथ बांधता है, जीनस के सभी सदस्यों की पूर्ण पहचान के साथ खुली झोपड़ियों में आदिम जीवन जैसा दिखता है। मुझे ऐसा लग रहा था कि अमेरिकियों के घरों में सभी दरवाजे हमेशा खुले रहते हैं और अमेरिकी शहरों में बगीचे की बाड़ नहीं मिलती है। सब कुछ मुझे गली की याद दिलाता है।

बेशक, विस्तार से तय करना आसान नहीं है कि नीग्रो के साथ सहजीवन के लिए क्या जिम्मेदार ठहराया जाए और इस तथ्य के लिए क्या जिम्मेदार ठहराया जाए कि अमेरिका अभी भी " अग्रणी" है। राष्ट्र "(पायनियर्स का राष्ट्र (अंग्रेज़ी)। - अनुवाद।) कुंवारी भूमि में। लेकिन कुल मिलाकर , लोगों के सामान्य चरित्र पर नीग्रो का एक महत्वपूर्ण प्रभाव निस्संदेह है।

बेशक, आदिम के साथ इस तरह के संक्रमण को अन्य देशों में समान सफलता के साथ देखा जा सकता है, लेकिन इस तरह के आकार में नहीं और इस तरह के रूप में नहीं। अफ्रीका में, उदाहरण के लिए, गोरे लोग एक नगण्य अल्पसंख्यक का गठन करते हैं और इसलिए मजबूर हैं, सामाजिक रूप का सख्ती से पालन करते हुए, नीग्रो के प्रभाव के खिलाफ खुद का बचाव करने के लिए - तथाकथित " गोइंग" से। काला "। जैसे ही उनमें से एक आदिम के प्रभाव के आगे झुक जाता है, वह समाप्त हो जाएगा। दूसरी ओर, अमेरिका में, उनकी छोटी संख्या के कारण, नीग्रो एक अपक्षयी नहीं, बल्कि एक अजीब प्रभाव डालते हैं, जो , जब तक कोई जैज फोबिया से पीड़ित न हो, किसी भी तरह से हानिकारक नहीं कहा जा सकता।

यह आश्चर्य की बात है कि भारतीय का प्रभाव पूरी तरह या लगभग पूरी तरह से अगोचर है। हालांकि, पहले उल्लेख की गई शारीरिक समानताएं अफ्रीका को बिल्कुल भी इंगित नहीं करती हैं, लेकिन विशेष रूप से अमेरिकी हैं। तो शरीर अमेरिका के प्रति प्रतिक्रिया करता है, और आत्मा अफ्रीका को? कुछ समय के लिए, मुझे इस प्रश्न का उत्तर इस प्रकार देना होगा: केवल नीग्रो के शिष्टाचार का ही प्रभाव होता है। जहां तक आत्मा का प्रश्न है, वह दूसरा प्रश्न है।

मेरे अमेरिकी रोगियों के सपनों में नीग्रो, उनके व्यक्तित्व के दोषपूर्ण पक्ष की अभिव्यक्ति के रूप में , एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, यह एक स्वाभाविक तथ्य है । इसी तरह के मामले में, एक यूरोपीय आबादी के निचले तबके के आवारा या अन्य प्रतिनिधियों का सपना देखेगा। हालांकि, ज्यादातर सपने, विशेष रूप से विश्लेषणात्मक उपचार की शुरुआत में, सतही होते हैं। और केवल एक गंभीर, गहन विश्लेषण के दौरान ही

आप भारतीय से जुड़े प्रतीकों के बारे में जान पाते हैं। अचेतन की प्रगतिशील प्रवृत्ति, दूसरे शब्दों में, उसके नायक का रूपांकन, भारतीय को अपने प्रतीक के रूप में चुनता है। इस प्रकार, संयुक्त राज्य अमेरिका के कुछ सिक्कों पर एक भारतीय का सिर होता है, जो पहले शत्रुतापूर्ण लेकिन अब उदासीन भारतीयों के प्रति सम्मान प्रदर्शित करता है। साथ ही, यह इस तथ्य की अभिव्यक्ति है कि अभी उल्लेख किया गया है कि अमेरिकी नायक आदर्श ने भारतीय को अपने आदर्श व्यक्ति के रूप में चुना था। और, ज़ाहिर है, किसी भी अमेरिकी सरकार ने अपने सिक्कों पर ज़ेठेवेयो या किसी अन्य नीग्रो नायक का चित्र लगाने के बारे में नहीं सोचा होगा। राजशाही राज्य अपने सिक्कों पर देश के शासक, लोकतांत्रिक लोगों का चित्र उनके आदर्शों के अन्य प्रतीकों की तरह चित्रित करना पसंद करते हैं। इस तरह के एक अमेरिकी नायक फंतासी का एक उदाहरण मेटामोर्फोस और लिब इडो के प्रतीकों में विस्तार से चर्चा की गई है (नया संस्करण: प्रतीक डीईआर वैडलुंग _ - प्रामाणिक।) . मैं इसे एक दर्जन से अधिक समान उदाहरणों के साथ पूरक कर सकता हूँ ।

नायक हमेशा मेरी सर्वोच्च और सबसे मजबूत आकांक्षा को व्यक्त करता है, या कम से कम यह आकांक्षा क्या होनी चाहिए, और इसलिए मैं सबसे पहले क्या हासिल करना चाहता हूँ। इसलिए, यह हमेशा महत्वपूर्ण होता है कि कौन सी कल्पना नायक के मकसद से भरी हुई है। अमेरिकी नायक फंतासी में, भारतीय चरित्र एक प्रमुख भूमिका निभाता है। खेलों के प्रति अमेरिकियों का रवैया यूरोपीय आराम के साथ पूरी तरह से अतुलनीय है। केवल भारतीय दीक्षाएं ही कठोर अमेरिकी प्रशिक्षण की निर्ममता और क्रूरता का मुकाबला कर सकती हैं। इसलिए अमेरिकी खेलों की सफलता की प्रशंसा की जाती है। हर उस चीज में जो अमेरिकी वास्तव में चाहता है, भारतीय दिखाई देता है; एक निश्चित लक्ष्य पर अत्यधिक एकाग्रता में, उसकी जिद्दी खोज में, भारी कठिनाइयों को दृढ़ता से सहन करने में, भारतीय के सभी महान गुण पूरी तरह से प्रकट होते हैं (तुलना करें: जे तुम एन जी , आपका नेग्रोइड तथा भारतीय व्यवहार । - प्रामाणिक।)

नायक का मकसद न केवल जीवन के सामान्य दृष्टिकोण से जुड़ा है, बल्कि धार्मिक समस्या से भी है। एक निरपेक्ष दृष्टिकोण हमेशा एक धार्मिक दृष्टिकोण होता है, और जहाँ भी व्यक्ति निरपेक्ष होता है, उसका धर्म हर जगह प्रकट होता है। मैंने यह भी पाया है कि-मेरे अमेरिकी रोगियों में नायक की छवि का धार्मिक पहलू मुख्य रूप से भारतीय है। धर्म के मूल अमेरिकी रूपों में मुख्य आंकड़े जादूगर, दवा आदमी और आत्मा ढलाईकार हैं। इस क्षेत्र में पहला अमेरिकी आविष्कार, जो यूरोप के लिए भी महत्वपूर्ण हो गया, वह था अध्यात्मवाद, दूसरा - ईसाई विज्ञान (ईसाई विज्ञान (अंग्रेजी) - ट्रांस।) और मानसिक के अन्य रूप हीलिंग (मानसिक उपचार (अंग्रेजी) - अनुवाद।) ईसाई विज्ञान मंत्रमुग्धता का एक अनुष्ठान है , रोग के राक्षसों को खारिज कर दिया जाता है, जिद्दी शरीर को कुछ सूत्रों के अनुसार गाया जाता है, और उच्च सांस्कृतिक स्तर के अनुरूप ईसाई धर्म जादू टोना

उपचार के लिए उपयोग किया जाता है। आध्यात्मिक गरीबी भयावह है, लेकिन ईसाई विज्ञान जीवित है, इसमें असाधारण शक्ति है और चमत्कार करता है जो आपको आधिकारिक चर्चों में नहीं मिलेगा।

दुनिया में कोई भी देश ऐसा नहीं है जहां एक "मजबूत शब्द", एक जादू टोना रूप होगा, जिसे " नारा " (स्लोगन (अंग्रेजी)) कहा जाता है। - अनुवाद) अमेरिका की तुलना में अधिक कुशल होगा। यूरोपीय इस पर हंसते हैं, लेकिन वह भूल जाते हैं कि शब्दों की जादुई शक्ति में विश्वास पहाड़ों को हिला सकता है। मसीह स्वयं वचन था। यह मनोविज्ञान हमारे लिए पराया हो गया है। लेकिन वह अमेरिका में जिंदा है। इसलिए, यह ज्ञात नहीं है कि भविष्य में अमेरिका के पास और क्या होगा।

तो, अमेरिकी हमें एक विचित्र तस्वीर के साथ प्रस्तुत करता है: एक यूरोपीय एक नीग्रो के शिष्टाचार और एक भारतीय की आत्मा के साथ। वह एक विदेशी भूमि के सभी सूदखोरों के भाग्य को साझा करता है। ऑस्ट्रेलिया में आदिम जनजातियाँ हैं जो कहती हैं कि किसी और की भूमि पर अधिकार करना असंभव है, क्योंकि यह विदेशी पैतृक आत्माओं का निवास है जो नवजात शिशुओं में निवास करेगी। इसमें एक बड़ा मनोवैज्ञानिक सत्य है। विदेशी भूमि विजेता को आत्मसात करती है। लेकिन मध्य और दक्षिण अमेरिका में लैटिन विजेताओं के विपरीत, उत्तरी अमेरिकियों ने, सख्त शुद्धतावाद के लिए धन्यवाद, यूरोपीय स्तर को संरक्षित रखा; हालाँकि, वे अपने भारतीय शत्रुओं की आत्माओं को अपना बनने से नहीं रोक सके। अप्रतिबंधित भूमि में हर जगह कुछ न कुछ होता है जो कम से कम अचेतन को जातक के स्तर तक कम करता है। इस प्रकार, अमेरिकी में चेतन और अचेतन के बीच एक दूरी है जो यूरोपीय में नहीं मिलती है, एक सचेत उच्च संस्कृति और एक अप्रत्याशित अचेतन प्रधानता के बीच एक अंतर है। लेकिन ऐसा अंतर एक मानसिक क्षमता है जो अमेरिकी को उद्यमिता का आनंद देती है और वही उत्साहपूर्ण उत्साह जो हम यूरोप में नहीं जानते हैं। यह ठीक है क्योंकि हम अभी भी अपने पूर्वजों की आत्माओं के कब्जे में हैं, अर्थात्, क्योंकि हमारे लिए सब कुछ ऐतिहासिक रूप से मध्यस्थता है, कि हम अपने अचेतन के संपर्क में हैं, लेकिन यह ठीक इसी संपर्क से है कि हम जुड़े हुए हैं। हाथ और पैर। हम ऐतिहासिक संस्कारों में इतने जकड़े हुए हैं कि ताकत इकट्ठा करने और व्यवहार करने के लिए, उदाहरण के लिए, राजनीतिक रूप से पांच सौ साल पहले की तुलना में अलग, एक भव्य तबाही की जरूरत है। अचेतन के साथ संपर्क हमें हमारी धरती से बांधता है और हमें चढ़ाई करना बेहद मुश्किल बनाता है, जो कि प्रगति की दृष्टि से, निश्चित रूप से उपयोगी नहीं है। लेकिन मैं धरती माता के प्रति हमारे रवैये के बारे में बहुत बुरा नहीं बोलना चाहूंगा। " प्लुरिमिक pettransibunt ", हालांकि, जो अपनी भूमि पर रहता है उसकी दीर्घायु होती है। अचेतन से अलगाव, और इस प्रकार ऐतिहासिक कंडीशनिंग से, का अर्थ है जड़ों से वंचित होना। यह एक विदेशी भूमि के

विजेता के लिए एक खतरा है, लेकिन यह किसी के लिए भी खतरनाक है जो, किसी प्रकार के "वाद" की लत के कारण, अपने सार के अंधेरे, मातृ, सांसारिक मौलिक सिद्धांतों के साथ संपर्क खो देता है।

पुरातन आदमी

"पुरातन" का अर्थ है "प्रारंभिक, आदिम"। आधुनिक, सभ्य व्यक्ति के बारे में कुछ भी ठोस कहना सबसे कठिन और कृतघ्न कार्यों में से एक है जिसके बारे में कोई सोच सकता है, क्योंकि जो बोलता है वह उन्हीं परिस्थितियों से सीमित होता है और उन्हीं पूर्वाग्रहों से अंधा होता है जिनके बारे में उसे अपनी राय देनी चाहिए। हालांकि, पुरातन आदमी के संबंध में, हम अधिक अनुकूल स्थिति में प्रतीत होते हैं। हम समय के साथ उसकी दुनिया से दूर हो जाते हैं, हम आध्यात्मिक भेदभाव में उससे आगे निकल जाते हैं और इसलिए हमें अपनी उपलब्धियों की ऊंचाई से उसके मन और उसकी दुनिया को देखने का अवसर मिलता है,

यह थीसिस मेरी रिपोर्ट के ढांचे को भी निर्धारित करती है , वे ढांचे जिनके बिना पुरातन आदमी में निहित मानसिक घटनाओं की पर्याप्त रूप से विशाल तस्वीर को रेखांकित करना असंभव होगा। अर्थात्, मैं अपने विचार से आदिम लोगों के नृविज्ञान को छोड़कर, अपने आप को केवल एक ऐसी तस्वीर तक सीमित रखना चाहता हूँ। जब हम समग्र रूप से किसी व्यक्ति के बारे में बात करते हैं, तो हमारा मतलब उसकी शारीरिक रचना, उसकी खोपड़ी के आकार और उसकी त्वचा के रंग से नहीं होता है, बल्कि हमारा मतलब उसकी मानसिक-मानवीय दुनिया, उसकी चेतना और उसके जीवन के तरीके से होता है। हालाँकि, यह मनोविज्ञान का विषय है। इसलिए, संक्षेप में, हम पुरातन, यानी आदिम, मनोविज्ञान से निपटेंगे। इस सीमा के बावजूद, हमारा विषय फिर भी इस ढांचे से परे है, क्योंकि पुरातन मनोविज्ञान न केवल आदिम, बल्कि आधुनिक, सभ्य मनुष्य का मनोविज्ञान है; हालांकि, इसका मतलब आधुनिक समाज में नास्तिकता की उन व्यक्तिगत अभिव्यक्तियों से नहीं है, बल्कि हर सभ्य व्यक्ति का मनोविज्ञान है, जो अपनी उच्च स्तर की चेतना के बावजूद, अपने मानस की गहरी परतों में, अभी भी एक पुरातन व्यक्ति बना हुआ है। जैसे हमारा शरीर अभी भी एक स्तनधारी शरीर है, जो बदले में ठंडे खून वाले जानवरों के समान पहले के कई अवशेषों को प्रकट करता है, वैसे ही हमारी आत्मा एक उत्पाद है, अगर हम इसके विकास के अध्ययन धाराओं का पालन करते हैं , अभी भी असंख्य पुरातनपंथियों को प्रकट करता है।

हालाँकि, किसी आदिम व्यक्ति के साथ पहले संपर्क में या आदिम मनोविज्ञान पर वैज्ञानिक कार्यों का अध्ययन करते समय, उसकी परायापन की छाप हमेशा बनती है। यहाँ तक कि आदिम मनोविज्ञान के क्षेत्र में लेवी-ब्रुहल जैसी सत्ता भी इस असाधारण अंतर पर जोर देते नहीं थकती । प्रीलॉजिक "(पूर्व-तार्किक अवस्था (फ्रेंच)। - पहले) हमारी चेतना से। ऐसा लगता है कि एक सभ्य व्यक्ति के रूप में, यह समझ से बाहर है कि आदिम व्यक्ति स्पष्ट अनुभव को बिल्कुल भी ध्यान में नहीं रखता है और मूर्त कारणों को नकारते

हुए, उसे मानता है " प्रतिनिधित्व" eo ipso मान्य। सामूहिक "(सामूहिक प्रतिनिधित्व (फ्रेंच)। - अनुवाद।), घटना को केवल संयोग या उचित कार्य-कारण द्वारा समझाने के बजाय । " प्रतिनिधित्व " के तहत सामूहिक »लेवी-ब्रुहल एक प्राथमिक वास्तविक प्रकृति के व्यापक विचारों को समझता है, जैसे कि आत्माएं, टोना, जादूगर की शक्ति, और इसी तरह। उदाहरण के लिए, यह तथ्य कि लोग बुढ़ापे में या बीमारियों से मर जाते हैं जिन्हें घातक माना जाता है, हमारे लिए एक तथ्य है, लेकिन आदिम मनुष्य के लिए ऐसा नहीं है। साथ ही, उनका तर्क इस प्रकार है: जो लोग जीते हैं वे बहुत बड़े होते हैं। बीमारी से किसी की मृत्यु नहीं होती है, क्योंकि कई या तो ठीक हो जाते हैं , या बीमारी ने उन्हें बिल्कुल भी प्रभावित नहीं किया है। इसकी असली व्याख्या हमेशा जादू ही होती है। एक व्यक्ति को या तो आत्मा या जादू टोना द्वारा मारा गया था। कई लोग आमतौर पर युद्ध में मौत को ही स्वाभाविक मानते हैं। हालाँकि, अन्य लोग इस मृत्यु को अप्राकृतिक मानते हैं, क्योंकि प्रतिद्वंद्वी या तो जादूगर था या उसने एक मंत्रमुग्ध हथियार का इस्तेमाल किया था। कभी-कभी यह विचित्र विचार और भी प्रभावशाली रूप धारण कर लेता है। तो, एक बार एक यूरोपीय ने एक मगरमच्छ को गोली मार दी, जिसके पेट में दो रैली ब्रेसिज़ थे। मूल निवासियों ने उन्हें दो महिलाओं के कंगन के रूप में पहचाना, जिन्हें कुछ समय पहले एक मगरमच्छ ने निगल लिया था। जादू टोना के बारे में तुरंत एक रोना पैदा हुआ, क्योंकि यह पूरी तरह से प्राकृतिक मामला, जो किसी भी यूरोपीय के लिए संदिग्ध नहीं लगता था, आध्यात्मिक परिसर से शुरू होकर काफी अप्रत्याशित रूप से व्याख्या की गई थी (" अभ्यावेदन सामूहिक » कोई लेवी-ब्रुहल) आदिम आदमी का नहीं। एक अज्ञात जादूगर ने एक मगरमच्छ को बुलाया, इन दोनों महिलाओं को पकड़ने और उनके पास लाने का आदेश दिया। मगरमच्छ ने इस आदेश को अंजाम दिया। लेकिन जानवर के पेट में दो कंगन का क्या? उन्होंने बताया कि मगरमच्छ लोगों को अपनी मर्जी से नहीं निगलता। उसे जादूगर से पुरस्कार के रूप में कंगन मिले।

etat ." में स्पष्टीकरण की मनमानी के उदाहरणों में से एक है प्रीलॉजिक "- डॉलॉजिकल , जाहिरा तौर पर क्योंकि इस तरह की व्याख्या हमें बेतुकी और अतार्किक लगती है। लेकिन यह हमें केवल तभी लगता है जब हम उन पूर्वापेक्षाओं से आगे बढ़ते हैं जो आदिम मनुष्य से पूरी तरह से अलग हैं। अगर हम, उनकी तरह, के बारे में आश्चर्य था जादूगरों और अन्य रहस्यमय ताकतों का अस्तित्व, जैसा कि हम तथाकथित प्राकृतिक कारणों में विश्वास करते हैं, तो उनका निष्कर्ष हमारे लिए काफी तार्किक होगा। वास्तव में, आदिम मनुष्य हमसे अधिक तार्किक या अतार्किक नहीं है। बस वह सोचता है और हमारी तुलना में पूरी तरह से अलग परिसर के आधार पर रहता है। यही अंतर है। हर चीज जो नियमों से परे है, वह सब कुछ जो उसे चिंतित करता है, डराता है या आश्चर्यचकित करता है, उसी पर आधारित है जिसे हम अलौकिक कहते हैं। बेशक, वह करता है इसे अलौकिक

मत समझो, उसके लिए यह दुनिया की एक विशेषता है जिसे वह जानता है। और अगर हमारे लिए ऐसा तर्क करना स्वाभाविक है: यह घर जल गया क्योंकि यह बिजली से मारा गया था, तो यह उतना ही स्वाभाविक है या एक आदिम व्यक्ति कहने के लिए: जादूगर ने इस विशेष घर में आग लगाने के लिए बिजली का इस्तेमाल किया। आदिम मनुष्य की दुनिया में, बिल्कुल सब कुछ जो किसी तरह असामान्य या प्रभावशाली है, एक समान या मौलिक रूप से समान व्याख्या के अधीन है। लेकिन साथ ही, वह ठीक वैसा ही करता है जैसा हम करते हैं: वह अपनी प्रारंभिक धारणाओं के बारे में नहीं सोचता। उसके लिए, निःसंदेह a उस बीमारी से पहले, आदि। आत्माओं या टोना-टोटके के कारण होता है, जैसा कि हमें शुरू से ही स्पष्ट है कि बीमारी का एक तथाकथित प्राकृतिक कारण है। हम जादू टोना के बारे में उतना ही कम सोचते हैं जितना कि वह प्राकृतिक कारणों के बारे में सोचते हैं। अपने आप में, इसकी आध्यात्मिक कार्यप्रणाली हमसे मौलिक रूप से भिन्न नहीं है। जैसा कि मैंने कहा, केवल प्रारंभिक परिसर अलग है।

एक लोकप्रिय राय है कि आदिम लोगों की अलग-अलग भावनाएँ और एक अलग नैतिकता होती है, यानी एक निश्चित सीमा तक, एक "डॉलॉजिकल" आत्मा। बेशक, उनकी नैतिकता हमारे जैसी नहीं है। एक देशी मुखिया, जिनसे पूछा गया कि अच्छे और बुरे में क्या अंतर है, ने कहा:

"जब मैं उसकी पत्नियों को अपने शत्रु से चुराता हूँ, तो अच्छा है, लेकिन जब वह उन्हें मुझसे चुराता है, तो यह बुरा है।" कई जनजातियों में, किसी की छाया पर कदम रखना एक भयानक अपमान माना जाता है, या चकमक पत्थर के बजाय धातु के चाकू से मुहर की त्वचा को कुरेदना एक अक्षम्य पाप है। लेकिन आइए ईमानदार रहें: क्या यह हमारे बीच पाप नहीं है कि हम चाकू से मछली खाते हैं या कमरे में अपनी टोपी नहीं उतारते हैं? मुंह में सिगार लेकर किसी महिला का अभिवादन कैसे करें? लेकिन हमारे साथ, जैसा कि आदिम लोगों के साथ होता है, इसका नैतिक चरित्र से कोई लेना-देना नहीं है। सभ्य और वफादार ठग हैं, ऐसे लोग हैं जो पवित्र और स्पष्ट विवेक के साथ राक्षसी धार्मिक संस्कार करते हैं - सबसे पवित्र उद्देश्यों से हत्यारे; और जो कुछ भी नैतिक है, जो हमें प्रशंसा की ओर ले जाता है, मुख्य रूप से आदिम मनुष्य द्वारा मूल्यवान है। उसकी भलाई उतनी ही अच्छी है और उसकी बुराई उतनी ही बुरी है जितनी हमारी। केवल रूप भिन्न हैं, लेकिन नैतिक कार्य स्वयं एक ही है।

यह भी सुझाव दिया गया है कि उनकी भावनाएँ हमसे अधिक तीव्र हैं, या वे हमारी तरह बिल्कुल भी नहीं हैं। हालांकि, उसके पास सुनने, देखने और अपरिचित क्षेत्र में नेविगेट करने की क्षमता का केवल एक पेशेवर भेदभाव है। यदि वह अपने नियंत्रण से परे परिस्थितियों का सामना करता है, तो वह आश्चर्यजनक रूप से धीमा और अनाड़ी होगा। मैंने कुछ मूल निवासी, असामान्य रूप से तेज दृष्टि वाले शिकारियों को सचित्र पत्रिकाएँ

दिखाई जिनमें हमारे बीच का कोई भी बच्चा तुरंत मानव आकृतियों को पहचान लेगा। मेरे शिकारी चित्रों को उल्टा घुमाते रहे, अंत में उनमें से एक ने, अपनी उंगली से आकृति को ट्रेस करते हुए, अचानक कहा: "ये गोरे लोग हैं!" - जिसे आम तौर पर एक महान खोज के रूप में चिह्नित किया गया था।

अक्सर, अपरिचित इलाकों में नेविगेट करने के लिए कई आदिम लोगों की सर्वथा अविश्वसनीय क्षमता, वास्तव में, पेशेवर है और इसे सवाना और जंगलों में नेविगेट करने की क्षमता की अत्यधिक आवश्यकता द्वारा समझाया गया है। एक यूरोपीय भी, खो जाने से डरता है - और यह उसके लिए परेशानी से भरा हो सकता है - इस तथ्य के बावजूद कि उसके पास एक कंपास है, थोड़ी देर बाद उन चीजों पर ध्यान देना शुरू कर देता है जिनके बारे में वह पहले सोच भी नहीं सकता था।

से हमसे भिन्न तरीके से सोचता है, महसूस करता है या मानता है। मानसिक कार्य यहाँ अनिवार्य रूप से समान है। लेकिन प्रारंभिक परिसर अलग हैं। यह हमें लगभग कुछ भी नहीं बताता है कि उसकी चेतना की मात्रा छोटी है या हमारी तुलना में छोटी लगती है, या कि वह आध्यात्मिक गतिविधि पर ध्यान केंद्रित करने में लगभग या पूरी तरह से असमर्थ है। उत्तरार्द्ध विशेष रूप से यूरोपीय लोगों के लिए हड़ताली है। इस प्रकार, मैं अपनी बातचीत को दो घंटे से अधिक समय तक फैलाने में कामयाब नहीं हुआ, क्योंकि इस समय के बाद लोगों ने हर बार घोषित किया कि वे थके हुए थे, कि यह बहुत कठिन था - जबकि बातचीत के दौरान माहौल सबसे अधिक आराम से था, और प्रश्न मैंने बहुत पूछे सरल प्रश्न। हालांकि, शिकार या कठिन संक्रमण के दौरान उन्हीं लोगों ने अद्भुत एकाग्रता और धीरज दिखाया। उदाहरण के लिए, मेरा पत्र-वाहक हर बार बिना रुके 120 किलोमीटर की दूरी तक दौड़ता रहा; या मैंने छह महीने की गर्भवती महिला को एक लंबी पाइप धूम्रपान करते हुए अपनी पीठ पर एक बच्चे को ले जाते हुए देखा है। मैंने लोगों को 34 डिग्री हवा के तापमान में पूरी रात एक धधकती आग के चारों ओर नाचते देखा है। नतीजतन, उन चीजों के संबंध में जो उनकी रुचि रखते हैं, उन्हें ध्यान केंद्रित करने की क्षमता से इनकार नहीं किया जा सकता है। जब हमें अरुचिकर चीजों पर ध्यान केंद्रित करना होता है, तो हम जल्द ही नोटिस करते हैं कि हमारी यह क्षमता कितनी महत्वहीन है। हम आदिम लोगों की तरह ही भावनात्मक आवेग पर निर्भर हैं।

बेशक, आदिम लोग अच्छे और बुरे दोनों मामलों में हमसे ज्यादा सरल और भोले होते हैं। लेकिन यह हमें अजीब नहीं लगता। और फिर भी, जब हम पुरातन मनुष्य की दुनिया के संपर्क में आते हैं, तो हमें कुछ बहुत ही असामान्य लगता है। जहां तक मैं इस भावना का विश्लेषण करने में सक्षम हूं, यह मुख्य रूप से इस तथ्य के कारण है कि पुरातन प्रारंभिक धारणाएं हमारी तुलना में काफी भिन्न हैं, अर्थात्, आदिम मनुष्य हमारी तुलना में रहता है, इसलिए बोलने के लिए, एक अलग दुनिया में। यह एक कठिन पहली को हल

करने के लिए बनाता है जब तक हम यह पता नहीं लगाते कि इसका परिसर क्या है। तब सब कुछ तुलनात्मक रूप से सरल हो जाएगा। हालाँकि, हम ठीक इसके विपरीत भी कह सकते हैं: "एक बार जब हम अपने परिसर को जान लेते हैं, तो आदिम मनुष्य अब हमारे लिए एक रहस्य नहीं रहेगा।"

हमारा तर्कसंगत आधार यह है कि हर चीज के अपने प्राकृतिक, दृश्य कारण होते हैं। हमें इस बात का यकीन है प्राथमिकता _ इस अर्थ में, कार्य-कारण हमारी सबसे पवित्र हठधर्मिता है। हमारी दुनिया में अदृश्य, मनमानी, कहने के लिए, अलौकिक शक्तियों के लिए कोई सही जगह नहीं है, सिवाय एक आधुनिक भौतिक विज्ञानी के साथ परमाणु आंतरिक के अज्ञात सूक्ष्म जगत में गोता लगाने के लिए, जहां बाहरी चीजें होती हैं। लेकिन ज्ञान का यह क्षेत्र अभी भी हमसे दूर है। हम स्पष्ट शत्रुता की भावना के साथ अदृश्य-मनमानी ताकतों का इलाज करते हैं; आखिरकार, हम खुद बहुत पहले सपनों और अंधविश्वासों की उस भयानक दुनिया से बच नहीं पाए और दुनिया की एक तस्वीर बनाई जो हमारी तर्कसंगत चेतना के योग्य है - मनुष्य की सबसे छोटी और सबसे बड़ी रचना। हम ब्रह्मांड से घिरे हुए हैं, जो तर्क के नियमों का पालन करता है। यद्यपि हम सभी कारणों को नहीं जानते हैं, वे खुले रहेंगे और मन की अपेक्षाओं पर खरे उतरेंगे। हम स्वाभाविक रूप से ऐसी आशा करते हैं। हालांकि, ऐसे मामले हैं जो वास्तव में पूरी तरह से यादृच्छिक हैं, और उनकी अपनी कार्य-कारण भी कुछ भी स्पष्ट नहीं करती है। दुर्घटनाएँ विषैली-प्रेमी चेतना के लिए अप्रिय हैं। वे बहुत ही मज़ेदार तरीके से घटनाओं के प्राकृतिक पाठ्यक्रम को तोड़ते हैं और इसलिए हमें भ्रमित करते हैं। आकस्मिकताओं के साथ हम वही शत्रुतापूर्ण भावना महसूस करते हैं जो अदृश्य मनमानी ताकतों के साथ होती है। वे imps या deus की मनमानी की बहुत याद दिलाते हैं भूतपूर्व मशीन (मशीन से भगवान, (अव्य।)। आधुनिक अर्थ में, अभिव्यक्ति का उपयोग एक कठिन परिस्थिति के अप्रत्याशित समाधान को इंगित करने के लिए किया जाता है, जो घटनाओं के प्राकृतिक पाठ्यक्रम का पालन नहीं करता है, लेकिन कुछ कृत्रिम है, जो हस्तक्षेप के कारण होता है बाहर से। - अनुवाद।)। वे हमारी सबसे सावधानीपूर्वक गणना के सबसे बड़े दुश्मन हैं और हमारे सभी उद्यमों के लिए लगातार खतरा हैं। उन्हें मूर्ख माना जा सकता है, वे हर तरह की निंदा के पात्र हैं, लेकिन उन्हें नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। अरब उनके साथ बहुत सम्मान से पेश आते हैं। प्रत्येक पत्र में वे लिखते हैं: "इंशाअल्लाह, अगर भगवान ने चाहा, तो पत्र पहुंच जाएगा।" क्योंकि, सभी शत्रुतापूर्ण भावनाओं और कानूनों के बावजूद, यह सच है कि हम हमेशा और हर जगह अप्रत्याशित अवसर के अधीन होते हैं। और संयोग से अधिक अदृश्य और मनमाना क्या है? अपरिहार्य और अधिक घातक क्या है?

वास्तव में, हम यह भी कह सकते हैं: "एक नियमित, कारण प्रवाह एक सिद्धांत है जो व्यवहार में पचास प्रतिशत उचित है, शेष पचास प्रतिशत राक्षसी संयोग की दया पर

है।" बेशक, मामले के अपने पूरी तरह से प्राकृतिक कारण भी हैं, जिसके बारे में खेद के लिए, हमें खुद को बहुत बार समझाना पड़ता है। लेकिन हम खुशी-खुशी कार्य-कारण का त्याग करेंगे, क्योंकि इस मामले में सबसे कष्टप्रद बात कुछ पूरी तरह से अलग है, अर्थात्, इसे यहीं और अभी होना था, या, दूसरे शब्दों में, जैसा कि यह था, जानबूझकर। कम से कम वह ऐसा ही करता है, और कभी-कभी सबसे उत्साही तर्कवादी भी उसे शाप देते हैं। मौके की कितनी भी व्याख्या की जाए, इससे इसकी शक्ति नहीं बदलती है। होने की स्थिति जितनी अधिक व्यवस्थित होती है, दुर्घटना होने की संभावना उतनी ही कम होती है और तदनुसार, इसके खिलाफ बचाव की आवश्यकता कम होती है। फिर भी, वस्तुतः हर कोई अवसरों से दूर रहता है या उन पर निर्भर करता है, भले ही आधिकारिक पंथ में अवसरों के संबंध में कोई खंड नहीं है।

हमारा आधार यह है कि जो कुछ भी अनुभव किया जा सकता है, सैद्धांतिक रूप से भी, उसके तथाकथित प्राकृतिक कारण हैं। आदिम मनुष्य निम्नलिखित आधार से आगे बढ़ता है: हर चीज का कारण एक अदृश्य मनमानी शक्ति है, दूसरे शब्दों में, सब कुछ एक दुर्घटना है, केवल वह इसे दुर्घटना नहीं, बल्कि इरादा कहता है। प्राकृतिक कारणता केवल एक दिखावट है और इसलिए उल्लेख के लायक नहीं है। यदि तीन महिलाएं पानी लेने के लिए नदी में जाती हैं, और मगरमच्छ बीच में से एक को पकड़ लेता है, तो, हमारे दृष्टिकोण से, सब कुछ सरल है: "यह तथ्य कि वह महिला थी जो बीच में थी, शुद्ध संयोग है। तथ्य यह है कि एक मगरमच्छ ने एक महिला को बिल्कुल पकड़ लिया, यह बिल्कुल स्वाभाविक है, क्योंकि मगरमच्छ कभी-कभी लोगों पर हमला करते हैं।

यह स्पष्टीकरण स्थिति को पूरी तरह से अस्पष्ट करता है। इस रोमांचक कहानी में कुछ भी नहीं समझाया गया है। एक पुरातन व्यक्ति इस तरह की व्याख्या को सतही या बेतुका भी पाता है, क्योंकि अगर कोई इस तरह की अवधारणा से शुरू होता है, तो कुछ भी ठीक नहीं हो सकता था, और वही स्पष्टीकरण फिट होगा। यूरोपीय यह बिल्कुल नहीं देखते हैं कि इस तरह की व्याख्याएं कितनी सतही हैं, और इसमें उनका पूर्वाग्रह निहित है।

आदिम आदमी, इसके विपरीत, बहुत अधिक मांग वाला है। उसके लिए जिसे हम मौका कहते हैं वह मनमानी है। इसलिए यह बिल्कुल स्पष्ट है कि मगरमच्छ का स्पष्ट इरादा तीन महिलाओं के बीच को पकड़ने का था। अगर उसका ऐसा इरादा नहीं होता, तो वह किसी और को पकड़ सकता था। लेकिन मगरमच्छ का ऐसा इरादा कहां है? आमतौर पर मगरमच्छ लोगों पर हमला नहीं करते हैं। और यह सच है, जितना सच है कि सहारा में आमतौर पर बारिश नहीं होती है, मगरमच्छ भयभीत जानवर हैं जो आसानी से डर जाते हैं। कई मगरमच्छों की तुलना में उनके द्वारा मारे गए लोगों की संख्या असीम रूप से कम है। इसलिए, यदि वे किसी व्यक्ति पर हमला करते हैं, तो यह अप्रत्याशित और अप्राकृतिक है। यह समझाना जरूरी है: इस मगरमच्छ को मारने का आदेश कहां से

मिला? आखिरकार, स्वभाव से, वह, एक नियम के रूप में, ऐसा नहीं करता है।

आदिम मनुष्य अपने आस-पास की बाहरी दुनिया के तथ्यों पर उच्चतम स्तर पर आधारित है, और जब अप्रत्याशित होता है, तो वह सही आश्चर्यचकित होता है और विशिष्ट कारणों के बारे में पूछता है। वह ठीक वैसा ही व्यवहार करता है जैसा हम करते हैं। लेकिन वह और भी आगे जाता है। संयोग की मनमानी ताकतों के बारे में उनके पास एक या एक से अधिक सिद्धांत हैं। हम कहते हैं: "मौका के अलावा कुछ नहीं।" वह कहता है: "सचेत मनमानी।" वह दुनिया की अन्य पचास प्रतिशत घटनाओं पर ध्यान केंद्रित करता है, जो कि प्राकृतिक विज्ञानों के शुद्ध कारण संबंध नहीं हैं, बल्कि कारण श्रृंखलाओं के भ्रामक, जटिल अंतर्संबंध हैं जिन्हें केस कहा जाता है। वह लंबे समय से प्रकृति के नियमों के अनुकूल है और इसलिए एक अप्रत्याशित घटना की शक्ति से डरता है, एक मनमाना, गैर-जिम्मेदार मकसद सिद्धांत के रूप में कार्य करता है। और यहाँ वह सही भी है। यह पूरी तरह से बताता है कि क्यों कुछ असामान्य उसे डर से मारता है। एलगॉन के दक्षिण क्षेत्र में, जहाँ मुझे बहुत समय बिताना पड़ा, वहाँ बहुत सारे थिएटर हैं। एंटीटर एक निशाचर, बहुत शर्मीला जानवर है, जो शायद ही कभी आंख को पकड़ता है। लेकिन एक दिन, दिन के दौरान एक एंटीटर देखा गया। यह उतना ही अस्वाभाविक और आश्चर्यजनक है मानो हमें कोई ऐसी धारा मिल गई हो जिसमें समय-समय पर पानी वापस बहता हो। यदि वास्तव में ऐसे मामले ज्ञात होते जब पानी ने अचानक गुरुत्वाकर्षण का नकारात्मक बल दिखाया, तो यह एक अत्यंत परेशान करने वाली खोज होगी। आखिरकार, हम जानते हैं कि पानी की एक बड़ी मात्रा हमें घेर लेती है, और हम आसानी से कल्पना कर सकते हैं कि अगर पानी प्रकृति के नियमों का पालन करना बंद कर दे तो क्या होगा। आदिम मनुष्य लगभग उसी स्थिति में है। वह एंटीटर की जीवन आदतों से अच्छी तरह वाकिफ है, लेकिन उसे इस बात का बिल्कुल भी अंदाजा नहीं है कि एंटीटर द्वारा विश्व व्यवस्था का उल्लंघन किससे भरा है। आदिम मनुष्य जो हो रहा है उस पर इतना निर्भर है कि दुनिया की स्थापित व्यवस्था के किसी भी उल्लंघन के उसके लिए अप्रत्याशित परिणाम हो सकते हैं। यह एक शगुन है, एक संकेत है, जैसे धूमकेतु या ग्रहण। चूँकि यह अस्वाभाविकता कारण नहीं है, उनकी राय में, प्राकृतिक कारणों से, दिन के दौरान एंटीटर की उपस्थिति को मनमानी की एक अदृश्य शक्ति की कार्रवाई द्वारा समझाया गया है। विश्व व्यवस्था को भंग करने में सक्षम मनमानी की भयावह अभिव्यक्ति के लिए, निश्चित रूप से, असाधारण सुरक्षात्मक या शमन उपायों की आवश्यकता होती है। आस-पास के गांवों के निवासियों को बुलाया जाता है, और चींटी को बड़ी मुश्किल से खोदा जाता है और मार दिया जाता है। फिर जिस व्यक्ति ने एंटीटरी देखी हो, उसके माता पक्ष के सबसे पुराने रिश्तेदार को एक बैल की बलि देनी चाहिए। यह व्यक्ति स्वयं छेद में कदम रखता है और पशु मांस का पहला टुकड़ा प्राप्त करता है। उसके बाद, समारोह में रिश्तेदार और अन्य प्रतिभागी खाना शुरू करते हैं। इस तरह प्रकृति की

मनमानी के खतरनाक कृत्य को भुनाया जाता है।

शायद हम उस मामले में वास्तव में चिंतित होंगे जब पानी, जिन कारणों से हम समझ नहीं पाते हैं, अचानक पीछे की ओर बहने लगे, लेकिन दोपहर में एक एंटीटर की उपस्थिति, एक अल्बिनो का जन्म, या घटना के मामले में नहीं। एक सूर्य ग्रहण का। हम ऐसी घटनाओं के महत्व और उनके प्रभाव क्षेत्र को जानते हैं, लेकिन आदिम मनुष्य यह नहीं जानता। उसके लिए आमतौर पर जो होता है वह एक अविभाज्य पूर्णता है जिसमें वह अन्य सभी प्राणियों से घिरा होता है। इसलिए, वह बेहद रूढ़िवादी है और वही करता है जो हमेशा से किया गया है। अगर कहीं कुछ ऐसा होता है जो इस अभ्यस्त अखंडता का उल्लंघन करता है, तो इसकी विश्व व्यवस्था में एक अंतर बन जाता है, और फिर भगवान जाने क्या हो सकता है। ध्यान देने योग्य सभी घटनाएँ एक दूसरे से तुरंत जुड़ी हुई हैं। एक मिशनरी ने रविवार को ब्रिटिश झंडा फहराने के लिए अपने घर के सामने एक ध्वजारोहण किया। यह निर्दोष उपक्रम उसे महंगा पड़ सकता था, क्योंकि उसके देशद्रोही कृत्य के कुछ समय बाद, एक विनाशकारी तूफान छिड़ गया, जो निश्चित रूप से झंडे के साथ सहसंबद्ध था।

साधारण घटनाओं के क्रम में निहित है। इसका कोई भी अपवाद उसे मनमानी का एक खतरनाक कार्य लगता है, जिसका प्रायश्चित्त किया जाना चाहिए, क्योंकि यह न केवल चीजों के सामान्य क्रम का एक क्षणिक उल्लंघन है, बल्कि साथ ही भविष्य में अवांछनीय घटनाओं का एक शगुन है। . यह हमें बेतुका लगता है, लेकिन हम पूरी तरह से भूल जाते हैं कि हमारे दादा और परदादा ने इस संबंध में क्या अनुभव किया: एक बछड़ा दो सिर और पांच पैरों के साथ पैदा होता है; एक पड़ोसी गाँव में एक मुर्ग ने अंडा दिया; बुढ़िया ने एक सपना देखा था; आकाश में एक धूमकेतु दिखाई देता है; पड़ोस के कस्बे में भीषण आग लगी है; एक साल बाद, युद्ध शुरू होता है। अतीत में धूमिल पुरातनता से लेकर 18वीं शताब्दी तक के इतिहास का वर्णन इस प्रकार किया गया है। हमारे लिए, तथ्यों को समूहबद्ध करने का यह तरीका बेशक अर्थहीन है, लेकिन आदिम मनुष्य के लिए यह अर्थ और विश्वास से भरा है। और यहाँ वह काफी अप्रत्याशित रूप से सही है। उनके अवलोकन आत्मविश्वास को प्रेरित करते हैं। प्राचीन अनुभव के आधार पर, वह जानता है कि ऐसे संबंध मौजूद हैं। हमारे लिए व्यक्तिगत दुर्घटनाओं का एक अर्थहीन समूह है, क्योंकि हम केवल प्रत्येक व्यक्तिगत घटना में निहित अर्थ और कार्य-कारण पर ध्यान देते हैं, क्योंकि आदिम मनुष्य उनके द्वारा भविष्यवाणी की गई घटनाओं और घटनाओं का एक पूरी तरह से तार्किक क्रम है, घातक, लेकिन काफी सुसंगत। राक्षसी आक्रमण।

दो सिर वाला बछड़ा और युद्ध एक ही है, क्योंकि बछड़ा युद्ध का अग्रदूत था। आदिम मनुष्य के लिए यह संबंध इतना विश्वसनीय और आश्चर्य करने वाला लगता है क्योंकि उसके लिए दुर्घटना दुनिया में होने वाली घटनाओं के नियमित और व्यवस्थित

पाठ्यक्रम की तुलना में बहुत अधिक महत्वपूर्ण कारक है, और इसीलिए, सामान्य से परे हर चीज को ध्यान से देखते हुए, वह एक के लिए बहुत समय पहले हमने समूहों के गठन और मामलों की श्रृंखला के कानून की खोज की थी। हमारा कोई भी क्लिनिक युग्मित मामलों के कानून से परिचित है। क्लिनिक में एक विशेष रूप से दुर्लभ मामला पेश करते हुए मनोचिकित्सा के एक बुजुर्ग वुर्जबर्ग प्रोफेसर कहते थे: "सज्जनों! यह पूरी तरह से अनूठा मामला है। हमारे पास कल एक और होगा।" मैंने खुद यह देखा है। एक मनोरोग अस्पताल में अपने आठ वर्षों के अभ्यास के दौरान, मुझे एक बार एक प्रकार की गोधूली अवस्था के एक बहुत ही दुर्लभ मामले का सामना करना पड़ा - पहला जो मैंने कभी देखा है। दो दिन बाद में - दूसरा, लेकिन अब और नहीं था। एक तरफ, "मामलों की जोड़ी" डॉक्टरों का मजाक है, दूसरी तरफ, यह आदिम विज्ञान का एक प्राचीन विषय है। एक बार एक आधुनिक वैज्ञानिक कहा " जादू " है विज्ञान का जंगल "(जादू जंगल का विज्ञान है। - अनुवाद।)। इसमें कोई संदेह नहीं है कि ज्योतिष और अटकल के अन्य तरीके एक प्राचीन विज्ञान हैं।

स्वाभाविक रूप से जो हो रहा है वह दृश्यमान है और इसी तरह। इसके लिए तैयारी की है। नतीजतन, विज्ञान और कला केवल तभी समझ में आती है जब मनमानी की अज्ञात ताकतें दिए गए उल्लंघन का उल्लंघन करती हैं। अक्सर "घटनाओं के मौसम विज्ञान" का कार्य जनजाति के सबसे बुद्धिमान और निपुण लोगों में से एक को सौंपा जाता है - जादूगर। अपने ज्ञान और अपनी कला से उसे हर अनसुनी बात समझानी चाहिए और उसका विरोध करना चाहिए। वह एक वैज्ञानिक, विशेषज्ञ, अवसर के विशेषज्ञ और साथ ही जनजाति की वैज्ञानिक परंपराओं के पुरालेखपाल हैं। सम्मान और भय से घिरा, वह महान अधिकार प्राप्त करता है, लेकिन फिर भी इतना महान नहीं है कि उसके गोत्र को गुप्त रूप से यह विश्वास नहीं है कि पड़ोसी जनजाति में जादूगर अभी भी बेहतर है। सबसे अच्छी दवा कभी नहीं होती है; यह यथासंभव दूर है। जिस जनजाति के बीच मैं कुछ समय तक रहा, उसके द्वारा महसूस किए गए सबसे मजबूत डर के बावजूद, पुराने जादूगर से अभी भी लोगों और जानवरों की छोटी बीमारियों के मामले में ही परामर्श किया गया था, और अधिक गंभीर मामलों में उन्हें एक विदेशी प्राधिकरण, मगंगा द्वारा परामर्श दिया गया था। जादूगर), युगांडा से एक बड़े इनाम के लिए आमंत्रित - पार्ट आउट comme चेजू nous (हर जगह, हमारी तरह (फ्रेंच) - अनुवाद)

यादृच्छिक घटनाएं आमतौर पर छोटी श्रृंखला या समूहों में होती हैं। मौसम की भविष्यवाणी का लंबे समय से आजमाया हुआ नियम कहता है कि अगर लगातार कई दिनों तक बारिश हुई, तो कल बारिश होगी। कहावत है: "मुसीबत अकेले नहीं आती" या "जो दोगुना हो जाता है वह तीन गुना हो जाता है।" यह बुद्धिमान कहावत एक आदिम विज्ञान है, जो अभी भी लोगों के बीच व्यापक है और शिक्षित लोगों द्वारा उपहास किया

जाता है जो मानते हैं कि उनके साथ कुछ खास नहीं हो सकता है। यहां मुझे एक कहानी बतानी है। एक महिला जिसे मैं जानता हूं, वह रात की मेज पर एक तरह की चटकने से सुबह सात बजे उठती है। एक छोटी सी खोज के बाद, उसने इसका कारण खोजा: लगभग एक सेंटीमीटर चौड़े उसके कांच के ऊपरी किनारे को काट दिया गया था। उसे अजीब लग रहा था। उसने कैन के एक और गिलास के लिए आवाज लगाई। पांच मिनट बाद वही आवाज सुनाई दी और फिर से ऊपरी किनारे में दरार आ गई। इस बार, पहले से ही चिंतित, उसने तीसरा गिलास मांगा। बीस मिनट बाद, वही दरार, और फिर कांच के ऊपरी हिस्से में एक दरार। लगातार तीन बार, यह उसकी कल्पना के लिए बहुत अधिक था। उसने तुरंत प्राकृतिक कारणों में अपना विश्वास त्याग दिया और फिर से अपने आदिम अभ्यावेदन को साकार किया। सामूहिक - मनमानी की शक्ति में विश्वास। यह कई आधुनिक लोगों के साथ होता है जब वे ऐसी घटनाओं का सामना करते हैं जिन्हें प्राकृतिक कार्य-कारण समझाने में विफल रहता है। इसलिए ऐसी घटनाओं से इंकार किया जाता है। वे अप्रिय हैं, क्योंकि वे - और यह हमारी अभी भी जीवंत प्रधानता है - हमारी विश्व व्यवस्था का उल्लंघन करती है। तो क्या कुछ भी असंभव है?

आदिम मनुष्य अपने विश्वास को मनमानेपन की शक्ति में खरोच से नहीं, जैसा कि पहले सोचा गया था, बल्कि अनुभव पर आधारित है। घटनाओं का समूह जिसे हम अंधविश्वास कहते हैं, उसे सही ठहराते हैं, क्योंकि वास्तव में समय और स्थान में असामान्य चीजों के संयोग की संभावना होती है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि यहां हमारा अनुभव हमें भाग्य की दया पर छोड़ देता है। हम पर्याप्त रूप से चौकस नहीं हैं, क्योंकि हम थोड़े अलग तरीके से स्थापित हैं। उदाहरण के लिए, तथ्यों की निम्नलिखित श्रृंखला को आपस में जुड़े हुए के रूप में गंभीरता से विचार करना हमारे लिए कभी नहीं होगा: एक पक्षी सुबह किसी के कमरे में उड़ता है, एक घंटे बाद वह दुर्घटना देखता है, दोपहर में एक करीबी रिश्तेदार की मृत्यु हो जाती है, एक रसोइया गिर जाता है शाम को कटोरा।, और देर रात घर लौटते समय, उसे पता चलता है कि उसने अपने घर की चाबी खो दी है। हालाँकि, आदिम मनुष्य घटनाओं की इस श्रृंखला में सबसे तुच्छ विवरण को भी नहीं चूकता। इसमें हर नई कड़ी उसकी उम्मीदों को पुष्ट करती है, और इसमें वह सही है, उससे कहीं ज्यादा सही है जितना हमें लगता है। उसकी चिंतित उम्मीद काफी जायज है, इसके अलावा, यह समीचीन है। ऐसे शगुन भरे दिन में कुछ भी नहीं करना चाहिए। हमारी दुनिया में यह एक निंदनीय अंधविश्वास होगा, लेकिन आदिम मनुष्य की दुनिया में यह एक बहुत ही समीचीन विवेक है, क्योंकि वहां मनुष्य हमारे संरक्षित और व्यवस्थित जीवन की तुलना में बहुत अधिक हद तक मौके के अधीन है। दूर-दराज के इलाके में होने के कारण अक्सर जोखिम उठाना शायद ही उचित हो। यूरोपीय समान परिस्थितियों में उसी तरह व्यवहार करते हैं।

जब कोई जातक किसी बात को लेकर परेशान होता है तो वह किसी आदिवासी

सभा में नहीं जाता है। यदि प्राचीन रोमन, घर छोड़कर, दहलीज पर ठोकर खाई, तो उसने अपना इरादा छोड़ दिया। यह हमें बेतुका लगता है, लेकिन आदिम परिस्थितियों में ऐसा शगुन कम से कम सावधानी की मांग करता है। अगर मैं किसी बात को लेकर परेशान हूँ, तो मेरी हरकतें थोड़ी धीमी हो जाती हैं, मैं कुछ अनुपस्थित-दिमाग वाला हूँ और परिणामस्वरूप मैं कुछ हिट करता हूँ, ठोकर खाता हूँ, कुछ गिराता हूँ, कुछ भूल जाता हूँ। सभ्यता की स्थितियों में, ये वास्तविक छोटी चीजें हैं, लेकिन घने जंगल में - एक गंभीर खतरा ! ठोकर खाने का मतलब वहाँ है: बारिश के बाद फिसलन वाले पेड़ के तने से फिसल जाना, जो मगरमच्छों से पीड़ित नदी पर पाँच मीटर ऊँचा पुल का काम करता है। मैं लंबी घास में अपना कंपास खो देता हूँ। मैं अपनी बंदूक लोड करना और जंगल में एक गैडे से मिलना भूल जाता हूँ। मुझे किसी बात की चिंता है और मैं सांप पर कदम रखता हूँ। शाम को मैं अपने मच्छर रोधी जूते पहनना भूल जाता हूँ, और ग्यारह दिनों के बाद मलेरिया के पहले हमले से मेरी मृत्यु हो जाती है। ट्रोपिका। आखिर नहाते समय भी अपना मुँह बंद रखना भूल जाना ही काफी है, और आप घातक पेचिश से बीमार पड़ जाते हैं। बेशक, हमारे लिए ऐसे मामलों के अपने प्राकृतिक कारण होते हैं, जिन्हें कुछ हद तक परेशान मनोवैज्ञानिक स्थिति से समझाया जा सकता है, लेकिन आदिम आदमी के लिए यह एक निष्पक्ष रूप से निर्धारित शगुन या जादू टोना है।

हालाँकि, आप दूसरे रास्ते पर जा सकते हैं। एलगॉन के दक्षिण में किटोशी के इलाके में, मैंने काबरा के जंगल का दौरा किया। वहाँ, मोटी घास में, मैंने लगभग एक वाइपर पर कदम रखा। अंतिम क्षण में, मैं फिर भी उस पर कूदने में कामयाब रहा। दोपहर में, मेरा दोस्त तीतरों के शिकार से लौटा, घातक पीला और कांप रहा था, जैसे कि बुखार में हो: घर के रास्ते में उसे लगभग सात फुट के माम्बा ने काट लिया, जो एक दीमक के टीले के पीछे से उस पर दौड़ा। निश्चित तौर पर इससे उनकी जान चली गई होगी। फिर भी, आखिरी समय में, वह अपने से कुछ कदम दूर एक सांप को बंदूक से गोली मारकर घायल करने में कामयाब रहा। शाम के नौ बजे, हमारे शिविर पर भूखे लकड़बग्घे के झुंड ने हमला किया, जिसने एक दिन पहले ही एक आदमी को फाड़ दिया था, जब वह सो रहा था, उस पर हमला कर दिया था। आग को नजरअंदाज करते हुए, वे हमारे रसोइया की झोपड़ी में घुस गए, जो बेतहाशा रोने के साथ विभाजन के पीछे गायब हो गया। भविष्य में, हमारी यात्रा के पूरे समय में एक भी घटना नहीं हुई। ऐसा दिन मेरे मूल निवासियों के लिए चिंतन का विषय था। हमारे लिए, यह दुर्घटनाओं का एक मात्र समूह है; उनके लिए, यह एक शगुन की स्वाभाविक पूर्ति है, यानी एक ऐसी घटना जो हमारे सुदूर स्थानों की यात्रा के पहले दिनों में हुई थी। ऐसा हुआ कि हम और हमारा वैगन उस पुल के साथ-साथ धारा में गिर गए, जिस पर हम उस समय पार कर रहे थे। मेरे झगड़ों के चेहरे के भाव ऐसे थे जैसे वे कहना चाहते हैं: "हाँ, एक अच्छी शुरुआत।" इसके अलावा, एक उष्णकटिबंधीय बारिश

हुई, जिसने हमें भिगो दिया और मुझे एक ऐसा तापमान मिला जो कई दिनों तक कम नहीं हुआ। जिस दिन की शाम को मैंने बात करना शुरू किया, फिर भी जो कुछ हुआ था, उसकी छाप के तहत, मैं अपने दोस्त, शिकारी से यह कहने का विरोध नहीं कर सका: “मुझे ऐसा लगने लगा है कि यह सब बहुत पहले शुरू हुआ था। क्या आपको वह सपना याद है जो आपने मुझे ज्यूरिख में बताया था, हमारे जाने से ठीक पहले? उसके बाद उन्होंने एक बेहद प्रभावशाली, दुःस्वप्न सपना देखा, जैसे कि वह शिकार पर अफ्रीका में थे और एक विशाल मांबा ने अचानक उस पर हमला किया। वह दहशत के एक जोरदार रोने के साथ जाग उठा। सपने ने उस पर बहुत प्रभाव डाला, और फिर उसने मुझे स्वीकार किया कि, उसकी राय में, इसका मतलब हम में से एक की मृत्यु होना चाहिए था। उनका मतलब था, निश्चित रूप से, मेरी मौत, असली दोस्त के लिए, हम आशा करते हैं, हमेशा दूसरा होता है। हालाँकि, यह वह था जो बाद में मलेरिया से गंभीर रूप से बीमार हो गया, जिसने उसे लगभग मृत्यु के कगार पर ला दिया।

यहां, जहां सांप और मलेरिया के मच्छर नहीं हैं, मैंने जिस बातचीत का उल्लेख किया है वह बिल्कुल भी प्रभावशाली नहीं है। लेकिन एक मखमली नीली उष्णकटिबंधीय रात याद आती है, विशाल पेड़ सब कुछ अंधेरे में डुबो देते हैं, रात की दूरियों की रहस्यमय आवाजें, अकेली आग, पास में पड़ी बंदूकें, मच्छरदानी, पीने के लिए तैयार दलदल का पानी, और इसके अलावा, एक एहसास वह एक बूढ़ा, एक अफ्रीकी जो अपने देश को अच्छी तरह जानता है, शब्दों के कपड़े पहने हुए: "आप पता है, यह आदमी का नहीं है - यह है भगवान - देश" (आप जानते हैं, यह देश मनुष्य के लिए नहीं है - यह भगवान का है (अंग्रेजी) - अनुवाद।)। वहां राजा एक आदमी नहीं है, बल्कि प्रकृति, जानवर, पौधे और रोगाणु हैं। ऐसा मूड वहां काफी स्वाभाविक है, और आप महसूस करना शुरू करते हैं कि कनेक्शन उभर रहे हैं कि हम पहले ही हंसते थे। यह असीमित मनमानी ताकतों की दुनिया है जिसके साथ आदिम मनुष्य प्रतिदिन व्यवहार करता है। असामान्य - उसके लिए - यह कोई मजाक नहीं है। इससे वह अपने निष्कर्ष निकालता है: "यह एक अच्छी जगह नहीं है", "दिन प्रतिकूल है" - और कौन जानता है कि इस तरह की चेतावनी के लिए वह कितने खतरों से बचता है!

जादू जंगल का विज्ञान है। शगुन पिछली गतिविधियों में तत्काल परिवर्तन, नियोजित गतिविधियों का परित्याग और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण में बदलाव का संकेत देता है। यही है, असाधारण उपायों के लिए जो उच्चतम समीचीन हैं, दुर्घटनाओं के समूह को ध्यान में रखते हुए और आदिम मनुष्य में निहित मानसिक कारणता की पूर्ण बेहोशी को ध्यान में रखते हुए। तथाकथित प्राकृतिक कारणों के लिए एकतरफा वरीयता के लिए धन्यवाद, हमने व्यक्तिपरक-मानसिक को उद्देश्य-प्राकृतिक से अलग करना सीख लिया है। आदिम मनुष्य का मानस, इसके विपरीत, बाहर, वस्तुओं में केंद्रित है। वह आश्चर्यचकित

नहीं है, लेकिन केवल वस्तु मन है, जो जादुई शक्ति से संपन्न है, इसलिए वह सब अदृश्य प्रभाव, जिसे हम सुझाव कहेंगे और कल्पना की गाद के साथ - उसके लिए - बाहर से आता है। उसकी भूमि न भौगोलिक है, न भूवैज्ञानिक और न ही राजनीतिक। इसमें उनकी पौराणिक कथाएं और धर्म, उनकी सोच और भावनाएं शामिल हैं, क्योंकि आदिम मनुष्य को इन सब की जानकारी नहीं है। उसका डर कुछ "खराब" स्थानों में स्थानीयकृत है। हर जंगल में मरे हुए की आत्मा वास करती है। उस गुफा में राक्षस हैं जो इसमें प्रवेश करने वाले किसी भी व्यक्ति पर झपटते हैं। उस पहाड़ में एक बहुत बड़ा सांप रहता है, उस पहाड़ी में महान नेता की समाधि है, उस स्रोत से, उन चट्टानों या एक पेड़ से सभी महिलाएं गर्भवती हो जाती हैं, दानव-सांप उस फोर्ड पर पहरा देते हैं, उस बड़े पेड़ में एक आवाज जो कुछ लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती है। आदिम मनुष्य का कोई मनोविज्ञान नहीं है। चैत्य वस्तुनिष्ठ है और बाहर घटित होता है। यहां तक कि उसके सपने भी हकीकत हैं, या वह उन पर कोई ध्यान नहीं देता है। उदाहरण के लिए, एलगॉन के मेरे निवासियों ने गंभीरता से दावा किया कि उनके पास सपने बिल्कुल नहीं थे, केवल जादूगर के पास थे। जब मैंने उनमें से एक से पूछा, तो उसने कहा कि अंग्रेजों के देश में आने के बाद से वह उनके पास नहीं था। हाँ, उसके पिता के अभी भी सपने थे, वह जानता था कि झुंड कहाँ चले जाते हैं, जहाँ बछड़ों के साथ गायें होती हैं, जब युद्ध या प्लेग होता है। अब जिले को तो सब जानते हैं आयुक्त (जिला आयुक्त (अंग्रेजी) - अनुवाद), और वे कुछ भी नहीं जानते हैं। वह कुछ पापुआनों के रूप में भाग्य के लिए इस्तीफा दे दिया गया था, जो मानते हैं कि अधिकांश मगरमच्छ ब्रिटिश प्रशासन को पारित कर चुके हैं। एक देशी अपराधी अधिकारियों से छिप रहा था और नदी पार करने की कोशिश करते हुए, एक मगरमच्छ द्वारा गंभीर रूप से विकृत कर दिया गया था। इसलिए मूल निवासियों ने निष्कर्ष निकाला कि यह एक पुलिस मगरमच्छ रहा होगा। अब, नींद के दौरान, भगवान शेमस के साथ नहीं, बल्कि अंग्रेजों के साथ बोलते हैं, क्योंकि यह अंग्रेजी है जिसके पास शक्ति है, इसलिए क्लैरवॉयस का कार्य दूसरों के पास गया है। कभी-कभी उनकी आत्मा भी भटक जाती है, और जादूगर, पक्षियों की तरह, उन्हें पिंजरों में पकड़ लेता है। या वे अन्य लोगों की आत्माओं में रहते हैं, जिससे बीमारी होती है।

बेशक, चैत्य का यह प्रक्षेपण लोगों के साथ-साथ लोगों, जानवरों और चीजों के बीच संबंध स्थापित करता है जो पूरी तरह से समझ से बाहर हैं। एक सफेद शिकारी ने मगरमच्छ को गोली मारी। उसके तुरंत बाद, पड़ोसी गाँव से बहुत से लोग दौड़ते हुए आए; बेहद उत्साहित, उन्होंने हुए नुकसान के लिए मुआवजे की मांग की। तथ्य यह है कि मगरमच्छ, यह पता चला है, वास्तव में इस गाँव की एक बूढ़ी औरत थी, जिसकी गोली लगने के समय ही मृत्यु हो गई थी। जाहिर है, उसकी आत्मा इस मगरमच्छ में थी। एक अन्य शिकारी ने एक तेंदुए को गोली मार दी जिससे पशुधन को खतरा था। वहीं, पड़ोस के

गांव में एक महिला की मौत हो गई। उसकी पहचान एक मृत तेंदुए के साथ भी हुई है।

भागीदारी "इन अद्भुत कनेक्शनों के लिए। रहस्यवादी "। मुझे ऐसा लगता है कि "रहस्यमय" शब्द दुर्भाग्य से चुना गया है, क्योंकि, आदिम मनुष्य के दृष्टिकोण से, यह कुछ रहस्यमय के बारे में नहीं है, बल्कि पूरी तरह से प्राकृतिक चीज के बारे में है। यह केवल हमें इतना असामान्य लगता है, क्योंकि हम स्पष्ट रूप से इन मानसिक विभाजनों से अपरिचित हैं। लेकिन वास्तव में वे हमारे साथ भी मौजूद हैं, ऐसे भोलेपन में नहीं, बल्कि कुछ अधिक सभ्य रूप में। उदाहरण के लिए, लगभग निश्चित रूप से, हम मानते हैं कि अन्य लोगों का मनोविज्ञान हमारे जैसा ही है, कि दूसरों को भी वैसा ही पसंद या वांछनीय दिखना चाहिए जैसा हम करते हैं; जो हमारे लिए बुरा है वह दूसरों के लिए बुरा होना चाहिए। इस प्रकार, यह हाल ही में है कि हमारी न्याय प्रणाली अंततः फैसले की मनोवैज्ञानिक सापेक्षता पर पहुंचने में सक्षम है। थीसिस " कोडो लाइसेंस जोवी , नहीं लाइसेंस बोवी "(बृहस्पति को क्या अनुमति है, यह बैल को अनुमति नहीं है (अव्य।) - ट्रांस।) अभी भी किसी भी साधारण आत्मा में क्रोध का कारण बनता है। कानून के सामने समानता को अभी भी एक बेशकीमती उपलब्धि माना जाता है। और सब कुछ जो बुरा है और दोषपूर्ण, जिसे वे अपने आप में नहीं देखना चाहते हैं, दूसरे के पास निश्चित रूप से है; इसलिए, उसकी आलोचना की जानी चाहिए, उसका मुकाबला किया जाना चाहिए, हालांकि वास्तव में केवल अपनी आध्यात्मिक हीनता को दूसरे में स्थानांतरित करना है। दुनिया अभी भी भरी हुई है बेट्स . का noires "(शाब्दिक रूप से काले जानवर (latI - TranslI)) और बलि का बकरा, जैसे वह चुड़ैलों और वेयरवोम्स के साथ झुंड में रहता था।

मनोवैज्ञानिक प्रक्षेपण, अर्थात् " भागीदारी मिस्टुक "लेवी-ब्रुहल के अनुसार, जिसे उन्होंने आदिम मनुष्य की एक विशेष रूप से विशिष्ट विशेषता के रूप में ठीक किया, दोनों सबसे आम मानसिक घटनाओं में से एक है, जिसे हम दूसरे शब्दों में कहते हैं और जो, एक नियम के रूप में, हम नहीं चाहते हैं पहचानने के लिए। हम में क्या बेहोश है, हम अपने पड़ोसी में खोजते हैं और उसके अनुसार उससे निपटते हैं। उसे अब जहर के साथ प्रयोग नहीं किया जाता है, उसे दांव पर नहीं जलाया जाता है या उसे प्रताड़ित नहीं किया जाता है, लेकिन वह एक आधिकारिक सलाह के स्वर में नैतिक पीड़ा के अधीन होता है वे किसके साथ संघर्ष करते हैं , एक नियम के रूप में , उनकी अपनी हीनता है।

अपनी चेतना की अविभाज्य प्रकृति और इससे जुड़ी आत्म-आलोचना की पूर्ण कमी के कारण, आदिम मनुष्य बस हममें से थोड़ा अधिक प्रोजेक्ट करता है। और चूंकि यह सब उसे बिल्कुल वस्तुनिष्ठ लगता है, इसलिए, तदनुसार, उसकी भाषा अधिक रंगीन है। एक निश्चित मात्रा में हास्य के साथ, एक तेंदुए की महिला की कल्पना एक ऐसी चीज के रूप में की जा सकती है जिसे हम एक हंस, एक गाय, एक मुर्गी, एक सांप, एक बैल, एक गधा, एक ऊंट, आदि के रूप में समझते हैं, जिसे हम में से प्रत्येक के रूप में जाना जाता

है। एफ़िथेटा ornantia (सजावट के लिए विशेषण (lat। - Transl।)। जब तक आदिम आत्मा में अपने निहित जहर के साथ एक नैतिक स्वाद नहीं होता है; इसके अलावा, पुरातन आदमी बहुत अधिक प्राकृतिक है और हमारे जैसे तर्क में भी शामिल है। मूल निवासियों ने समझाया मुझे बड़ी दक्षता के साथ कि मैं भालू कुलदेवता का था, यानी मैं एक भालू था, क्योंकि मैं एक व्यक्ति के रूप में नहीं, बल्कि ऊर्ध्वाधर सीढ़ियों से नीचे गया था भालू की तरह, अपनी पीठ को मोड़ना और चारों अंगों का उपयोग करना। अगर यूरोप में कोई मुझे गुफा भालू कहता है, तो यह वही होगा, केवल थोड़ी अलग बारीकियों के साथ। पशु जगत में आत्मा के अवतार का उद्देश्य, जो हमें आदिम मनुष्य में इतना असामान्य लगता है, कई अन्य चीजों की तरह हमारे लिए एक भाषाई आकृति बन गया है। यदि हम रूपक का संक्षिप्त रूप में अनुवाद करते हैं, तो हमें एक पुरातन दृष्टिकोण मिलता है। उदाहरण के लिए, शब्द "चंगा" लें। पुरातन भाव हैं " हाथ रखना ", "हाथों से काम करना" - ठीक वैसा ही जैसा जादूगर अपने रोगियों के साथ करता है (जर्मन में, तीनों भाव हैं: "अर्जट्लिच " बेहैंडिन ", " हैंडौफ्लेजेन " , " मिटो हैंडेन Bearbeiten " - एक आम जड़ है हाथ - हाथ। - अनुवाद।)।

आत्मा के अवतार के बारे में सबसे समझ से बाहर की बात यह है कि हम आत्मा के पूर्ण विभाजन और किसी जंगली जानवर में उसके रहने के ठोस विचार से भ्रमित हैं। लेकिन जब हम किसी को ऊंट कहते हैं, तो हमारा मतलब यह नहीं है कि वह हर तरह से ऊंट जैसा स्तनपायी है, बल्कि हमारा मतलब है कि वह एक निश्चित अर्थ में ऊंट है। इस प्रकार, हम इस व्यक्ति के व्यक्तित्व या आत्मा के एक हिस्से को अलग कर देते हैं और इस टुकड़े को ऊंट के रूप में व्यक्त करते हैं। तो तेंदुआ महिला भी एक व्यक्ति है, केवल उसकी आत्मा एक तेंदुआ है। और चूंकि आदिम मनुष्य के लिए सभी अचेतन मानसिक सामग्री ठोस होती है, जिसे तेंदुआ कहा जाता है उसके पास तेंदुए की आत्मा होती है, या, और भी गहरे विभाजन के साथ, तेंदुए की आत्मा एक असली तेंदुए के रूप में घने में रहती है ,

प्रक्षेपण द्वारा वातानुकूलित समान पदनाम एक ऐसी दुनिया बनाता है जिसमें एक व्यक्ति न केवल शारीरिक रूप से, बल्कि आध्यात्मिक रूप से भी पूरी तरह से डूब जाता है; वह इसमें एक तरह से पिघल जाता है। वह किसी भी तरह से उसका स्वामी नहीं है, वह उसका हिस्सा है। इसलिए, आदिम लोग अभी भी मानवीय विशिष्टता से दूर हैं। वे ब्रह्मांड के स्वामी होने का सपना नहीं देखते हैं। उनका प्राणी वर्गीकरण होमो में शीर्ष पर नहीं पहुंचता है सेपियन्स ; उनके लिए सबसे ऊंचा प्राणी हाथी है, फिर शेर, फिर बोआ कंस्ट्रिक्टर या मगरमच्छ, फिर आदमी और फिर निचले प्राणी। मनुष्य आज भी यहां प्रकृति में समाहित है। वह नहीं सोचता कि वह प्रकृति पर हावी हो सकता है, और इसलिए उसके उच्चतम विचारों का उद्देश्य उसके खतरनाक दुर्घटनाओं से बचाव करना है। दूसरी ओर, सभ्य मनुष्य

प्रकृति पर अधिकार करने की कोशिश करता है और इसलिए प्राकृतिक कारणों को जानना चाहता है, जो उसे उसकी गुप्त कार्यशालाओं की कुंजी देगा। यही कारण है कि मनमानी ताकतों का विचार और उनके अस्तित्व की संभावना भी उसके लिए बेहद अप्रिय है, क्योंकि उसे प्रकृति पर विजय प्राप्त करने के अपने प्रयासों की निरर्थकता का प्रमाण सही लगता है।

जो कुछ कहा गया है उसका सारांश देते हुए, मैं यह कहना चाहूंगा: पुरातन व्यक्ति की मौलिक मौलिकता उसका मौका देने का दृष्टिकोण है, क्योंकि दुनिया की घटनाओं का यह कारक उसके लिए प्राकृतिक कारणों की तुलना में अतुलनीय रूप से अधिक महत्वपूर्ण है। संयोग की मनमानी में एक ओर, यादृच्छिक घटनाओं के वास्तविक समूह में, दूसरी ओर, अचेतन मानस के प्रक्षेपण में, तथाकथित भागीदारी शामिल है। रहस्यवादी _ बेशक, एक पुरातन व्यक्ति के लिए यह अंतर मौजूद नहीं है, क्योंकि चैत्य को उसमें इस हद तक प्रक्षेपित किया जाता है कि वह एक उद्देश्य, भौतिक घटना से भिन्न नहीं होता है। उसके लिए, दुर्घटनाएं एनिमेटेड हस्तक्षेप हैं, यानी मनमाने ढंग से जानबूझकर किए गए कार्य, क्योंकि उन्हें नहीं लगता कि एक असाधारण घटना उसे केवल इसलिए झटका देती है क्योंकि वह उसे अपने आश्चर्य या भय की शक्ति से संपन्न करता है। यहां, हालांकि, हम असुरक्षित जमीन पर हैं। क्या कोई चीज सुंदर है क्योंकि मैं उसे सुंदरता से संपन्न करता हूं? या वस्तु की वस्तुगत सुंदरता मुझे इसे स्वीकार करने के लिए मजबूर करती है? यह ज्ञात है कि सबसे बड़ा दिमाग इस समस्या से जूझ रहा था: दुनिया को क्या रोशन करता है - पवित्र सूर्य या . दीप्तिमान मानव आँख। एक पुरातन व्यक्ति सूर्य में विश्वास करता है, एक सभ्य व्यक्ति आंखों में विश्वास करता है, जब तक कि वह निश्चित रूप से कविता से बीमार न हो। उसे प्रकृति में महारत हासिल करने में सक्षम होने के लिए उसे निर्जीव बनाने की जरूरत है, यानी वह सभी पुरातन अनुमानों को मना कर देता है, कम से कम जहां वह उद्देश्यपूर्ण होने का प्रयास करता है।

पुरातन दुनिया में, हर चीज में एक आत्मा होती है। मनुष्य की आत्मा, या, इसे बेहतर ढंग से कहें तो, मानवता की आत्मा, सामूहिक अचेतन ; क्योंकि मनुष्य के पास अभी तक आत्मा नहीं है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि बपतिस्मा के ईसाई संस्कार की मांग मानव जाति के आध्यात्मिक विकास में बहुत महत्व का एक महत्वपूर्ण मोड़ है। सृजन एक व्यक्ति को एक वास्तविक आत्मा प्रदान करता है; यह बपतिस्मा का निजी, जादुई, बपतिस्मा देने वाला संस्कार नहीं है, बल्कि बपतिस्मा का विचार है, जो मनुष्य को दुनिया के साथ उसकी पुरातन पहचान से बाहर ले जाता है और उसे दुनिया से परे होने में बदल देता है। तथ्य यह है कि मानव जाति इस विचार की ऊंचाई तक पहुंच गई है, गहरे अर्थ में, एक बपतिस्मा और एक आध्यात्मिक, अप्राकृतिक व्यक्ति का जन्म।

अचेतन के मनोविज्ञान में, एक ऐसी स्थिति होती है जिसके अनुसार आत्मा के

किसी भी अपेक्षाकृत स्वतंत्र भाग का एक व्यक्तिगत चरित्र होता है, अर्थात् वह तुरंत जैसे ही इसे स्वयं को व्यक्त करने का अवसर दिया जाता है, इसे व्यक्त किया जाता है। इसका सबसे हड़ताली उदाहरण मानसिक रूप से बीमार लोगों के मतिभ्रम और मध्यम-रहस्यमय संचार में पाया जा सकता है। जहां आत्मा का एक स्वतंत्र भाग प्रक्षेपित होता है, वहां एक अदृश्य व्यक्ति प्रकट होता है। साधारण प्रेतात्मवाद में आत्माएँ इस प्रकार प्रकट होती हैं, और इसी तरह वे आदिम मनुष्य में भी बनती हैं। यदि आत्मा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा किसी व्यक्ति पर प्रक्षेपित किया जाता है, तो वह मन बन जाता है, अर्थात्, एक असाधारण शक्ति वाला व्यक्ति - एक जादूगर, चुड़ैल, वेयरवोल्फ, आदि। पुरातन विचार यह है कि रात में जादूगर, पक्षियों की तरह, आत्मा के स्थानांतरित भागों को पकड़ता है और उन्हें पिंजरों में रखता है, जो सबसे स्पष्ट रूप से कहा गया है। ये अनुमान जादूगर मन बनाते हैं, वे जानवरों, पेड़ों और पत्थरों को आवाज देते हैं और व्यक्ति को मजबूर करते हैं, क्योंकि वे बिना शर्त आज्ञाकारिता के लिए आत्मा के हिस्से हैं। इस कारण से, मानसिक रूप से बीमार व्यक्ति अपरिवर्तनीय रूप से अपनी आवाजों की दया पर निर्भर होता है, क्योंकि अनुमान-उसकी अपनी मानसिक गतिविधि है, जिसमें से वह उसी हद तक सचेत विषय है, जो सुनने, देखने वाले की गतिविधि का विषय है, और पालन करता है।

इसलिए, मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से, पुरातन सिद्धांत, जिसमें यह तथ्य शामिल है कि संयोग की मनमानी शक्ति आत्माओं और जादूगरों के इरादों का परिणाम है, इसकी अनिवार्यता, निष्कर्ष के आधार पर सबसे स्वाभाविक है। लेकिन आइए इस बारे में किसी भ्रम में न रहें! यदि हम एक बुद्धिमान आदिम व्यक्ति को अपनी पूरी तरह से वैज्ञानिक व्याख्या समझाते हैं, तो वह हम पर हास्यास्पद अंधविश्वास और वास्तव में तर्क में एक भयानक दोष का आरोप लगाएगा, क्योंकि उसका मानना है कि यह आंख नहीं है जो दुनिया को रोशन करती है, बल्कि सूर्य है। . इस प्रकार, एक दिन मेरे दोस्त, मूल निवासी प्रमुख माउंटेन लेक, ने शर्म से मुझे आदेश देने के लिए बुलाया जब मैं ऑगस्टाइन के तर्क का हवाला दे रहा था " गैर पूर्व हड़बड़ाना प डोमिनस नोस्टर , सेड यहां इलीयुम fecit " (सूर्य हमारा भगवान नहीं है, जिसने ऐसा किया (अव्य।) - अनुवाद ।), क्रोध से चिल्लाते हुए:" वह जो वहां जाता है - सूर्य की ओर इशारा करते हुए - हमारा पिता है। आप उसे देख सकते हैं। सारा प्रकाश, सारा जीवन, उसी से आता है, ऐसा कुछ भी नहीं है जो उसके द्वारा न किया गया हो। वह बहुत उत्तेजित हो गया , दर्द से शब्दों की खोज कर रहा था, और अंत में कहा: "यहां तक कि पहाड़ों में एक आदमी भी जो अकेले चलता है, उसके बिना अपनी आग नहीं जला सकता।" एक रैसिक दृष्टिकोण को बेहतर ढंग से चित्रित करना शायद ही संभव हो। सारी शक्ति बाहर है, और हम उसके कारण ही जी सकते हैं। यह आवश्यक नहीं है, शायद, यह देखने के लिए बहुत प्रयास करने के लिए कि हमारे ईश्वरविहीन दिनों में भी पुरातन मन की स्थिति अभी भी धार्मिक सोच में संरक्षित है। ऐसा अभी भी लाखों लोग

सोचते हैं।

जब हमने पहले आदिम मनुष्य के संयोग की मूल प्रवृत्ति के बारे में बात की थी, तो मैंने यह दृष्टिकोण व्यक्त किया कि आत्मा की ऐसी अभिव्यक्ति कुछ समीचीन है, और इसलिए तर्कसंगत है। क्या हम एक पल के लिए भी इस परिकल्पना को स्वीकार करने की हिम्मत करेंगे कि मनमानी ताकतों का पुरातन सिद्धांत न केवल मनोवैज्ञानिक रूप से, बल्कि तथ्यात्मक रूप से भी उचित है? मैं कंधे को काटकर अपने पाठकों को जादू टोना के वास्तविक अस्तित्व के बारे में समझाना नहीं चाहूंगा। मैं उनके साथ केवल यह सोचना चाहूंगा कि क्या निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है यदि हम आदिम मनुष्य से सहमत हैं कि सभी प्रकाश सूर्य से आते हैं, कि चीजें अपने आप में सुंदर हैं और मानव आत्मा का वह हिस्सा एक तेंदुआ है - एक शब्द में, पहचानने के लिए मन के आदिम सिद्धांत का सही मत। इस सिद्धांत के अनुसार, सुंदरता हमें प्रेरित करती है, न कि हम सुंदरता का निर्माण करते हैं। कोई वास्तव में शैतान है, और हमने अपनी बुराई उस पर नहीं थोपी और इस तरह उसे शैतान बना दिया। ऐसे लोग हैं जो दूसरों को प्रभावित करने में सक्षम हैं, तथाकथित मन-व्यक्तित्व, जो अपने आप में ऐसे हैं और हमारे अस्तित्व को हमारी कल्पना के लिए बिल्कुल भी नहीं देते हैं। अर्थात्, मन का सिद्धांत कहता है कि कुछ सामान्य शक्ति है जो वस्तुनिष्ठ रूप से असाधारण प्रभाव डालती है। जो कुछ भी है वह मान्य है, अन्यथा वह मान्य नहीं है। यह केवल अपनी ऊर्जा के कारण ही अस्तित्व में रह सकता है। अस्तित्व एक बल क्षेत्र है। जैसा कि आप देख सकते हैं, मन का पुरातन विचार ऊर्जा के लिए एक प्रकार का दृष्टिकोण है।

आदिम मनुष्य के विचारों को समझना शायद कठिन नहीं है। यदि, हालांकि, यह दृष्टिकोण लगातार विकसित होता है और मानसिक अनुमानों को उनके विपरीत में बदल देता है जिनके बारे में हमने पहले कहा था: "यह मेरी कल्पना या मेरी भावना नहीं है जो जादूगर को जादूगर बनाता है, लेकिन वह वास्तव में एक जादूगर है जो एक जादूगर है। मुझ पर जादुई प्रभाव; यह मैं नहीं हूँ जो मतिभ्रम करता हूँ और इसलिए आत्माओं को देखता हूँ, लेकिन वे अपनी मर्जी से मेरे सामने प्रकट होते हैं " - यदि ऐसे बयान सामने रखे जाते हैं, जो मन के सिद्धांत के तार्किक व्युत्पन्न हैं, तो हम संकोच करना शुरू कर देते हैं और अपने सुंदर को देखते हैं मनोवैज्ञानिक प्रक्षेपण सिद्धांत। अर्थात्, वास्तव में, हम एक कार्डिनल प्रश्न के बारे में बात कर रहे हैं: क्या मेरे अंदर कोई मानसिक कार्य, आत्मा या आत्मा या अचेतन है, या चेतना के गठन की शुरुआत में, मानस वास्तव में इरादों के रूप में बाहर है और मनमानी की ताकतें और केवल मानसिक विकास की प्रक्रिया में? विकास, यह धीरे-धीरे एक व्यक्ति में बढ़ता है? क्या आत्मा के तथाकथित अलग-अलग हिस्से वास्तव में पूरी व्यक्तिगत आत्मा के हिस्से थे, या क्या वे मानसिक इकाइयाँ थीं जो अपने आप में मौजूद थीं, आदिम मनुष्य की भाषा में - आत्माएं, पूर्वजों की आत्माएं, आदि, जो

विकास की प्रक्रिया में मनुष्य में सन्निहित होते हैं, धीरे-धीरे उसमें उस दुनिया का निर्माण करते हैं जिसे अब हम मानस कहते हैं?

यह निष्कर्ष संदिग्ध और विरोधाभासी लग सकता है। लेकिन, वास्तव में, यह इतना समझ से बाहर नहीं है। किसी व्यक्ति में कुछ मानसिक सामग्री को पेश करने की संभावना जो पहले उसमें मौजूद नहीं थी, न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से, बल्कि आंशिक रूप से एक शैक्षणिक दृष्टिकोण से भी अनुमत है। सुझाव और प्रभाव दोनों मौजूद हैं, और आधुनिक व्यवहारवाद को भी इस संबंध में असाधारण अपेक्षाएं हैं। बेशक, मानस के एक जटिल संलयन का विचार पुरातन दृष्टिकोण में सबसे विविध रूपों में व्यक्त किया जाता है, उदाहरण के लिए, कब्जे में व्यापक विश्वास में, पूर्वजों की आत्माओं के अवतार में, आत्माओं के स्थानांतरण में ; उदाहरण के लिए, छींकते समय, जहां हम अभी भी कहते हैं: " Zur Gesundheit "(शाब्दिक रूप से स्वास्थ्य के लिए [जर्मन]। - अनुवाद।) , इसका अर्थ है: " उम्मीद है, नई आत्मा आपको चोट नहीं पहुंचाएगी । "जब हम महसूस करते हैं कि कैसे, हमारे अपने विकास की प्रक्रिया में, एक विरोधाभासी भीड़ से, हम धीरे-धीरे व्यक्तित्व की एकता में आ जाते हैं, यह भी एक प्रकार का जटिल अभिवृद्धि है।

इसलिए यह बहुत संभव लगता है कि हमारे मानस का भी ऐसा ही भाग्य हो।

हमारे समय के भौतिकवादी विचारों में एक समान दृढ़ विश्वास है, जिसकी प्रवृत्ति पुरातन के समान है, अर्थात् वे दोनों एक ही निष्कर्ष पर आते हैं कि व्यक्ति एक साधारण परिणाम है , एक मामले में प्राकृतिक कारणों से, दूसरे में, आदिम, मनमाना या दृच्छिक घटनाओं के परिणामस्वरूप उत्पन्न होता है। दोनों ही मामलों में, मानव और व्यक्तित्व बाहरी वातावरण के सक्रिय पदार्थों का एक नगण्य आकस्मिक उत्पाद प्रतीत होता है। यह दृष्टिकोण दुनिया की पुरातन तस्वीर के साथ काफी सुसंगत है, जिसमें सामान्य व्यक्ति का कोई आवश्यक महत्व नहीं है, क्षणिक और पूरी तरह से बदली जा सकने वाली। भौतिकवाद, सबसे सख्त कारणवाद के चक्कर में, फिर से आदिम दृष्टिकोण पर लौट आता है। लेकिन यहां का भौतिकवादी आदिम मनुष्य की तुलना में अपनी अधिक व्यवस्थितता के कारण अधिक कट्टरपंथी है । आदिम मनुष्य सुसंगत नहीं है, और यह उसका लाभ है: वह एक ऐसे मान-व्यक्तित्व को अलग करता है जिसने ऐतिहासिक विकास की प्रक्रिया में दिव्य आकृतियों, नायकों और दिव्य राजाओं के महत्व को हासिल कर लिया है, जो देवताओं का भोजन खाकर अमर हो जाते हैं। . इसके अलावा, व्यक्ति की अमरता का यह विचार और साथ ही, उसका स्थायी मूल्य पहले से ही प्रारंभिक पुरातन चरणों में पाया जाता है, मुख्य रूप से आत्माओं में विश्वास में, और उस समय के मिथकों में भी जब कोई नहीं था मृत्यु अभी तक, जो कुछ बेवकूफी भरी गलतफहमी या चूक के परिणामस्वरूप अस्तित्व में आई।

आदिम मनुष्य अपने विचारों में इस विरोधाभास से अवगत नहीं है। मेरे मूल

निवासियों ने मुझे आश्वासन दिया कि वे कुछ भी नहीं जानते थे कि मृत्यु के बाद उनका भाग्य क्या होगा। एक आदमी मर जाता है जब वह अब सांस नहीं लेता है। उसके शरीर को घने में ले जाया जाता है, जहां वह हाइना द्वारा खा जाता है। इस प्रकार वे दिन में ध्यान करते हैं; हालाँकि, रात में उन्होंने इस तथ्य के बारे में सोचा कि चारों ओर मृतकों की बहुत सारी आत्माएँ हैं, जो मनुष्यों और पशुओं को नुकसान पहुँचाती हैं, रात के यात्रियों पर हमला करती हैं और उनका दम घोट देती हैं। एक यूरोपीय ऐसे या इसी तरह के अंतर्विरोधों पर अपना आपा खो देगा, जिसके साथ पुरातन भावना सर्वथा भरी हुई है। क्योंकि वह नहीं सोचता कि हमारी सांस्कृतिक दुनिया अब भी वही काम कर रही है। ऐसे विश्वविद्यालय हैं जो अपनी दीवारों के भीतर घोषणा करते हैं कि दैवीय हस्तक्षेप के विचार प्रश्न से बाहर हैं - इसके साथ ही एक धार्मिक संकाय है। एक भौतिकवादी प्रकृतिवादी ने जानवरों की प्रजातियों की थोड़ी सी भी भिन्नता को दैवीय मनमानी के कार्य में कम करने के लिए अश्लील माना, और साथ ही वह ईसाई धर्म के सबसे वास्तविक अनुयायी के साथ था, जिसे उन्होंने जहां भी संभव हो व्यवहार में साबित कर दिया। हमें आदिम मनुष्य की असंगति की चिंता क्यों करनी चाहिए?

मानव जाति के आदिम विचारों से एक दार्शनिक प्रणाली प्राप्त करना असंभव है, लेकिन केवल विरोधी शब्द निकाले जा सकते हैं, जो, हालांकि, हर समय और सभी संस्कृतियों में सभी आध्यात्मिक समस्याओं के लिए एक अटूट आधार बनाते हैं। क्या प्रतिनिधित्व पुरातन मनुष्य के समूह गहरे हैं, या वे केवल ऐसा ही प्रतीत होते हैं? क्या अर्थ शुरू से ही मौजूद था, या यह केवल मनुष्य द्वारा बनाया गया था? मैं इन सबसे कठिन सवालों का जवाब नहीं दे सकता, लेकिन अंत में मैं एल्गोनिया की पहाड़ी जनजाति में मेरे द्वारा किए गए एक और अवलोकन को यहां देना चाहता हूँ। मैंने हर उस चीज़ का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया जो धार्मिक विचारों और संस्कारों के अंशों से संबंधित हो सकती है, और इस उद्देश्य के लिए मैंने मूल निवासियों से पूछताछ की। कई हफ्तों तक मेरी सारी खोज व्यर्थ रही। लोगों ने मुझे सब कुछ देखने दिया और स्वेच्छा से कोई भी जानकारी दी। मैं देशी दुभाषिया के हस्तक्षेप के बिना उनसे सीधे बात करने में सक्षम था, क्योंकि कई वृद्ध लोग स्वाहिली बोलते थे। सबसे पहले, यह सच है, वे आरक्षित थे, लेकिन फिर, जब हमारे बीच की बर्फ टूट गई, तो मेरा सबसे दोस्ताना स्वागत हुआ। वे धार्मिक रीति-रिवाजों के बारे में कुछ नहीं जानते थे। लेकिन मैंने हार नहीं मानी, और एक दिन, कई अनिर्णायक वार्तालापों में से एक के अंत में, एक बूढ़े व्यक्ति ने अप्रत्याशित रूप से कहा: "सुबह में, जब सूरज उगता है, हम झोपड़ियों को छोड़ देते हैं, अपनी हथेलियों पर थूकते हैं और उन्हें पकड़ते हैं। सूरज के लिए बाहर।" मैं यह देखने में सक्षम था कि यह समारोह कैसे होता है और इसका सटीक वर्णन करता है। वे अक्सर अपने मुंह के सामने रखे हाथों पर थूकते या फूंकते थे और फिर अपनी हथेलियों को सूरज की ओर मोड़ लेते

थे। मैंने पूछा कि इसका क्या मतलब है, उन्होंने ऐसा क्यों किया, उन्होंने अपने हाथों पर क्यों थूका या फूँका। परन्तु सफलता नहीं मिली। "यह हमेशा इस तरह से किया जाता है," उन्होंने कहा। कोई स्पष्टीकरण प्राप्त करना असंभव था, और मेरे लिए सब कुछ बिल्कुल स्पष्ट हो गया: वास्तव में, वे केवल यह जानते हैं कि वे *यह कर रहे हैं*, लेकिन यह नहीं कि वे क्या कर रहे हैं। उन्हें इस कार्रवाई का कोई मतलब नहीं दिखता। वे भी इसी भाव से अमावस्या का अभिवादन करते हैं।

आइए अब मान लें कि मैं, एक पूर्ण अजनबी, इस शहर (अर्थात् वह शहर जिसमें वास्तविक व्याख्यान दिया गया था। - अनुवाद।) यहां प्रचलित रीति-रिवाजों का अध्ययन करने के उद्देश्य से आया था। सबसे पहले, मैं ज्यूरिख पर्वत पर दचा से ज्यादा दूर नहीं बसता और उनके निवासियों के साथ संपर्क स्थापित करता हूँ। और इसलिए मैं हेर मुलर और हेर मेयर से पूछता हूँ: "कृपया मुझे अपने धार्मिक रीति-रिवाजों के बारे में कुछ बताएं।" दोनों सज्जन हैरान हैं। वे कभी भी चर्च नहीं जाते हैं, ऐसे रीति-रिवाजों के बारे में कुछ नहीं जानते हैं, और स्पष्ट रूप से इनकार करते हैं कि उन्होंने उनमें भाग लिया था। लेकिन वसंत यहाँ है, और ईस्टर आ रहा है। एक सुबह मैंने देखा कि हेर मुलर एक असामान्य गतिविधि में लगा हुआ है: वह एक व्यवसायिक हवा के साथ बगीचे के चारों ओर दौड़ता है, चित्रित अंडे छिपाता है, और इसके अलावा, अजीबोगरीब खरगोश की मूर्तियाँ स्थापित करता है। वह पुलिसकर्मी के साथ पकड़ा गया है। "आप इस बेहद दिलचस्प समारोह के बारे में चुप क्यों रहे?" मैं उससे पूछता हूँ। "कौन सा समारोह? यह बिल्कुल वैसा ही है। वे हमेशा ईस्टर पर ऐसा करते हैं।" "लेकिन इन अंडों का क्या मतलब है, आप इन्हें क्यों छुपाते हैं, इन मूर्तियों का क्या मतलब है?" हेर मुलर निराश है। यह वह स्वयं नहीं जानता; वह क्रिसमस ट्री का बहुत कम अर्थ जानता है, लेकिन वह इसे समान रूप से सजाता है, और इसमें वह पूरी तरह से आदिम लोगों के समान है। शायद आदिम मनुष्य के दूर के पूर्वज बेहतर जानते थे कि वे क्या कर रहे हैं? लेकिन यह बिल्कुल अविश्वसनीय है। पुरातन आदमी बस करता है, और केवल सभ्य आदमी ही जानता है कि वह क्या कर रहा है,

लेकिन एल्गोनिया के लोगों के समारोह का क्या मतलब है, जिसके बारे में मैंने अभी बताया है? जाहिर है, यह सूर्य को एक उपहार भेंट का प्रतिनिधित्व करता है, जो कि इसके उदय के समय, और उसके बाद ही, लोगों के लिए "मुंगु", यानी दिव्य मन है।, उपचार, जादुई और महत्वपूर्ण शक्ति। यदि यह सांस है, तो उपहार, क्रमशः त्सोहो, अरबी रूह में, हिब्रू रूच में, ग्रीक प्यूमा में - हवा और आत्मा है। यानी इस क्रिया का अर्थ है: मैं अपनी जीवित आत्मा को ईश्वर को सौंपता हूँ। यह क्रिया में व्यक्त की गई एक शब्दहीन प्रार्थना है, जो इस तरह भी लग सकती है: "भगवान, मैं अपनी आत्मा को आपके हाथों में सौंपता हूँ।"

क्या यह यूं ही होता है, या ऐसा कोई विचार कुछ समय पहले ही सोचा जा चुका है?
इसी अनसुलझी समस्या पर मैं अपनी रिपोर्ट समाप्त करना चाहता हूं।

जीवन सीमा

के आयु स्तरों की समस्याओं के बारे में बात करना एक असाधारण कठिन कार्य है, क्योंकि इसमें पालने से लेकर कब्र तक संपूर्ण आध्यात्मिक जीवन के चित्र के चित्रण से कम कुछ नहीं है। रिपोर्ट के ढांचे के भीतर, हम ऐसे कार्य की सभी आवश्यकताओं को केवल सामान्य शब्दों में ही पूरा कर सकते हैं। बेशक, हम यहां विभिन्न आयु स्तरों के सामान्य मनोविज्ञान का विवरण देने के बारे में बात नहीं कर रहे हैं, लेकिन हमें "समस्याओं", कठिनाइयों, संदेहों, अस्पष्टताओं से निपटना चाहिए - एक शब्द में, ऐसे प्रश्न जिनके कई उत्तर एक साथ दिए जा सकते हैं, और उनमें से कोई भी पर्याप्त रूप से-विश्वसनीय और निर्विवाद नहीं होगा। इसलिए प्रश्नों की चर्चा करते समय हमें बहुत कुछ अविष्कार करना होगा; इससे भी बदतर, कभी-कभी हम अटकलों पर तर्क करने के लिए मजबूर हो जाते हैं, और यहां तक कि विश्वास पर कुछ भी लेते हैं।

यदि मानसिक जीवन में केवल दान शामिल होते हैं - जो संयोगवश, अभी भी आदिम अवस्था में होता है - तो हम ठोस अनुभववाद से संतुष्ट हो सकते हैं। हालाँकि, एक सुसंस्कृत व्यक्ति का आध्यात्मिक जीवन समस्याओं से भरा होता है, जिसके बिना यह आमतौर पर अकल्पनीय भी होता है। हमारी मानसिक प्रक्रियाएं ज्यादातर तर्क, संदेह, प्रयोग हैं - वे सभी चीजें जिनसे आदिम मनुष्य की अचेतन, सहज आत्मा पूरी तरह से अनजान लगती है। हम समस्याओं के अस्तित्व का श्रेय चेतना के विकास को, संस्कृति के दानन उपहार को देते हैं। वृत्ति से पीछे हटना और स्वयं का विरोध करना चेतना का निर्माण करता है। वृत्ति प्रकृति का प्रतिनिधित्व करती है और प्रकृति को तरसती है। दूसरी ओर, चेतना केवल संस्कृति या उसके निषेध की इच्छा कर सकती है। और जहां कहीं, रूसो की उदासी से अभिभूत होकर, वह वापस प्रकृति की ओर प्रयास करता है, वह इसे "खेती" करता है। चूंकि हम अभी भी प्रकृति हैं, हम अचेतन हैं और समस्यारहित प्रवृत्ति की सुरक्षा में रहते हैं। हमारे अंदर जो कुछ भी प्रकृति है, वह समस्या से डरती है, क्योंकि इसका नाम संदेह है, और जहां भी संदेह होता है, वहां हर जगह अनिश्चितता और विभिन्न रास्तों की संभावना होती है। लेकिन जहां अलग-अलग रास्ते संभव लगते हैं, वहां हम वृत्ति से विश्वसनीय मार्गदर्शन से वंचित रह जाते हैं और हमें संदेह होता है। आखिरकार, यहां हमारी चेतना को अब वही करना चाहिए जो प्रकृति ने हमेशा अपने बच्चों के लिए किया है, अर्थात् आत्मविश्वास से, स्पष्ट रूप से और बिना किसी संदेह के निर्णय लेने के लिए। और यहाँ हम सभी लोगों में निहित भय से जकड़े हुए हैं कि चेतना, हमारा प्रोमेथियन युद्ध, आखिरकार, प्रकृति के लिए असमान है।

यह समस्या हमें अकेलेपन की ओर ले जाती है, जहां हम अनाथ और मातृहीन हैं और प्रकृति द्वारा भी त्याग दिए गए हैं, जहां हमें चेतना की ओर मुड़ने के लिए मजबूर

किया जाता है, और कुछ नहीं बल्कि यह। हम अन्यथा नहीं कर सकते हैं, और जो स्वाभाविक रूप से किया गया था उसके स्थान पर हमें एक सचेत निर्णय लेना चाहिए। इस प्रकार, किसी भी समस्या का अर्थ है चेतना के विस्तार की संभावना, लेकिन साथ ही सभी अचेतन बचकानापन और स्वाभाविकता को अलविदा कहने की आवश्यकता है। यह आवश्यकता इतनी असीम रूप से महत्वपूर्ण मानसिक कारक है कि यह ईसाई धर्म की शिक्षा के सबसे महत्वपूर्ण प्रतीकात्मक वस्तुओं में से एक है, अर्थात्, एक विशेष रूप से प्राकृतिक व्यक्ति का बलिदान, एक बेहोश, प्राकृतिक जीवित प्राणी, जिसकी त्रासदी पहले ही शुरू हो चुकी है उस समय जब उसने स्वर्ग में एक सेब उठाया। . चेतना का निर्माण , जैसा कि यह था, उस बाइबिल के पाप में गिरने का प्रतिशोध है। और कोई भी समस्या जिसके लिए हमें उच्च स्तर की चेतना की आवश्यकता होती है और इस प्रकार हम से बचकानी बेहोशी का स्वर्ग हमें वास्तव में ऐसा लगता है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी समस्याओं को अनदेखा करता है; जहाँ तक संभव हो उनका उल्लेख नहीं किया गया है या इससे भी बेहतर, उनके अस्तित्व को नकारा गया है। मैं चाहता हूँ कि जीवन सरल, विश्वसनीय और सम हो, और इसलिए समस्याएं वर्जित हैं। मुझे निश्चितता चाहिए, संदेह नहीं, मुझे परिणाम चाहिए, प्रयोग नहीं; हालांकि, यह इस तथ्य की अनदेखी करता है कि केवल संदेह के माध्यम से ही निश्चितता प्राप्त की जा सकती है और केवल प्रयोग के माध्यम से ही परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं। तो समस्याओं का कृत्रिम इनकार आत्मविश्वास नहीं देता; स्पष्टता और निश्चितता प्राप्त करने के लिए, एक व्यापक और उच्च चेतना की आवश्यकता है।

अपने विषय का सार समझाने के लिए मुझे इतने लंबे परिचय की आवश्यकता थी। जब समस्याओं की बात आती है, तो हम सहज रूप से अंधेरे और अज्ञात से गुजरने से इनकार कर देते हैं। हम केवल असंदिग्ध परिणामों के बारे में सुनना चाहते हैं, और ऐसा करने में हम पूरी तरह से भूल जाते हैं कि ये परिणाम केवल तभी प्रकट हो सकते हैं जब हम अंधेरे से गुजरते हैं। लेकिन इससे गुजरने में सक्षम होने के लिए, हमें ज्ञानोदय की उन सभी संभावनाओं का आह्वान करना चाहिए जो हमारी चेतना में हैं; जैसा कि मैंने कहा, हम अटकलों पर तर्क करने के लिए भी मजबूर हैं। आखिरकार, आध्यात्मिक समस्याओं पर चर्चा करते समय, हमें लगातार उन मूलभूत प्रश्नों का सामना करना पड़ता है जिन्हें सबसे विविध संकायों का क्षेत्र माना जाता है। हम धर्मशास्त्री को किसी दार्शनिक से कम नहीं, और चिकित्सक को शिक्षक से कम नहीं चिढ़ाते और क्रोधित करते हैं; हम जीवविज्ञानी और इतिहासकार की गतिविधि के क्षेत्र में भी घुसपैठ करते हैं। ये अपव्यय हमारे विवेक से नहीं, बल्कि इस तथ्य से उत्पन्न होते हैं कि मानव आत्मा कारकों का एक असाधारण मिश्रण है जो एक ही समय में सबसे विविध विज्ञानों के विषय हैं। क्योंकि विज्ञानों का जन्म स्वयं मनुष्य और उसके विशिष्ट गुणों के कारण हुआ है। वे उसकी आत्मा के लक्षण हैं।

तो अगर हम अपरिहार्य प्रश्न उठाते हैं; "क्यों , जानवरों की दुनिया के विपरीत (और

यह अंतर बिल्कुल स्पष्ट है), क्या किसी व्यक्ति को कोई समस्या है? "- तब हम अपने आप को विचारों की एक अत्यंत उलझी हुई उलझन में पाते हैं, जो सैकड़ों सदियों से कई हजारों बहुत तेज दिमागों द्वारा बुनी गई है। इस कार्य में, मैं सिस्फीन श्रम में संलग्न नहीं होऊंगा, बल्कि इस मूलभूत मुद्दे के समाधान में अपना योगदान देने का प्रयास करूंगा।

चेतना के बिना कोई समस्या नहीं है। इसलिए, हमें प्रश्न को अलग तरह से रखना चाहिए, अर्थात्: ऐसा कैसे हुआ कि एक व्यक्ति बिल्कुल सचेत हो गया? मुझे नहीं पता कि यह कैसे हुआ, क्योंकि जब पहले लोग होश में आए, तो मैं दुनिया में नहीं था। लेकिन आज भी हम छोटे बच्चों में चेतना के गठन को देख सकते हैं। सभी माता-पिता, यदि वे चौकस हैं, यह देख सकते हैं। कड़ाई से बोलते हुए, हम निम्नलिखित देख सकते हैं: जब कोई बच्चा किसी को या किसी चीज़ को पहचानता है, तो हमें लगता है कि उसके पास होश है। इसलिए, शायद, स्वर्ग में भी *ज्ञान का एक वृक्ष था*, जो ऐसे घातक फल लाता था।

लेकिन मान्यता क्या है? हम उस घटना में मान्यता की बात करते हैं, उदाहरण के लिए, हम एक नई धारणा को पहले से मौजूद कनेक्शन में विभाजित करने का प्रबंधन करते हैं, और इस तरह से न केवल धारणा, बल्कि एक ही समय में पहले से मौजूद सामग्री के कुछ हिस्सों को चेतना में दर्शाया जाएगा (नतीजतन, मान्यता चेतना में प्रतिनिधित्व मानसिक सामग्री के अंतर्संबंध पर आधारित है । प्रमाणीकरण ..)। हम उस सामग्री को नहीं पहचान सकते जिसका कोई संबंध नहीं है, और हम इसके बारे में जागरूक नहीं हो सकते हैं यदि हमारी चेतना अभी भी इस प्रारंभिक चरण में है। इस प्रकार, हमारे अवलोकन और अनुभूति के लिए सुलभ चेतना का पहला रूप दो या दो से अधिक मानसिक सामग्री का सरल संबंध है। इसलिए, इस स्तर पर, चेतना अभी भी संबंधों की कई श्रृंखलाओं के प्रतिनिधित्व के साथ जुड़ी हुई है, और, परिणामस्वरूप, केवल छिटपुट है, और भविष्य में इसकी सामग्री को अब याद नहीं किया जाता है। वास्तव में, जीवन के पहले वर्षों के लिए कोई स्थायी स्मृति नहीं होती है। चरम मामले में, यहां चेतना के *द्वीप* हैं, जैसे प्रकाश की अलग किरणें या रात के मृतकों में प्रकाशित वस्तुएं। लेकिन यादों के ये द्वीप अब सबसे पुराने नहीं हैं, जो केवल संपत्ति के साथ संबंधों के प्रतिनिधित्व में मौजूद हैं, बल्कि सामग्री की एक नई, बहुत महत्वपूर्ण श्रृंखला शामिल है, अर्थात् सामग्री जो स्वयं विषय का प्रतिनिधित्व करती है, इसलिए बोलने के लिए, उसका "मैं" । सबसे पहले, सामग्री की यह श्रृंखला, पहले की तरह, केवल प्रतिनिधित्व में मौजूद है, जिसके परिणामस्वरूप बच्चा पहले लगातार तीसरे व्यक्ति में खुद की बात करता है। और केवल बाद में, जब "I" श्रृंखला, या तथाकथित "I" -कॉम्प्लेक्स, प्राप्त करता है, शायद व्यायाम के परिणामस्वरूप, अपनी स्वयं की ऊर्जा, विषय की भावना, या "I" की भावना करता है।, के जैसा लगना। शायद यह उस समय होता है जब बच्चा पहले व्यक्ति में अपने बारे में बात करना शुरू कर देता है। जाहिर है, इस स्तर पर, *स्मृति की निरंतरता उत्पन्न होती है*,

अर्थात्, वास्तव में, "मैं" -स्मृतियों की निरंतरता।

बच्चे की चेतना की अवस्था अभी तक समस्याओं को नहीं जानती है, क्योंकि अभी कुछ भी विषय पर निर्भर नहीं करता है, जबकि बच्चा स्वयं पूरी तरह से अपने माता-पिता पर निर्भर करता है। ऐसा लगता है कि वह अभी तक पैदा नहीं हुआ था और अभी भी अपने माता-पिता के आध्यात्मिक वातावरण में रहता है। आध्यात्मिक जन्म और साथ ही माता-पिता से स्वयं का एक सचेत अलगाव आमतौर पर युवावस्था में कामुकता के आक्रमण के साथ ही होता है। इस शारीरिक क्रांति से जुड़ी एक आध्यात्मिक क्रांति भी है। शारीरिक परिवर्तनों के परिणामस्वरूप, "मैं" इस हद तक फैल जाता है कि यह अक्सर किसी को अपने आप को पूरी तरह से अनुपातहीन रूप से मानने के लिए मजबूर करता है। इसलिए नाम "संक्रमणकालीन युग" (जर्मन अभिव्यक्ति फ्लेगेलजाहे (संक्रमणकालीन युग) जब तक कि "अपमान, बुरे व्यवहार, अशिष्टता के वर्षों" के रूप में अनुवादित नहीं किया जाता है। अनुवाद)

इस युग तक, व्यक्ति का मनोविज्ञान अनिवार्य रूप से सहज है और इसलिए समस्यारहित है। यहां तक कि अगर व्यक्तिपरक ड्राइव बाहरी बाधाओं का सामना करते हैं, तो इस तरह के दमन से व्यक्ति को खुद के साथ संघर्ष करने का कारण नहीं बनता है। यह पूरी तरह से आत्मनिर्भर रहते हुए सीमाओं का पालन करता है या उन्हें दरकिनार करता है। वह अभी भी समस्या की स्थिति के आत्म-विभाजन को नहीं जानता है। यह स्थिति तभी उत्पन्न हो सकती है जब बाहरी बाधाएँ आंतरिक हो जाएँ, जब एक आकर्षण दूसरे के विरुद्ध हो जाए। मनोवैज्ञानिक रूप से, इसका अर्थ है: एक समस्याग्रस्त स्थिति, एक आंतरिक संघर्ष तब उत्पन्न होता है जब समान तीव्रता की सामग्री की दूसरी पंक्ति "I" पंक्ति के पास दिखाई देती है। अपने ऊर्जा मूल्य के संदर्भ में, इस दूसरी पंक्ति का "यांग-कॉम्प्लेक्स" के समान कार्यात्मक महत्व है; वह, इसलिए बोलने के लिए, दूसरा, दूसरा "मैं" है, जो कभी-कभी, पहले "मैं" से प्रमुख भूमिका भी ले सकता है। नतीजतन, स्वयं के साथ संघर्ष उत्पन्न होता है, एक समस्याग्रस्त स्थिति।

आइए अब जो कुछ कहा गया है उस पर एक संक्षिप्त नज़र डालें: चेतना का पहला रूप, साधारण भेदभाव, एक अराजक या अराजक स्थिति है। दूसरा चरण, जो कि गठित "I" -कॉम्प्लेक्स का चरण है, एक राजशाही या अद्वैत चरण है। तीसरे चरण में, चेतना का विकास फिर से किया जाता है, द्वैत की चेतना, द्वैतवादी स्थिति उत्पन्न होती है।

यहां हम सीधे अपने विषय पर आते हैं, यानी उम्र के स्तर की समस्या पर। सबसे पहले बात करते हैं युवा मुद्दों की। यह अवस्था यौवन के ठीक बाद से लगभग मध्य-जीवन तक फैली हुई है, जो कि पैंतीस और चालीस वर्ष की आयु के बीच कहीं है।

बेशक, यहां सवाल तुरंत उठता है: "मैं मानव जीवन के दूसरे चरण से क्यों शुरू करता हूं, जैसे कि बचपन के चरण में कोई समस्या नहीं है?" बच्चा, एक नियम के रूप में,

अभी भी समस्याओं से रहित है, लेकिन अपने जटिल मानस के साथ, वह स्वयं, शायद, माता-पिता, शिक्षकों और डॉक्टरों के लिए नंबर एक समस्या का प्रतिनिधित्व करता है। केवल एक वयस्क व्यक्ति ही खुद पर संदेह कर सकता है और इसलिए खुद के साथ मतभेद हो सकता है।

हम सभी इस आयु अवस्था की समस्याओं के मूल को जानते हैं। यहां भारी संख्या में लोग जीवन की उन मांगों के संपर्क में आते हैं जो अचानक बचपन के सपने को बाधित कर देती हैं। यदि व्यक्ति पर्याप्त रूप से तैयार है, तो पेशेवर जीवन में संक्रमण सुचारू रूप से आगे बढ़ सकता है। लेकिन अगर भ्रम है कि वास्तविकता के विपरीत है, तो समस्याएं तुरंत उत्पन्न होती हैं। कुछ पूर्वकल्पित धारणाओं के बिना कोई भी जीवन में प्रवेश नहीं करता है। कभी-कभी ये विचार झूठे होते हैं, जो किसी व्यक्ति द्वारा सामना की जाने वाली बाहरी परिस्थितियों के अनुरूप नहीं होते हैं। अक्सर यह बहुत अधिक उम्मीदों से जुड़ा होता है, बाहरी कठिनाइयों को कम करके आंका जाता है, या अनुचित आशावाद या नकारात्मकता के साथ जुड़ा होता है। कोई उन सभी भ्रांतियों की एक लंबी सूची बना सकता है जो पहली सचेत समस्याओं का कारण हैं।

हालांकि, समस्याएं न केवल बाहरी परिस्थितियों के साथ व्यक्तिपरक विचारों के टकराव को जन्म देती हैं, बल्कि, शायद अक्सर, आंतरिक आध्यात्मिक कठिनाइयों को भी; वे तब भी मौजूद होते हैं जब बाहरी रूप से सब कुछ सुचारू रूप से नहीं चलता है। विशेष रूप से अक्सर वे यौन इच्छा के कारण मानसिक संतुलन की गड़बड़ी और, शायद अक्सर, हीनता की भावना होती है, जो अत्यधिक संवेदनशीलता का कारण हो सकती है। ये-आंतरिक संघर्ष तब भी मौजूद हो सकते हैं जब बाहरी परिस्थितियों में अनुकूलन बिना किसी कठिनाई के हासिल किया जाता है। कभी-कभी ऐसा भी लगता है कि अपने आस-पास के वातावरण के साथ एक कठिन संघर्ष में प्रवेश करने के लिए मजबूर युवा लोगों को आंतरिक समस्याओं का अनुभव नहीं होता है, जबकि अन्य जो, किसी कारण से, समायोजन आसानी से आते हैं, या तो यौन समस्याएं या हीनता की भावनाओं से जुड़े संघर्ष पाते हैं। .

समस्याओं वाले व्यक्ति अक्सर विक्षिप्त होते हैं , लेकिन न्यूरोसिस के साथ समस्याओं की उपस्थिति को भ्रमित करना एक गंभीर गलतफहमी होगी, क्योंकि उनके बीच एक आवश्यक अंतर है: एक विक्षिप्त बीमार है क्योंकि वह अपनी समस्या से अवगत नहीं है, और एक व्यक्ति जो एक सचेत समस्या है, बीमार हुए बिना, इससे ग्रस्त है।

यदि आप कम उम्र की व्यक्तिगत समस्याओं की लगभग अटूट विविधता से-सामान्य और सबसे महत्वपूर्ण बात निकालने की कोशिश करते हैं, तो आपको एक निश्चित विशेषता दिखाई देती है जो इस चरण की सभी समस्याओं में निहित प्रतीत होती है: हम बात कर रहे हैं अटक जाना चेतना का बचकाना स्तर, एक डिग्री या किसी अन्य के लिए,

हमारे और हमारे आस-पास अभिनय के प्रतिरोध के बारे में, भाग्य की ताकतों के लिए जो हमें दुनिया में खींचने की कोशिश कर रहे हैं। हममें कुछ ऐसा है जो बच्चा बने रहना चाहता है, पूरी तरह से बेहोश होना, या कम से कम केवल अपने "मैं" के बारे में जागरूक होना और हर चीज को विदेशी को अस्वीकार करना, चरम मामले में, बाकी सब कुछ हमारी इच्छा के अधीन करना। मैं कुछ नहीं करना चाहूंगा, और यदि आप कुछ करते हैं, तो अपनी खुशी के लिए या अपनी शक्ति का दावा करने के लिए। यह पदार्थ की जड़ता की तरह कुछ प्रकट करता है, जो बदले में पिछले चरण में फंसने में व्यक्त किया जाता है, जिसकी चेतना द्वैतवादी चरण की चेतना से कम, संकीर्ण, अधिक स्वार्थी है, जहां व्यक्ति को आवश्यकता का सामना करना पड़ता है दूसरे, विदेशी को अपने जीवन के रूप में पहचानें और स्वीकार करें। और "मैं भी हूँ" के रूप में।

प्रतिरोध को जीवन के क्षेत्र के विस्तार के खिलाफ निर्देशित किया जाता है, जो इस चरण की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। हालाँकि, यह विस्तार, जीवन का यह "डायस्टोल", अगर मैं गोएथे की अभिव्यक्ति का उपयोग कर सकता हूँ, तो इससे बहुत पहले शुरू हुआ था। यह बच्चे के लिए उसके जन्म के साथ ही शुरू होता है, जब वह सबसे सख्त सीमा - माँ के गर्भ से निकलता है, और उस क्षण से यह लगातार बढ़ता रहता है जब तक कि यह एक समस्याग्रस्त स्थिति में अपने चरम पर नहीं पहुंच जाता, जब व्यक्ति बस अपना बचाव करना शुरू कर देता है यह से।

उसका क्या होगा यदि वह बस किसी और में बदल गया, दूसरे में, जो "मैं" का भी प्रतिनिधित्व करता है, और उसका पूर्व "मैं" बस अतीत में विलीन हो जाएगा? यह रास्ता काफी संभव प्रतीत होता है। क्या यह धार्मिक शिक्षा का उद्देश्य नहीं है, आदम के प्राचीन इतिहास से लेकर आदिम लोगों के आध्यात्मिक नवीनीकरण के धार्मिक संस्कारों तक, मनुष्य को उस चीज़ में बदलना जो पहले नहीं थी, कुछ नए में, ताकि पुराने को मरने दिया जा सके ?

मनोविज्ञान हमें सिखाता है कि आत्मा में, एक निश्चित अर्थ में, कुछ भी पुराना नहीं है, कुछ भी नहीं है जो वास्तव में मर सकता है; यहाँ तक कि पौलुस भी अपने पीछे "संदेह का कीड़ा" छोड़ गया। जो नए, परदेशी और अतीत की ओर पीछे हट जाता है, के खिलाफ खुद का बचाव करता है, वह उसी विक्षिप्त अवस्था में है, जो खुद को नए के साथ पहचानकर अतीत से भाग जाता है। उनके बीच एकमात्र अंतर यह है कि व्यक्ति अतीत को खुद से अलग कर लेता है। और दूसरा भविष्य है। मूल रूप से, दोनों एक ही काम करते हैं: वे अपनी चेतना की संकीर्णता को विरोधों के विरोध के माध्यम से तोड़ने के बजाय रखते हैं और इस तरह चेतना की एक व्यापक और उच्च स्थिति प्राप्त करते हैं।

जीवन के इस चरण में यह सब होता तो आदर्श होता। ऐसा लगता है कि प्रकृति किसी भी तरह से उच्च चेतना की स्थिति के प्रति उदासीन नहीं है - बिल्कुल विपरीत;

समाज भी इस तरह की मानसिक चालों को महत्व नहीं देता है, और फिर भी यह हमेशा परिणाम को प्रोत्साहित करता है, न कि व्यक्ति को, पहली जगह में; उत्तरार्द्ध आमतौर पर एक अतिरिक्त के रूप में होता है। ये तथ्य हमें एक निश्चित निर्णय पर आने के लिए मजबूर करते हैं, अर्थात्, कुछ क्षमताओं के उपलब्ध भेदभाव को सीमित करने के लिए, जो एक सामाजिक रूप से सक्षम व्यक्ति का सही सार है।

उपलब्धियां, उपयोगिता, आदि। ऐसे आदर्श हैं जो समस्याओं की अराजकता से बाहर निकलने का रास्ता दिखाते हैं। वे हमारे भौतिक अस्तित्व के विस्तार और मजबूती के लिए, दुनिया में हमारी जड़ें जमाने के लिए सितारों का मार्गदर्शन कर रहे हैं, लेकिन मानव चेतना के आगे विकास के लिए नहीं, जिसे संस्कृति कहा जाता है। कम उम्र के लिए, यह निर्णय काफी सामान्य है, और किसी भी मामले में, केवल अपनी समस्याओं पर ही अटके रहने से बेहतर है।

अतीत में जो दिया गया है उसे भविष्य की संभावनाओं और मांगों के अनुकूल बनाकर समस्या का समाधान किया जाता है। एक व्यक्ति जो उपलब्ध है, उसके द्वारा सीमित है, जिसका मनोवैज्ञानिक अर्थ है अन्य सभी आध्यात्मिक संभावनाओं की अस्वीकृति। इस प्रकार, एक मूल्यवान अतीत का एक हिस्सा खो देता है, जबकि दूसरा समान रूप से मूल्यवान भविष्य का एक हिस्सा खो देता है। हम सभी शायद अपने कुछ दोस्तों और सहपाठियों को याद करते हैं जिन्होंने एक समय में आशाजनक वादे किए थे, लेकिन जब हम उनसे कुछ वर्षों के बाद फिर से मिलते हैं, तो हम उन्हें पैटर्न में कठोर और सीमित पाते हैं। ये तथ्य हैं।

हमेशा के लिए हल नहीं होती हैं। अगर एक दिन वे हमें अनुमति देते हैं, तो यह केवल हमारे लिए नुकसान ही होगा। जाहिर है, ऐसी समस्याओं के अस्तित्व का अर्थ और उद्देश्य उनके समाधान में नहीं है, बल्कि इस तथ्य में है कि हम लगातार उन पर काम कर रहे हैं। यह ही हमें नीरसता और अस्थिभंग से बचाता है। इसी तरह, कम उम्र की समस्याओं को हल करने के लिए अपने आप को जो सुलभ है उसे सीमित करना केवल अस्थायी है और वास्तव में, अल्पकालिक है। किसी भी मामले में, एक सामाजिक प्राणी बनना और अपनी मूल प्रकृति को बदलना ताकि वह कमोबेश इस तरह के अस्तित्व के अनुरूप हो, एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इस आंतरिक और बाहरी संघर्ष की तुलना "मैं" के अस्तित्व के लिए बचपन के संघर्ष से की जा सकती है। सच है, यह संघर्ष हमारे लिए ज्यादातर अंधेरे में आगे बढ़ता है, लेकिन भविष्य में बच्चों के भ्रम, विचार, अहंकारी आदतों आदि को जिस दृढ़ता से बनाए रखा जाता है, उससे हम अंदाजा लगा सकते हैं कि उन पर कितना प्रयास किया गया। और वही अब आदर्शों, विश्वासों, मार्गदर्शक विचारों, दृष्टिकोणों आदि के साथ हो रहा है, जो हमें कम उम्र में जीवन में लाते हैं, जिसके लिए हम लड़ते हैं, पीड़ित होते हैं और जीतते हैं: वे हमारे सार के साथ बढ़ते हैं, हम, जाहिरा तौर पर, हम उनमें बदल जाते

हैं और इसलिए उन्हें विज्ञापन जारी रखते हैं लिबिटम (इच्छा पर; अपने विवेक पर: जैसा आप चाहें या जितना चाहें उतना (अव्य। - अनुवाद।) उसी स्वाभाविकता के साथ जिसके साथ एक जवान आदमी नोलेस करता है वोलेस दुनिया या खुद के संबंध में अपने "मैं" को उजागर करता है।

जीवन का मध्य जितना निकट होता है और जितना अधिक व्यक्ति अपने व्यक्तिगत दृष्टिकोण और सामाजिक स्थिति में खुद को स्थापित करने में कामयाब होता है, उतना ही मजबूत लगता है कि उसे जीवन की सही रेखा, सही आदर्श और व्यवहार के सिद्धांत मिल गए हैं। इसलिए भविष्य में यह विचार उत्पन्न होता है कि वे अडिग हैं, और उनसे सदा के लिए चिपके रहने की इच्छा होती है। एक ही समय में, हालांकि, आवश्यक तथ्य यह है कि सामाजिक लक्ष्य की पुष्टि व्यक्ति की अखंडता की कीमत पर होती है, पर ध्यान नहीं दिया जाता है। बहुत, बहुत अधिक - एक ऐसा जीवन जो अलग तरीके से जीया जा सकता था - धूल भरी यादों की कोठरी में रहता है, कभी-कभी ग्रे राख के नीचे लाल-गर्म कोयले भी बन जाता है।

आंकड़े चालीस वर्ष की आयु के आसपास के पुरुषों में अवसाद की आवृत्ति में वृद्धि का संकेत देते हैं। महिलाओं में, विक्षिप्त कठिनाइयाँ, एक नियम के रूप में, कुछ समय पहले दिखाई देती हैं। जीवन के इस चरण में, यानी पैंतीस से चालीस वर्षों के बीच, मानव मानस में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन तैयार किया जा रहा है। सबसे पहले, हालांकि, यह एक सचेत और स्पष्ट परिवर्तन नहीं है - हम यहां परिवर्तन के अप्रत्यक्ष संकेतों के बारे में बात कर रहे हैं, जाहिरा तौर पर अचेतन में उत्पन्न होते हैं। कभी-कभी यह चरित्र में एक क्रमिक परिवर्तन होता है, एक अन्य मामले में, गुण प्रकट होते हैं जो बचपन से नहीं थे, या पुराने झुकाव और रुचियां फीकी पड़ने लगती हैं, और नए उनकी जगह लेते हैं, या - जो बहुत बार होता है - पुराने सख्त होने लगते हैं और कठोर हो जाते हैं। सिद्धांत और विश्वास, विशेष रूप से नैतिक, जो धीरे-धीरे, पचास वर्ष की आयु तक, असहिष्णुता और कट्टरता में विकसित हो सकते हैं - जैसे कि कुछ इन सिद्धांतों के अस्तित्व के लिए खतरा है और इसलिए उन्हें और भी अधिक जोर देने की आवश्यकता है।

युवावस्था की शराब हमेशा परिपक्व उम्र में पारदर्शी नहीं होती है, कभी-कभी बादल बन जाती है। ये सभी घटनाएं उन लोगों में सबसे अधिक ध्यान देने योग्य हैं जो कुछ हद तक एकतरफा हैं। कभी पहले आते हैं, कभी बाद में। अक्सर, मुझे ऐसा लगता है, उनकी शुरुआत में देरी इस तथ्य से होती है कि विचाराधीन व्यक्ति के माता-पिता अभी भी जीवित हैं। फिर, जैसा कि था, यौवन चरण बहुत अधिक खिंच गया है। मैंने इसे मुख्य रूप से उन पुरुषों में देखा है जिनके पिता लंबे समय से जीवित हैं। उनकी मृत्यु ने तब एक क्षणभंगुर परिपक्वता की तरह कुछ किया और अभिनय किया, इसलिए बोलने के लिए, विनाशकारी।

मैं एक धर्मनिष्ठ व्यक्ति को जानता हूँ जिसने एक चर्च पैरिश का नेतृत्व किया। लगभग चालीस वर्ष की आयु में उनमें यह धर्मपरायणता असहनीय नैतिक और धार्मिक असहिष्णुता में विकसित हो गई। साथ ही उनका चरित्र और भी असहनीय होता गया। अंत में, वह एक उदास दिखने वाले चर्च स्तंभ से थोड़ा अधिक बन गया। सो वह पचपन वर्ष की आयु तक जीवित रहा, और एक दिन अचानक आधी रात को बिस्तर से उठा और अपनी पत्नी से कहा: " अब मैं सब कुछ समझता हूँ। मैं एक वास्तविक धूर्त हूँ। "यह अंतर्दृष्टि व्यावहारिक परिणामों के बिना नहीं रही। उसने अपने जीवन के अंतिम वर्ष अपनी खुशी में बिताए, जबकि अपना अधिकांश भाग्य खर्च किया। जाहिर है, यह आदमी इतना असंगत नहीं है, दोनों चरम सीमाओं में सक्षम है!

के बहुत ही सामान्य विक्षिप्त विकारों में कुछ समान है: वे युवा अवस्था के मनोविज्ञान को वयस्कता की दहलीज पर ले जाने का प्रयास करते हैं। उन बुजुर्ग सज्जनों को कौन नहीं जानता, जो आशाहीन परोपकार में डूबे हुए हैं, जो बार-बार लंबे समय से भूले हुए छात्र वर्षों को दिन के उजाले में खींचते हैं और केवल अतीत में लौटकर, अपने वीर होमेरिक समय में, उन्हें जलाने में सक्षम हैं जीवन की लौ? हालांकि, एक नियम के रूप में, उनके पास एक फायदा है जिसे कम करके नहीं आंका जाना चाहिए - वे विक्षिप्त नहीं हैं, लेकिन अधिकांश भाग के लिए सिर्फ उबाऊ और रूढ़िबद्ध लोग हैं।

बल्कि, विक्षिप्त वह है जो वर्तमान में कभी वह हासिल नहीं कर पाया जो वह चाहता है, और जो अतीत में आनन्दित नहीं हो सकता है। जिस तरह पहले वह बचपन से छुटकारा नहीं पा पाता था, उसी तरह अब वह यौवन के दौर से भी छुटकारा नहीं पा रहा है। शायद, वह खुद को उम्र बढ़ने के उदास विचारों में नहीं पाता है और इसलिए वह पीछे मुड़कर देखता है, क्योंकि आगे देखना उसके लिए असहनीय है। जैसे शिशु संसार और जीवन की अनिश्चितता से डरता है, वैसे ही एक वयस्क जीवन के दूसरे भाग से दूर भागता है, जैसे कि अज्ञात कठिनाइयां उसका इंतजार कर रही हों, या मानो यह उसके लिए बलिदान और नुकसान से भरा हो, जो वह उसके साथ मेल-मिलाप नहीं कर सकता, या मानो उसका पिछला जीवन उसे इतना सुंदर और इतना प्रिय था कि वह उसके बिना नहीं रह सकता था।

लेकिन शायद यह सिर्फ मौत का डर है? मेरे लिए, हालांकि, यह असंभव लगता है, क्योंकि, एक नियम के रूप में, मृत्यु अभी भी दूर है, और इसलिए कुछ हद तक अमूर्त है। अनुभव से पता चलता है कि इस संक्रमणकालीन अवधि की सभी कठिनाइयों का आधार और कारण आत्मा में गहरा, आश्चर्यजनक परिवर्तन है। इसकी विशेषता के लिए, मैं तुलना के रूप में सूर्य की दैनिक गति देना चाहूंगा। यह सूर्य को संदर्भित करता है, मानव भावना से अनुप्राणित और क्षणिक मानवीय चेतना से संपन्न। प्रातःकाल वह अचेतन के रात्रि समुद्र से निकलकर विस्तृत, रंग-बिरंगे संसार को आलोकित करता है और आकाश में जितना

ऊँचा उठता है, उतनी ही दूर तक अपनी किरणें फैलाता है। उदय से जुड़े अपने प्रभाव क्षेत्र के इस विस्तार में, सूर्य अपने उद्देश्य को देखेगा और अपने उच्चतम लक्ष्य को जितना संभव हो उतना ऊँचा उठना देखेगा और इस तरह जितना संभव हो सके अपनी कृपा फैलाएगा। इस दृढ़ विश्वास के साथ, सूर्य एक अप्रत्याशित दोपहर की ऊँचाई तक पहुंच जाता है - अप्रत्याशित क्योंकि, अपने एक समय के व्यक्तिगत अस्तित्व के कारण, यह अपने स्वयं के चरमोत्कर्ष को पहले से नहीं जान सकता था। सूर्यास्त बारह बजे शुरू होता है। यह सुबह के सभी मूल्यों और आदर्शों के उलट का प्रतिनिधित्व करता है। सूर्य असंगत हो जाता है। ऐसा लगता है कि इसकी किरणों को हटा दिया गया है। पूर्ण विलुप्त होने तक प्रकाश और गर्मी कम हो जाती है।

कोई भी तुलना लंगड़ा है। लेकिन यह तुलना लंगड़ी है, कम से कम दूसरों की तुलना में अधिक नहीं। एक फ्रांसीसी अभिव्यक्ति निंदक रूप से और एक ही समय में विनम्रतापूर्वक इस तुलना के अर्थ को सामान्य बनाती है: " सी " Jeunesse सवैत , हॉ विएलेसे pouvait "(यदि युवा हो सकता है, यदि वृद्धावस्था (फ्रेंच) हो सकती है। - अनुवाद।)।

सौभाग्य से, हम लोग हैं, सूरज नहीं, अन्यथा हमारे सांस्कृतिक मूल्य संकट में पड़ जाते। लेकिन हम में सूरज से कुछ है; और सुबह, और वसंत, और शाम, और शरद ऋतु केवल भावुक बकवास नहीं हैं , बल्कि मनोवैज्ञानिक सत्य हैं, इसके अलावा, वे शारीरिक तथ्य भी हैं, क्योंकि दोपहर की उथल-पुथल हमारे भौतिक गुणों को भी बदल देती है। यह दक्षिणी लोगों की विशेष रूप से विशेषता है कि वृद्ध महिलाओं में कर्कश, कम आवाज, मूँछें, कठोर चेहरे की विशेषताएं और कई अन्य पुरुष विशेषताएं विकसित होती हैं। इसके विपरीत, पुरुष शारीरिक आदत महिला लक्षणों से कमजोर हो जाती है, जैसे शरीर में वसा में वृद्धि और चेहरे के हल्के भाव।

नृवंशविज्ञान साहित्य में एक भारतीय नेता और योद्धा के बारे में एक दिलचस्प रिपोर्ट है, जिसे अपने जीवन के मध्य में एक सपने में एक महान आत्मा दिखाई दी और घोषणा की कि अब से उन्हें महिलाओं और बच्चों के साथ बैठना होगा, महिलाओं के कपड़े पहनना होगा और महिलाओं के लिए खाना खाओ। नेता ने अपनी प्रतिष्ठा खोए बिना दृष्टि का पालन किया। यह दृष्टि मध्याह्न की मानसिक क्रांति, सूर्यास्त की शुरुआत की सटीक अभिव्यक्ति है। जीवन मूल्य और यहां तक कि शरीर भी उनके विपरीत में बदल जाता है, कम से कम एक संकेत के रूप में।

उदाहरण के लिए, मर्दाना और स्त्री सिद्धांत, उनकी मानसिक विशेषताओं के साथ, उन पदार्थों के एक निश्चित स्टॉक के साथ तुलना की जा सकती है जो जीवन के पहले भाग में असमान रूप से खर्च किए जाते हैं। एक पुरुष पुरुष पदार्थ की अपनी बड़ी आपूर्ति खर्च करता है, और उसके पास केवल थोड़ी मात्रा में महिला पदार्थ बचा है, जिसका वह उपयोग

करना शुरू कर देता है। इसके विपरीत, महिला अब मर्दानगी का एक ऐसा भंडार ला रही है जिसका उसने पहले कभी उपयोग नहीं किया है,

भौतिक अर्थों से भी अधिक, यह परिवर्तन मानसिक रूप से प्रकट होता है। उदाहरण के लिए, कितनी बार ऐसा होता है कि पैंतालीस या पचास वर्ष की आयु में एक आदमी दिवालिया हो जाता है, और फिर महिला पतलून पहनती है और एक दुकान खोलती है जहाँ पुरुष केवल एक सहायक की भूमिका निभाता है। बहुत सी ऐसी महिलाएं हैं जिनमें सामाजिक जिम्मेदारी और सामाजिक चेतना सामान्य रूप से जीवन के चालीस वर्ष बाद ही जागृत होती है। आधुनिक व्यापार मंडलों में, विशेष रूप से अमेरिका में, ब्रेक डाउन , चालीस वर्षों के बाद एक नर्वस ब्रेकडाउन, एक काफी सामान्य घटना है। यदि आप ऐसे गरीब साथी की अधिक ध्यान से जांच करते हैं, तो पता चलता है कि पुरानी, मर्दाना शैली नष्ट हो गई है, और जो बची है वह एक नारीवादी पुरुष है। और इसके विपरीत, उन्हीं मंडलियों में ऐसी महिलाएं हैं जो इन वर्षों में असाधारण मर्दानगी और मन की दृढ़ता को प्रकट करती हैं, दिल और भावना को पृष्ठभूमि में धकेलती हैं। बहुत बार ये परिवर्तन सभी प्रकार की वैवाहिक आपदाओं के साथ होते हैं; आखिरकार, यह कल्पना करना इतना मुश्किल नहीं है कि क्या होता है जब एक पति अपनी कोमल भावनाओं को दिखाता है, और एक पत्नी अपना मन दिखाती है।

इस सब में सबसे बुरी बात यह है कि होशियार और पढ़े-लिखे लोग इस तरह के बदलावों की संभावना पर शक किए बिना रहते हैं। वे पूरी तरह से बिना तैयारी के जीवन के दूसरे भाग में प्रवेश करते हैं। या शायद कहीं-कहीं शैक्षणिक संस्थान हैं, और न केवल माध्यमिक, बल्कि चालीस साल के बच्चों के लिए उच्च विद्यालय, जो उन्हें भविष्य के जीवन के लिए अपनी आवश्यकताओं के साथ उसी तरह तैयार करेंगे जैसे वे स्कूलों और संस्थानों को दुनिया के ज्ञान में पेश करते हैं। और हमारे युवाओं का जीवन? नहीं, हम जीवन के दूसरे भाग में बिना तैयारी के प्रवेश करते हैं; इससे भी बदतर, हम अपने पूर्व सत्य और आदर्शों के झूठे विचारों के प्रभाव में ऐसा करते हैं। हम जीवन की शाम को सुबह के कार्यक्रम के अनुसार नहीं जी सकते, क्योंकि सुबह में जो प्रचुर मात्रा में है वह शाम को दुर्लभ होगा, और जो सुबह में सच है वह शाम को सच नहीं रहेगा। मुझे इस बुनियादी नियम की सच्चाई पर संदेह करने के लिए बहुत से बुजुर्गों का इलाज करना पड़ा है और उनकी आत्मा के अंतरतम कोनों में देखना पड़ा है।

एक वृद्ध व्यक्ति को पता होना चाहिए कि उसका जीवन बढ़ या विस्तार नहीं कर रहा है; इसके विपरीत, एक कठोर आंतरिक प्रक्रिया जीवन को संकुचित करती है। यदि-एक युवक अपने ही व्यक्ति के बारे में बहुत अधिक चिंतित है , तो यह उसके लिए लगभग एक पाप है, या कम से कम एक खतरा है; एक उम्रदराज़ व्यक्ति के लिए, अपने आप पर गंभीरता से ध्यान देना एक कर्तव्य और एक आवश्यकता है। दुनिया पर अपनी रोशनी

लुटाने के बाद, सूरज खुद को रोशन करने के लिए अपनी किरणों को छुपाता है। इसके बजाय, कई वृद्ध लोग हाइपोकोन्ड्रिअक्स, कंजूस, संकीर्ण सोच वाले पांडित्य और जमींदार बनना पसंद करते हैं। टेम्पोरिस एक्टि (अतीत के क्षमाप्रार्थी (अव्य।) । - अनुवाद) या यहां तक कि हमेशा के लिए युवा बने रहें - स्वयं की रोशनी के लिए एक गरीब विकल्प, लेकिन इस भ्रम का एक अनिवार्य परिणाम है कि जीवन का दूसरा भाग पहले के सिद्धांतों द्वारा शासित होना चाहिए।

मैं बस इतना कह रहा था कि हमारे पास चालीस साल के बच्चों के लिए स्कूल नहीं हैं। यह पूरी तरह से सच नहीं है। हमारे धर्म लंबे समय से हैं, या कभी थे, ऐसे स्कूल। लेकिन वे अभी भी कितने लोगों के लिए हैं? जीवन के दूसरे भाग, वृद्धावस्था, मृत्यु और अनंत काल के रहस्य के लिए इनमें से किसी एक स्कूल में वास्तव में कितने बूढ़े लोगों को लाया गया था?

बेशक, एक व्यक्ति सत्तर और अस्सी साल तक जीवित नहीं रहेगा यदि जीवन की इतनी लंबाई उसके इड़ा के अर्थ के अनुरूप नहीं है। इसलिए, उसके जीवन की शाम का भी अपना अर्थ और उद्देश्य होना चाहिए; यह सुबह का एक दयनीय उपांग नहीं हो सकता। निःसंदेह सुबह का अर्थ है व्यक्ति का विकास, बाहरी दुनिया में उसकी व्यवस्था, संतानोत्पत्ति और संतान की देखभाल। यह एक स्पष्ट प्राकृतिक उद्देश्य है। लेकिन अगर यह लक्ष्य हासिल किया जाता है, और यहां तक कि अधिक हासिल किया जाता है, तो क्या धन का अधिग्रहण, किसी के अस्तित्व के स्थान की आगे की विजय और विस्तार उचित समझ की सीमा से परे जाना चाहिए? वह जो इस तरह से अनावश्यक रूप से सुबह के नियम, यानी प्राकृतिक लक्ष्य को जीवन के दूसरे भाग में स्थानांतरित कर देता है, उसे आध्यात्मिक नुकसान के साथ उसी तरह से विचार करना चाहिए जैसे एक युवा व्यक्ति जो अपने बचकाने अहंकार को वयस्कता में स्थानांतरित करने का प्रयास करता है, उसे चाहिए सामाजिक विफलता के साथ इस त्रुटि के लिए भुगतान करें। . धन की प्राप्ति, सामाजिक अस्तित्व, परिवार, संतान केवल प्रकृति है, संस्कृति नहीं। संस्कृति प्राकृतिक लक्ष्य के दूसरी ओर है। तो, शायद, संस्कृति जीवन के दूसरे भाग का अर्थ और उद्देश्य है?

आदिम जनजातियों में, उदाहरण के लिए, हम देखते हैं कि लगभग हमेशा बुजुर्ग संस्कारों और कानूनों के रखवाले होते हैं, और यह मुख्य रूप से जनजाति की संस्कृति में व्यक्त किया जाता है। इस संबंध में हमारे साथ कैसा है? हमारे बूढ़ों की बुद्धि कहाँ है ? उनके रहस्य और भविष्यसूचक सपने कहाँ हैं? बल्कि, हमारे बूढ़े लगभग जवानों की नकल करने की कोशिश कर रहे हैं। अमेरिका में, ऐसा कहा जाता है, आदर्श माना जाता है यदि पिता अपने पुत्रों का भाई है, और जहां भी संभव हो , मां अपनी बेटी की छोटी बहन है।

मुझे नहीं पता कि इस भ्रम में स्थिति के अतीत में अतिशयोक्ति की प्रतिक्रिया और झूठे आदर्शों के लिए क्या जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। उत्तरार्द्ध निस्संदेह मौजूद है:-

ऐसे लोगों के लिए अंतिम गंतव्य उनके सामने नहीं है, बल्कि उनके पीछे है। इसलिए वे पीछे हट जाते हैं। कोई उनके साथ सहमत हो सकता है कि यह देखना मुश्किल है कि जीवन के दूसरे भाग में पहले के लक्ष्यों की तुलना में अन्य अंत बिंदु क्या होने चाहिए: जीवन विस्तार, उपयोगिता, क्षमता, सामाजिक जीवन में स्थापना, एक उपयुक्त साथी की विवेकपूर्ण खोज और अच्छे स्थान। उसकी संतान के लिए - जीवन का लक्ष्य प्राप्त होता है! दुर्भाग्य से, यह कई लोगों के लिए पर्याप्त अर्थ और उद्देश्य नहीं हो सकता है जो उम्र बढ़ने में केवल जीवन के विलुप्त होने को देखते हैं और महसूस करते हैं कि उनके पूर्व आदर्श फीका पड़ गया है और खुद को समाप्त कर दिया है। बेशक, अगर ये लोग पहले भी अपने जीवन के प्याले को भरने और खाली करने में कामयाब रहे होते, तो अब वे शायद अलग तरह से महसूस करते; कुछ भी उन्हें रोक नहीं पाएगा, जो कुछ भी जल सकता है वह जल जाएगा, और बुढ़ापे की शांति उनके लिए वांछनीय होगी। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि कुछ लोग जानते हैं कि कैसे जीना है, और जीने की कला, इसके अलावा, सभी कलाओं में सबसे महत्वपूर्ण और दुर्लभ है - सुंदरता के पूरे प्याले को समाप्त करने के लिए, जो इसे करने में कामयाब रहा? इसलिए अधिकांश लोगों के लिए बहुत अधिक अनुभवहीन रहता है - अक्सर ऐसे अवसर भी जिन्हें वे महसूस नहीं कर सकते थे यदि वे चाहते थे - और इस प्रकार वे असंतुष्ट दावों के साथ बुढ़ापे की दहलीज पार कर जाते हैं जो अनजाने में उन्हें पीछे मुड़कर देखने के लिए मजबूर करते हैं,

ऐसे लोगों के लिए पीछे की ओर देखना विशेष रूप से हानिकारक है। बल्कि उन्हें भविष्य में एक परिप्रेक्ष्य, एक लक्ष्य बिंदु की आवश्यकता होती है। इसलिए, सभी प्रमुख धर्मों के पास बाद के जीवन के बारे में अपने स्वयं के आश्वासन हैं, दुनिया के ऊपर उनका अपना लक्ष्य है, जो नश्वर को जीवन के दूसरे भाग को पहले के समान उद्देश्य के साथ जीने की अनुमति देता है। हालाँकि, जिस तरह आधुनिक मनुष्य के लिए जीवन के विस्तार और परिणति के लक्ष्य हैं, उसी तरह उसके लिए संदिग्ध या सर्वथा असंभव है मृत्यु के बाद जीवन को जारी रखने का विचार। और फिर भी जीवन का अंत, यानी मृत्यु, एक उचित लक्ष्य तभी हो सकता है जब या तो जीवन इतना भयानक हो कि कोई अंत में आनंदित हो, या यदि यह विश्वास हो कि सूर्य उसी क्रम के साथ है जिसके साथ वह उगता है दोपहर, अपने सूर्यास्त के समय, "दूर के राष्ट्रों को प्रकाश देने के लिए।" हालाँकि, विश्वास आज इतनी कठिन कला है कि मानवता के एक हिस्से के लिए - विशेष रूप से शिक्षित - यह लगभग दुर्गम हो गया है। हम इस विचार के भी अभ्यस्त हैं कि पंक्तों (के संबंध में (अव्यय) - अनुवाद।) अमरता, आदि। विभिन्न परस्पर विरोधी राय हैं और कोई निर्णायक सबूत नहीं है। चूँकि हमारा आधुनिक नारा, जिसमें स्पष्ट रूप से बिना शर्त प्रेरक शक्ति है, विज्ञान है, हम "वैज्ञानिक" प्रमाण चाहते हैं। लेकिन विचारशील शिक्षित लोग यह निश्चित रूप से जानते हैं कि इस तरह के प्रमाण दार्शनिक असंभवताओं में से हैं। इसके बारे में जानने के

लिए बस कुछ भी नहीं है।

क्या मैं यहां कह सकता हूं कि उन्हीं कारणों से हमें यह जानने के लिए नहीं दिया जाता है कि मृत्यु के बाद कुछ होता है या नहीं? उत्तर गैर तरल है, न सकारात्मक और न-ही नकारात्मक। हम इसके बारे में वैज्ञानिक रूप से निर्धारित कुछ भी नहीं जानते हैं और इस प्रकार हम ठीक उसी स्थिति में हैं, उदाहरण के लिए, जब इस सवाल पर चर्चा की जाती है कि मंगल का निवास है या नहीं; उसी समय, मंगल के निवासियों के साथ कुछ भी नहीं होता है, अगर वे वास्तव में मौजूद हैं, भले ही हम उनके अस्तित्व से सहमत हों या इनकार करते हैं। वे हो भी सकते हैं और नहीं भी। तथाकथित अमरता के मामले में भी ऐसा ही है, और इसलिए हम विज्ञापन की समस्या को एक तरफ रख सकते हैं एक्टा (मामले के लिए, संग्रह के लिए। व्यावसायिक पत्रों पर एक नोट (अव्य।)। - अनुवाद।)।

यहां, हालांकि, एक डॉक्टर के रूप में मेरा विवेक जागता है, जो मुझे इस मुद्दे पर कुछ और महत्वपूर्ण विचार व्यक्त करने के लिए कहता है। मैंने पाया है कि एक उद्देश्यपूर्ण जीवन आम तौर पर बिना उद्देश्य के जीवन से बेहतर, समृद्ध, स्वस्थ होता है, और समय के साथ पीछे की तुलना में समय के साथ आगे बढ़ना बेहतर होता है। आत्मा के उपचारक के लिए, एक बूढ़ा व्यक्ति जो जीवन के साथ भाग लेने में असमर्थ है, वह उतना ही कमजोर और बीमार लगता है जितना कि एक युवा जो इसे बनाने में असमर्थ है। और वास्तव में, दोनों मामलों में, हम अक्सर एक ही बचकाने लालच, एक ही डर, एक ही जिद और इच्छाशक्ति के बारे में बात कर रहे हैं। एक चिकित्सक के रूप में, मुझे विश्वास है कि यह अधिक स्वच्छ है, इसलिए बोलने के लिए, मृत्यु को एक लक्ष्य के रूप में देखने के लिए प्रयास करना है, और इसका प्रतिरोध कुछ अस्वस्थ और असामान्य है, क्योंकि यह जीवन के दूसरे भाग को लक्ष्यहीन बना देता है। इसलिए, मानसिक स्वच्छता के दृष्टिकोण से, मैं उन सभी धर्मों को अत्यंत उचित मानता हूं जिनका लक्ष्य दुनिया से ऊपर है। अगर मैं एक घर में रहता हूं और जानता हूं कि दो सप्ताह के भीतर यह मेरे सिर पर गिर जाएगा, तो ये विचार मेरे सभी महत्वपूर्ण कार्यों को खराब कर देंगे; अगर, इसके विपरीत, मैं आत्मविश्वास महसूस करता हूं, तो मैं शांति से और सामान्य रूप से इसमें रह सकता हूं। इसलिए, मनोचिकित्सा की दृष्टि से, यह बेहतर होगा कि हम यह सोच सकें कि मृत्यु केवल एक संक्रमणकालीन अवधि है, जीवन की एक अज्ञात बड़ी और लंबी प्रक्रिया का हिस्सा है,

यद्यपि अधिकांश लोग यह नहीं जानते हैं कि शरीर को टेबल सॉल्ट की आवश्यकता क्यों है, फिर भी, हर किसी को इसकी आवश्यकता होती है, एक सहज आवश्यकता द्वारा निर्देशित। आध्यात्मिक तथ्यों के बारे में भी यही सच है। अधिकांश लोगों ने लंबे समय से अस्तित्व को जारी रखने की आवश्यकता महसूस की है। इसलिए अपने बयान से हम किनारे नहीं बल्कि मानव जीवन के मुख्य मार्ग के बीच में हैं। इसका मतलब यह है कि जीवन के दृष्टिकोण से, हम सही ढंग से तर्क करते हैं, भले ही हम यह नहीं समझते कि हम

किस बारे में सोच रहे हैं।

और सामान्य तौर पर, क्या हम कभी समझते हैं कि हम क्या सोचते हैं ? हम केवल ऐसी सोच को समझते हैं, जो एक समीकरण के अलावा और कुछ नहीं है, जो हमने उसमें जो कुछ डाला है उससे अधिक कभी नहीं पैदा होगा। यह बुद्धि है। लेकिन इसके अलावा, प्रारंभिक छवियों, प्रतीकों में सोच है, ऐतिहासिक आदमी से पुराना है, जो लंबे समय से उसमें जन्मजात है और जो सभी पीढ़ियों तक जीवित रहता है और हमेशा जीवित रहता है, हमारी आत्मा की निचली भूमि का निर्माण करता है। उनके अनुसार ही पूर्ण जीवन संभव है; ज्ञान उनके लिए वापसी है। वास्तव में, यह न तो विश्वास है और न ही ज्ञान; हम अचेतन के प्रोटोटाइप के साथ हमारी सोच के समन्वय के बारे में बात कर रहे हैं, किसी भी विचार को जन्म दे रहे हैं, जिसके समाधान पर हमारी चेतना लगातार संघर्ष कर रही है। और इन्हीं पुरातन विचारों में से एक है मृत्यु के दूसरी ओर जीवन का विचार। इन प्रोटोटाइपों के साथ विज्ञान अतुलनीय है। ये तर्कहीन उपहार हैं, कल्पना की एक प्राथमिक शर्तें हैं, जो बस मौजूद हैं, और विज्ञान केवल उनकी नियमितता और शक्तियों की जांच कर सकता है। पश्च , मोटे तौर पर थायरॉयड ग्रंथि के एक कार्य के रूप में, जिसे 19 वीं शताब्दी तक भी एक बेकार अंग माना जाता था। मेरे लिए, आर्कटाइप्स आत्मा के एक प्रकार के अंग हैं, जिनका मैं यथासंभव ध्यान रखता हूँ; इसलिए मुझे बुजुर्ग रोगी से कहना है: "भगवान की आपकी छवि या अमरता के आपके विचार को नष्ट कर दिया गया है, इस वजह से आपका-चयापचय टूट गया है।" प्राचीन □□□□□□□□अमरता की □☉ □□□□□□□□औषधि, अर्थ में समृद्ध और हमारे विचार से अधिक गहरी।

अंत में, मैं एक पल के लिए सूर्य के साथ तुलना करना चाहूंगा। हमारे जीवन चाप-का 180 अंश चार भागों में टूट जाता है। पहली, पूर्वी तिमाही, बचपन का प्रतिनिधित्व करती है, वह समस्या-मुक्त राज्य जहां हम दूसरों के लिए समस्या हैं, लेकिन हम अभी तक अपनी समस्याओं से अवगत नहीं हैं। चेतन समस्याएं दूसरी और तीसरी तिमाही तक फैलती हैं, और अंतिम तिमाही में, बुढ़ापे में, हम फिर से उस स्थिति में उतर जाते हैं, जहां हम अपनी चेतना की स्थिति की परवाह न करते हुए, फिर से दूसरों के लिए समस्या बन जाते हैं। बचपन और बुढ़ापा, हालांकि एक-दूसरे से बेहद अलग हैं, फिर भी कुछ समान हैं, अर्थात् अचेतन में विसर्जन। चूंकि एक बच्चे की आत्मा अचेतन से विकसित होती है, उसके मनोविज्ञान को समझना अभी भी आसान है, जो कि एक बूढ़े व्यक्ति के मनोविज्ञान की तुलना में बहुत कठिन है, जो फिर से बेहोश हो जाता है और धीरे-धीरे उसमें घुल जाता है। बचपन और बुढ़ापा जीवन की समस्यारहित अवस्थाएँ हैं, इसलिए मैंने यहाँ उन पर विचार नहीं किया है।

विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान और विश्वदृष्टि

जर्मन शब्द " वेल्टन्सचौंग " (वर्ल्डव्यू (जर्मन। - ट्रांस।)) का शायद ही किसी अन्य भाषा में अनुवाद किया जा सकता है। इस परिस्थिति के आधार पर, यह पहचाना जा सकता है कि इसकी एक अजीबोगरीब मनोवैज्ञानिक विशेषता है: यह न केवल दुनिया की अवधारणा को व्यक्त करता है - शायद ऐसे शब्द का बिना शर्त अनुवाद किया जा सकता है - लेकिन साथ ही साथ दुनिया को कैसे देखा जाता है। यद्यपि "दर्शन" शब्द में कुछ समान है, यह बौद्धिक तक सीमित है, जबकि "विश्वदृष्टि" दार्शनिक सहित दुनिया के प्रति सभी प्रकार के दृष्टिकोणों को शामिल करता है। इस प्रकार, नाम के लिए एक सौंदर्यवादी , एक धार्मिक, एक आदर्शवादी, एक यथार्थवादी, एक रोमांटिक, एक व्यावहारिक दुनिया है, लेकिन कुछ ही नाम हैं। इस अर्थ में, दृष्टिकोण की अवधारणा के साथ विश्वदृष्टि की अवधारणा में काफी समानता है; इस आधार पर, विश्वदृष्टि को एक अमूर्त रूप से तैयार दृष्टिकोण के रूप में वर्णित किया जा सकता है।

स्थापना से क्या तात्पर्य है ? सेट एक मनोवैज्ञानिक अवधारणा है जो एक लक्ष्य-उन्मुख या, इसलिए बोलने के लिए, "उच्च प्रतिनिधित्व" मानसिक सामग्री की विशेष व्यवस्था की विशेषता है। यदि हम सेना के साथ अपनी मानसिक सामग्री की तुलना करते हैं और इसकी विशेष अवस्थाओं के संदर्भ में विभिन्न प्रकार के दृष्टिकोण व्यक्त करते हैं, तो ध्यान, उदाहरण के लिए, स्काउट्स के समूहों से घिरे अलार्म की स्थिति में एक केंद्रित सेना के रूप में प्रतिनिधित्व किया जा सकता है। जैसे ही दुश्मन की ताकत और स्थिति पर्याप्त रूप से ज्ञात हो जाती है, राज्य बदल जाता है: सेना हमले के एक विशिष्ट लक्ष्य की दिशा में आगे बढ़ना शुरू कर देती है। ठीक उसी तरह मानसिक दृष्टिकोण भी बदलता है। जबकि साधारण ध्यान की स्थिति में प्रमुख विचार धारणा थी, और मानसिक कार्य, साथ ही साथ अन्य व्यक्तिपरक सामग्री को यथासंभव दबा दिया गया था, अब, जब एक सक्रिय दृष्टिकोण में जाते हैं, व्यक्तिपरक सामग्री चेतना में प्रकट होती है । ज़निया, लक्ष्य के विचार और कार्रवाई के आवेगों से मिलकर । और जिस तरह एक सेना में एक सामान्य कर्मचारी के साथ एक कमांडर होता है, मानसिक दृष्टिकोण में भी एक सामान्य मार्गदर्शक विचार होता है, जो व्यापक सामग्री, जैसे अनुभव, सिद्धांत, प्रभाव, आदि द्वारा समर्थित और प्रमाणित होता है।

वे न केवल उस तरह से कार्य करते हैं, प्रतिक्रिया करते हैं, इसलिए बोलने के लिए, एक निश्चित उत्तेजना के अलगाव में, लेकिन हमारी कोई भी प्रतिक्रिया या हमारी कोई भी क्रिया जटिल मानसिक पूर्वापेक्षाओं के प्रभाव में की जाती है। सैन्य रूपक का फिर से उपयोग करने के लिए, हम इन प्रक्रियाओं की तुलना मुख्य मुख्यालय के काम से कर सकते हैं। सामान्य सैनिकों के लिए, ऐसा लगता है कि वे रक्षात्मक थे क्योंकि उन पर हमला किया

जा रहा था, या वे आक्रामक थे क्योंकि उन्होंने दुश्मन को देखा था। हमारी चेतना हमेशा एक साधारण सैनिक की भूमिका निभाने और उसके कार्य की सरलता में विश्वास करने के लिए इच्छुक रहती है। वास्तव में, वे एक निश्चित स्थान पर और एक निश्चित समय पर लड़ रहे हैं, क्योंकि हमले की एक सामान्य योजना है, जिसके अनुसार कुछ दिन पहले ही सैनिकों को एक निश्चित बिंदु पर स्थानांतरित कर दिया गया था। और यह सामान्य योजना, फिर से, केवल खुफिया रिपोर्टों की प्रतिक्रिया नहीं है, बल्कि कमांडर की रचनात्मक पहल, दुश्मन की कार्रवाइयों के कारण, और संभवतः पूरी तरह से गैर-सैन्य, राजनीतिक उद्देश्यों को भी सामान्य सैनिक के लिए अज्ञात है। ये अंतिम कारक बहुत जटिल प्रकृति के हैं और सैनिक की समझ से बहुत दूर हैं, यदि वे स्वयं कमांडर के लिए भी स्पष्ट हैं। लेकिन वह भी कुछ कारकों से अनजान है, अर्थात् उनके जटिल परिसरों के साथ उनके व्यक्तिगत स्वभाव। इस प्रकार, सेना की कार्रवाई एक सरल और एकीकृत कमान के तहत होती है, जो, हालांकि, इसके हिस्से के लिए केवल अत्यधिक जटिल कारकों के पारस्परिक प्रभाव का परिणाम है।

इस प्रकार, मानसिक क्रिया भी समान रूप से जटिल परिसर के आधार पर की जाती है। आवेग की सभी सरलता के लिए, इसके विशेष गुण की प्रत्येक सूक्ष्मता, इसकी शक्ति और दिशा, इसका लौकिक और स्थानिक पाठ्यक्रम, इसका उद्देश्य आदि। विशेष मानसिक परिसरों पर आधारित हैं, जैसा कि रवैया है, जिसमें फिर से सामग्री का एक तारामंडल होता है, जिसकी विविधता को शायद ही कभी देखा जा सकता है। "मैं"-कमांडर-इन चीफ है; उनके तर्क और निर्णय, उनके तर्क और संदेह, उनके इरादे और अपेक्षाएं सामान्य कर्मचारी हैं, और बाहरी कारकों पर उनकी निर्भरता मुख्यालय के मुश्किल से दिखाई देने वाले प्रभावों और दूसरी तरफ चल रही राजनीति पर कमांडर की निर्भरता है।

शायद हम अपनी तुलना को बहुत अधिक नहीं करेंगे यदि हम इसके ढांचे में दुनिया के साथ मनुष्य के संबंध को भी शामिल करते हैं - मानव "मैं" एक छोटी सेना के कमांडर के रूप में बाहरी दुनिया से लड़ रहा है, जो अक्सर दो मोर्चों पर लड़ता है: वहाँ है अस्तित्व के लिए आगे का संघर्ष, पीछे अपने स्वयं के विद्रोही सहज स्वभाव के खिलाफ संघर्ष है। निराशावादी न भी हों, तो भी हमारे अस्तित्व को किसी और चीज की तुलना में एक संघर्ष की तरह महसूस किया जाता है। दुनिया की स्थिति एक इच्छा है, और अगर दुनिया के साथ और खुद के साथ समझौता किया जाता है, तो यह एक उल्लेखनीय घटना है। लगातार कम या ज्यादा युद्ध की स्थिति में रहने के कारण, हमें सावधानीपूर्वक संगठित दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है, और यदि इस अवस्था के अंत में मन की लंबी शांति होनी चाहिए, तो संबंधित रवैये में और भी उच्च स्तर की तैयारी होनी चाहिए और बेहतरीन विकास, भले ही शांतिपूर्ण राज्य काफी कम हो। आखिरकार, लंबी अवधि के संतुलन की

स्थिति में रहने की तुलना में आत्मा के लिए आंदोलन की स्थिति में, घटनाओं की मोटी स्थिति में रहना बहुत आसान है, क्योंकि बाद के मामले में - यदि, निश्चित रूप से, कोई नहीं करता है अपना ख्याल रखना, शायद प्रशंसनीय, उच्च स्तर और पूर्णता - किसी को घुटन का खतरा है। असहनीय ऊब में। इसलिए, हम गलत नहीं होंगे यदि हम मान लें कि एक संघर्ष विराम की मन की स्थिति, अर्थात्, संघर्ष-मुक्त, बादल रहित, उत्कृष्ट और संतुलित मनोदशाएँ - जबकि वे अंतिम हैं - हमेशा विशेष रूप से विकसित दृष्टिकोणों पर आधारित होती हैं।

यह शायद आश्चर्य की बात है कि मैं "विश्वदृष्टि" के बजाय "रवैया" कहना पसंद करता हूँ। बस "रवैया" की अवधारणा का उपयोग करके मैंने स्पष्ट रूप से इस सवाल को छोड़ दिया कि हम किस तरह की विश्वदृष्टि, सचेत या अचेतन के बारे में बात कर रहे हैं। कोई अपना स्वयं का कमांडर-इन-चीफ हो सकता है और बाहर और अंदर अस्तित्व के लिए सफलतापूर्वक लड़ सकता है, और यहां तक कि एक सचेत विश्वदृष्टि के बिना, दुनिया की अपेक्षाकृत सुरक्षित स्थिति प्राप्त कर सकता है। लेकिन यह स्थापना के बिना हासिल नहीं किया जा सकता है। हम विश्वदृष्टि के बारे में बात कर सकते हैं, शायद, केवल तभी जब हमारे दृष्टिकोण को अमूर्त या दृश्य तरीके से तैयार करने के लिए कम से कम कुछ गंभीर प्रयास किया गया हो, यह पता लगाने के लिए कि हम इस तरह से क्यों और किसके लिए कार्य करते हैं और इस तरह जीते हैं।

लेकिन विश्वदृष्टि रखने का क्या मतलब है, वे मुझसे पूछेंगे कि क्या इसके बिना इतना अच्छा है? हालाँकि, उसी कारण से कोई मुझसे पूछ सकता है: चेतना किस लिए है, अगर वह इसके बिना भी अच्छी है? आखिर विश्वदृष्टि किस लिए है? यह एक विस्तारित और गहन चेतना के अलावा और कुछ नहीं है! चेतना का अस्तित्व क्यों है और इसका विस्तार और गहनता क्यों होता है इसका कारण बहुत सरल है: चेतना के बिना, चीजें बदतर होती हैं। जाहिर है, इसलिए, माँ प्रकृति ने चेतना को जन्म देने के लिए, उसकी सभी अनसुनी विषमताओं में सबसे अद्भुत रचना की। लगभग अचेतन आदिम व्यक्ति भी स्वयं को अनुकूलित और स्थापित कर सकता है, लेकिन केवल अपनी आदिम दुनिया में, और इसलिए, अन्य परिस्थितियों में, वह असंख्य खतरों का शिकार हो जाता है, जिससे हम उच्च स्तर की चेतना से बचते हैं। बेशक, एक अधिक विकसित चेतना में ऐसे खतरे शामिल होते हैं जिनके बारे में आदिम मनुष्य सपने में भी नहीं सोच सकता था, लेकिन फिर भी यह तथ्य बना रहता है कि पृथ्वी पर एक सचेत व्यक्ति ने विजय प्राप्त की थी, न कि किसी अचेतन ने। अंतिम और अलौकिक अर्थों में यह तय करना हमारा काम नहीं है कि यह अनुकूल है या प्रतिकूल।

विकसित चेतना विश्वदृष्टि को निर्धारित करती है। कारणों और उद्देश्यों के बारे में कोई भी जागरूकता एक उभरता हुआ दृष्टिकोण है। अनुभव और ज्ञान के किसी भी संचय

का अर्थ है विश्वदृष्टि के विकास में एक और कदम। और दुनिया की एक छवि बनाते हुए एक सोचने वाला व्यक्ति उसी समय खुद को बदल लेता है। जिस व्यक्ति के लिए सूर्य-अभी भी पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगाता है, वह उस व्यक्ति के समान नहीं है जिसके लिए पृथ्वी सूर्य का उपग्रह है। यह व्यर्थ नहीं है कि जिओर्डानो ब्रूनो का अनंत का विचार आधुनिक चेतना के सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांतों में से एक है। जिस व्यक्ति का ब्रह्मांड एम्पायर में लटका हुआ है, वह उस व्यक्ति से बिल्कुल अलग है जिसकी आत्मा केप्लर की दृष्टि से प्रकाशित होती है। वह जो संदेह करता है कि दो और दो कितने होंगे, वह एक जैसा नहीं है जिसके लिए गणित के प्राथमिक सत्य से ज्यादा आश्चर्य करने वाला कुछ नहीं है। दूसरे शब्दों में, यह किसी भी तरह से उदासीन नहीं है कि क्या किसी व्यक्ति का विश्वदृष्टि है और यह किस तरह का विश्वदृष्टि है, क्योंकि न केवल हम दुनिया की एक तस्वीर बनाते हैं, बल्कि इसके हिस्से के लिए, हमें भी बदलता है।

हम दुनिया के बारे में जो विचार बनाते हैं, वह उसी की छवि है जिसे हम दुनिया कहते हैं। यह इस छवि पर है, इसकी विशेषताओं के आधार पर, हम अपने अनुकूलन में खुद को उन्मुख करते हैं। जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है, यह अनजाने में होता है। एक बॉक्स में एक साधारण सैनिक जनरल स्टाफ की गतिविधियों के लिए गुप्त नहीं है। सच है, हम स्वयं सामान्य कर्मचारी हैं, साथ ही कमांडर-इन-चीफ भी हैं। हालांकि, मन को क्षणिक, शायद अत्यावश्यक, गतिविधियों से दूर करने के लिए, और इसे दृष्टिकोण की अधिक सामान्य समस्याओं की ओर निर्देशित करने के लिए, एक स्वैच्छिक निर्णय की लगभग हमेशा आवश्यकता होती है। यदि हम ऐसा नहीं करते हैं, तो हम अपने अचेतन रवैये को छोड़ देते हैं, और फिर हम एक विश्वदृष्टि के मालिक नहीं बन जाते हैं, बल्कि केवल एक अचेतन दृष्टिकोण के मालिक बन जाते हैं। यदि आप इसका हिसाब नहीं देते हैं, तो मुख्य कारण और लक्ष्य अचेत रह जाते हैं और ऐसा लगता है कि सब कुछ बहुत सरल था और अपने आप हो गया। वास्तव में, पृष्ठभूमि की जटिल प्रक्रियाएँ होती हैं, जिनके अपने कारण और लक्ष्य होते हैं, ऐसी प्रक्रियाएँ जिनकी अपनी सूक्ष्मताएँ होती हैं। ऐसे कई वैज्ञानिक हैं जिनके पास कोई विश्वदृष्टि नहीं है, क्योंकि यह माना जाता है कि यह अवैज्ञानिक है। लेकिन, जाहिरा तौर पर, ये लोग अपने कार्यों का सही अर्थ नहीं समझते हैं। वास्तव में, ऐसा करके वे जानबूझकर अपने मार्गदर्शक विचारों के बारे में खुद को अंधेरे में छोड़ देते हैं, दूसरे शब्दों में, वे खुद को चेतना के निचले, आदिम स्तर पर रखते हैं जो उनकी क्षमताओं के अनुरूप नहीं है। सभी आलोचना और संदेह बुद्धि की अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि इसके विपरीत है; खासकर जब वे विश्वदृष्टि की कमी को छिपाने के लिए खुद को संदेह के साथ बहाना बनाते हैं। और भी अधिक बार, बुद्धि के बजाय नैतिक साहस की कमी होती है, क्योंकि दुनिया को देखने के लिए स्वयं को देखना भी होता है, और इसके लिए बहुत साहस की आवश्यकता होती है। इसलिए, विश्वदृष्टि का अभाव किसी भी मामले

में हानिकारक है।

एक विश्वदृष्टि का अर्थ है दुनिया और खुद की एक छवि बनाना , यह जानना कि दुनिया क्या है और मैं कौन हूँ। लेकिन इसे अक्षरशः नहीं लिया जा सकता। दुनिया क्या है और कौन है यह कोई नहीं जान सकता। लेकिन कम अनाज सालिस _ _ _ इसका मतलब होगा: अधिकतम संभव ज्ञान। इस तरह के ज्ञान के लिए तथ्यों की आवश्यकता होती है और यह अनुचित धारणाओं, मनमानी दावों, सत्तावादी विचारों को बर्दाश्त नहीं करता है। यह अच्छी तरह से स्थापित परिकल्पनाओं को एकत्र करता है, जबकि यह नहीं भूलता कि सभी ज्ञान सीमित हैं और त्रुटि के अधीन हैं।

यदि हमारे द्वारा बनाई गई दुनिया की छवि हमें प्रभावित नहीं करती है, तो हम किसी सुंदर या सुखद भ्रम से काफी संतुष्ट हो सकते हैं। हालाँकि, आत्म-धोखा स्वयं को दर्शाता है, यह हमें असत्य, मूर्ख और अपर्याप्त बनाता है। जैसे-जैसे हम भ्रम से लड़ते हैं, हम वास्तविकता की महाशक्ति से दूर हो जाते हैं, इस तरह हम सीखते हैं कि सावधानीपूर्वक जमीनी और विकसित विश्वदृष्टि होना कितना महत्वपूर्ण और आवश्यक है।

विश्वदृष्टि एक परिकल्पना है , विश्वास की वस्तु नहीं। दुनिया अपना चेहरा बदल रही है टेम्पोरा म्यूटेंटुर एट न6s _ _ मुतामुर में इलिस (समय बदल रहा है, और हम उनके साथ बदल रहे हैं (अव्यय)। अनुवाद।) - आखिरकार, यह हमारे लिए केवल हमारी आंतरिक मानसिक छवि के रूप में संज्ञेय है, और जब छवि बदलती है, तो यह हमेशा आसान नहीं होता है स्थापित करने, तय करने के लिए कि क्या बदल गया है - केवल दुनिया, या केवल हम, या दुनिया के साथ, हम खुद बदल गए हैं। दुनिया की छवि हर समय बदल सकती है, जैसे हमारे बारे में हमारी राय हर समय बदल सकती है। हर नई खोज, हर नया विचार दुनिया को एक नया चेहरा दे सकता है। इसे ध्यान में रखा जाना चाहिए; अन्यथा, हम अचानक अपने आप को एक पुरातनपंथी दुनिया में पाएंगे, और हम स्वयं चेतना के गहरे स्तर के पुराने जमाने के अवशेष में बदल जाएंगे। प्रत्येक व्यक्ति जल्दी या बाद में खुद को समाप्त कर लेता है, लेकिन जीने के हित में इस क्षण को यथासंभव आगे बढ़ाना आवश्यक है, और यह तभी प्राप्त किया जा सकता है जब हम दुनिया की छवि को जमने न दें, और हम प्रत्येक की जांच करें नया विचार यह क्या योगदान देता है। दुनिया की हमारी तस्वीर में।

अब विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान और विश्वदृष्टि के बीच संबंधों की समस्या पर चर्चा करने के लिए , मैं इस बात पर जोर देना चाहता हूँ कि यह अभी-अभी व्यक्त की गई स्थिति के दृष्टिकोण से किया जाएगा, अर्थात् प्रश्न: क्या विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान द्वारा प्राप्त ज्ञान हमें देता है हमारे विश्वदृष्टि के लिए कुछ नया? या नहीं? इस प्रश्न का सदुपयोग करने में सक्षम होने के लिए, हमें सबसे पहले यह बताना होगा कि विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान इसके सार में क्या है। मैं इस नाम से जो नामित करता हूँ वह मनोविज्ञान की एक विशेष

शाखा है जो मुख्य रूप से तथाकथित जटिल मानसिक घटनाओं से संबंधित है, शारीरिक या प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के विपरीत, जहां तक संभव हो, जटिल घटनाओं को उनके तत्वों में हल करने का प्रयास करता है। पदनाम "विश्लेषणात्मक" इस तथ्य से उपजा है कि मनोविज्ञान की यह शाखा मूल फ्रायडियन मनोविश्लेषण से विकसित हुई है। फ्रायड ने मनोविश्लेषण की पहचान कामुकता और दमन के अपने सिद्धांत से की और इस तरह इसे एक सिद्धांत तक बढ़ा दिया। इसलिए, जब सैद्धांतिक प्रश्नों की बात आती है, और विशुद्ध रूप से तकनीकी बिंदुओं की नहीं, तो मैं "मनोविश्लेषण" अभिव्यक्ति से बचने की कोशिश करता हूँ।

जहां तक फ्रायडियन मनोविश्लेषण का संबंध है, इसमें एक ऐसी तकनीक शामिल है जो हमें तथाकथित दमित सामग्री को फिर से चेतना में लौटने की अनुमति देती है जो बेहोश हो गई हैं। यह तकनीक न्यूरोसिस की व्याख्या और उपचार करने की एक चिकित्सीय विधि है। यह विधि एक निश्चित प्रकार की नैतिक घृणा के प्रभाव के परिणामस्वरूप न्यूरोस के विचार पर आधारित है जो शिक्षा के प्रभाव में विकसित होती है, जो चेतना से विस्थापित होती है और बेहोश अप्रिय यादें और प्रवृत्तियां बनाती है, तथाकथित असंगत सामग्री . इस तरह से देखने पर, अचेतन मानसिक गतिविधि , तथाकथित अचेतन , मुख्य रूप से उन सभी सामग्रियों के ग्रहण के रूप में प्रकट होती है जो चेतना के लिए दर्दनाक हैं , साथ ही सभी भूले हुए छापों के रूप में। लेकिन, दूसरी ओर, इस तथ्य को ध्यान में रखना असंभव नहीं है कि असंगत सामग्री ठीक अचेतन ड्राइव से उपजी है, अर्थात् अचेतन केवल एक भंडार नहीं है, बल्कि इन चीजों की जननी है जो चेतना द्वारा स्वीकार नहीं की जाती हैं। . लेकिन यहां हम एक और कदम उठा सकते हैं: अचेतन भी नई रचनात्मक सामग्री पैदा करता है। मानव आत्मा द्वारा बनाई गई हर चीज उन सामग्रियों से आई है जो अंततः अचेतन रोगाणु थे। अगर फ्रायड ने पहले पहलू पर विशेष जोर दिया, तो मैंने पहले को नकारे बिना, आखिरी को अलग कर दिया। यद्यपि एक व्यक्ति की क्षमता जितना संभव हो सके परेशानी से बचने और इसलिए स्वेच्छा से भूल जाना कि वह क्या पसंद नहीं करता है, एक बहुत ही महत्वपूर्ण तथ्य है, फिर भी मुझे यह स्थापित करने के लिए और अधिक महत्वपूर्ण लगता है, वास्तव में, इसमें क्या शामिल है- अचेतन की सकारात्मक गतिविधि। इस ओर से विचार करने पर अचेतन तत्पश्चात् उन सभी की समग्रता के रूप में प्रकट होता है दर्जा पैदा हो मानसिक सामग्री। अचेतन का यह निस्संदेह कार्य मुख्य रूप से चेतना से दमित होने के परिणामस्वरूप गड़बड़ा जाता है, और अचेतन की प्राकृतिक गतिविधि का यह उल्लंघन, शायद, तथाकथित मनोवैज्ञानिक रोगों का एक महत्वपूर्ण और स्रोत है। शायद अचेतन को सबसे अच्छी तरह से समझा जा सकता है अगर इसे अपनी विशिष्ट उत्पादक ऊर्जा के साथ एक प्राकृतिक अंग के रूप में व्याख्यायित किया जाए। यदि, दमन के कारण, उसके उत्पादों को चेतना द्वारा नहीं माना

जाता है, तो डैमिंग जैसा कुछ होता है, समीचीन कार्य के साथ एक अप्राकृतिक हस्तक्षेप, जैसे कि प्राकृतिक उत्पाद के आंतों के बहिर्वाह के रास्ते में एक अवरोध बनाया गया हो जिगर का कार्य - पित्त। दमन के परिणामस्वरूप, गलत मानसिक बहिर्वाह उत्पन्न होता है । जैसे पित्त रक्तप्रवाह में प्रवेश करता है, वैसे ही दमित सामग्री अन्य मानसिक और शारीरिक क्षेत्रों में फैल जाती है। हिस्टीरिया में, मुख्य रूप से शारीरिक कार्यों में गड़बड़ी होती है, अन्य न्यूरोसिस में, जैसे कि फोबिया, जुनून और जुनूनी न्यूरोसिस, सपनों सहित मानसिक कार्य मुख्य रूप से परेशान होते हैं। और अगर हिस्टीरिया के शारीरिक लक्षणों में और अन्य न्यूरोसिस (साथ ही मनोविकृति) के मानसिक लक्षणों में कोई दमित सामग्री के प्रभाव को इंगित कर सकता है, तो सपनों के संबंध में भी ऐसा ही किया जा सकता है। स्वप्न देखने की क्षमता अपने आप में एक सामान्य कार्य है, लेकिन बांध के कारण अन्य कार्यों की तरह ही इसमें बाधा उत्पन्न हो सकती है। फ्रायड के सपनों का सिद्धांत ध्यान में रखता है और यहां तक कि सपनों को केवल इस कोण से समझाता है, जैसे कि वे लक्षणों के अलावा और कुछ नहीं हो सकते। जैसा कि सर्वविदित है, मनोविश्लेषण उसी तरह से अन्य आध्यात्मिक क्षेत्रों का इलाज करता है, उदाहरण के लिए, कला के काम , जहां , हालांकि, यह बिल्कुल स्पष्ट है कि कला का एक काम एक लक्षण नहीं है, बल्कि एक वास्तविक रचना है। रचनात्मक गतिविधि को केवल स्वयं से ही समझा जा सकता है। यदि इसे एक पैथोलॉजिकल गलतफहमी के रूप में समझा जाता है, जिसे न्यूरोसिस के रूप में उसी तरह समझाया जाता है, तो स्पष्टीकरण के इस तरह के प्रयास से खेदजनक जिज्ञासा होती है।

वही सपनों के लिए जाता है। यह अचेतन की एक प्रकार की आलंकारिक रचना है, और यदि इसे केवल दमन के लक्षण के रूप में व्याख्यायित किया जाता है, तो यह केवल इससे विकृत और उलटा होता है; यह स्पष्टीकरण निशान को याद करता है।

आइए अब हम फ्रायडियन मनोविश्लेषण के परिणामों पर एक पल के लिए ध्यान दें। उनके सिद्धांत में, एक व्यक्ति को एक सहज प्राणी के रूप में दर्शाया जाता है जो कानून और अपने स्वयं के दिमाग द्वारा स्थापित नैतिक नियमों के रूप में विभिन्न बाधाओं का सामना करता है; इसलिए वह कुछ प्रवृत्तियों या उनके घटकों का दमन करने के लिए मजबूर है। विधि का उद्देश्य इन ड्राइवों की सामग्री को चेतना में लाना और सचेत सुधार की मदद से उनके दमन को समाप्त करना है। उनकी जोखिम भरी रिहाई का विरोध इस स्पष्टीकरण से किया जाता है कि वे कुछ और नहीं बल्कि शिशु कल्पनाएँ हैं - ऐसी इच्छाएँ जिन्हें आसानी से उचित तरीके से वश में किया जा सकता है। यह भी माना जाता है कि वे - एक तकनीकी अभिव्यक्ति का उपयोग करने के लिए - "उच्च बनाने की क्रिया " हो सकते हैं, जिसका अर्थ है कि उन्हें एक उपयोगी अनुकूली रूप में बदलने का एक निश्चित तरीका है। अगर किसी को लगता है कि यह मनमाने ढंग से हो सकता है, तो वह निश्चित

रूप से गलत है। केवल पूर्ण आवश्यकता ही प्राकृतिक इच्छा की पूर्ति को प्रभावी ढंग से रोक सकती है। जहां ऐसी कोई आवश्यकता या तत्काल आवश्यकता नहीं है, "उच्च बनाने की क्रिया" केवल आत्म-धोखा है, एक नया, इस बार कुछ अधिक सूक्ष्म दमन।

क्या इस सिद्धांत में और मनुष्य की इस समझ में कुछ ऐसा है जिसे हमारे विश्वदृष्टि के निर्माण में योगदान के रूप में देखा जा सकता है? मुझे नहीं लगता। फ्रायडियन मनोविश्लेषण के व्याख्यात्मक मनोविज्ञान का प्रमुख विचार पिछली उन्नीसवीं शताब्दी का प्रसिद्ध तर्कवादी भौतिकवाद है। यह दुनिया की एक अलग तस्वीर नहीं बनाता है, और इसलिए दुनिया के प्रति मनुष्य का एक अलग दृष्टिकोण भी बनाता है। हालांकि, यह नहीं भूलना चाहिए कि सिद्धांतों का केवल दुर्लभ मामलों में ही स्थापना पर प्रभाव पड़ता है। भावनात्मक कारक के माध्यम से एक और अधिक प्रभावी तरीका है। वास्तव में, मैंने कभी भी शुष्क सैद्धांतिक और क्रोध को भावनाओं को जगाते नहीं देखा। मैं बंदियों के बहुत विस्तृत आँकड़े दे सकता था, लेकिन मेरे पाठक सो जाते। हालांकि, अगर मैं उसे जेल या मनोरोग अस्पताल में ले जाऊं, तो न केवल वह सोएगा, बल्कि वह बहुत प्रभावित होगा। क्या शिक्षा ने किसी को बुद्ध बनाया है? नहीं, उसकी आत्मा में बुढ़ापा, बीमारी और मृत्यु का तमाशा जल गया।

इस प्रकार, फ्रायडियन मनोविश्लेषण के आंशिक रूप से एकतरफा, आंशिक रूप से गलत विचार हमें अनिवार्य रूप से कुछ भी नहीं बताते हैं। लेकिन अगर हम बिना ब्रेक के विशिष्ट मामलों के मनोविश्लेषणात्मक विश्लेषण से परिचित हो जाते हैं और देखते हैं कि तथाकथित दमन वहां क्या तबाही मचाते हैं, सबसे महत्वपूर्ण सहज प्रक्रियाओं की उपेक्षा से क्या विनाश होते हैं, तो हम अनुभव करेंगे - ठीक ही कहा - एक मजबूत प्रभाव जमाना। त्रासदी का एक भी रूप नहीं है, जो इस मामले में "मैं" और अचेतन के बीच इस संघर्ष का परिणाम नहीं होगा। जिस किसी ने कभी भी जेल, मनोरोग अस्पताल या बुजुर्गों के लिए एक आश्रय की भयावहता को महसूस किया है, वे जो देखते हैं उसके प्रभाव के तहत, उनके विश्वदृष्टि के संवर्धन का अनुभव होगा जो उल्लेख के योग्य है। उसके साथ भी ऐसा ही होगा यदि वह नेक्रो से परे खुलने वाली मानवीय पीड़ा के रसातल में एक नज़र डालता है। मैंने कितनी बार विस्मयादिबोधक सुना है: "आखिरकार, यह भयानक है! किसने सोचा होगा!" वास्तव में, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि जब भी कोई न्यूरोसिस की संरचना की पूरी ईमानदारी और संपूर्णता के साथ जांच करने की कोशिश करता है, तो उसे अचेतन की गतिविधि से सबसे मजबूत प्रभाव का अनुभव होता है। किसी को लंदन की मलिन बस्तियों को दिखाना भी एक है। अच्छा काम है, और जिसने उन्हें देखा, वह उनसे ज्यादा जानता है जिसने उन्हें नहीं देखा। लेकिन यह सिर्फ एक धक्का है, और सवाल यह है: "इसके साथ क्या किया जाना चाहिए?" अभी भी अनुत्तरित है।

मनोविश्लेषण ने उन तथ्यों का पर्दा हटा दिया है जो केवल कुछ ही लोगों को ज्ञात

थे, और यहां तक कि इन तथ्यों के साथ आने का प्रयास भी किया। लेकिन इसके लिए उसके पास क्या सेटिंग है? क्या मनोविश्लेषण का दृष्टिकोण नया है, दूसरे शब्दों में, क्या इससे उस विशाल प्रभाव का कोई लाभकारी प्रभाव पड़ा है? क्या उसने दुनिया की छवि बदल दी और इस तरह हमारे विश्वदृष्टि को आगे बढ़ाया? मनोविश्लेषण का विश्वदृष्टि तर्कवादी भौतिकवाद है - अनिवार्य रूप से, व्यावहारिक प्राकृतिक विज्ञान का विश्वदृष्टि। और हमें लगता है कि ऐसा दृष्टिकोण असंतोषजनक है। यदि हम गोएथे की कविता को उसकी माँ परिसर के संदर्भ में, नेपोलियन को पुरुष विरोध के मामले के रूप में और फ्रांसिस को यौन दमन के मामले के रूप में समझाते हैं, तो हम बहुत निराश हैं। स्वयं की ऐसी व्याख्या अपर्याप्त है और इन चीजों की बहु-मूल्यवान वास्तविकता को संतुष्ट नहीं करती है। सौंदर्य, ऐश्वर्य और पवित्रता कहाँ जाते हैं? आखिरकार, ये सबसे महत्वपूर्ण वास्तविकताएं हैं, जिनके बिना मानव जीवन बहुत खाली होगा। अनसुनी पीड़ा और संघर्ष के प्रश्न का सही उत्तर कहाँ है? इस उत्तर में, कम से कम, कुछ ऐसा लगना चाहिए था जो दुख की महानता की याद दिलाता हो। हालाँकि, तर्कवाद का तर्कसंगत रवैया जितना वांछनीय है, उतना ही वह दुख के अर्थ को दरकिनार करता है। यह एक तरफ हट जाता है और महत्वहीन घोषित किया जाता है: कुछ भी नहीं के बारे में बहुत कुछ। कई इस श्रेणी में आते हैं, लेकिन सभी नहीं।

जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है, गलती यह है कि तथाकथित मनोविश्लेषण में एक वैज्ञानिक है, लेकिन फिर भी अचेतन पर एक विशुद्ध रूप से तर्कसंगत दृष्टिकोण है। जब कोई झुकाव की बात करता है, तो वह इसके द्वारा ज्ञात कुछ व्यक्त करना चाहता है। दरअसल, वे यहां किसी अनजान बात की बात कर रहे हैं। वास्तव में, हम केवल यह जानते हैं कि मानस के अंधेरे क्षेत्र से, प्रभाव हमारे पास आते हैं जिन्हें किसी दिन अन्य कार्यों के विनाशकारी उल्लंघन से बचने के लिए चेतना द्वारा माना जाना चाहिए। एक बार में यह कहना बिल्कुल असंभव है कि इन प्रभावों का क्या प्रभाव है, चाहे वे कामुकता पर आधारित हों, शक्ति की इच्छा पर, या अन्य आकर्षण पर। यह सिर्फ इतना है कि वे, अचेतन की तरह, दोहरे या अस्पष्ट भी हैं।

मैंने पहले ही समझाया है कि यद्यपि अचेतन सब कुछ भुला दिया गया है, अतीत और दमित सब कुछ के लिए भंडार है, लेकिन साथ ही यह वह क्षेत्र है जहां सभी अवचेतन प्रक्रियाएं होती हैं, उदाहरण के लिए धारणाएं, जो चेतना तक पहुंचने के लिए बहुत कमजोर हैं; अंत में, यह वह मातृ भूमि है जिससे संपूर्ण मानसिक भविष्य विकसित होता है। और अगर हम जानते हैं कि किसी के द्वारा आपत्तिजनक इच्छा के दमन के परिणामस्वरूप उसकी ऊर्जा अन्य प्रणालियों के कामकाज में हस्तक्षेप कर सकती है, तो हम यह भी जानते हैं कि यदि कोई व्यक्ति एक नए विचार को महसूस नहीं कर सकता है जो उसके लिए विदेशी है, तो एक के रूप में इसके परिणामस्वरूप, इसकी ऊर्जा अन्य कार्यों के लिए

निर्देशित होती है, जिससे उनका उल्लंघन होता है। मैंने ऐसे कई मामले देखे हैं जिनमें असामान्य यौन कल्पनाएँ अचानक पूरी तरह से गायब हो गईं जब एक नया विचार या नई सामग्री महसूस हुई, या जब एक माइग्रेन अचानक गायब हो गया, अगर एक कविता जो अब तक अचेतन में थी चेतना के विमान में चली गई। जिस तरह कामुकता को काल्पनिक रूप से कल्पना में व्यक्त किया जा सकता है, उसी तरह रचनात्मक कल्पना को कामुकता में रूपक रूप से व्यक्त किया जा सकता है। जैसा कि वोल्टेयर ने एक बार कहा था: " एन शब्द-साधन आयात __ गुओई पुत डिजाइनर आयात __ quoi "(व्युत्पत्ति विज्ञान में, भगवान जानता है कि क्या मतलब हो सकता है भगवान जानता है कि क्या (फ्रेंच)। - अनुवाद।), और हमें अचेतन के बारे में भी यही कहना चाहिए। किसी भी मामले में, हम पहले से कभी नहीं जान सकते कि कौन सा है। अचेतन के संबंध में, हमारे पास केवल "ज्ञान के बाद" का उपहार है, क्योंकि अचेतन में चीजों की स्थिति के बारे में कुछ भी जानना असंभव है। प्राथमिकता _ उसके बारे में कोई भी निष्कर्ष एक "जैसे मानो" धारणा है।

इस स्थिति में, अचेतन हमें एक बड़े एक्स के रूप में प्रकट होता है, जहां केवल निश्चितता है कि महत्वपूर्ण प्रभाव इससे निकलते हैं। विश्व इतिहास में धर्मों पर एक नज़र हमें दिखाती है कि ये प्रभाव ऐतिहासिक रूप से कितने महत्वपूर्ण हैं। आधुनिक मनुष्य की पीड़ा पर एक नज़र हमें वही दिखाती है। केवल हम खुद को थोड़ा अलग तरीके से व्यक्त करते हैं। पांच सौ साल पहले उन्होंने कहा: "वह शैतान के पास है", अब: "उसे हिस्टीरिया है"; कहा करते थे: "वह मोहित है", अब इसे पेट न्यूरोसिस कहा जाता है। तथ्य वही हैं, सिवाय इसके कि पिछली व्याख्या शायद अधिक सटीक है। अब हमारे पास उन लक्षणों के लिए तर्कसंगत लेबल हैं जो अनिवार्य रूप से अर्थहीन हैं। क्योंकि अगर मैं कहता हूँ कि किसी पर कोई बुरी आत्मा है, तो मैं इस तथ्य का वर्णन करता हूँ कि यह व्यक्ति, वास्तव में, वास्तव में बीमार नहीं है, लेकिन एक अदृश्य आध्यात्मिक प्रभाव से पीड़ित है, जिसे वह किसी भी तरह से नियंत्रित नहीं कर सकता है। यह अदृश्य कुछ तथाकथित स्वायत्त परिसर, अचेतन सामग्री है, जिसे सचेत इच्छा के अधीन नहीं किया जा सकता है। जब आप विक्षिप्त अवस्थाओं के मनोविज्ञान का विश्लेषण करते हैं, तो आप एक तथाकथित परिसर की खोज करते हैं जो चेतना की सामग्री से अलग व्यवहार करता है, अर्थात् जैसा हम आदेश देते हैं, बल्कि अपने स्वयं के कानूनों का पालन करता है; दूसरे शब्दों में, तकनीकी शब्द का उपयोग करना स्वतंत्र, स्वायत्त है। वह एक ब्राउनी की तरह व्यवहार करता है जिसे पकड़ा नहीं जा सकता। और अगर कोई व्यक्ति जटिल के बारे में जानता है - जो विश्लेषण के उद्देश्य के अनुरूप है - तो वह शायद राहत के साथ कहेगा: "आह, इसने मुझे बहुत परेशान किया!" और जाहिर है, इससे मैं कुछ हासिल करूंगा, अर्थात् लक्षण गायब हो जाता है, जटिल, जैसा कि वे कहते हैं, हल हो गया है। हम गोएथे के साथ कह

सकते हैं: "हमें पता चला है!" लेकिन गोएथे के साथ हमें जीना जारी रखना चाहिए: "और फिर भी तेगेल में भूत हैं!" केवल अब चीजों की सही स्थिति का पता चलता है; अर्थात्, हम समझते हैं कि यह परिसर मौजूद नहीं हो सकता यदि हमारी प्रकृति ने इसे गुप्त सहज ऊर्जा के साथ संपन्न नहीं किया होता। इससे मेरा क्या मतलब है, मैं एक छोटे से उदाहरण से समझाना चाहूंगा।

रोगी एक तंत्रिका प्रकृति के गैस्ट्रिक लक्षणों से पीड़ित होता है, जिसमें भूख की स्थिति में दर्दनाक कसना होता है। विश्लेषण से पता चलता है कि माँ के लिए एक शिशु-लालसा, तथाकथित माँ परिसर। इस नई समझ के लिए धन्यवाद, लक्षण गायब हो जाते हैं, लेकिन एक लालसा बनी रहती है, जो इस मान्यता के साथ कि यह एक शिशु माँ परिसर के अलावा कुछ भी नहीं है, कम नहीं हो सकती है। जो पहले अर्ध-शारीरिक भूख और शारीरिक पीड़ा हुआ करती थी, वह अब आध्यात्मिक भूख और मानसिक पीड़ा बन गई है। एक व्यक्ति किसी चीज के लिए तरसता है और जानता है कि उसने इस लालसा को अपनी माँ से केवल एक गलतफहमी के माध्यम से जोड़ा है। असंतुष्ट उदासी का एक तथ्य है, और इस प्रश्न का उत्तर न्यूरोसिस को मदर कॉम्प्लेक्स में कम करने की तुलना में कहीं अधिक जटिल है। पीड़ा एक आग्रहपूर्ण मांग है, एक दर्दनाक, सक्रिय शून्यता जिसे कभी-कभी बस भुला दिया जा सकता है, लेकिन जिसे इच्छाशक्ति से कभी दूर नहीं किया जा सकता है। वह बार-बार प्रकट होती है। पहले तो यह पता नहीं चलता है कि यह कहां से आता है, शायद यह भी नहीं पता होता है कि व्यक्ति वास्तव में क्या चाहता है। बहुत कुछ माना जा सकता है, लेकिन इस संबंध में केवल एक ही बात निश्चित रूप से कही जा सकती है कि, मातृ परिसर से परे, अचेतन कुछ अपना दावा व्यक्त करता है और, हमारी चेतना से स्वतंत्र, हमारी आलोचना के अधीन नहीं है, यह इसमें है रास्ता खुद को बार-बार पहचानता है। यह कुछ ऐसा है जिसे मैंने एक स्वायत्त परिसर कहा है। इस स्रोत से सहज ऊर्जा ली जाती है, जिसने पहले माँ पर शिशु के दावे का समर्थन किया था, और चूंकि वयस्क चेतना को इस तरह के बचकाने दावे को असंगत के रूप में अस्वीकार करने और दबाने के लिए मजबूर किया जाता है, इसलिए यह एक न्यूरोसिस का कारण बनता है।

सभी शिशु परिसरों को अंततः अचेतन की स्वायत्त सामग्री में बदल दिया जाता है। व्यक्तियों की आदिम आत्मा ने आत्माओं, राक्षसों और देवताओं में इन विदेशी और समझ से बाहर सामग्री की पहचान की और पवित्र और जादुई संस्कारों की मदद से उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास किया। इस तथ्य को स्वीकार करते हुए कि इस भूख या प्यास को न तो भोजन या पेय से बुझाया जा सकता है, न ही गर्भ में लौटकर, आदिम आत्मा ने अदृश्य, ईर्ष्यालु और दिखावा करने वाले प्राणियों की छवियां बनाईं, जो मनुष्य की तुलना में अधिक प्रभावशाली, मजबूत और अधिक खतरनाक हैं। अदृश्य दुनिया। , जो फिर भी मूर्त के साथ जुड़ा हुआ है, और इतनी बारीकी से कि आत्माएं स्वयं

बर्तनों में रहती हैं। आत्माएं और टोना -टोटके - ऐसे ही आप आदिम मनुष्य के रोगों के कारण हैं। इन अलौकिक आकृतियों पर उनमें स्वायत्त सामग्री का अनुमान लगाया गया था। हमारी दुनिया, इसके विपरीत, राक्षसों से मुक्त है - छोटे से छोटे अवशेषों तक। लेकिन स्वायत्त सामग्री और उनके दावे बने रहे। आंशिक रूप से उन्हें धर्मों में व्यक्त किया जा सकता है, लेकिन जितना अधिक तर्कसंगत और सामग्री धर्मों से खाली हो जाता है - उनका लगभग अपरिहार्य भाग्य - उतना ही जटिल और रहस्यमय तरीके बन जाते हैं जिनके साथ अचेतन की सामग्री फिर भी हम तक पहुंचती है। सबसे आम रास्तों में से एक न्यूरोसिस है, हालांकि पहले तो यह सबसे कम माना जाता था। न्यूरोसिस द्वारा, वे आमतौर पर केवल एक अपूर्ण मूल्य, एक चिकित्सा " मात्रा नगण्य" (एक नगण्य राशि (फ्रेंच) - अनुवाद।) को समझते थे। लेकिन जैसा कि हम देख सकते हैं, यह पूरी तरह से गलत है! न्यूरोसिस के लिए उन शक्तिशाली मानसिक प्रभावों को छुपाता है जो हमारे आध्यात्मिक दृष्टिकोण के आधार पर होते हैं और उनके सबसे प्रभावशाली, मार्गदर्शक विचार। तर्कवादी भौतिकवाद, जो एक बहुत ही विश्वसनीय प्रवृत्ति प्रतीत होती है, रहस्यवाद का मनोवैज्ञानिक विरोध है। भौतिकवाद और रहस्यवाद, नास्तिकता और आस्तिकता की तरह, विरोधों की एक मनोवैज्ञानिक जोड़ी से ज्यादा कुछ नहीं हैं। वे दो अलग-अलग तरीकों से युद्धरत भाई हैं, जो किसी तरह प्रमुख अचेतन प्रभावों से निपटने की कोशिश कर रहे हैं, एक निषेध द्वारा, दूसरा पुष्टि द्वारा।

इसलिए, यदि मुझे सबसे आवश्यक चीज का नाम देना आवश्यक है जो विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान हमारी दृष्टि की दुनिया में जोड़ सकता है, तो यह अचेतन सामग्री के अस्तित्व का ज्ञान होगा जो स्पष्ट मांग करता है या प्रभाव विकीर्ण करता है जिसके साथ वॉलेंस नोलेंस को चेतना से निपटना चाहिए।

शायद मेरी पिछली सभी चर्चाओं ने असंतोष की भावना पैदा की होगी यदि मैंने अचेतन की स्वायत्त सामग्री को अनिश्चित रूप में छोड़ दिया था और कम से कम यह बताने का प्रयास नहीं किया था कि हमारे मनोविज्ञान ने इन के संबंध में अनुभवजन्य रूप से क्या स्थापित किया है। सामग्री।

यदि, जैसा कि मनोविश्लेषण का मानना है, इसने एक अंतिम और संतोषजनक उत्तर दिया, उदाहरण के लिए, पीड़ा का कारण मां पर मूल, शिशु निर्भरता है, तो इस निष्कर्ष के साथ राहत भी आनी होगी। ऐसी शिशु निर्भरताएँ हैं जो वास्तव में गायब हो जाती हैं जब उन्हें पूरी तरह से समझा जाता है। लेकिन इस तथ्य से हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि सभी मामलों में ऐसा ही होता है। हमेशा कुछ बचा रहता है, कभी-कभी स्पष्ट रूप से इतना छोटा कि मामले को लगभग समाप्त माना जा सकता है, लेकिन कभी-कभी शेष इतना बड़ा होता है कि न तो रोगी और न ही डॉक्टर परिणाम से संतुष्ट होते हैं, इस हद तक कि ऐसा महसूस होता है कि वहाँ है कुछ भी नहीं। किया जाएगा। इसके अलावा, मुझे

कई रोगियों का इलाज करना पड़ा है, जो उनके कारण के बारे में विस्तार से जानते थे, लेकिन इस समझ ने उन्हें किसी भी महत्वपूर्ण तरीके से मदद नहीं की।

कारण स्पष्टीकरण वैज्ञानिक रूप से अपेक्षाकृत संतोषजनक हो सकता है, लेकिन अपने आप में अभी भी कुछ मनोवैज्ञानिक रूप से असंतोषजनक है, क्योंकि अभी भी सहज ऊर्जा के उद्देश्य के बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं है, जैसे कि लालसा का अर्थ, और यह उतना ही स्पष्ट नहीं है कि आपको इसके साथ क्या करना है . अगर मुझे पहले से पता है कि दूषित पानी टाइफाइड महामारी का कारण है, तो दूषित स्रोत अभी भी पहले जैसा ही है। इसलिए, एक संतोषजनक उत्तर अभी दिया जाएगा जब हमें पता चलेगा कि यह क्या है, जो वयस्कता तक, एक जीवंत शिशु निर्भरता बनाए रखता है, और यह क्या है।

यदि मानव आत्मा जन्म से ही एक निरपेक्ष तबला थी रस (स्वच्छ स्लेट (latl - Transl), तो ये समस्याएं मौजूद नहीं होंगी, क्योंकि तब आत्मा में और कुछ नहीं होगा, सिवाय इसके कि उसने क्या हासिल किया होगा या इसमें निवेश किया होगा। हालाँकि, व्यक्ति में बहुत कुछ है मानव आत्मा जिसे उसने कभी हासिल नहीं किया है, क्योंकि मानव आत्मा मूल रूप से एक तबला नहीं है। रस , जिस तरह किसी भी व्यक्ति के पास बिल्कुल नया और अनोखा दिमाग नहीं होता है। उनका जन्म एक मस्तिष्क के साथ हुआ है जो-पूर्वजों की अनंत लंबी कतार में विकास का परिणाम है। यह मस्तिष्क प्रत्येक भ्रूण में अपनी पूर्ण विभेदित पूर्णता प्राप्त करता है, और यदि यह अपना कार्य करना शुरू कर देता है, तो निश्चित रूप से ऐसे परिणाम सामने आएंगे जो पूर्वजों की श्रृंखला में अनगिनत बार पहले ही उत्पन्न हो चुके हैं। संपूर्ण मानव शरीर रचना एक विरासत में मिली प्रणाली है, जो पैतृक संविधान के समान है, जो निश्चित रूप से पहले की तरह ही कार्य करेगी। इसलिए, संभावना है कि कुछ नया, पिछले एक से काफी अलग, उत्पादन किया जाएगा, असीम रूप से छोटा है। नतीजतन, वे सभी कारक जो हमारे निकट और दूर के पूर्वजों के लिए विरासत में मिली जैविक प्रणाली के अनुरूप होने के कारण आवश्यक थे, हमारे लिए भी आवश्यक होंगे। वे आवश्यकताएं भी हैं जो स्वयं को आवश्यकताओं के रूप में प्रकट करेंगी।

मेरे पाठक को इस बात से डरने की जरूरत नहीं है कि मैं उनसे विरासत में मिले विचारों के बारे में बात करूंगा। मैं इस विचार से बहुत दूर हूँ। अचेतन की स्वायत्त सामग्री, या अचेतन के प्रभुत्व, जैसा कि मैंने उन्हें कहा था, जन्मजात प्रतिनिधित्व नहीं हैं , बल्कि जन्मजात संभावनाएं, यहां तक कि आवश्यकताएं, उन अभ्यावेदन को फिर से बनाने के उद्देश्य से हैं जो लंबे समय से अचेतन के प्रभुत्व के माध्यम से व्यक्त किए गए हैं। बेशक, हर सांसारिक धर्म और हर समय की अपनी विशेष भाषा होती है, जो अंतहीन रूप से भिन्न हो सकती है। हालांकि, अगर पौराणिक कथाओं में नायक एक अजगर, एक मछली, या किसी अन्य राक्षस को हरा देता है, तो यह अंतर इतना महत्वपूर्ण नहीं है; मूल उद्देश्य वही

रहता है, और यह मानव जाति की संपत्ति है, न कि विभिन्न क्षेत्रों और समयों के क्षणिक सूत्रीकरण।

इस प्रकार, एक व्यक्ति एक जटिल आध्यात्मिक प्रवृत्ति के साथ पैदा होता है, जो किसी भी तरह से एक सारणी नहीं है। मुंडा। यहां तक कि सबसे साहसी कल्पना के लिए, कुछ सीमाओं को आध्यात्मिक आनुवंशिकता द्वारा रेखांकित किया गया है, और सबसे बेलगाम कल्पना के घूँघट के माध्यम से, झिलमिलाता है जो प्राचीन काल से मानव आत्मा में निहित है। हमें यह जानकर बहुत आश्चर्य होता है कि मानसिक रूप से बीमार व्यक्ति की कल्पनाएँ कभी-कभी लगभग एक आदिम व्यक्ति की कल्पनाओं के समान होती हैं। हालांकि, अगर ऐसा नहीं होता तो आश्चर्य होता।

मैंने मानसिक आनुवंशिकता के क्षेत्र को सामूहिक अचेतन कहा है। हम सभी ने अपनी चेतना की सामग्री को व्यक्तिगत रूप से हासिल कर लिया है। यदि मानव मानस में चेतना के अलावा और कुछ नहीं होता, तो कुछ भी मानसिक नहीं होता, जो कुछ भी व्यक्तिगत जीवन के दौरान विशेष रूप से उत्पन्न होता है। इस मामले में, हम एक साधारण माता-पिता के परिसर के पीछे किसी भी स्थिति और प्रभावों के लिए व्यर्थ देखेंगे। पिता और माता के लिए सब कुछ कम करना अंतिम शब्द होगा, क्योंकि वे हमारे चेतन मानस पर काम करने वाले पहले और एकमात्र आंकड़े हैं। वास्तव में, हमारी चेतना की सामग्री न केवल व्यक्तिगत वातावरण के प्रभाव के कारण उत्पन्न हुई है; वे मानसिक आनुवंशिकता, सामूहिक अचेतन द्वारा एक निश्चित क्रम में प्रभावित और व्यवस्थित भी थे। बेशक, व्यक्तिगत माँ की छवि प्रभावशाली है, लेकिन यह विशेष रूप से प्रभावशाली भी है क्योंकि यह अचेतन तत्परता से जुड़ी है, यानी एक जन्मजात प्रणाली या छवि के साथ, जो इस तथ्य के लिए अपने अस्तित्व का श्रेय देती है कि माँ और बच्चे हमेशा से रहे हैं। एक सहजीवी संबंध में। यदि माता का किसी न किसी अर्थ में अस्तित्व न हो तो क्षति होती है, अर्थात् माता की सामूहिक छवि की पूर्ति की आवश्यकता पूरी नहीं होती है। वृत्ति यहाँ नुकसान में है, इसलिए बोलने के लिए। बहुत बार विक्षिप्त विकार, या कम से कम कुछ विशेष लक्षण, इसके परिणामस्वरूप होते हैं। यदि सामूहिक अचेतन नहीं होता, तो सब कुछ केवल शिक्षा द्वारा किया जा सकता था; यह संभव होगा, बिना नुकसान पहुंचाए, किसी व्यक्ति को एक एनिमेटेड मशीन में बदलना या एक आदर्श का पोषण करना। लेकिन ये सभी प्रयास संकीर्ण सीमाओं तक सीमित हैं, क्योंकि अचेतन के प्रभुत्व हैं, जो प्रदर्शन के लिए लगभग दुर्गम मांगों को सामने रखते हैं।

इसलिए, यदि गैस्ट्रिक न्यूरोसिस से पीड़ित रोगी के मामले में, मुझे वास्तव में यह बताना है कि वह क्या है जो व्यक्तिगत मातृ परिसर से परे एक पीड़ा को बनाए रखता है जो कि अनिश्चित है और यह दर्दनाक है, तो उत्तर है: यह एक सामूहिक है एक माँ की छवि, किसी दी गई व्यक्तिगत माँ की नहीं, बल्कि बस एक माँ की।

लेकिन मुझसे पूछा जा सकता है कि इस सामूहिक छवि को इतनी पीड़ा क्यों देनी चाहिए? इस सवाल का जवाब देना इतना आसान नहीं है। लेकिन अगर कोई सीधे तौर पर कल्पना कर सकता है कि सामूहिक छवि क्या है और इसका क्या अर्थ है, जिसे मैं एक विशेष शब्द का प्रयोग करते हुए, जिसे *मूलरूप भी कहा जाता है*, तो इसके संचालन को समझना आसान होगा।

इसे स्पष्ट करने के लिए, मैं निम्नलिखित पर विचार करना चाहूंगा: माँ - बच्चे का रिश्ता हमेशा उन लोगों में सबसे गहरा और सबसे मौलिक होता है जिन्हें हम जानते हैं; आखिरकार, बच्चा हमेशा के लिए माँ के शरीर का हिस्सा बन गया है! बाद में, कई वर्षों तक, वह माँ के आध्यात्मिक वातावरण का एक अभिन्न अंग बना रहता है, और इस प्रकार, बच्चे में जो कुछ भी महत्वपूर्ण है वह अविभाज्य रूप से माँ की छवि के साथ विलीन हो जाता है। यह न केवल एक व्यक्तिगत मामले के लिए सच है, बल्कि ऐतिहासिक रूप से भी पुष्टि की जाती है। यह पूर्वजों की एक श्रृंखला का पूर्ण अनुभव है, ठीक एक जैविक सत्य के समान, ठीक उसी तरह जैसे लिंगों का एक दूसरे से संबंध। बेशक, मूलरूप में, माँ की सामूहिक रूप से जन्मजात छवि में, रिश्ते की वह अत्यधिक तीव्रता भी होती है जो बच्चे को सहज रूप से अपनी माँ से चिपके रहने के लिए प्रेरित करती है। इन वर्षों में, एक व्यक्ति स्वाभाविक रूप से माँ से विदा हो जाता है, लेकिन (जैसा कि स्वाभाविक रूप से) मूलरूप से नहीं, यह मानते हुए कि वह अब आदिमता की स्थिति में नहीं है, जो लगभग एक जानवर की तरह है, लेकिन पहले से ही एक निश्चित चेतना तक पहुंच गया है और , एक विशेष संस्कृति के विषयों के साथ। यदि वह केवल सहज है, तो उसका जीवन बिना किसी मनमानी के आगे बढ़ता है, जिसे चेतना हमेशा मानती है। यह अचेतन नियमों के अनुसार बहती है, और कहीं भी मूलरूप से कोई विचलन नहीं है। लेकिन अगर कम से कम कुछ हद तक प्रभावी चेतना है, तो चेतन सामग्री हमेशा अचेतन पर हावी रहती है, जिसके परिणामस्वरूप यह भ्रम होता है कि माँ से अलग होने में और कुछ नहीं हुआ, सिवाय इसके कि वह बच्चा नहीं रहा। इस व्यक्तिगत महिला की। आखिरकार, केवल व्यक्तिगत रूप से अर्जित सामग्री ही चेतना के लिए जानी जाती है, और इसलिए यह केवल व्यक्तिगत माँ को जानती है और इस तथ्य के बारे में कुछ भी नहीं जानती है कि वह "शाश्वत" माँ के मूलरूप के वाहक और प्रतिनिधि भी हैं। लेकिन माँ से अलगाव तभी संतोषजनक होता है जब इसमें मूलरूप भी शामिल हो। बेशक, वही पिता से अलग होने के लिए जाता है।

स्वाभाविक रूप से, चेतना का उदय और, साथ ही, इच्छा की सापेक्ष स्वतंत्रता, मूलरूप से और इस प्रकार वृत्ति से विचलित होना संभव बनाती है। यदि इस तरह की वापसी होती है, तो चेतना और अचेतन के बीच एक पृथक्करण होता है, जिसके परिणामस्वरूप एक मूर्त, और ज्यादातर मामलों में अचेतन की बहुत अप्रिय कार्रवाई शुरू होती है, जो एक आंतरिक, अचेतन कमी के रूप में व्यक्त की जाती है। स्वतंत्रता की,

लक्षणों में प्रकट, अर्थात् अप्रत्यक्ष रूप से। अंततः ऐसी स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं जिनके विश्लेषण से ऐसा प्रतीत होता है मानो माँ से अलगाव अभी भी नहीं हुआ है।

हालाँकि आदिम आत्मा इस दुविधा को नहीं समझती थी, फिर भी उसने इसे स्पष्ट रूप से महसूस किया और इसलिए बचपन और वयस्कता के बीच अत्यंत महत्वपूर्ण संस्कारों को शामिल किया - पुरुषों में परिपक्वता और दीक्षा के अनुष्ठान, एक बहुत ही उचित लक्ष्य के साथ - माता-पिता से अलगाव को जादुई रूप से प्रभावित करने के लिए।- यह घटना पूरी तरह से बेमानी होगी यदि माता-पिता के प्रति रवैया भी जादू की तरह नहीं लगता। हालाँकि, सब कुछ जादुई है जिसमें अचेतन प्रभाव शामिल हैं। इस तरह के अनुष्ठानों का उद्देश्य न केवल माता-पिता से अलग होना है, बल्कि एक व्यक्ति को एक वयस्क अवस्था में बदलना भी है। इसके लिए जरूरी है कि बचपन पीछे मुड़कर देखने की वेदना न छोड़े, यानि उल्लंघन करने वाले की मांग को पूरा किया जाए। यह इस तथ्य से प्राप्त होता है कि माता-पिता के साथ आंतरिक संबंध अब एक और संबंध, अर्थात् कबीले और जनजाति के साथ संबंध द्वारा विरोध किया जाता है। अक्सर, शरीर के कुछ निशान, जैसे खतना और निशान, साथ ही रहस्यमय निर्देश जो युवा व्यक्ति को दीक्षा में प्राप्त होते हैं। अक्सर, दीक्षाएँ स्पष्ट रूप से क्रूर होती हैं।

यह वह तरीका है जिसमें आदिम मनुष्य, अपने अचेतन कारणों से, मूलरूप की आवश्यकताओं को पूरा करना आवश्यक समझता है। उसके लिए केवल अपने माता-पिता से अलग होना पर्याप्त नहीं है - उसे एक क्रूर दृश्य समारोह की आवश्यकता है जिसमें उन ताकतों के लिए बलिदान की उपस्थिति हो जो एक युवा व्यक्ति को रखने में सक्षम हैं। इसके लिए धन्यवाद, कोई तुरंत यह निर्धारित कर सकता है कि मूलरूप की ताकत क्या है: यह आदिम मनुष्य को प्रकृति का विरोध करने के लिए मजबूर करता है, ताकि उसकी दया पर न हो। शायद यह सभी संस्कृति की शुरुआत है, अचेतन कानून से बचने की क्षमता के साथ चेतना का अपरिहार्य परिणाम है।

ये चीजें लंबे समय से हमारी दुनिया के लिए विदेशी हो गई हैं, लेकिन साथ ही प्रकृति ने कभी भी हम में अपनी शक्ति नहीं खोई है। हमने केवल यही सीखा है कि इसे कम करके आंका जाए। लेकिन जैसे ही यह सवाल उठता है कि हमें अचेतन सामग्री के प्रभाव का विरोध कैसे करना है, हम तुरंत खुद को मुश्किल स्थिति में पाते हैं। आखिर हमारे लिए अब आदिम संस्कारों की कोई बात ही नहीं रह सकती। यह पीछे की ओर एक कृत्रिम और अत्यधिक अक्षम कदम होगा। हम इसके लिए पहले से ही बहुत आलोचनात्मक और मनोवैज्ञानिक हैं। अगर कोई मुझसे इस सवाल का जवाब मांगे तो मैं हैरान रह जाऊंगा। इस अवसर पर, मैं केवल एक ही बात कह सकता हूँ, कि मैंने लंबे समय से उन रास्तों का अवलोकन किया है जो मेरे कई रोगी सहज रूप से अपने अचेतन की मांगों को पूरा करने के लिए लेते हैं। ध्यान रहे, अगर मैं अपनी टिप्पणियों के बारे में बात करने का फैसला

करता तो मैं रिपोर्ट के दायरे से बहुत आगे निकल जाता । इसलिए, मैं पाठक को विशिष्ट साहित्य के संदर्भ में संदर्भित करने के लिए मजबूर हूं, जहां इस मुद्दे पर विस्तार से चर्चा की जाती है।

अगर इस पत्र में मैं यह समझने में मदद कर सकता कि हमारी अपनी अचेतन आत्मा में वे शक्तियाँ सक्रिय हैं जिन्हें मनुष्य ने लंबे समय से देवताओं के रूप में बाहर की ओर प्रक्षेपित किया है और जिनके लिए उसने बलिदान किया है, तो मुझे इससे संतुष्टि होगी। इस तरह की समझ के साथ, हम यह साबित करने में सक्षम होंगे कि सभी विभिन्न धार्मिक शिक्षाएं और मान्यताएं, जिन्होंने प्राचीन काल से मानव जाति के इतिहास में इतनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, व्यक्तियों के मनमाने विचारों और विचारों के लिए कम नहीं हैं, बल्कि उनके द्वारा उनकी उत्पत्ति काफी हद तक शक्तिशाली अचेतन शक्तियों के अस्तित्व के कारण हुई है, जिन्हें मानसिक संतुलन को बिगाड़े बिना उपेक्षित नहीं किया जा सकता है। मैंने मदर कॉम्प्लेक्स के उदाहरण से जो समझाया है, वह निश्चित रूप से कई मामलों में से एक है। मदर आर्कटाइप एक विशेष मामला है, और कई अन्य आर्कटाइप्स को आसानी से इसमें जोड़ा जा सकता है। अचेतन प्रभुत्व की ऐसी भीड़ धार्मिक विचारों की विविधता की व्याख्या करती है।

ये सभी कारक अभी भी हमारी आत्मा में सक्रिय हैं, केवल उनके भाव और मूल्यांकन अप्रचलित हैं, लेकिन उनका वास्तविक अस्तित्व और प्रभावशीलता नहीं है। तथ्य यह है कि अब हम उन्हें मानसिक मात्रा के रूप में समझ सकते हैं, एक नया सूत्रीकरण, एक नई अभिव्यक्ति है, जो उन तरीकों की खोज करना भी संभव बना सकती है जिनसे उनके साथ एक नया संबंध उत्पन्न हो सकता है। मेरा मानना है कि यह संभावना कुछ बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि सामूहिक अचेतन किसी भी तरह से एक अंधेरे कोने जैसा कुछ नहीं है, लेकिन यह तलछट है जो हर चीज पर हावी है, पूर्वजों का अनुभव जो अनगिनत लाखों वर्षों में विकसित हुआ है, प्रागैतिहासिक की एक प्रतिध्वनि है दुनिया की घटनाएँ, जिसमें प्रत्येक शताब्दी भिन्नता और भिन्नता की अनुपातहीन रूप से छोटी मात्रा को जोड़ती है। चूंकि सामूहिक अचेतन दुनिया की घटनाओं का तलछट है, जो अंततः मस्तिष्क की संरचना और सहानुभूति तंत्रिका तंत्र में व्यक्त किया जाता है, तो इसकी समग्रता में इसका अर्थ कालातीत जैसा कुछ है, इसलिए बोलने के लिए, दुनिया की शाश्वत छवि, हमारे क्षणिक सचेतन चित्र के विपरीत। शांति। दूसरे शब्दों में, इसका मतलब दूसरे से ज्यादा कुछ नहीं है, अगर आपको पसंद है, तो मिरर वर्ल्ड। लेकिन एक साधारण दर्पण छवि के विपरीत, अचेतन छवि में चेतना से स्वतंत्र एक विशेष ऊर्जा होती है, जिसकी बदौलत यह सबसे मजबूत मानसिक प्रभाव डाल सकती है, ऐसे प्रभाव जो पूरी तरह से दुनिया की सतह पर नहीं दिखाए जाते हैं, लेकिन इससे भी अधिक शक्तिशाली प्रभाव डालते हैं। हमें भीतर से, अंधेरे से, किसी के लिए भी अदृश्य, जो दुनिया की अपनी क्षणिक छवि की

पर्याप्त रूप से आलोचना नहीं करता है और इस तरह खुद से छिपा रहता है। तथ्य यह है कि दुनिया में न केवल बाहरी है, बल्कि आंतरिक भी है, कि यह न केवल बाहर है, बल्कि आत्मा के सबसे गहरे और, जाहिरा तौर पर, सबसे व्यक्तिपरक आधार से हम पर हमेशा शक्तिशाली रूप से कार्य करता है, मैं एक वैज्ञानिक तथ्य मानता हूँ, जो , प्राचीन ज्ञान होने के बावजूद, इस रूप में विश्वदृष्टि को आकार देने वाले कारक के रूप में महत्व दिया जाना चाहिए।

विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान एक विश्वदृष्टि नहीं है , बल्कि एक विज्ञान है, और इस तरह यह सामग्री या उपकरण प्रदान करता है जिसके साथ एक व्यक्ति अपने विश्वदृष्टि का निर्माण, तोड़ या अन्यथा सुधार कर सकता है। आज बहुत कम लोग विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान में विश्वदृष्टि को समझते हैं। मैं चाहूँगा कि यह एक हो, क्योंकि तब मैं शोध और संदेह के दर्दनाक कार्य से मुक्त हो जाऊँगा, और स्पष्ट रूप से और सरलता से उस मार्ग को इंगित कर सकता हूँ जो स्वर्ग की ओर ले जाता है। दुर्भाग्य से, हम अभी भी इससे बहुत दूर हैं। मैं सिर्फ विश्व दृष्टिकोण के साथ प्रयोग कर रहा हूँ, यह पता लगाने की कोशिश कर रहा हूँ कि नई घटना का मूल्य और सीमा क्या है। और यह प्रयोग, एक निश्चित अर्थ में, ऐसा है, क्योंकि अंतिम विश्लेषण में हमारा अपना अस्तित्व प्रकृति का वही प्रयोग है, एक नए संयोजन के साथ एक प्रयोग है ।

विज्ञान कभी भी एक विश्वदृष्टि नहीं है; वह सिर्फ उसका उपकरण है। क्या यह उपकरण किसी के हाथ में पड़ता है, यह प्रति-प्रश्न पर निर्भर करता है: दिए गए व्यक्ति के पास पहले से किस तरह का विश्वदृष्टि है, क्योंकि ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जिसके पास विश्वदृष्टि नहीं होगी। चरम मामलों में, उसके पास विश्वदृष्टि है जो उसके पालन-पोषण और पर्यावरण द्वारा उस पर थोपी गई थी। यदि, उदाहरण के लिए, यह विश्वदृष्टि उसे बताती है कि "पृथ्वी के बच्चों की सर्वोच्च खुशी केवल एक व्यक्ति होने में है," तो वह विज्ञान और उसके परिणामों को एक उपकरण के रूप में उपयोग करने के क्रम में जब्त करने में संकोच नहीं करेगा। एक विश्वदृष्टि बनाएं और इस प्रकार स्वयं स्वयं। लेकिन अगर वह जो विचार विरासत में मिला है, वह कहता है कि विज्ञान एक उपकरण नहीं है , बल्कि अपने आप में एक अंत है, तो वह एक ऐसे नारे का अनुसरण कर रहा होगा जिसने पिछले डेढ़ सौ वर्षों में अधिक से अधिक गति प्राप्त की है, और व्यावहारिक रूप से निर्णायक साबित हुआ है। हालांकि कुछ लोगों ने इसका कड़ा विरोध किया, क्योंकि पूर्णता और अर्थ के उनके विचार मानव व्यक्तित्व के सुधार में परिणत हुए, न कि तकनीकी साधनों के भेदभाव में, जो अनिवार्य रूप से एक निश्चित प्रवृत्ति के एकतरफा भेदभाव की ओर ले जाता है , उदाहरण के लिए, एक संज्ञानात्मक आवश्यकता। यदि विज्ञान अपने आप में एक साध्य है, तो मनुष्य के पास उसका आश्रय है d ' etre (अस्तित्व का अर्थ (फ्रेंच। - अनुवाद।) केवल बुद्धि। यदि कला अपने आप में अंत है , तो व्यक्ति के लिए एकमात्र मूल्य कलात्मक क्षमता है, और

बुद्धि पेंटी में जाती है। यदि पैसा अपने आप में एक साध्य है, तो विज्ञान और कला सुरक्षित रूप से अपना सामान पैक कर सकते हैं। इस बात से कोई इंकार नहीं कर सकता कि आधुनिक चेतना अपने आप में इन छोरों में लगभग निराशाजनक रूप से विभाजित है। लेकिन इस तरह लोगों को केवल व्यक्तिगत गुणों के रूप में विकसित किया जाता है, वे स्वयं उपकरण बन जाते हैं।

पिछले एक सौ पचास वर्षों में, हमने एक से अधिक विश्वदृष्टि का अनुभव किया है - इस बात का प्रमाण है कि विश्वदृष्टि ही बदनाम है, क्योंकि बीमारी का इलाज करना जितना कठिन है, उसके लिए उतनी ही अधिक दवाएं उपलब्ध हैं, और अधिक उपचार उपलब्ध हैं, उनमें से प्रत्येक जितना अधिक अविश्वास प्रेरित करता है। उन्हें। किसी को यह आभास हो जाता है कि "विश्वदृष्टि" की घटना पूरी तरह से उपयोग से बाहर हो गई है।

यह कल्पना करना कठिन है कि इस तरह की प्रक्रिया सिर्फ एक दुर्घटना, एक कष्टप्रद और संवेदनहीन भ्रम बन जाएगी, क्योंकि अपने आप में कुछ सुंदर और उपयोगी आमतौर पर सतह से समान रूप से दयनीय और संदिग्ध दुनिया के गायब होने की ओर नहीं ले जाता है। कुछ बेकार और निंदनीय पहले से ही उससे चिपक रहा है। इसलिए, हमें यह प्रश्न उठाना चाहिए: विश्वदृष्टि का भ्रम क्या है?

मुझे ऐसा लगता है कि पुराने विश्व दृष्टिकोण की घातक त्रुटि यह है कि यह एक वस्तुनिष्ठ सत्य माने जाने का दावा करता है, और अंततः एक स्थापित वैज्ञानिक तथ्य की तरह कुछ भी, जो तब, उदाहरण के लिए, असहनीय निष्कर्ष की ओर ले जाता है कि एक और एक ही प्रिय भगवान को जर्मनों, और फ्रांसीसी, और अंग्रेजों, और तुर्कों, और यहां तक कि पगानों की मदद करनी चाहिए, और अंत में - सभी के खिलाफ। आधुनिक चेतना, दुनिया की घटनाओं की अपनी आगे की समझ में, मुख्य रूप से दर्शन के माध्यम से इस स्थिति को बदलने का प्रयास करने के बाद, इस तरह की राक्षसीता से कंपकंपी से दूर हो गई। लेकिन यह पता चला कि दर्शन भी वस्तुनिष्ठ सत्य माने जाने का दावा करने लगा। इसने इसे बदनाम कर दिया, और इस प्रकार हम विभेदक विभाजन के साथ समाप्त हो गए, इसके अनुशासित परिणामों से कम नहीं।

किसी भी विश्वदृष्टि की मूल त्रुटि चीजों को खुद को सच मानने की अद्भुत प्रवृत्ति है, जबकि वास्तव में वे सिर्फ नाम हैं जो हम उन्हें देते हैं। क्या हम विज्ञान में इस बारे में बहस करेंगे कि क्या "नेपच्यून" नाम आकाशीय पिंड के सार से मेल खाता है और इसलिए यह एकमात्र "सही" नाम है? किसी भी तरह से नहीं! और यही वजह है

विज्ञान अधिक मूल्यवान है क्योंकि यह केवल कार्यशील परिकल्पनाओं को जानता है। केवल आदिम आत्मा ही "सही नामों" में विश्वास करती है। यदि एक परी कथा में एक सूक्ति को उसके असली नाम से पुकारा जाता है, तो उसे टुकड़े-टुकड़े किया जा सकता है। नेता अपना असली नाम छुपाता है और रोजमर्रा के उपयोग के लिए खुद को एक विदेशी

नाम देता है, ताकि कोई भी उसका असली नाम जानकर उसे मोहित न कर सके। खुदा और प्रतीकात्मक रूप से देवताओं के नाम वाली वस्तुओं को मिस्र के फिरौन की कब्र में रखा गया था, ताकि वह उनके असली नामों को जानकर उन पर काबू पा सके। कैबलिस्ट के लिए, भगवान के असली नाम का होना पूर्ण जादुई शक्ति का प्रतीक है। संक्षेप में: आदिम आत्मा के लिए, नाम से ही वस्तु का प्रतिनिधित्व किया जाता है। "वह जो कहता है वह ऐसा हो जाता है," पट्टा की प्राचीन कहावत कहती है।

आदिमता के इस हिस्से से ग्रस्त है। और जिस तरह खगोल विज्ञान अभी तक मंगल ग्रह के निवासियों के अपने ग्रह के गलत नाम के दावों से अवगत नहीं है, इसलिए हम सुरक्षित रूप से यह मान सकते हैं कि दुनिया बिल्कुल परवाह नहीं करती है कि हम इसके बारे में क्या सोचते हैं। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हमें इसके बारे में सोचना बंद कर देना चाहिए। हम ऐसा नहीं करते हैं, और विज्ञान पुराने, विभाजित विश्वदृष्टि की बेंटी और उत्तराधिकारी के रूप में जीना जारी रखता है। लेकिन इस तरह के "सत्ता परिवर्तन" के दौरान जो गरीब हो गया वह एक व्यक्ति है। पुरानी शैली की विश्वदृष्टि में, उन्होंने भोलेपन से अपनी आत्मा को चीजों में डाल दिया, वे अपने चेहरे को दुनिया के चेहरे के रूप में देख सकते थे, खुद को एक भगवान की समानता के रूप में देख सकते थे, जिनकी महानता के लिए कुछ दंड के साथ भुगतान करना मुश्किल नहीं था। नर्क का। विज्ञान में, एक व्यक्ति अपने बारे में नहीं सोचता है, बल्कि केवल दुनिया के बारे में, वस्तु के बारे में सोचता है: उसने खुद को दूर कर दिया और अपने व्यक्तित्व को उद्देश्य भावना के लिए बलिदान कर दिया। इसलिए, नैतिक अर्थों में, वैज्ञानिक भावना पुराने विश्वदृष्टि से अधिक है।

मानव व्यक्तित्व की इस मृत्यु के परिणामों को महसूस करने लगे हैं। हर जगह सवाल विश्वदृष्टि के बारे में उठता है, जीवन के अर्थ और दुनिया के बारे में। हमारे समय में पुरातनता की विश्वदृष्टि में फिर से शामिल होने के कई प्रयास हैं, अर्थात्, थियोसोफी, या, यदि यह आपके स्वाद के लिए अधिक है, तो मानवशास्त्र। हमें एक विश्वदृष्टि की इच्छा है, जो भी हो, युवा पीढ़ी के पास है। लेकिन अगर हम विपरीत दिशा में विकास नहीं करना चाहते हैं, तो नई विश्वदृष्टि को अपने उद्देश्य बल में सभी अंधविश्वासों को समाप्त करना होगा, यह पहचानने में सक्षम होना चाहिए कि यह केवल एक तस्वीर है जिसे हम अपनी आत्मा के लिए चित्रित करते हैं।, और कोई जादू का नाम नहीं जिसके द्वारा हम चीजों को समझते हैं। हमारे पास दुनिया के लिए नहीं, बल्कि अपने लिए एक विश्वदृष्टि है। अगर हम पूरी दुनिया की छवि नहीं बनाते हैं, तो हम खुद को भी नहीं देखते हैं, क्योंकि हम इस विशेष दुनिया के सटीक प्रतिबिंब हैं। और दुनिया की हमारी तस्वीर के आईने में ही हम खुद को समग्र रूप से देख सकते हैं। हम जो छवि बनाते हैं, उसमें ही हम अपने सामने प्रकट होते हैं। केवल अपनी रचनात्मक गतिविधि में ही हम पूरी तरह से अंधेरे से बाहर निकलते

हैं और स्वयं समग्र रूप से संज्ञेय बन जाते हैं। हम दुनिया को कभी भी अपने से अलग चेहरा नहीं देंगे, और इसलिए हमें खुद को खोजने के लिए ऐसा करना चाहिए। अपने आप में विज्ञान या कला के अंत से ऊपर के लिए मनुष्य खड़ा है, अपने उपकरणों का निर्माता। हम अपने स्वयं के ज्ञान के रूप में सभी शुरुआत के सबसे उदात्त रहस्य के इतने करीब नहीं खड़े होते हैं, जो हमारे शाश्वत भ्रम के कारण हमेशा हमें पहले से ही ज्ञात लगता है। हालाँकि, वास्तव में, विश्व ब्रह्मांड की गहराई हमें आत्म की गहराई की तुलना में अधिक ज्ञात है, जहां हम, हालांकि हम स्वयं इसे नहीं जानते हैं, लगभग चुपके से रचनात्मक होने और बनने का निरीक्षण कर सकते हैं।

इस अर्थ में, विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान हमें नई संभावनाएं प्रदान करता है, क्योंकि यह काल्पनिक छवियों के अस्तित्व को साबित करता है जो अंधेरे मानसिक उपभूमि से निकलती हैं और इस तरह अचेतन में होने वाली प्रक्रियाओं के बारे में सूचित करती हैं। सामूहिक अचेतन की सामग्री कई पूर्वजों के मानसिक कामकाज का परिणाम है, अर्थात्, उनकी समग्रता में, यह दुनिया की एक प्राकृतिक छवि है, जो लाखों वर्षों के अनुभव से विलीन और केंद्रित है। ये चित्र पौराणिक हैं और इसलिए प्रतीकात्मक हैं, क्योंकि वे ज्ञेय वस्तु के साथ बोधगम्य विषय के सामंजस्य को व्यक्त करते हैं। यह बिना कहे चला जाता है कि सभी पौराणिक कथाएं और सभी रहस्योद्घाटन अनुभव के इसी मैट्रिक्स से आए हैं, जिसका अर्थ है कि दुनिया और मनुष्य का भविष्य का विचार भी उसी से आएगा। हालांकि, यह सोचना एक गलतफहमी होगी कि अचेतन की कल्पना की छवियों को एक रहस्योद्घाटन की तरह सीधे इस्तेमाल किया जा सकता है। वे केवल स्रोत सामग्री हैं, जिसे समझने के लिए, अभी भी संबंधित समय की भाषा में अनुवाद की आवश्यकता है। यदि ऐसा अनुवाद सफल होता है, तो विश्वदृष्टि के प्रतीक के माध्यम से, हमारे विचारों की दुनिया फिर से मानव जाति के प्राचीन अनुभव से जुड़ जाती है; हमारे भीतर का ऐतिहासिक, सार्वभौमिक व्यक्ति उस व्यक्ति की ओर हाथ बढ़ाता है जो अभी-अभी व्यक्तिगत हुआ है, एक ऐसी घटना जो शायद आदिम व्यक्ति से परिचित है, जो एक अनुष्ठान भोजन के दौरान, पैतृक कुलदेवता के साथ पौराणिक रूप से एकजुट है।

इस अर्थ में, विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान चेतना के अतिरंजित युक्तिकरण की प्रतिक्रिया है, जो व्यवस्थित प्रक्रियाओं को बनाने के प्रयास में, खुद को प्रकृति से अलग करता है और खुद को एक तर्कसंगत रूप से सीमित आधुनिकता में प्रत्यारोपित करता है जो जन्म और जन्म के बीच केवल थोड़े समय के लिए विस्तारित होता है। मौत। इस तरह की सीमा यादृच्छिकता और अर्थहीनता की भावना पैदा करती है, जो ठीक वही है जो हमें उस तरह के गुरुत्वाकर्षण के साथ जीने से रोकती है जो जीवन को पूरी तरह से समाप्त करने के लिए आवश्यक है। जीवन साधारण हो जाता है और अब पूरी तरह से किसी व्यक्ति का प्रतिनिधित्व नहीं करता है। नतीजतन, जीवन का एक बड़ा हिस्सा अचेतन में

चला जाता है। एक व्यक्ति ऐसे रहता है जैसे बहुत तंग जूते में चल रहा हो। अनंत काल का गुण, जो आदिम मनुष्य के जीवन की विशेषता है, हमारे जीवन में पूरी तरह से अनुपस्थित है। अपने आप को तर्कसंगतता की दीवार से घेरते हुए, हमने खुद को प्रकृति की अनंतता से अलग-थलग पाया। विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान अचेतन की काल्पनिक छवियों को फिर से खोदकर इस दीवार को तोड़ने की कोशिश करता है जिसे कभी तर्कसंगत दिमाग ने त्याग दिया था। ये चित्र दीवार के दूसरी ओर हैं, वे *हमारे भीतर प्रकृति का उल्लेख करते हैं*, जो गहराई से दबी हुई निकली और जिससे हमने तर्कवाद की दीवारों के पीछे शरण ली। नतीजतन , प्रकृति के साथ एक संघर्ष पैदा हुआ, जिसे विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान हल करना चाहता है, लेकिन इच्छा के माध्यम से नहीं, रूसो के साथ, "प्रकृति में वापस", लेकिन प्राकृतिक आत्मा की समझ के साथ हमारी चेतना के संवर्धन के माध्यम से, जबकि दृढ़ता से तार्किक सोच के आधुनिक चरण में सफलतापूर्वक पहुंचे।

जो इसे देखने में कामयाब रहा है , वह भ्रष्टाचार की जबरदस्त छाप का अनुभव करता है। लेकिन वह लंबे समय तक इसका आनंद नहीं ले पाएगा, क्योंकि सवाल तुरंत उठता है कि नए अधिग्रहण को कैसे आत्मसात किया जा सकता है। दीवार के इस और उस तरफ क्या है, सबसे पहले यह असंगत हो जाता है। यहाँ एक आधुनिक भाषा में अनुवाद की समस्या का पता चलता है, या, शायद, यहाँ तक कि समग्र रूप से एक नई भाषा की समस्या, और यह तुरंत एक विश्वदृष्टि का प्रश्न उठाता है, अर्थात्, एक विश्वदृष्टि जो हमें इस तरह के सामंजस्य को खोजने में मदद करनी चाहिए। हमारे ऐतिहासिक व्यक्ति ताकि उनके गहरे तार तर्कसंगत चेतना के तेज स्वरो में डूब न जाएं और इसके विपरीत, ताकि व्यक्तिगत आत्मा का अमूल्य प्रकाश प्राकृतिक आत्मा के अंतहीन धुंधलके में न डूबे। लेकिन, इस प्रश्न के करीब आते हुए, हमें विज्ञान के दायरे को छोड़ना होगा, क्योंकि अब हमें रचनात्मक निर्णय, अपना जीवन, इस या उस परिकल्पना को सौंपना होगा; दूसरे शब्दों में, यहाँ नैतिक समस्या शुरू होती है, जिसके बिना विश्वदृष्टि अकल्पनीय है।

इसलिए, जब मैंने कहा कि विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान, हालांकि विश्वदृष्टि नहीं है, इसके गठन में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है, मेरा मानना है कि उपरोक्त में इस पर पर्याप्त चर्चा की गई है।

"जटिल" और मिथक
डॉ. मेड. वीएम क्रेनफेल्ड

जिस जमीन पर हम मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का निर्माण करते हैं वह भ्रामक है। यदि हमारा सारा ज्ञान एक कार्य प्रगति पर है, तो यह है। इससे भी अधिक आत्मा के बारे में हमारा ज्ञान। लेकिन हम कहीं भी इतनी आसानी से एक हिस्सा लेने के भ्रम में नहीं पड़ते जैसा कि यहाँ है; यह भ्रम कहीं भी इस तरह के परिणामों से भरा नहीं है। आत्मा के सिद्धांत, जो चिकित्सा अभ्यास की जरूरतों और दृश्य सामग्री से विकसित हुए हैं और वैज्ञानिक शोध के रूप में सन्निहित हैं, अक्सर केवल एक ही चीज की अनुमति देते हैं - यह भूलना आसान है कि आत्मा, संक्षेप में, एक अंतहीन जीवन है, जो, हालांकि यह कुछ शर्तों में आसानी से फिट बैठता है। पद धारण करते हैं, लेकिन, दूसरी ओर, फिर भी उनसे फिर से विचलित हो जाते हैं।

यदि सैद्धांतिक अर्थ में यह प्रत्येक मनोवैज्ञानिक सिद्धांत की सामान्य पृष्ठभूमि होनी चाहिए, क्योंकि यह कुछ सामग्रियों से जुड़ा हुआ है, तो इसके व्यावहारिक अनुप्रयोग और प्रभाव का सामान्य और मौलिक बिंदु हमेशा यह होगा कि रोगी, साथ ही साथ डॉक्टर भी करते हैं। वही काम, जितना गंभीर है। किया जाता है, सैद्धांतिक निर्माण का व्यावहारिक रूप से उद्देश्य प्राप्त करने या प्राप्त करने की संभावना अधिक होगी; कोई कह सकता है, अवास्तविक जीवित आत्मा से सत्य में प्रवेश करना। तब सवाल यह होगा कि किस बिंदु पर सिद्धांत, जैसे कि अनिवार्य रूप से बहुत संकीर्ण और सीमित पदों के साथ, "सत्य" के बाद मंच छोड़ना होगा, या, इसे और अधिक सामान्य रूप से कहें तो लक्ष्य इसके माध्यम से प्राप्त किया गया है।

ऑगस्ट वेटर ठीक कहते हैं: "जिस तरह प्राकृतिक विज्ञान, जो अपनी सीमाओं को पार नहीं करता है, उसे केवल चेतना का अनुमान लगाना पड़ता है और बाहरी वस्तुओं के साथ इसे फिर से नहीं माना जा सकता है, इसलिए गतिविधि में आत्मा का व्यावहारिक अध्ययन, आंतरिक जीवन तक सीमित है, अपना स्वयं का है। एक स्व-स्पष्ट धारणा, जिसे वह खुद को भ्रमित किए बिना अधिक सटीक रूप से निर्धारित नहीं कर सकता है, लेकिन जिस पर वह खुद से सवाल किए बिना संदेह नहीं कर सकता है" (वी ई टी टी और आर, ऑस्लेगुंगेन डीईआर सीले - प्रामाणिक।)

सार के बारे में स्पष्टता प्राप्त करने के लिए, सिद्धांतों की आत्मा को समझने की कोशिश करने के अलावा किसी अन्य तरीके की पेशकश करना असंभव होगा, अर्थात् सिद्धांत पर विचार करना। आत्मा की अभिव्यक्ति के रूप में मुझे। खतरा यह है कि हर सिद्धांत, जब लागू किया जाता है, "अपनी स्वयं-स्पष्ट धारणा" है, यह स्पष्ट रूप से खतरा है कि व्यावहारिक मनोचिकित्सा की समस्या के लिए मांगे गए समाधान इच्छा की ओर,

मनोवैज्ञानिक रूप से काफी स्पष्ट रूप से स्थानांतरित हो जाते हैं। कुछ दृष्टिकोणों के निरंतर सीखने के लिए नीचे आते हैं, जो कि कुछ प्रावधानों के लिए धन्यवाद, अर्थात् सिद्धांत की विशेष सामग्री, आत्मा में और उसके बाहर पैदा होने की बजाय आत्मा में पेश की जाती है। इस हद तक, चिकित्सा के परिणाम अब सख्ती से विश्लेषणात्मक परिणाम नहीं होंगे, लेकिन "विश्लेषण" किसी अन्य प्रकार की चिकित्सा की तरह एक प्रकार की प्रणाली के रूप में कार्य करेगा - चाहे वह व्यावसायिक चिकित्सा, व्याकुलता, अनुनय और उत्तेजना हो। यानी, विश्लेषण चिकित्सा का एक उपकरण बन जाता है, जिसके उपयोग का व्यक्ति के विश्लेषणात्मक विकास के विचार से अधिक कोई लेना-देना नहीं है।

हालाँकि, किसी को इस विचार से छुटकारा पाना चाहिए कि मनोविश्लेषण-मानसिक "जटिलताओं" को चिकना करने का एक प्रकार का पेटेंट तरीका है, जैसा कि कई शौकिया मानते हैं, लेकिन कुछ डॉक्टर ऐसा सोचते हैं या ऐसा करने का दिखावा करते हैं - धारणा यह है कि मनोवैज्ञानिक विश्लेषण में, किसी को चाहिए प्रकृति द्वारा पूर्वनिर्धारित या उसके लिए वांछनीय व्यक्ति के मार्ग की खोज करने का प्रयास करें। बाकी सब कुछ चिकित्सीय उपशामक है, चाहे उनके नाम कुछ भी हों। नामों का इससे बहुत कम लेना-देना है।

बेशक व्यायाम, आदत, स्वीकृति और चिकित्सक द्वारा निर्धारित प्रणाली की "महारत" भी परिणाम, और उपयोगी परिणाम लाती है। इच्छा और संगति भी आत्मा की शक्तियाँ हैं, और उसके लिए धिक्कार है जो उनके बिना करने की सोचता है। इसके अलावा, वांछित परिणाम, जैसे कि एक चिकित्सा सोफे पर आराम करने के लिए धोखे से प्राप्त किया गया, शून्य नहीं आता है, लेकिन फल देता है, भले ही इतना महान न हो, लेकिन फिर भी एक सफलता के रूप में मूल्यांकन करने के लिए पर्याप्त है।

लेकिन अकेले परिणाम हमें सिद्धांत के मूल्यांकन के लिए कभी भी ढांचा नहीं दे सकते। "सफलताएं" - कम से कम "इलाज" या रोगियों की आमद के अर्थ में - अब तक कोई चिकित्सीय प्रणाली रही है, चाहे वह गर्म पानी या ठंड, सुझाव या desuggestions के साथ काम करती हो। चिकित्सीय परिणामों का मूल्यांकन करने के साथ-साथ चिकित्सीय प्रणाली पर चर्चा करने के लिए, विश्लेषण किए गए व्यक्ति की आत्मा में या चिकित्सीय सिद्धांत की आत्मा में महसूस करने के अलावा और कोई रास्ता नहीं है।

फ्रायड का मनोविश्लेषण, सबसे पहले, एक पारिवारिक रोमांस का मनोविज्ञान है: एक बच्चे का माता-पिता से, एक लड़के का माँ से, एक लड़की का पिता से संबंध, जिसे "अनैच्छिक इच्छा" के रूप में व्याख्यायित किया जाता है, एक बढ़ते हुए व्यक्ति की आध्यात्मिक शक्तियों को बांधता है। और उसे एक आदमी और एक पिता में बदलने से रोकता है, जिसका आंतरिक कानून, यौन विस्तार और उसकी इच्छा का फल "राज्य" होना चाहिए या, जैसा कि फ्रायड कहते हैं, "सुपररेगो।" "सुपररेगो" के साथ यह संबंध एक ओर,

एक परिपक्व कामुकता का गठन करता है, दूसरी ओर, तथाकथित "वास्तविकता के लिए अनुकूलन", उसी स्थान पर जहां यह "अनुकूलन" या यह "वास्तविकता" अनुपस्थित है, न्यूरोसिस उत्पन्न होता है; फ्रायड ने अपने स्वयं के माता-पिता या उनके "इमागो" (जंग) के साथ यौन संबंध के रूप में व्याख्या की, जिससे (यौन) "कामेच्छा" का अलगाव अभी तक नहीं हुआ है। क्योंकि, शरीर में यौन प्रक्रियाओं द्वारा गति में स्थापित, मानव मानस, इसलिए बोलने के लिए, आनंद के सिद्धांत - "माँ" - और "वास्तविकता" के सिद्धांत - कानून, "पिता" के बीच उलझ जाता है। फ्रायड इस विरोधाभास के भीतर एक व्यक्ति की स्थिति की पुष्टि करता है, सबसे पहले, अपने पिता और अपनी मां के साथ वास्तविक संबंध से, और दूसरी बात, पिता के इमागो या मां के इमागो और इमागो के प्रभाव से। किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थिति का प्रतिबिंब समझा जाता है - संक्षेप में, जो अनुभव किया गया था, साथ ही कल्पना की अनैच्छिक गतिविधि के परिणामस्वरूप क्या बनता है। लैटिन में, " इमागो " शब्द का प्रयोग अक्सर दृश्यता, भ्रम, छाया, प्रेत के अर्थ में किया जाता है, अर्थात् यह वास्तविकता का विरोध करता है।

और तीसरा, "पिता - माँ", निश्चित रूप से, एक प्रतीकात्मक प्रकृति की अवधारणाओं की एक विरोधाभासी जोड़ी का भी प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसमें भावनात्मक अनुभव का सार्वभौमिक द्वैतवाद समग्र रूप से अभिव्यक्ति पाता है। यह सच है कि यह पूरी तरह से प्रतीकात्मक सामग्री केवल इस हद तक मूर्त हो सकती है कि विरोधाभासी जोड़े के संबंध - यहाँ, इसलिए, पिता - माँ - ने व्यक्तिगत प्रभावों का पर्दा हटा दिया है कि कोई व्यक्ति प्रतिनिधित्व के साथ इतनी निकटता से जुड़ सकता है। पिता - माता संबंध, उदाहरण के लिए, व्यक्तिगत यादों के कारण कि वह कम से कम इस अभिव्यक्ति में उस विशाल द्वैतवाद को जानने और अनुभव करने के अवसर का विरोध करता है। यानी वह पारिवारिक रोमांस के मनोविज्ञान में फंस जाएगा, और यहां तक कि मनोवैज्ञानिक सिद्धांत या शिक्षण भी उसमें फंस जाता है, क्योंकि उनके लिए पिता और माता का द्वंद्व "एक जटिल के रूप में संदिग्ध" है और वे इसमें प्रतीकात्मक सामग्री मानते हैं। एक दुखी बचपन का।

लेकिन अगर हम उन प्रभावों को ध्यान में नहीं रखते हैं जो किसी भी व्यक्तिगत यादों में फंस गए हैं, तो छवि "पिता - मां" - हालांकि, "खुशी - वास्तविकता" या "सुपररेगो" - "अवचेतन" छवियों की तरह - इसमें शामिल हैं कई समान विरोधाभासी दोहरे सूत्रों में- एक छवि के रूप में, जिसमें सबसे अलग तरीकों से उन्होंने सभी मानसिक जीवन की नींव के द्वैतवाद को समझने की कोशिश की।

हम प्राचीन काल से ही द्वैतवादी अनुमान पाते हैं; मैं यहां केवल प्राचीन चीनी प्रतीकों यांग और यिन को याद करूंगा, जिन्हें एक वृत्त के रूप में दर्शाया गया है, जो एक एस-आकार की रेखा द्वारा दो समान भागों में विभाजित है; इनमें से एक भाग एक काले

केंद्र के साथ सफेद है , दूसरा सफेद के साथ काला है, अभिव्यक्ति के रूप और सूत्र बदल जाते हैं, लेकिन सामान्य, अंततः सर्वव्यापी और इसलिए अवर्णनीय, वही रहता है। किसी-भी मामले में, द्वैतवाद किसी भी तरह से मनोविश्लेषण की एक विशिष्ट विशेषता नहीं है - लेकिन शायद जो विशेषता है वह उस रूप का चुनाव है जिसमें यह द्वैतवाद व्यक्त किया गया है । पिता और माता के बारे में बात करने के बजाय, कोई पुरुष और स्त्री, या सूर्य और चंद्रमा, दिन और रात, जीवन और मृत्यु, लोगो और इरोज, प्रेम और घृणा, आवश्यकता और स्वतंत्रता या अच्छाई और बुराई के बारे में बात कर सकता था, जैसे कि यूनानियों, आदि, या, जैसे, उदाहरण के लिए, क्लाजेस में, आत्मा और जीवन के बारे में, मूल रूप से कुछ भी बदलने के बिना ... क्योंकि इन दोहरे सूत्रों को उद्देश्यपूर्ण रूप से नहीं, बल्कि प्रतीकात्मक रूप से समझा जाता है। जहां तक प्रतीकात्मक समझ का संबंध है, हमें यहां एक और कदम उठाना चाहिए। प्रतीकात्मक समझ विपरीत के ऐसे विशाल जोड़े से बिल्कुल भी जुड़ी नहीं है , और सामान्य तौर पर न केवल विपरीत जोड़े के साथ जुड़ा हुआ है।

प्रतीक हमेशा फंतासी को आकर्षित करते हैं, और इसलिए किसी भी चीज को किस हद तक और क्या प्रतीकात्मक रूप से माना जाएगा, यह केवल कल्पना की रचनात्मक क्षमता पर निर्भर करता है। कुछ के लिए, प्रतीकात्मक द्वैत "पिता - माँ" का वास्तव में बहुत कम अर्थ है - शायद बहुत कम, उदाहरण के लिए, एक ओरिएंटल के लिए "चंद्रमा" का विचार, जिसका वह ध्यान करता है, एक अकथनीय सामग्री से भरता है - या अचानक अंतर्ज्ञान जो एक अच्छे क्षण में प्रज्वलित होता है, मुझे नहीं पता कि कौन सी अदृश्य शक्ति और उस ज्ञान के लिए उड़ान भरना, जो आमतौर पर कठिनाई से संपर्क किया जाता है, एक बैल की चाल, लंबे छात्र अध्ययन की कीमत पर (अर्नस्ट बर्लाच) सहज ज्ञान युक्त समझ के तीन उत्कृष्ट उदाहरण हैं, "जीवन जो अपने बारे में बताता है" .- प्रामाणिक।)।

आखिरकार, आत्मा नियमों का पालन नहीं करती है; इसे आत्मा के नियमों द्वारा भी नहीं समझा जा सकता है । बेशक , इसका मतलब यह नहीं है कि प्रयासों की आवश्यकता नहीं है, उदाहरण के लिए, आत्मा के "विश्लेषण" के मार्ग पर लागू होते हैं। हालांकि, कुछ भोली धारणा के खिलाफ एक आपत्ति उठाई जानी चाहिए कि "विश्लेषण किया गया" व्यक्ति कथित रूप से ipso . है वास्तव में (तथ्य से ही, इसी के आधार पर, वास्तव में, (अव्य।)। - अनुवाद) किसी तरह से "गैर- विश्लेषण" से बेहतर है। जो ऐसा सोचते हैं, वे एक दूसरे से कोटा श्रेष्ठ नहीं हैं; जब वे महसूस करना शुरू करते हैं कि उनका अपना स्तर या उनका अपना तरीका विशिष्ट है या सभी के लिए मान्य है, तो वे आत्मा के मामलों में केवल धक्का-मुक्की करते हैं और इस तरह आराम का प्रदर्शन करते हैं कि वे आत्मा के बारे में कम जानते हैं जो कि एक निश्चित में समझा जाता है। मार्ग। "विश्लेषण"।

इसलिए, छवि का चुनाव मनोविश्लेषण की विशेषता है। यह उदासीन नहीं है कि द्वैतवाद किस तरह से अपनी अभिव्यक्ति पाता है, किन विचारों में यह खुद को किसी में प्रकट करता है। (वैसे, इस विचार में जंग के स्वप्न व्याख्या के सिद्धांत का प्रतिनिधित्व किया जाता है।) जो कोई भी माता-पिता के रूप में द्वैतवाद को समझता है, वह किसी न किसी तरह खुद को एक बच्चे की भूमिका में पाता है। आध्यात्मिक दुनिया को एक बच्चे के दृष्टिकोण से माना जाता है। "बचपन" के प्रकार और डिग्री को आगे पिता और माता में क्या देखा जाता है, द्वारा निर्धारित किया जाता है।

पिता और माता फ्रायड में महान द्वैतवाद के प्रतीक नहीं हैं, लेकिन उन्हें "वास्तविक" के रूप में समझा जाता है। वे अपने स्वयं के माता-पिता हैं, जो बच्चे को देखने के तरीके को देखते हैं, या यों कहें कि जिस तरह से मनोविश्लेषण का बच्चा उन्हें देखता है, अर्थात् विशिष्ट अनुमानों से संपन्न होता है, जो संक्षेप में, मनोविश्लेषण की सैद्धांतिक संरचना का गठन करता है। यदि कोई मनोविश्लेषण के "पिता" और "माँ" को प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करना चाहता है, तो उन्हें केवल बच्चे की दुनिया का प्रतीक माना जा सकता है। सच है, मामला इस तथ्य से जटिल है कि वयस्कों की दुनिया दिन-ब-दिन फिर से बच्चे की दुनिया से जुड़ी हुई है, ताकि "बच्चे की दुनिया" अपने हिस्से के लिए वयस्कों की दुनिया का प्रतीक बन जाए। यह मिथक के माध्यम से एक गोल चक्कर में होता है, जो ओडिपल त्रासदी के तत्वों का उपयोग करते हुए एक रूपक रूप में बचकाने रवैये की पुष्टि या "व्याख्या" करता है जो किसी भी तरह से बचकाना नहीं है। यह इस बचकाने संबंध में (माना जाता है) "सच्चा मूल" या "गहरा अर्थ" को स्पष्ट करने का कार्य करता है और इस प्रकार एक ही समय में वयस्कों की दुनिया के लिए एक पुल का निर्माण करता है, जो पूरी तरह से और अंत में बचकाने पर ग्राफ्ट की गई छवि का प्रतीक है। संबंध। ओडिपस परिसर के लेटमोटिफ में, वह बचपन में वापस चला जाता है।

यहां दो प्रश्न उठते हैं: कौन सा क्षण मनोविश्लेषण को दो दुनियाओं को एक-दूसरे से जोड़ने की अनुमति देता है, और मनोविश्लेषण के "ओ डिपस की दुनिया" का उस विशाल द्वैतवाद के विरोधाभासी संबंध से क्या संबंध है, जो विशेष रूप से छवियों से पूरी तरह मुक्त है सामग्री ?

दो दुनियाओं के बीच एक मध्यस्थ के कर्तव्यों को फ्रायड के मनोवैज्ञानिक व्याख्यात्मक सिद्धांत: "कामुकता का सिद्धांत" द्वारा किया जाता है। वह वह है जो एडिप के मिथक की व्याख्या को निर्णायक रूप से निर्धारित करती है। "कामुकता का सिद्धांत", जैसा कि हम जानते हैं, जैविक में "निश्चित" है, अर्थात्, इसे मनोवैज्ञानिक विचार से वंचित किया जाना चाहिए - "नींव" के रूप में जिस पर सब कुछ टिकी हुई है। हालांकि, गैर-मनोवैज्ञानिक लोगों के लिए मनोविज्ञान का ऐसा प्रतिस्थापन हमेशा अविश्वसनीय होना चाहिए। न केवल इसलिए कि मनोविश्लेषण हमें सभी औचित्य को मनोविश्लेषणात्मक

संदेह के अधीन करना सिखाता है - हमेशा उतने ही कारण होते हैं जितने कि समुद्र में रेत होते हैं - बल्कि इसलिए भी कि कुछ भी देना स्पष्ट रूप से असंभव है जो प्रतीकात्मक विचार का विषय भी नहीं बन सकता है।

इस दृष्टिकोण से, जैविक "नींव" (भले ही यह वास्तव में अस्तित्व में है - क्योंकि यह अस्तित्व में नहीं है) का अर्थ केवल कुछ अपरिवर्तनीय , मनोवैज्ञानिक रूप से अघुलनशील होगा, जिस पर मनोविज्ञान टिकी हुई है, जहां तक यह पैदा करने में सक्षम है यह भ्रम कि यहाँ, माना जाता है, सभी मनोवैज्ञानिक धोखाधड़ी का सफलतापूर्वक अंत हो गया है। दुनिया में जो कुछ भी इस तरह से वस्तुनिष्ठ है - मनोवैज्ञानिक अर्थों में, इसका मतलब केवल यह है कि वे इस ध्यान पथ का सामना नहीं करते हैं, एक शब्द में, वे इसे मनोवैज्ञानिक रूप से नहीं मानना चाहते हैं। बेशक, यह अच्छे इरादों के साथ और अच्छे इरादों के साथ किया जा सकता है, लेकिन "प्रतीक" के बजाय "क्षणिक" को देखना हमेशा मनमानी होगी। यह इस बिंदु पर है कि पथ अलग हो जाता है और एक विशेष रूप से उचित मनोविज्ञान की ओर जाता है, जो एक निश्चित चाल के लिए अपनी "शुद्धता" का श्रेय देता है, अर्थात्, दुनिया का एक हिस्सा हाइपोस्टेटिज्ड है, और बाकी सब कुछ यहां से प्रतीक है, अर्थात् , यह एक व्युत्पन्न चरित्र प्राप्त करता है, जो बाद के सभी आरामों के बावजूद, फ्रायडियन सिद्धांत का इरादा है (गोशेन, क्रैनफेल्ड, मनोविश्लेषण की मात्रा में फ्रायड से जंग के माध्यम से सम्मोहन के फ्रांसीसी सिद्धांत से विश्लेषणात्मक विचार के विकास का एक संक्षिप्त सारांश । मनोविश्लेषणात्मक मनोविज्ञान। सीजी जंग द्वारा एक परिचय के साथ। - प्रामाणिक।) हालाँकि, प्रतीक को क्षणभंगुर में किसी चीज़ तक सीमित करने का मतलब वास्तव में इसे अभी भी नहीं देखना है। "सब कुछ क्षणिक केवल एक प्रतीक है" - लेकिन सभी नहीं, और सभी नहीं। यह तब है जब खाली जासूसी-प्रतीक प्रतीक की सार्वभौमिक संभावना से प्राप्त किया जाता है, उन चीजों का जिक्र करते हुए जो बहुत बेहतर और अधिक स्पष्ट रूप से अलग तरह से समझी जाती हैं और अन्य छवियों की आवश्यकता होती है। यह पेटिटियो _ प्रिंसिपी (नींव की प्रत्याशा (अव्य। - ट्रांस।)) है जो एक प्रकार के आध्यात्मिक अपवित्रीकरण के लिए उबलता है, एक प्रकार की शोपेनहावर की जीने की इच्छा की विशाल डांट - एक बड़ी और खतरनाक किस्म नहीं , क्योंकि ऐसी मनोवृत्ति के समेकन से आत्मा में अंतर्विरोधों की समस्या सैद्धांतिक रूप से अघुलनशील हो जाती है। क्योंकि यदि मनोविज्ञान के निर्माण में अब कोई सार्वभौम असंगति नहीं रही, तो इसका अर्थ है कि वह यहाँ नहीं मिल सकती। आखिरकार, ओडिपस की संकीर्ण, अज्ञात दुनिया से आगे बढ़ते हुए, रोगी का विश्लेषणात्मक विकास, ज्ञात, विस्तारित दुनिया में केवल गहराई तक जाता है, लेकिन सिद्धांत रूप में विरोधाभासों की समस्या के प्रति समान दृष्टिकोण की विशेषता है।

जैविक रूप से मनोविज्ञान को सही ठहराने के अपने इरादे में - या , इसे

मनोवैज्ञानिक रूप से कहने के लिए, जैविक रूपक के अपने झुकाव के बाद - फ्रायड ने आत्मा में इतना कम प्रतीकात्मकता देखी कि वह अपने प्रस्तावों को समझ लेता है, जो पूरी तरह से उद्देश्य में प्रतीकों में अनिश्चित रूप से उच्च डिग्री तक रहते हैं। मार्ग। इस प्रकार स्वप्न में भी कामवासना का हाइपोस्टैसिस उसमें नहीं रुकता; इसके अलावा, वह वहां प्राप्त करता है, सबसे पहले, कथित तौर पर केवल सबसे अच्छा समर्थन, जो उसे सपनों के उस कुख्यात "निरंतर" प्रतीकवाद की ओर ले जाता है। यह सब जैविक "तथ्यों" या "कामुकता के भविष्य के रसायन विज्ञान" के कारण नहीं रहता है, जैसा कि फ्रायड कहते हैं, लेकिन सार्वभौमिक प्रतीकवाद की संभावना के कारण, जो हर चीज में मौजूद है, यौन में, जैसा कि हम जानते हैं, यह काफी स्पष्ट है . आखिरकार, प्रतीकात्मक रूप से विरोधों की सार्वभौमिक जोड़ी , निश्चित रूप से कामुकता द्वारा दर्शायी जा सकती है - या, बेहतर , एक यौन घटना, यानी एक और दूसरे का मिलन; इसकी प्रतीकात्मक ऊर्जा असीम है, जैसा कि निरंतर मैथुन के पौराणिक रूप से संकेत मिलता है। यही कारण है कि फ्रायड की व्याख्याएं इतनी भरोसेमंद हैं, अगर केवल कोई खुद को वास्तव में मनोवैज्ञानिक सोच के लिए मजबूर नहीं करता है, लेकिन अपने जैविक मनोविज्ञान के सोचने के तरीके को विनियोजित करता है, जिसमें प्रतीकात्मक ताकतें गुप्त रहती हैं। फ्रायड की "कामुकता" की रबड़ की धारणा के पीछे "देखे गए तथ्यों" को प्रस्तुत करने के वैज्ञानिक तरीके से तैयार एक आदर्श है।

क्योंकि, फ्रायड के अनुसार, यौन पूरी तरह से वस्तुनिष्ठ है। यह ठीक एकमात्र ऐसी चीज है जिसे प्रतीकात्मक रूप से बिल्कुल नहीं माना जाता है। यह यहाँ तक जाता है कि फ्रायड के लिए, सपनों की भाषा, मिथकों और परियों की कहानियों, लोककथाओं, आदि की भाषा के विपरीत, विशेष रूप से यौन प्रतीकवाद शामिल है।

मानसिक सामग्री की इस तरह की समझ का मनोवैज्ञानिक प्रभाव , शायद, केवल एक ही हो सकता है: मानस को परिवार के ढांचे में वापस फेंकना, " क्वॉड " इरेटा डेमोस्ट्रैंडम "(ओडिपस की दुनिया को साबित करने के लिए क्या आवश्यक था (अव्य। - अनुवाद), व्यक्ति से अनुभव के पारस्परिक क्षेत्रों को बंद करके। किसी को यह आभास हो सकता है कि यह सब एक यौन व्याख्या का परिणाम है। मानस, जिससे, इसलिए, अक्सर अपना बचाव किया जाता है; हालाँकि, यह स्वीकार किया जाना चाहिए कि इसका कारण यौन में नहीं है, बल्कि यौन के हाइपोस्टैसाइज्ड रूप में है। केवल इसलिए कि सार्वभौमिक मनोवैज्ञानिक असंगति के भीतर "यहाँ एक प्रतीक है , यहाँ एक वस्तु है " दुनिया का एक हिस्सा हाइपोस्टैसाइज्ड है, और बाकी सब कुछ माध्यमिक भूमिकाओं में चला गया है, एक मनोविज्ञान उत्पन्न होता है जो आत्मा का सिद्धांत नहीं है, बल्कि एक निश्चित दृष्टिकोण का केवल एक सैद्धांतिक प्रदर्शन है। दूसरे शब्दों में, भीतर इस तरह के एक सिद्धांत की रूपरेखा, कोई भी विरोधाभासों से परे नहीं जाता है, क्योंकि विरोधाभासों का एक विशेष संबंध सिद्धांत में तय होता है । किसी भी स्तर पर, यह मूल रूप से तब तक समान रहता है

जब तक कि यह अंत में अपना विशिष्ट प्रभार नहीं छोड़ देता अंतिम विरोधाभास और, परिणामस्वरूप, मुआवजा दिया जाता है।

सामान्य रूप से मनोविज्ञान के क्षेत्र में किसी विशेष "स्पष्टीकरण" की तरह, कामुकता की अवधारणा के बारे में फ्रायड की समझ की बराबरी करना चाहूंगा, जो कि योजक की शक्ति - हीन भावना का सूत्र है, जो व्यक्तिगत सामग्री के उस overestimation के लिए है, जो हमेशा प्रकट होता है जहां है मानसिक जीवन के विक्षिप्त रूप, क्योंकि न्यूरोसिस के सिद्धांत विक्षिप्त विपरीत मनोविज्ञान के लिए पैडनस हैं, जिसमें "कुछ" हमेशा हर चीज पर अपनी छाप छोड़ता है। यह व्यापक राय के समान है कि जीवन में सब कुछ क्रम में होगा यदि यह इस या उस परेशानी के लिए नहीं था - दुनिया की बुराई के लिए, अपने जीवन की कठिनाइयों के लिए, सब कुछ "उनसे" है, चाहे वह पैसा हो, प्यार, बीमार बच्चे, या "माता-पिता"। अब तक, जीवन में ठोस "समर्थन" की आवश्यकता है, और जैसे मानसिक संघर्ष भी उनमें कार्य कर सकते हैं, क्योंकि मनोवैज्ञानिक सिद्धांत उन्हें बनाते हैं, उनके लिए स्पष्टीकरण तैयार रखते हैं।

अयोग्य दृष्टिकोण, इसके विपरीत, केवल यह मानता है कि मौलिक रूप से अघुलनशील मनोवैज्ञानिक समस्याएं बिल्कुल भी नहीं हैं - कम से कम यह दृष्टिकोण से संबंधित है, जबकि मनोविश्लेषण और सभी व्यावहारिक मनोविज्ञान में यह केवल दृष्टिकोण के बारे में है - और यह कि सभी स्पष्टीकरण, सिद्धांत रूप में हैं, झूठे के रूप में वे सच हो सकते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो, बिना किसी अपवाद के सभी मनोवैज्ञानिक समस्याएं चैत्य के दृष्टिकोण से, आत्मा के जीवन से ही हल की जा सकती हैं; और, परिणामस्वरूप, उन्हें या तो "अन्य" समस्याओं से, या शरीर और उसके "यौन रसायन" द्वारा, या बचपन के अनुभवों द्वारा प्रतिस्थापित नहीं किया जा सकता है, अर्थात्, उन्हें कभी भी उद्देश्य में स्थानांतरित नहीं किया जा सकता है - न ही उन्हें ठीक करने के लिए वहाँ, न ही इन पदों से उन्हें सामान्य बनाने या "व्याख्या" करने के लिए। इसके लिए धन्यवाद, "वस्तु", निश्चित रूप से, न केवल मनोविज्ञान से हटा दी जाती है, बल्कि इससे भी अधिक - यह "gnotho" में शामिल है स्टेटन " (अपने आप को जानो (अव्य।) - अनुवाद), दोनों अपनी पूर्ण निष्पक्षता में और किसी प्रतीक की किसी भी संभावना में। दूसरी ओर, यदि मनोवैज्ञानिक समस्याओं पर विचार किया जाता है और उन्हें निष्पक्ष रूप से सिद्ध किया जाता है, तो वे विशेष समस्याएं बनी रहती हैं, जिस पर सिद्धांत, जो कि समग्र रूप से आत्मा को ध्यान में रखता है, साथ ही जीवन, जो हमेशा एक है, रुक नहीं सकता। वे पूरी तरह से "समझ से बाहर" हैं यदि उन्हें एक सर्वव्यापी संबंध का "हिस्सा" नहीं माना जाता है। इसकी तुलना में, सभी मनोवैज्ञानिक सिद्धांत दुनिया की मदद के लिए कुछ नहीं करते हैं। केवल प्रतीक के लिए असीम तत्परता - लेकिन किसी ठोस चीज की हठधर्मिता नहीं - अपने स्वयं के जीवन के अर्थ का रास्ता खोजने के लिए एक आंतरिक पूर्व शर्त बनाता है,

जो अज्ञेय बन गया है, मन की गैर-भावना में "अनुभवहीन"।

यदि दुनिया के एक हिस्से, यानी मानसिक क्षेत्र के गलत हाइपोस्टैटाइजेशन से बचा जाता है, तो सपनों की समस्या पर एक निष्पक्ष दृष्टिकोण भी हासिल किया जाता है। एक सपने में असर "वास्तविकता" के संबंध से बिल्कुल भी भिन्न नहीं होता है। उत्तरार्द्ध में हमेशा दोनों पहलू होते हैं, एक वास्तविकता और एक संभावित प्रतीक दोनों होने के नाते, जैसे एक सपना एक मनोवैज्ञानिक या "री अल" तथ्य को दर्शाता है और इसमें दोनों का प्रतीकवाद होता है। तथ्य यह है कि सपना मुख्य रूप से प्रतीकात्मक होने की उम्मीद है, यहां तक कि जहां यह उद्देश्य ("वास्तविक") को संदर्भित करता है, तथ्य यह है कि एक प्रतीकात्मक व्याख्या हमेशा बहुत ही विचारोत्तेजक होती है, इस तथ्य के कारण हो सकता है कि, हालांकि सपनों का क्षेत्र संबंधित है मानस के अनुसार, वे स्वयं अभी भी पूरी तरह से अवैयक्तिक के रूप में अनुभव किए जाते हैं, अक्सर कुछ "असत्य" के रूप में भी। इसलिए, सपनों की सामग्री में यौन का हाइपोस्टैटाइजेशन उचित नहीं है और जीवन में इसके हाइपोस्टैटाइजेशन से भी बदतर नहीं है। सपनों की आंशिक रूप से अश्लील, आंशिक रूप से घुसपैठ करने वाली फ्रायडियन व्याख्या, जिसके बारे में गुरु ने खुद शिकायत की थी, केवल एक जैविक रूपक का परिणाम है जिसे उन्होंने प्रकट नहीं किया, जो बदले में एक निश्चित मनोवैज्ञानिक सेट पर निर्धारण का परिणाम है। उसे उसका हक दिया जाना चाहिए, क्योंकि वह मानव शरीर से उसकी आत्मा तक चिकित्सा में एक सेतु बनाने में कामयाब रही। लेकिन इसे समग्र रूप से आत्मा के सार के साथ भ्रमित नहीं होना चाहिए। हम केवल एक निरपेक्ष दृष्टिकोण के बारे में बात कर रहे हैं, कुछ मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण के बारे में, जो किसी भी अन्य की तरह, एक उच्च अर्थ प्राप्त करने से पहले, पहले समाप्त किया जाना चाहिए, अर्थात् एक "छवि" बनना चाहिए।

इस तथ्य से कि कामुकता का सिद्धांत ओडिपल विचार के लिए अपना हाथ बढ़ाता है, इस तथ्य से कि दोनों परस्पर समर्थित हैं और "व्याख्या" हैं, बच्चे की दुनिया और वयस्क की दुनिया के बीच एक संबंध और सुरक्षा जाल बनाया गया है। उदाहरण के लिए, बाद में दिखाई देने वाले प्रभाव पूर्व के एक विश्लेषणात्मक अध्ययन की समस्या पैदा करते हैं, वहां तटस्थता यहां समस्या हल करती है - इस तथ्य के कारण कि ओडिपल रूपक द्वारा समर्थित कामुकता का सिद्धांत स्पष्टता लाता है और उन्मुख करने में मदद करता है स्थिति में।

यदि आप स्वयं यह जानना चाहते हैं कि ओडिपस की दुनिया गैर-विशिष्ट, सामान्य द्वैतवाद की दुनिया से कैसे संबंधित है, तो आपको दमन की अवधारणा पर ध्यान देना होगा। उनकी सार्वभौमिक प्रतीकात्मक सामग्री, बचपन की एक अजीबोगरीब स्थिति उत्पन्न होती है, या, अधिक सटीक रूप से, यौवन की स्थिति, और, तदनुसार, यौन विषयों की एक अंतहीन चर्चा सामने आती है। यह बच्चे के "जागरूक" होने के विकास के चरण

का एक मनोवैज्ञानिक स्केच है, यानी, यौवन, जिस पर यौन कल्पनाएं एक निश्चित तरीके से खुद को प्रकट करती हैं। इस तरह से स्थिति को देखते हुए, इस धारणा से बचना असंभव है कि कामुकता का सिद्धांत, अपने सभी वैज्ञानिक ढांचे के लिए, इस प्रणाली के भीतर ही एक व्याख्यात्मक भूमिका निभाता है। बाहर से देखा जाए तो यह व्यवस्था में स्थिर स्थिति का लक्षण है। और दमन भी इसका एक ठोस रूप से निर्दिष्ट यौन रूप में अनुसरण करता है, जैसा कि फ्रायड इसे समझता है।

दमन की अवधारणा फ्रायडियन मनोविज्ञान के केंद्र में है। शायद, फ्रायड राय (सच्चा, गलत) व्यक्त करके इसके महत्व पर जोर देना चाहता था कि मनोविश्लेषणात्मक शोध से पहले दमन की अवधारणा को बनाना असंभव था (नखमनज़ोन ने बताया कि हर्बर्ट के पास पहले से ही था। प्रामाणिक)। नतीजतन, दमन की अवधारणा का अधिक सटीक विश्लेषण मनोविश्लेषण के लक्षण वर्णन के लिए विशेष रूप से उपयोगी होगा। लेकिन यह, कड़ाई से बोलना, केवल तभी हो सकता है जब मनोविश्लेषण ने अपने व्यावहारिक कार्य का आधार बनाया, एक प्रणाली के रूप में मनोविश्लेषण के लिए सही नहीं था: हम सभी "विचारों" के अपरिवर्तनीय नियतत्ववाद के कानून के बारे में बात कर रहे हैं। तो प्रत्येक मनोविज्ञान के सार्वभौमिक संबंध, उनकी संभावित एकता और अखंडता के बारे में है। जिस तरह सभी "विचारों" को अंततः एक केंद्र में परिवर्तित होना चाहिए या उससे उत्पन्न होना चाहिए, उसी तरह एक विकसित प्रणाली की सभी अवधारणाएं सबसे गहराई से परस्पर जुड़ी हुई हैं; यहां तक कि वे केंद्रीय दृष्टिकोण को अधिक स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट करना संभव बनाते हैं, जैसा कि अक्सर प्रतीत होता है कि रोगियों की असंगत, असंसाधित कल्पनाओं के मामले में हो सकता है। इस प्रकार, किसी भी अवधारणा में, किसी को आवश्यक रूप से उसी मनोवैज्ञानिक स्थिति का सामना करना पड़ेगा, और परिणाम की अस्पष्टता यहां एकरसता नहीं है - यह केवल सही ढंग से देखी गई चीजों की पुष्टि है। दूसरी ओर, प्रत्येक अवधारणा को फिर से उसी स्थिति की ओर ले जाना चाहिए, अन्यथा इसका मतलब यह होगा कि जिस आधार पर वे उठे और एक प्रणाली में एकजुट होने में सक्षम थे, वह अभी तक नहीं पहुंचा है। इन पदों से विचार किए गए "दमन" का अर्थ यहां निम्नलिखित है: प्रभाव (जो दमन का कारण है) व्यक्तिगत क्षेत्र में विरोधों की अवैयक्तिकता को नीचे लाता है - ठीक माता-पिता पर उन अनुमानों को किया जाता है, जिनका उन्मूलन (अनुमान) है एक चिकित्सीय पद्धति के रूप में मनोवैज्ञानिक कार्य का सार। लेकिन वहां भी, फ्रायड इस तरह से बनाए गए विरोधों की जोड़ी की प्रकृति को नहीं छोड़ते हैं, अपने सूत्र को "सार्वभौमिक" सार्थक विरोधाभास तक विस्तारित करते हैं। विपरीतता से! ठीक इसी वजह से, विस्तृत और विशाल दुनिया उसके लिए केवल एक मृगतृष्णा, एक भ्रम है, क्योंकि बच्चे और माता-पिता के बीच का व्यक्तिगत संबंध, यहां तक कि एक लाक्षणिक अर्थ में, पहले जैसा था, केवल वही रहता है जिसे छुआ जा सकता

है और महसूस किया और जो हर जगह संभव है। एक कोर के रूप में खोल। नतीजतन, "बच्चा" - मनोविश्लेषणात्मक विषय - दुनिया में गलत स्थिति पर कब्जा कर लेता है, और इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि क्या यह सामग्री के साथ सामग्री द्वारा साबित किया जा सकता है, हालांकि इसका एक व्यापक दुनिया में स्रोत है, फिर भी वही संबंधों को प्रकट करता है के रूप में और संकीर्ण दुनिया की विशिष्ट सामग्री, या इसके विपरीत, क्योंकि यह एक ही स्थिति से फिर से एक रूपक के रूप में प्रयोग किया जाता है। "अन्य के अलावा कुछ नहीं" होने के नाते, "विकृत" बचकाना संबंध, जाहिरा तौर पर, फ्रायड की भाषा में सार्वभौमिक रूप से सार्थक विरोधाभास की दुनिया की विशेषता होनी चाहिए। इसका कारण यह है कि या तो संकीर्ण को व्यापक में स्थानांतरित किया जाता है - अनजाने में न्यूरोसिस के रूप में या सचेत रूप से मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत के रूप में - या व्यापक को संकीर्ण - व्यावहारिक मनोविश्लेषण में कम कर दिया जाता है; जबकि (यौन) दमन की अवधारणा दोनों दुनिया के बीच स्नेहक के रूप में कार्य करती है।

इस फ्रायडियन स्थिति को "पिता" के लिए संघर्ष कहा जाता है। वास्तव में, फ्रायड कहीं भी "माँ" को विशुद्ध रूप से विपरीत तत्व के रूप में नहीं बोलता है। लेकिन क्या वे कहते हैं कि फ्रायड "पिता" की ओर मुड़ गया है और यहाँ, प्यार और आकर्षण से बंधे हुए, "माँ" से "मुड़ गया" और डे फेंस की कैद में है, या क्या संकेत इसके ठीक विपरीत हैं दिशा, सब कुछ एक चीज पर उबलता है। और एक सा। केवल आवश्यक बात यह है कि "पिता और माता", एक लाक्षणिक विस्तार में भी, उनके बीच "बच्चे" को खींचे। इस चेतना के ध्रुवों और इस अवचेतन के बीच, विस्तारित "बच्चा" - एक वयस्क व्यक्ति - भी निराशाजनक रूप से फंस गया है। क्योंकि इस अंतर्विरोध में सामग्री को प्रतीकात्मक रूप से प्रस्तुत करने का कोई कितना भी प्रयास क्यों न करे, परिणामस्वरूप अंतर्विरोध की प्रकृति नहीं बदलती है, अर्थात् उसमें जो मानसिक स्थिति व्यक्त होती है, वह स्पष्ट रूप से वही रहती है। इसके अलावा, अगर इस तरह से विरोधाभासों को सामान्य रूप से दुनिया की घटनाओं तक बढ़ाया जाता है, तो अंतःविरोधों की समस्या अंततः अघुलनशील हो जाती है। आखिरकार, जो ऐसा करता है वह हमेशा के लिए अपनी छवि के खोल में एक कैदी होगा, जिससे वह कभी भी कारण निर्माण या जागरूकता (व्यावहारिक मनोविश्लेषणात्मक कार्य!) की अंतहीन श्रृंखला से मुक्त नहीं हो सकता है। जैसे। क्योंकि बिंदु छवि के ढांचे के भीतर कारण संबंधों में नहीं है, बल्कि छवि में ही है। हालांकि, इसमें दर्शाई गई स्थिति, किसी भी अन्य की तरह, एक तर्कहीन होने के कारण, कारणों के लिए समान रूप से कम करने योग्य है। लेकिन अगर कोई केवल कारणों का अनुसरण करता है, तो एक छवि की पुष्टि की जाती है जिसमें दुनिया की नींव तक पहुंचने के प्रयास में एक सर्कल में हमेशा एक गति होती है, और बार-बार आपको उन सीमाओं पर भागना पड़ता है जिन पर आप अनजाने में ठोकर खाते हैं - जब तक कि छवि स्वयं सचेत न हो जाए।

शायद यह कहा जा सकता है कि फ्रे के विरोधाभास के हिस्सों में से एक के विशिष्ट मूल्यांकन में, "मादा", "माँ", पूर्वी महिला की अजीब स्थिति या "स्थिति की कमी", जो आज भी मौजूद है, एक विशिष्ट क्षण बनी हुई है यहूदी मनोविज्ञान में। हालांकि, यहां कोई फर्क नहीं पड़ता कि फ्रायड में किन क्षणों ने इस तथ्य में योगदान दिया कि विरोधाभास के कुछ हिस्सों को संक्षिप्त किया गया था (बेशक, इस संदर्भ में "असंतुलित" और "ठोस" एक तनातनी हैं। - प्रामाणिक।) अपनी असंतुलित स्थिति में। केवल एक चीज जो मायने रखती है वह यह है कि उन्हें ठोस बनाया गया था, और इसके क्या परिणाम होंगे। वास्तव में, यांग और यिन में विपरीत में मनोवैज्ञानिक विभाजन, कहीं भी और किसी भी स्तर पर हो सकता है - केवल इसलिए कि वे हर जगह हैं, और न केवल एक निजी सामग्री के रूप में, जो विरोधाभास के पक्षों द्वारा ब्रांडेड है। एक व्यक्ति, विरोधाभासी की साधारण अज्ञानता के माध्यम से, जिसका वह हर जगह सामना करता है, खुद को किसी भी सामग्री से जोड़ सकता है जो दमन के अर्थ में संभव है और, परिणामस्वरूप, दमन के मनोविज्ञान की उलटी गतिशीलता का कारण बनता है। इस प्रक्रिया की गतिशील वृद्धि तब नकारात्मक दिशा में आगे बढ़ती है, जैसे यह सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ सकती है। (यह वही है जो जंग का मतलब कामेच्छा की प्रगति और प्रतिगमन से है - टिप्पणी बेने (नोटिस वेल (अव्य।)। - अनुवाद) फिर भी: प्रक्रिया का एक विक्षिप्त रूप।) लगभग वेनिंगर के मामले में, जिसने ऐसा बोलने के लिए, एक महिला में दुनिया के पूरे यिन पक्ष को त्याग दिया, जिसके परिणामस्वरूप वह उसके लिए एक दुष्ट दानव बन गई। उसे आत्महत्या के लिए प्रेरित किया। बेशक, बस इस उदाहरण की व्याख्या "यौन रूप से" की जा सकती है। लेकिन फिर सवाल उठता है कि क्या ओडिपस की नैतिकता को किसी तरह इस तरह की घटना की असाधारण गतिशीलता के साथ जोड़ा जा सकता है ... मिथक की "भयानक मां", वस्तु के अनुरूप एक शक्तिशाली छवि के मुक्त प्रदर्शन के बिना अनुभव किया जाता है ! ऐसा लगता है कि केवल इस तरह से एक गतिशील ड्रिल किया जा सकता है जो इस तरह की वास्तविकता की ताकतों से कम नहीं है, लेकिन एक बच्चे के कमरे में निचोड़ा नहीं जा रहा है - चाहे एक रूपक ओडिपल डिजाइन की मदद से या बिना।

हालाँकि, इसके लिए या तो सभी सामग्री से दमन के मनोविज्ञान की मुक्ति की आवश्यकता होती है, या छोटे "ओडिपस" के मदर कॉम्प्लेक्स को अनुभवी मिथक की ट्रांसपर्सनल घटना के लिए उन्नत किया जाता है, जो इस स्थिति से अनायास होता है।

तब दमन स्वयं एक दोहरी संरचना में अपना वास्तविक चेहरा दिखाएगा: नए की स्थिति के रूप में, जो बनाता है, और शाश्वत कल, जो कल और आने वाले दिनों दोनों में आंतरिक रूप से विकसित होगा, जब तक कि यह एक ऐसे व्यक्ति को अवशोषित नहीं कर लेता जो बन जाएगा इसका शिकार अगर वह अपने स्वयं के अंतर्विरोध को नहीं पहचानता है और उसे एकता की ओर नहीं ले जाता है। क्योंकि व्यक्तिगत रूप से

आवश्यक अंतर्विरोध के साथ केवल मनोवैज्ञानिक मिलन ही अंतर्विरोधों की शक्ति से मुक्ति है। एक निश्चित सामग्री में एक विरोधाभास देखने की गलती एक दोहरी गलती भी है: जो गलती करता है वह न केवल सामग्री की विरोधाभासी संरचना पर ध्यान देता है, बल्कि महत्वपूर्ण रूप से आवश्यक विपरीत का तीव्र प्रश्न भी नहीं है, जो कि अनुपस्थित है व्यक्तिगत मामला।

तथ्य यह है कि फ्रायड की दमन की "यौवन" अवधारणा में अभी भी एक बड़ा दायरा है, इस तथ्य से समझाया गया है कि मनोवैज्ञानिक अर्थों में - उदाहरण के लिए, न्यूरोसिस के रूप में - "यौवन" पूरे जीवन में विस्तारित हो सकता है। यदि, दूसरी ओर, एक न्यूरोसिस को एक निरंतर "यौवन" कहने का इरादा रखता है, तो दूसरी ओर, बाद में "यौवन" जैसी घटनाएं, बिना भेद किए, मनोचिकित्सा के अधीन नहीं हो सकती हैं ताकि उन्हें समाप्त किया जा सके। न्यूरोसिस। क्योंकि रचनात्मक जीवन का "बार-बार यौवन" भी होता है, चाहे वह अधिक या कम विक्षिप्त पूर्वाग्रह के साथ हो, या इसके बिना।

यदि, हालांकि, हम स्वीकार करते हैं, देर से फ्रायड के साथ, गैर-दमित अचेतन (जिसे वह सामग्री में परिभाषित करता है सुम्मा (सामान्य तौर पर, कुल मिलाकर (अव्य।)। - अनुवाद) "स्वयं में सर्वोच्च") के रूप में, तो इसका मतलब केवल एक चीज है: उनके अनुभव की गतिशीलता के संदर्भ में, आत्मा की कुछ सामग्री लगभग शून्य के बराबर होती है। वे सक्रिय रूप से तत्काल जीवन प्रक्रिया में प्रवेश नहीं करते हैं, लेकिन केवल माना जाता है - जैसे कि क्षितिज पर, जो हमेशा किसी व्यक्ति से दृश्यता की दूरी पर होता है। यह एक ही समय में उतना ही सही और उतना ही झूठ है जितना कि इसके लिए पैडनस, अर्थात्, तत्काल समाधान के लिए, यौन हमेशा कथित रूप से विशेषता है, या यौन हमेशा अपरिहार्य समाधान के जोर के साथ अनुभव किया जाता है . पूर्णतया निरंकुश, उदासीन, जो अपने दैनिक जीवन के कारण निर्जीव है, उसे कौन नहीं जानता? दूसरी ओर, कौन नहीं जानता कि किसी को धोखा दिया जा सकता है यदि कोई यह मान लेता है कि क्षितिज पर होने वाली चीजें हमेशा एक निष्क्रिय गति के साथ देखी जा सकती हैं? "... जैसे दूर तुर्की में, जहाँ युद्ध होता है, मिलिशिया आपस में लड़ते हैं, आप सराय की खिड़की तक जाते हैं और देखते हैं - लंबी नावें नदी के किनारे जा रही हैं, और फिर, घर पर, बिस्तर पर जा रही हैं .. । "(प्राप्त करें और IV , फॉस्ट बोल। (बी पास्टर्नक द्वारा अनुवादित)। एम।, "फिक्शन", 1986, पी। 387 - अनुवाद), आप एक प्रार्थना कहेंगे: "ओह, फ्रायड ..."

निःसंदेह यौन और दमन का उनके बीच जो संबंध है, वह पूर्वाग्रह से मुक्त होगा यदि यहां फिर से, उद्देश्य के साथ-साथ, प्रतीकात्मक भी सफल होता है। चूंकि यौन एक नए जीवन का अनुमान लगाता है, जो यौन में अनुभव होता है जैसे कि दर्जा nascendi , चरित्र के साथ उच्चतम, सबसे तत्काल तीव्रता, तो यह संबंध अच्छे कारण के साथ मौजूद है, या यों कहें, इसकी प्रतीकात्मक सामग्री के कारण, इस मामले में एक सार्वभौमिक

शक्ति है। और यह फिर से फ्रायडियन अवधारणा को लाभान्वित करता है। जहां जीवन का जन्म होता है, जहां नया पैदा होता है, एक गतिशील भड़क उठता है, जो नए के साथ और उसके साथ दिखाई देने वाले विपरीत जोड़े में प्रज्वलित होता है और मुझे यह तय करता है: "क्या आप इसे स्वीकार करेंगे और जीवन के दोहरे प्याले को ढोएंगे, या आप चूक जाएंगे वह क्षण जिस पर यह फिर से बंद होने जा रहा है?" इस तरह की भावनात्मक समझ मोटे तौर पर उस स्थिति की विशेषता है कि मनोविश्लेषण में लंबे समय तक व्याख्या की गई थी - और वस्तुगत भी - "जन्म के आघात" के रूप में; अलगाव आपसी समझ को जन्म देगा, क्योंकि जो बनता है उसकी बाध्यकारी प्रकृति में, एक मनोवैज्ञानिक समस्या निष्क्रिय होती है, जो एक आंतरिक आवश्यकता पैदा करती है जो बाहरी संभावनाओं में सूजन होती है या उन्हें अपने लिए बनाना चाहती है।

"दमन" - शायद इसके बारे में एक अच्छे अर्थ में कहा जाना चाहिए, कि दमन की ताकतें हमारे मानस के क्षितिज के पास घूमती हैं, जहां स्वर्ग और पृथ्वी स्पर्श करते हैं, जहां एक सीमा होती है जिसके आगे कोई अथाह में गिर जाता है। लेकिन तथ्य यह है कि यह सीमा कामुकता से पहले गुजरती है - कितनी बार? - एक अच्छा भ्रम, केवल अस्पष्ट दृश्यता के लिए उपयुक्त।

विवरण द्वारा सीमित सामग्री के विपरीत, वास्तविक और महान प्रतीकवाद की अमूर्त अनिश्चितता इसकी सभी अटूट सामग्री की प्रचुरता में उभरती है। चीनी के यांग और यिन के पास कुछ समझ से बाहर है। यहां भी, जैसा कि रिचर्ड विल्हेम कहते हैं, "प्राचीन फालिक प्रतीकों और उनसे जुड़ी हर चीज, कोशिश की और परीक्षण की गई योजनाओं के अनुसार," बिना किसी औचित्य के मान ली गई थी। पश्चिमी व्यक्ति की अदम्य आत्मा, ध्यान में अदम्य, को कुछ ठोस सामग्री की आवश्यकता होती है जिससे वह चिपक जाता है, ताकि वह एक सर्वव्यापी विरोधाभास को आकर्षित कर सके, जिसका सभी अर्थ है और इसलिए बहुत कम कहता है, चर्चा के क्षेत्र में जो, इसके विपरीत, कम तात्पर्य है, लेकिन बहुत कुछ कहता है, क्योंकि इस मामले में कुछ विशिष्ट के बारे में बात करना संभव हो जाता है। प्रसिद्ध कहावत के अनुसार: "बादलों में क्रेन की तुलना में हाथों में टाइटमाउस बेहतर है।"

इस हद तक कि प्रतीकात्मक मान्यता प्राप्त नहीं है, सभी मनोवैज्ञानिक सिद्धांत-ठोस ("कारण") निर्माणों से चिपके रहने के लिए मजबूर हैं। यह विशेष रूप से फ्रायड के शिक्षण की विशेषता है। यहाँ हाथ में टाइट कामुकता का सिद्धांत है। और इस प्रकार, यह पता चला है कि प्रारंभिक स्थिति के लिए और अपने मनोविज्ञान की नींव के लिए, फ्रायड को ओडिपस त्रासदी के पहले से ही "समर्थक-मनोविश्लेषण" निकालने के अलावा कुछ भी बेहतर नहीं मिला। फ्रायड ओडिपल मकसद को मनोविश्लेषण के "केंद्रीय परिसर" के रूप में बोलते हैं। लेकिन यहां विशेषता न केवल ओडिपस की आकृति है, बल्कि "जटिल"

की अवधारणा भी है। जंग, अपनी अभिव्यक्ति "जटिल" के साथ, हमेशा व्यक्तिगत क्षेत्र के केवल भावनात्मक संबंध थे। ट्रांसपर्सनल कनेक्शन के संदर्भ में भी उन्हें हमेशा समझा जा सकता है, लेकिन किसी भी तरह से "कॉम्प्लेक्स" की विशेषता नहीं है। जब फ्रायड ओडिपस कॉम्प्लेक्स की बात करता है, तो इस अभिव्यक्ति में ठीक विपरीत होता है, अर्थात्, प्रतीकात्मक की अलग तरह से व्याख्या की जाती है और कंक्रीट के दायरे में स्थानांतरित किया जाता है - यदि आप इसे और अधिक तेज करना चाहते हैं - अनंत अर्थ और महत्व मिथक को पारिवारिक घोटाले के अंतिम अर्थ तक सीमित कर दिया गया है।

हालांकि, इस तरह सामान्य रूप से प्रतीकात्मक के प्रभावी अनुभव के दृष्टिकोण वर्जित हैं; इसके अलावा, कामुकता के सिद्धांत की सार्वभौमिक कुंजी से लैस, कोई इसे पूरी तरह से मना कर सकता है! लेकिन फिर, यहां भी, दिए गए की दोहरी प्रकृति स्वयं प्रकट होगी: जो वास्तव में ताले खोलना चाहिए, और छवियों की बहुतायत को छोड़ देता है जिसमें आत्मा जीवन और लंबे समय तक प्रतिबिंबित हो सकता है। एक छोटे बर्जुआ परिवार के घुटन भरे माहौल में "बच्चा" बेरहमी से सड़ रहा है ...

आखिरकार, ओडिपस एक "केंद्रीय परिसर" या मानसिक आधार के रूप में मानस की यौवन अवस्था (व्यापक अर्थों में) के प्रतिबिंब से ज्यादा कुछ नहीं है; यह परिवार के दायरे में यौन भीड़ का मनोविज्ञान है, जो कि काफी-वयस्कों के मनोविज्ञान के लिए एक रूपक नहीं है। यदि, इसके विपरीत, ओडिपस को कई अन्य "प्राचीन छवियों" में एक मिथक के रूप में शामिल किया जाता है, तो वह विशुद्ध रूप से रूपक भूमिका से मुक्त हो जाता है। तब यह केवल एक टेम्पलेट कॉम्प्लेक्स नहीं होगा जो मानसिक ब्रह्मांड को हड़प लेता है, बल्कि साथ ही अनुभव की एक संभावित सामग्री भी होगी। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि तथाकथित "ओडिपल" समस्याग्रस्त वास्तव में एक अनुभवी छवि के रूप में ओडिपस के लिए अपना रास्ता खोजता है, या इसे दूसरे तरीके से रखने के लिए, ऐसी स्थिति में प्रतीकात्मक रूप से कौन से रास्ते खुलते हैं, यह वास्तव में कौन सी छवियां हैं स्वतः ही जाग जाता है।

इसलिए, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि माता-पिता के साथ बच्चे का संबंध, कम से कम पहले दो दशकों के लिए, मनोवैज्ञानिक रूप से बहुत महत्व का है, और यह कि "ओडिपल कॉम्प्लेक्स" की बात एक रूपक के रूप में समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। न्यूरोसिस; हालांकि, इस तरह से अवधारणा का उपयोग करके, किसी को आत्मा की समस्या के दृष्टिकोण में बाधा नहीं डालनी चाहिए, जिसे न तो गैर-गुलाब के साथ जोड़ा जा सकता है, और न ही ओडिपल रूपक द्वारा कब्जा कर लिया जा सकता है। क्या वे "माता-पिता" पर ओडिपल निर्धारण में "न्यूरोसिस" का प्रतीक होने जा रहे हैं, क्या वे यौवन के मनोविज्ञान के रूप में न्यूरोसिस की व्याख्या करने जा रहे हैं - फ्रायड के इस दृष्टिकोण में निहित सभी प्लास्टिक ऊर्जा के बावजूद, मनोविज्ञान को "यौवन की

स्थितियों" तक सीमित नहीं किया जा सकता है। ", ताकि अनजाने में एक हिस्सा लेने की गलती में न पड़ें, चाहे वह शाब्दिक रूप से हो या आंशिक रूप से, पूरे के लिए। और फिर भी यह केवल सैद्धांतिक रूप से ही संभव है , यानी वास्तविक जीवन में वे या तो भटक जाएंगे या इसे एक योजना में निचोड़ लेंगे। जीवन को एक अनुभवी वास्तविकता के रूप में इस तरह से व्याख्यायित नहीं किया जा सकता है। इस दृष्टि से अधिकार या अनुनय के प्रभाव में ही इसे कमोबेश विश्वास की दृष्टि से देखा जा सकता है। और चूंकि यह अनुभवी का वास्तविक जोर है जिसके पास न्यूरोसिस में कोई ठोस बल नहीं है, ऐसे प्रमेय, जो विश्लेषक को "स्थानांतरण" द्वारा समर्थित हैं, रोगियों में अंतिम "वास्तविकता" के रूप में चिपके रहते हैं। और इसके अलावा, ध्यान दें अच्छा : एक डॉक्टर का जीवन! यह शायद-सिद्धांत की बाहरी एकता को सुगम बनाता है; हालाँकि, यहाँ उल्टा पक्ष यह है कि यह केवल प्रत्येक व्यक्ति के मानसिक वैयक्तिकरण के कारण ही मौजूद हो सकता है, जिसमें, सिद्धांतों और हठधर्मिता के दूसरी तरफ, जीवन का वसंत पूरे जोरों पर है।

में, "अनाचार" संबंधों के पौराणिक प्रतिनिधित्व के समान योग्यता के कई रूप हैं।- उदाहरण के लिए, जैकब बर्कहार्ट ने फॉस्ट को "एक प्राचीन छवि, यानी एक वास्तविक और पूर्ण मिथक" कहा है, जिसमें जर्मन, ओडिपस की कथा में ग्रीक की तरह, "अपने तरीके से, फिर से, उसके बारे में अनुमान लगाना चाहिए सार और भाग्य। "

मिथक को समझने का यह मार्ग जंग ने खोजा था। यदि हम जुंगियन मनोविज्ञान के सिद्धांत को विकास की प्रक्रिया में विकसित करने की कोशिश करते हैं, तो फ्रायड से इसका अंतर निम्नानुसार व्यक्त किया जा सकता है: जंग मनोवैज्ञानिक रूप से नहीं , बल्कि मनोवैज्ञानिक रूप से देखना चाहता है। जो देखना चाहता है, वह पहले से नहीं जानता कि वह क्या देखेगा; जो समझना चाहता है वह पहले से जानता है कि वह कैसे समझाएगा। जंग इस प्रकार मिथक के आकाश को नहीं छूता है; मार्टिन बुबेर के शब्दों में, "चीजों की दुनिया में निरपेक्ष को प्रतीक में रखने" के लिए, वह इसे एक प्रतीक के रूप में उपयोग नहीं करता है , लेकिन मिथक को एक समारोह के रूप में रखता है ताकि "चीजों को निरपेक्ष की दुनिया में आत्मसात किया जा सके"। ". इसलिए इस आकाश में तारों की स्थिति के संबंध में भी पहले से कुछ भी निर्धारित नहीं है, आकाशीय पिंड अपने-अपने मार्ग पर चलते हैं। अगर वे किसी की निगाह तक पहुँच जाते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि वे उस क्षण कैसे अपना स्थान बदलते हैं। यदि यह किसी को कुछ मनोवैज्ञानिक निष्कर्ष निकालने की अनुमति देता है, तो यह इस तथ्य में निहित है कि यह व्यक्ति हमेशा से रहा है, लेकिन यह भी कि उसने आकाश को देखा ।

सच है, कोई यह पूछ सकता है कि, पौराणिक धन को अनुभव के लिए खुला रखना क्यों आवश्यक है, क्यों, सादगी के लिए, एक या दो रंगीन रूपांकनों को प्रतीक के रूप में संतुष्ट नहीं किया जा सकता है? खासकर अगर यह ज्ञात हो कि मिथक की छवियों की

बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं है, क्योंकि पूरे के सभी विवरणों को जोड़ना संभव है? उदाहरण के लिए, अल्फ्रेड एडलर का कहना है कि छात्र को अनुभव के "पौराणिक और रहस्यमय" क्षेत्रों में पेश करना बिल्कुल भी आवश्यक नहीं है। बिल्कुल नहीं। केवल तथ्य यह है कि कभी-कभी ऐसा होता है। और मेरी राय में, ऐसा होना चाहिए, क्योंकि पहले से ही "संघर्ष को बढ़ाना" (जंग) की सरल उपचार प्रक्रिया - जो , निश्चित रूप से, अनायास भी की जा सकती है, अर्थात् उपचार के बिना - सिद्धांत रूप में समान है प्रक्रिया, "प्राचीन छवियों", यानी "सामूहिक अचेतन" (जंग) के माध्यम से की जाती है। ये सिर्फ स्तर के अंतर हैं। उपचार मुझे दो चीजों से जुड़ा हुआ लगता है: पहला, इस तथ्य के साथ कि *संपूर्ण का अनुभव किया जाता है*, और दूसरा, यह कि संपूर्ण का अनुभव होता है। व्यक्तिगत मनोविज्ञान के बिंदु जो आमतौर पर पौराणिक रूपांकनों की स्थिति के अनुरूप होते हैं, ठीक वहीं होते हैं जहां मिथक का "स्विचिंग ऑन" होता है , जहां मिथक को एक जीवित प्रतीक के रूप में प्रज्वलित किया जाता है। जिस तरह सपनों में "कामुक इच्छा" प्रदर्शित होती है, उसी तरह पौराणिक चित्र भी दुनिया की परिपूर्णता को दर्शा सकते हैं, और अंततः यह फिर से विरोधों के प्रतीक में विलीन हो सकता है। यह संपूर्ण के प्रति एक दृष्टिकोण है, निरपेक्ष का एक अनुभव जो इस क्षेत्र में व्यक्तिगत से ऊपर उठेगा। यदि ऐसा हुआ है, तो पौराणिक क्षेत्र व्यक्ति के मनोविज्ञान में एक प्राकृतिक मुआवजे के रूप में कार्य करता है जिसे हम "चेतना" कहते हैं, और जब तक यह एक उपयुक्त छवि में जीवित रहता है, व्यक्ति इस द्वंद्व या एकीकरण का प्रतिनिधित्व करता है। उसका अपना विरोधाभास, जो हमेशा आवश्यक होता है। जहां संपूर्ण मौजूद होना चाहिए। छवि में प्राप्त ट्रांसपर्सनल को शामिल करने के लिए धन्यवाद, व्यक्तिगत "सचेत" के साथ संबंध रखते हुए, वह स्वयं संपूर्ण, अपने आप में व्यवहार्य हो जाता है,

यह ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें किसी भी मानसिक संकट पर काबू पाने के लिए खाका शामिल है , जो सामग्री में परिभाषित मानस के कुछ सिद्धांत के उपयोग से अवरुद्ध है, जो कुछ भी कह सकता है। यह, अगर मैं गलत नहीं हूँ, आश्चर्यजनक रूप से उदारवादी, "सामान्य", मानसिक रूप से "कीटाणुरहित" मनोदशा के कई मनोविश्लेषण वाले रोगियों की व्याख्या करता है जिन्हें मैंने देखा है। मैं कहूंगा कि वे बहुत तंग जगहों में चलते हैं, वे बहुत तंग जूते में चलते हैं, घरेलू माहौल का कुछ उनसे चिपक गया है, जिसमें "उपचार" का पूरा नाटक खेला जाता है और जिसमें इसे जबरन खींचा जाता है। ये तंग रिश्ते भी "उदात्तीकरण" की आवश्यकता को जन्म देते हैं। वास्तव में, यहां उच्च बनाने की क्रिया की अवधारणा, बिना किसी संदेह के, इसके लिए कुछ असामान्य के साथ मिश्रित है, दमन से कुछ अधिक सूक्ष्म, छिपे हुए रूप में। यह माता-पिता पर अनुमानों को ध्यान में रखने के बाद विरोधाभासों पर "ओडिपस के दृष्टिकोण" का प्रतिनिधित्व करता है। विरोधों के जोड़े अभी भी असंतुलित हैं, और जाहिरा तौर पर क्योंकि - चीनी ज्ञान के गहरे शब्दों का-

उपयोग करने के लिए - कुछ को इसके सामने पर्याप्त रूप से फैलाने का अवसर दिए बिना संकुचित किया गया था ("यदि आपको कुछ निचोड़ने की आवश्यकता है, तो आपको पहले इसे ठीक से फैलाने की आवश्यकता है ")। "। - तथा।), यहां "स्ट्रेच" का अर्थ है अपने स्वयं के सहज मानसिक जीवन के अंतर्विरोधों के बारे में खुला रहना। ऐसा करने के लिए, हालांकि, किसी को साहस दिखाना चाहिए, यह देखते हुए कि तथाकथित अचेतन के जीवन का मूल्यांकन केवल "चेतना" के काम की एक तुच्छ, जटिल विविधता के रूप में नहीं किया जा सकता है, अर्थात् किसी को इसे न केवल विरोधाभासी व्यवहार करना चाहिए। मूल्यांकन की भावना, लेकिन एक तरफ से, अपने आप में एक विरोधाभास को लेकर, भले ही इसका रूप धारणा की सचेत योजना से काफी अलग हो ("सचेत" के विपरीत यह शायद रूडोल्फ ओटो की अभिव्यक्ति के रूप में सबसे उपयुक्त रूप से विशेषता है बस "काफी अलग"। ऐसे मामले में, तर्क के लिए अपील की आवश्यकता नहीं है। - प्रामाणिक।) लेकिन केवल इस तरह से, यह मुझे लगता है, क्या यह व्यक्तिगत मनोविज्ञान के साथ मिथक के क्षेत्र को जोड़ने के लिए समझ में आता है: मिथक की दुनिया, छवि में आकार की दुनिया की अनंतता के रूप में, जहां न केवल उन उदार मनोदशाओं में हैं जो एक व्यक्ति जो मनोविश्लेषण से गुजरा है, वह अपने मानसिक न्यूनतम अस्तित्व को कृतज्ञतापूर्वक समाप्त कर सकता है: यहां खुशी खतरे के बगल में रहती है, और प्रतिभा पागलपन के बगल में रहती है, लेकिन दूसरी तरफ यह व्यक्तिगत स्वतंत्रता की हवा से बहती है, जिसका अर्थ है आंतरिक कानून का बंधन .

फ्रायड के शिक्षण में, ओडिपस का मिथक, संक्षेप में , गुरु का केवल एक शानदार दृष्टिकोण है, लेकिन ऐसा अनुभव नहीं है जो रोगी को झकझोर दे। रोगी अपने स्वयं के "जटिल" को "तथ्य" के रूप में अनुभव करता है, जिसके लिए उसे एक रूपक के रूप में ओडिपस की त्रासदी का एक उद्धरण पेश किया जाता है - " अधिक परिपक्व युवाओं के लिए फिर से काम किया"। जंग, यह स्वीकार करते हुए कि यह या वह परिसर एक तथ्य के रूप में मौजूद है, एक ही समय में इस परिसर के प्रतिबिंब का सवाल पूछता है और इस प्रतिबिंब की महत्वपूर्ण भावनाओं का अनुसरण करता है। इस प्रकार, यहां तक कि सबसे व्यक्तिगत के आधार पर, वह अभी भी "पौराणिक" में बोलने के लिए है। यही है, जटिल "चेतना के पीछे" नहीं, बल्कि "मिथक के आगे" है। माता-पिता का परिसर, एक मनोवैज्ञानिक स्थिति के रूप में, "पौराणिक रूप से" एक या दूसरे रूप में प्रकट हो सकता है। ओडिपस का मिथक इसके लिए उपयुक्त है, शायद, केवल बहुत ही दुर्लभ मामलों में। उदाहरण के लिए, स्थिति को एक "भयानक मां" के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है, जो नायक के बारे में कल्पना के अपने हिस्से के लिए नक्षत्र है, या कोई अन्य असंख्य तरीकों से जा सकता है; हालांकि, ऐसे पथों की प्रकृति की भविष्यवाणी केवल समग्र रूप से की जा सकती है, लेकिन इसकी व्यक्तिगत विशेषताओं में नहीं, जिस पर छवि बस निर्भर करती

है।

"अचेतन" का अनुभवात्मक क्षेत्र वास्तविक अस्तित्व को प्राप्त नहीं कर सकता है, इसका कारण यह है कि फ्रायड में यह "सचेत - अचेतन" विरोधाभास में एक पूर्ण भागीदार नहीं है , क्योंकि "अचेतन" को "आप" के रूप में चित्रित किया गया है। दमित ", और" दमित "यौन के रूप में। जंग में, इसके विपरीत, यह एक विरोधाभास का पूर्ण भागीदार हो सकता है, यही कारण है कि इसकी सामग्री के बारे में कुछ भी कहना असंभव और अनावश्यक है। इसमें स्वतंत्रता है मनोवैज्ञानिक "नॉट-आई"। मिथक का क्षेत्र जंग का सैद्धांतिक है, पूरे के प्रदर्शन का अनुभव करने के लिए खुला है। यह सिद्धांत के आधार पर प्राप्त नहीं किया जा सकता है, जब तक कि सिद्धांत ने वास्तव में पूरे जीवन को गले नहीं लगाया है। एक विशेष सिद्धांत के रूप में , यह असंभव है, क्योंकि इसे एक ऐसे प्रतीक में विलीन होना होगा जो जीवन के समान ही गहरा, रहस्यमय और अघुलनशील है। यदि इसे समझ लिया जाए, तो सिद्धांत को दूर किया जा सकता है। तब प्रत्येक व्यक्ति को जीवन देने का साहस होगा Cr . करने का मौका अपने स्वयं के प्रतीक को खाएं और इसे समझने में सक्षम हों:

मैं इसका ध्यान करता हूं, और आप अधिक सटीक रूप से समझते हैं:
हमारे पूरे जीवन के रंगीन प्रतिबिंब में।

आत्मा और जीवन

आत्मा और जीवन के बीच संबंध उन समस्याओं में से एक है, जिसकी चर्चा में ऐसे जटिल कारकों को ध्यान में रखना चाहिए कि हमें मौखिक नेटवर्क में उलझने के खतरे से सावधान रहना चाहिए जिसके साथ हम इस कठिन पहली को पकड़ने जा रहे हैं। तथ्यों के उन लगभग क्षितिजहीन परिसरों को सोचने की प्रक्रिया में हम और कैसे शामिल कर सकते हैं जिन्हें हम "आत्मा" या "जीवन" कहते हैं, उन्हें मौखिक अवधारणाओं में नाटकीय रूप से व्यक्त करने की कोशिश करने के अलावा - बुद्धि के सरल गिनती टोकन? मौखिक अवधारणा में यह संदेह, हालांकि यह मुझे भारी लगता है, फिर भी हमेशा, जब वे मौखिक चीजों के बारे में बात करने जा रहे हैं, तो मुझे विशेष रूप से उपयुक्त लगता है। बेशक, शब्द "आत्मा" और "जीवन" हमारे लिए परिचित हैं, वे हमें प्राचीन काल से भी जानते हैं: ये कई हजार साल पहले विचारक की बिसात पर रखे गए आंकड़े हैं। शायद यह समस्या गहरी, धुंधली पुरातनता में उत्पन्न हुई, जब किसी ने यह चौंकाने वाली खोज की कि मरने वाले व्यक्ति की आखिरी सांस के साथ शरीर को छोड़ने वाली जीवित सांस का मतलब हवा को हिलाने से ज्यादा है। इसलिए, यह शायद ही एक संयोग है कि रूच, रूह, रोहो (हिब्रू, अरबी, स्वाहिली) जैसे ओनोमेटोपोइक शब्द भी आत्मा को नामित करते हैं, और ग्रीक □□□◆ □□या लैटिन स्पिरिटस से कम स्पष्ट रूप से नहीं।

लेकिन क्या हम वास्तव में जानते हैं - मौखिक अवधारणा के साथ हमारे सभी परिचितों के साथ - सख्ती से बोलना, आत्मा क्या है? या क्या हमें यकीन है कि जब हम इस शब्द का इस्तेमाल करते हैं तो हम सभी का मतलब एक ही होता है? क्या शब्द "आत्मा" बहुअर्थी और अनिश्चित नहीं है, और यहाँ तक कि अनिश्चित काल तक बहुरूपी भी नहीं है? शब्द की एक ही ध्वनि - आत्मा - दोनों का उपयोग कल्पना करने में मुश्किल, एक सर्वव्यापी अर्थ के उत्कृष्ट विचार, और अंग्रेजी "मन" से संबंधित अवधारणा के लिए अधिक तुच्छ रूप से किया जाता है; इसके अलावा, यह शब्द एक तेज दिमाग की विशेषता है (जर्मन शब्द गीस्ट का सभी सूचीबद्ध अर्थों में "आत्मा" के रूप में अनुवाद किया गया है, साथ ही साथ "दिमाग", "मजाकिया" - अनुवाद।), फिर इसका उपयोग-भूत को नामित करने के लिए किया जाता है, फिर अचेतन परिसर के लिए जो अध्यात्मवादी घटनाओं जैसे कि टेबल मूवमेंट, स्वचालित लेखन, धड़कन की आवाज़ आदि का कारण बनता है, इसका उपयोग लाक्षणिक रूप से एक निश्चित सामाजिक समूह के प्रचलित रवैये को दर्शाने के लिए किया जाता है - "वह आत्मा जो वहां हावी है" - और, अंत में, भौतिक भौतिकता के क्षेत्र में, जब शराब की बात आती है (Weinysf I - TranslI) या अमोनिया (Salmiakgeist I - TranslI) और सामान्य रूप से मादक पेय पदार्थों के बारे में। यह एक दुर्भाग्यपूर्ण मजाक नहीं है, बल्कि एक ओर जर्मन भाषा की एक योग्य

पुरातनता है, और दूसरी ओर, यह विचार का एक लकवाग्रस्त सांसारिक भारीपन है, जो एक सीढ़ी की मदद से आशा करने वाले सभी लोगों के लिए एक दुखद बाधा है। शब्दों की, शुद्ध विचारों की ऊंचाइयों तक पहुंचने के लिए, सांसारिक सब कुछ से मुक्त। क्योंकि जब मैं "आत्मा" शब्द का उच्चारण करता हूं, तो वर्तमान में जिस अर्थ पर जोर दिया जाता है, उसकी कोई भी सीमा शब्द के विचारोत्तेजक इंद्रधनुषीपन को पूरी तरह से रोकने के लिए पर्याप्त नहीं है।

इसलिए, हमें एक मौलिक प्रश्न उठाना चाहिए: वास्तव में, "आत्मा" शब्द से क्या निरूपित किया जाना चाहिए, जब इसका उपयोग जीवन की अवधारणा के संबंध में किया जाता है? यह किसी भी तरह से गुप्त रूप से नहीं माना जाना चाहिए कि, वास्तव में, हर कोई जानता है कि वास्तव में "आत्मा" या "जीवन" का क्या अर्थ है।

मैं दार्शनिक नहीं हूं, बल्कि केवल एक अनुभववादी हूं, और सभी कठिन प्रश्नों में मैं अनुभव के आधार पर निर्णय लेता हूं। लेकिन जहां अनुभव की कोई ठोस नींव नहीं है, मैं अनुत्तरित प्रश्न को छोड़ना पसंद करता हूं। इसलिए, मैं हमेशा अपनी अनुभवात्मक सामग्री के लिए सार को कम करने का प्रयास करूंगा, ताकि खुद को कुछ हद तक सुनिश्चित कर सकूं कि मैं जानता हूं कि मैं किस बारे में बात कर रहा हूं। मुझे यह स्वीकार करना चाहिए कि मैं नहीं जानता कि आत्मा क्या है; जीवन क्या है, इसके बारे में मैं बहुत कम जानता हूं। मैं "जीवन" को केवल एक जीवित शरीर के रूप में जानता हूं; और इसके विपरीत, यह अपने आप में क्या है, एक अमूर्त अवस्था में, एक साधारण शब्द के अलावा और क्या हो सकता है - इसके बारे में मैं अस्पष्ट रूप से अनुमान भी नहीं लगा सकता। तो, सबसे पहले, मुझे शायद, जीवन के बजाय, जीवित शरीर के बारे में बात करनी चाहिए, और आत्मा के बजाय आत्मा के बारे में बात करनी चाहिए। यह शरीर और आत्मा के विचार से उत्पन्न प्रश्न से बचने के लिए किसी भी तरह से नहीं किया जाता है; इसके विपरीत, यह ठीक अनुभव की नींव की मदद से है कि मैं वास्तविक अस्तित्व को प्राप्त करने में आत्मा की सहायता करने की आशा करता हूं - न कि जीवन की कीमत पर।

एक जीवित शरीर की अवधारणा, हमारे उद्देश्यों के दृष्टिकोण से, जीवन की सामान्य अवधारणा की तुलना में व्याख्या करना शायद बहुत आसान है, क्योंकि शरीर एक दृश्यमान और मूर्त चीज है, जो स्वयं के संकाय की सहायता के लिए आसानी से आती है। प्रतिनिधित्व। इसलिए, हम आसानी से सहमत हो सकते हैं कि शरीर जीवन के लक्ष्यों के कार्यान्वयन के लिए उपयुक्त भौतिक तत्वों की एक आंतरिक रूप से परस्पर जुड़ी प्रणाली है, और इस तरह यह तर्कसंगत समझ के लिए सुलभ होने की अभिव्यक्ति है या, इसे और अधिक सरलता से, समीचीन पदार्थ की व्यवस्था जो अस्तित्व को संभव बनाती है। प्राणी। भ्रम से बचने के लिए, मैं यह बताना चाहूंगा कि शरीर की उपरोक्त परिभाषा में कुछ शामिल नहीं है, जिसे अस्पष्ट रूप से मेरे द्वारा एक जीवित प्राणी कहा जाता है। इस भेद के

आधार पर, जिसका मैं बचाव या आलोचना नहीं करना चाहता, शरीर को न केवल पदार्थ के एक मृत ढेर के रूप में समझा जाना चाहिए, बल्कि जीवन के लिए तैयार एक भौतिक प्रणाली के रूप में, जीवन को सक्षम करने के लिए, बशर्ते, कि एक जीवित प्राणी की भागीदारी के बिना, अपनी सभी तत्परता के बावजूद, वह जीवित नहीं रह सकता था। क्योंकि, एक जीवित प्राणी के सभी संभावित महत्व के बावजूद, शरीर में ही जीवन के लिए आवश्यक किसी चीज की कमी होती है, अर्थात् आत्मा। यह हम जानते हैं, सबसे पहले अपने स्वयं के प्रत्यक्ष अनुभव से, फिर परोक्ष रूप से दूसरों के अनुभव से, और उच्च कशेरुकियों के अध्ययन में की गई वैज्ञानिक खोजों के लिए भी धन्यवाद और, क्योंकि कोई विरोधाभासी तर्क नहीं है, निचले जानवर और पौधे।

क्या मुझे अब उस "जीवित प्राणी" की बराबरी करनी चाहिए, जिसके बारे में मैंने ऊपर कहा था, चैत्य के साथ, जो हमारे लिए है, इसलिए बोलने के लिए, मानव चेतना में प्रत्यक्ष रूप से मूर्त है, और इस तरह फिर से आत्मा और शरीर के प्रसिद्ध प्राचीन द्वैत पर पहुंचें? या क्या कोई तर्क है जो जीव को आत्मा से अलग करने का औचित्य साबित करेंगे? इस प्रकार, हम आत्मा को एक उद्देश्यपूर्ण प्रणाली के रूप में भी समझेंगे, न केवल जीवन प्रदान करने वाली सामग्री की व्यवस्था के रूप में, बल्कि जीवित सामग्री, या अधिक सटीक रूप से, जीवन प्रक्रियाओं की। मुझे बिल्कुल भी यकीन नहीं है कि यह दृष्टिकोण सार्वभौमिक स्वीकृति के साथ मिलेगा, क्योंकि हर कोई आत्मा और शरीर के एक जीवित द्वैत के विचार के इतने आदी हो गए हैं कि यह संभावना नहीं है, शायद, कि वे तुरंत झुकेंगे आत्मा को शरीर में बहने वाली जीवन प्रक्रियाओं का एक सरल क्रम मानना। प्रक्रियाएं।

हमारा अनुभव, जहां तक यह आम तौर पर हमें आत्मा के सार के बारे में निष्कर्ष निकालने की अनुमति देता है, हमें तंत्रिका तंत्र पर निर्भर एक घटना के रूप में मानसिक प्रक्रिया के साथ प्रस्तुत करता है। यह पर्याप्त निश्चितता के साथ जाना जाता है कि शरीर के कुछ हिस्सों के नष्ट होने से मानसिक नुकसान होता है। रीढ़ की हड्डी और मस्तिष्क में मुख्य रूप से संवेदी और मोटर मार्गों के कनेक्शन होते हैं, तथाकथित प्रतिवर्त चाप। इससे मेरा क्या मतलब है, मैं एक साधारण उदाहरण के साथ प्रदर्शित करूंगा। एक व्यक्ति अपनी उंगली से किसी गर्म वस्तु को छूता है;

नतीजतन, स्पर्श के अंग के तंत्रिका अंत तुरंत उत्तेजित हो जाते हैं। उनके उत्तेजना के परिणामस्वरूप, पूरे मोटर मार्ग की स्थिति रीढ़ की हड्डी तक और वहां से मस्तिष्क तक बदल जाती है। लेकिन पहले से ही रीढ़ की हड्डी में, नाड़ीग्रन्थि कोशिकाएं जो स्पर्श उत्तेजना प्राप्त करती हैं, परिवर्तित अवस्था को मोटर गैन्ग्लिया की पड़ोसी कोशिकाओं तक पहुंचाती हैं, जो अपने हिस्से के लिए, हाथ की मांसपेशियों को भी आवेग भेजती हैं और इस तरह अचानक संकुचन का कारण बनती हैं। मांसपेशियों और हाथ की वापसी। यह सब इतनी जल्दी होता है कि दर्द की सचेत धारणा अक्सर उस समय होती है जब हाथ

पहले ही वापस ले लिया जाता है। अर्थात्, प्रतिक्रिया स्वचालित रूप से की जाती है और बाद में ही महसूस की जाती है। और रीढ़ की हड्डी में क्या होता है, यह अवधारणा और नामों द्वारा पुष्टि की गई एक प्रदर्शन के रूप में "I" को समझने के लिए प्रस्तुत किया जाता है। एक आधार के रूप में एक प्रतिवर्त चाप के इस तरह के एक मॉडल के रूप में, अर्थात्, जलन के बाहर से अंदर की ओर आंदोलन और एक आवेग के अंदर से बाहर की ओर, कोई उन प्रक्रियाओं की कल्पना कर सकता है जो आत्मा को रेखांकित करती हैं।

आइए अब एक कम सरल मामला लेते हैं: हम एक अस्पष्ट ध्वनि सुनते हैं जिसका पहले कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, इसके अलावा यह हमें इसका अर्थ जानने के लिए सुनने के लिए प्रेरित करता है। इस मामले में, श्रवण उत्तेजना मस्तिष्क में प्रतिनिधित्व की एक पूरी श्रृंखला, इससे जुड़ी छवियों को उद्घाटित करती है। आंशिक रूप से यह ध्वनि चित्र होंगे, आंशिक रूप से दृश्य, आंशिक रूप से कामुक। ऐसा करने में, मैं विशेष रूप से प्रतिनिधित्व के अर्थ में "छवि" शब्द का उपयोग करता हूँ। बेशक, एक चैत्य कुछ चेतना की सामग्री हो सकती है, अर्थात्, इसका प्रतिनिधित्व तभी किया जा सकता है जब उसमें प्रतिनिधित्व करने की क्षमता हो, यानी कल्पना। इसलिए, मैं चेतना की सभी सामग्री को छवियों का नाम देता हूँ, क्योंकि वे मस्तिष्क प्रक्रियाओं के प्रतिबिंब हैं।

एक श्रवण उत्तेजना द्वारा उत्पन्न छवियों की श्रृंखला अचानक एक दृश्य छवि से जुड़ी ध्वनि स्मृति छवि में जोड़ दी जाती है, अर्थात् ध्वनि में जो एक रैटलस्नेक बनाता है। शरीर की पूरी मांसलता सीधे संबंधित अलार्म सिग्नल का अनुसरण करती है। पलटा चाप पूरा हो गया है; लेकिन इस मामले में यह पिछले एक से अलग है कि एक मस्तिष्क प्रक्रिया, मानसिक छवियों का एक क्रम, संवेदी उत्तेजना और मोटर प्रतिक्रिया के बीच डाला जाता है। शरीर का अचानक तनाव, बदले में, हृदय और रक्त वाहिकाओं में घटना का कारण बनता है, ऐसी प्रक्रियाएं जो आत्मा में भय के रूप में परिलक्षित होती हैं।

आत्मा का अंदाजा लगाया जा सकता है। इसमें सरल मस्तिष्क प्रक्रियाओं की मैपिंग और लगभग अनंत क्रम में इस तरह के मैपिंग की मैपिंग शामिल है। इन मानचित्रणों में चेतना का गुण होता है। चेतना का सार एक पहली है, जिसका समाधान मैं नहीं जानता। लेकिन विशुद्ध रूप से औपचारिक रूप से, कोई यह कह सकता है कि एक चैत्य वस्तु को तब चेतन माना जाता है जब वह "मैं" के साथ संबंध में प्रवेश करती है। यदि ये संबंध मौजूद नहीं हैं, तो यह अचेतन है। भूलने से पता चलता है कि कितनी बार और कितनी आसानी से सामग्री स्वयं के साथ अपना संबंध खो देती है। इसलिए, हम चेतना की तुलना स्पॉटलाइट के प्रकाश से करना पसंद करते हैं। केवल वे वस्तुएँ जिन पर प्रकाश का शंकु पड़ता है, मेरी धारणा के क्षेत्र में आती हैं। हालाँकि, एक वस्तु जो अंधेरे में होती है, उसका अस्तित्व समाप्त नहीं होता है, वह बस अदृश्य हो जाती है। इस प्रकार, कहीं न कहीं एक चैत्य है जिसके बारे में मुझे जानकारी नहीं है, और यह बहुत संभव है कि वह "मैं" को

दिखाई देने की स्थिति के अनुरूप हो।

इस प्रकार, चेतना, शायद, काफी समझ में आती है यदि हम इसे "मैं" के संबंध के रूप में समझते हैं। लेकिन यहां महत्वपूर्ण बिंदु "मैं" है। इससे हमें क्या समझना है? जाहिर है, "मैं" की सभी एकता के साथ, हम एक अत्यंत विषम मात्रा के बारे में बात कर रहे हैं। यह इंद्रियों के कार्यों के प्रतिबिंबों पर आधारित है, जो उत्तेजनाओं को भीतर और बाहर से संचारित करता है, और इसके अलावा, पिछली प्रक्रियाओं की संचित छवियों की एक बड़ी मात्रा पर। इन सभी अत्यंत भिन्न घटक भागों को मजबूत सामंजस्य की आवश्यकता होती है, जिसे हमने अभी-अभी चेतना के रूप में पहचाना है। अर्थात् चेतना "मैं" के लिए एक आवश्यक पूर्व शर्त प्रतीत होती है। हालांकि, "मैं" चेतना के बिना भी अकल्पनीय है। यह प्रतीत होने वाला अंतर्विरोध, शायद, इस तथ्य से हल हो जाता है कि हम "मैं" को उसी तरह समझते हैं जैसे प्रतिबिंब, लेकिन किसी एक का नहीं, बल्कि बहुत सारी प्रक्रियाओं और उनकी बातचीत, यानी उन सभी प्रक्रियाओं और सामग्रियों के बारे में। जो "मैं" - चेतना बनाते हैं। उनकी भीड़ वास्तव में एकता का निर्माण करती है, क्योंकि चेतना का संबंध, एक तरह के आकर्षण बल की तरह, अलग-अलग हिस्सों को एक काल्पनिक केंद्र की दिशा में खींचता है। इसलिए, मैं केवल "मैं" के बारे में बात नहीं कर रहा हूँ, बल्कि जटिल "मैं" के बारे में, यह मानते हुए कि "मैं" में भी एक परिवर्तनशील संरचना है, जिसका अर्थ है कि यह अस्थायी है और केवल "मैं" नहीं हो सकता। दुर्भाग्य से, मैं यहाँ "मैं" में क्लासिक परिवर्तनों के बारे में विस्तार से नहीं बता सकता जो बीमारों की आत्मा में या सपनों में होते हैं,

मानसिक तत्वों की संरचना के रूप में "मैं" की समझ के लिए धन्यवाद, हम तार्किक रूप से इस सवाल पर आते हैं: क्या "मैं" केंद्रीय छवि है, पूरे मानव सार का अनन्य प्रतिनिधि है? क्या इसमें सभी सामग्री और कार्यों को अपने आप में शामिल किया गया था और पूर्व प्रेस किया गया था?

हमें इस प्रश्न का उत्तर नकारात्मक में देना चाहिए।

"मैं" -चेतना एक जटिल है जो पूरे इंसान को कवर नहीं करती है: वह जितना जानता है उससे कहीं ज्यादा भूल गया है। यह जो कुछ सुनता और देखता है, उसके केवल एक छोटे से हिस्से के बारे में जानता है। विचार चेतना से दूर हो जाते हैं, इसके अलावा, वे पहले से ही तैयार हैं, और चेतना इसके बारे में कुछ नहीं जानती है। अहंकार के पास आंतरिक शारीरिक प्रक्रियाओं के अत्यंत महत्वपूर्ण विनियमन का शायद ही कमजोर विचार है जो सहानुभूति तंत्रिका तंत्र कार्य करता है। शायद "मैं" में जो कुछ शामिल है, वह एक पूर्ण चेतना को अपने आप में समझने का केवल सबसे छोटा हिस्सा है।

इसलिए, "मैं" केवल एक विशेष परिसर हो सकता है। शायद यह अपनी तरह का एकमात्र परिसर है, जिसकी आंतरिक एकता चेतना का प्रतीक है? लेकिन क्या आत्मा के

अंगों की कोई एकता चेतना नहीं है? यह स्पष्ट नहीं है कि इंद्रियों के कार्यों के एक निश्चित हिस्से और स्मृति की सामग्री के एक निश्चित हिस्से को जोड़ना चेतना का प्रतिनिधित्व क्यों करना चाहिए, जबकि आत्मा के अन्य हिस्सों का मिलन नहीं होना चाहिए। दृष्टि, श्रवण आदि का परिसर। मजबूत, सुव्यवस्थित आंतरिक संचार है। यह मानने का कोई कारण नहीं है कि वह भी चेतना नहीं हो सकता था। जैसा कि अंधे और मूक-बधिर हेलेन केलर के मामले से पता चलता है, शरीर के स्पर्श और धारणा का अंग चेतना बनाने या संभव बनाने के लिए पर्याप्त है, हालांकि, मुख्य रूप से इन इंद्रियों द्वारा सीमित है। इसलिए, "मैं" -चेतना को मेरे द्वारा विभिन्न "इंद्रियों के बारे में चेतना" के संयोजन के रूप में समझा जाता है, और प्रत्येक व्यक्तिगत चेतना की स्वतंत्रता उच्च "मैं" की एकता में डूब गई है।

बंद कुछ क्षेत्रों में प्रवेश करना असंभव है, फिर, स्वाभाविक रूप से, सवाल उठता है, प्राणियों नहीं क्या "मैं" के समान सभी मानसिक गतिविधियों की एकता है - चेतना, एक प्रकार की उच्च या व्यापक चेतना जिसमें हमारा "मैं" एक दृश्य सामग्री होगा, जैसे, उदाहरण के लिए, मेरी चेतना में दृष्टि की गतिविधि, और यह, दृष्टि की तरह, उच्च स्तर पर उन गतिविधियों के साथ विलीन हो जाएगी जिनके बारे में मुझे जानकारी नहीं है। शायद हमारी "मैं"-चेतना पूर्ण चेतना में संलग्न हो सकती है, जैसे कि एक छोटा वृत्त एक बड़े में,

जैसे देखने, सुनने आदि की क्रियाएँ होती हैं। स्वयं एक प्रतिबिंब बनाता है, जो "I" से संबंधित होने के कारण, इस गतिविधि को चेतना देता है, इसलिए "I", जैसा कि पहले ही संकेत दिया गया है, को उन सभी गतिविधियों की समग्रता के प्रतिबिंब के रूप में समझा जा सकता है जिन्हें समझा जा सकता है। यह आशा की जा सकती है कि सभी चैत्य क्रियाकलाप एक प्रतिबिम्ब उत्पन्न करते हैं और यह कि उनकी आवश्यक प्रकृति भी इसी में निहित है, अन्यथा उन्हें "मानसिक" भी नहीं कहा जा सकता। और वास्तव में, यदि मेरी चेतना को प्रस्तुत गतिविधियों में कल्पना का गुण है, तो यह समझ से बाहर है कि अचेतन मानसिक गतिविधियों में ऐसी कल्पना क्यों नहीं होनी चाहिए। और चूंकि एक व्यक्ति, जैसा कि हमें लगता है, अपने आप में एक महत्वपूर्ण एकता है, निष्कर्ष खुद बताता है कि सभी मानसिक गतिविधियों के प्रतिबिंब पूरे व्यक्ति की समग्र छवि में शामिल हो सकते हैं, और वह उन पर विचार करता है और उनके बारे में जानता है उसके "मैं" के रूप में।

मैं इस सुझाव के विरुद्ध कोई ठोस प्रतिवाद प्रस्तुत नहीं कर सका; लेकिन यह एक बेकार कल्पना ही रहेगी जब तक कि इसे समझाने की जरूरत न पड़े। यहां तक कि अगर हमें कुछ मानसिक तथ्यों की व्याख्या करने के लिए उच्च स्तर की चेतना की संभावना को स्वीकार करना पड़ा, तो यह केवल एक धारणा ही रहेगी, क्योंकि यह हमारे कारण से परे होगा कि हमारी तुलना में उच्च स्तर की चेतना का अस्तित्व साबित हो। यह संभावना होगी कि अंधेरे में, हमारी चेतना के दूसरी तरफ, चीजें बिल्कुल भी स्थित न हों, जैसा कि हम कल्पना कर सकते हैं, यहां तक कि बेतहाशा कल्पना के साथ भी।

आगे बढ़ते हुए मैं इस मुद्दे पर वापस आऊंगा। इसलिए, हम इसे कुछ समय के लिए छोड़ देना चाहते हैं और आत्मा और शरीर के मूल प्रश्न पर लौट आते हैं। पहले जो कहा गया है, उससे आत्मा के चिंतनशील सार का अंदाजा लगाया जा सकता है। आत्मा, व्यापक अर्थों में, छवियों का एक क्रम है, लेकिन एक यादृच्छिक निर्माण नहीं है - एक दूसरे के बगल में या एक के बाद एक, लेकिन एक अत्यंत समृद्ध अर्थ और समीचीन, जीवन की गतिविधियों का दृश्य प्रतिनिधित्व, छवियों में व्यक्त किया गया है। और जिस प्रकार शरीर के जीवनदायिनी पदार्थ के लिए एक आत्मा की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार आत्मा के पास भी एक जीवित शरीर होना चाहिए ताकि उसकी छवियों को जीवित रखा जा सके।

शायद आत्मा और शरीर विपरीत जोड़ी हैं , और इस तरह वे एक ऐसी सत्ता की अभिव्यक्ति हैं, जिसकी प्रकृति को न तो भौतिक अभिव्यक्ति से जाना जा सकता है और न ही आंतरिक प्रत्यक्ष धारणा से। यह ज्ञात है कि प्राचीन दृष्टिकोण ने शरीर के साथ आत्मा के मिलन से मनुष्य के उद्भव की व्याख्या की। लेकिन, शायद, यह कहना अधिक सही होगा कि एक अज्ञेय जीवित प्राणी (जिसकी प्रकृति के बारे में कोई और कुछ नहीं कह सकता, सिवाय इसके कि हम इस शब्द के साथ जीवन की उच्चतम अभिव्यक्ति को अस्पष्ट रूप से नामित करते हैं) बाहरी रूप से एक भौतिक शरीर के रूप में प्रकट होता है लेकिन जब अंदर से देखा जाता है तो शरीर में चल रही महत्वपूर्ण गतिविधि की छवियों का एक क्रम होता है। एक दूसरा है, और हमें संदेह है कि क्या आत्मा और शरीर में यह सब विभाजन, अंतिम विश्लेषण में, केवल मन का एक कृत्रिम उपकरण नहीं होगा, जो कि अनुभूति के लिए आवश्यक चीजों की स्थिति को समझने के लिए किया गया है। एक और एक ही तथ्य को दो विचारों में विभाजित करना। जिसे हमने अनुचित रूप से स्वतंत्र अस्तित्व के साथ संपन्न किया।

वैज्ञानिक रूप से, जीवन के रहस्य को न तो कार्बनिक पदार्थों में या मानसिक छवियों के रहस्यमय अनुक्रमों में समझना संभव है , जिसके परिणामस्वरूप हम अभी भी एक जीवित प्राणी की तलाश में हैं जिसका अस्तित्व प्रत्यक्ष अनुभव से परे है। जो कोई भी शरीर विज्ञान के रसातल से परिचित है, वह इसके चारों ओर घूमेगा, और जो कोई भी आत्मा के बारे में कुछ भी जानता है, वह इस विचार से निराश होता है कि क्या इस प्रतिबिंब में, यहां तक कि लगभग कुछ भी "जानना" संभव होगा। सजीव प्राणी।

इस वजह से, शायद, उस अस्पष्ट, बदलती हुई चीज़, जिसे आत्मा कहा जाता है, के बारे में कुछ भी महत्वपूर्ण पता लगाने की कोई आशा गायब हो जाएगी। मुझे केवल एक ही बात स्पष्ट लगती है: जैसे "जीवित" शरीर में जीवन की उच्चतम अभिव्यक्ति है, इसलिए "आत्मा" आत्मा की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है , और वास्तव में अक्सर आत्मा की अवधारणा अवधारणा के साथ भ्रमित होती है। आत्मा का। जैसे, "आत्मा" उसी "परे" में है, अर्थात्, "जीवित प्राणी" के रूप में एक ही अस्पष्ट अप्रभेद्यता में है। और यह संदेह कि क्या आत्मा

और शरीर एक हैं और यही बात आत्मा और जीव के प्रतीत होने वाले अंतर्विरोध पर भी लागू होती है। शायद वे एक ही हैं

क्या ऐसी उच्च अभिव्यक्तियाँ बिल्कुल आवश्यक हैं? क्या हम आत्मा और शरीर के पहले से ही पर्याप्त रूप से रहस्यमय अंतर्विरोध से संतुष्ट नहीं हो सकते? प्राकृतिक-वैज्ञानिक दृष्टिकोण से हमें वहीं रुक जाना चाहिए था। हालाँकि, एक ऐसा दृष्टिकोण है जो वैज्ञानिक नैतिकता को संतुष्ट करता है, जो न केवल हमें अनुमति देता है, बल्कि हमें और आगे जाने की आवश्यकता है और इस तरह उन प्रतीत होने वाली दुर्गम सीमाओं को पार कर जाता है। यह दृष्टिकोण है मनोवैज्ञानिक।

वास्तव में, अपनी पिछली चर्चाओं में मैंने इसकी नींव पर सवाल किए बिना, प्राकृतिक-वैज्ञानिक सोच की एक यथार्थवादी स्थिति ली। हालांकि, मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से मेरा क्या मतलब है, इसे संक्षेप में समझाने में सक्षम होने के लिए, मुझे यह दिखाना होगा कि यथार्थवादी दृष्टिकोण के अनन्य अधिकार के बारे में गंभीर संदेह हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, जिसे साधारण मन सबसे अधिक वास्तविक वस्तु समझेगा, वह है, पदार्थ। पदार्थ की प्रकृति के संबंध में, हमारे पास केवल अस्पष्ट सैद्धांतिक अनुमान और हमारी आत्मा द्वारा बनाई गई छवियाँ हैं। मेरी आंख के संपर्क में आने वाली तरंगों या सूर्य के विकिरण की गति को मेरी धारणा से प्रकाश की अनुभूति में अनुवादित किया जाता है। - अनुभव, तो उसका सरलतम रूप भी मानसिक छवियों का एक अत्यंत जटिल निर्माण है। नतीजतन, बोलने के लिए कोई प्रत्यक्ष अनुभव नहीं है, लेकिन केवल चैत्य ही है। उसके द्वारा सब कुछ मध्यस्थता, अनुवादित, फ़िल्टर्ड, रूपक, विकृत और यहां तक कि मिथ्या भी है। हम बदलते और अंतहीन इंद्रधनुषी छवियों के धुएं के बादलों में इतने ढके हुए हैं कि हम एक बड़े संदेह के साथ कहना चाहते हैं: "कुछ भी बिल्कुल सच नहीं है - और यह बिल्कुल सच भी नहीं है।" हमारे चारों ओर का यह कोहरा इतना घना और इतना भ्रामक है कि हमें सटीक विज्ञान का आविष्कार करना पड़ा ताकि हम चीजों की "वास्तविक" प्रकृति की एक झलक भी पकड़ सकें, इसलिए बोलने के लिए। सच है, यह दुनिया साधारण मन को धुंधली नहीं लगती, लेकिन अगर हम इसे आदिम मनुष्य की आत्मा में डुबकी लगाने और संस्कृति के आदमी की चेतना के चश्मे के माध्यम से दुनिया की उसकी छवि पर विचार करने का अवसर देते हैं, तो वह होगा उस महान गोधूलि का विचार प्राप्त करें जिसमें हम अभी भी खुद को पाते हैं। और खुद।

हम हमेशा दुनिया के बारे में जो कुछ भी जानते हैं, और जो हमारे पास तत्काल-निपटान में है, वह चेतना की सामग्री है जो दूर, अंधेरे स्रोतों से बहती है। मैं यथार्थवादी दृष्टिकोण की सापेक्ष वैधता पर विवाद नहीं करना चाहता, निबंध में पुनः (किसी वस्तु में विद्यमान (अव्य।)। - अनुवाद), न ही आदर्शवादी, निबंध की समान रूप से सापेक्ष वैधता-में बुद्धि एकल (अकेले मन में विद्यमान (अव्य।)। - Transl.), लेकिन मैं निबंध के माध्यम

से इन चरम विपरीतताओं को एकजुट करना चाहूंगा में एनिमा (आत्मा में विद्यमान (अव्य।)। - *Transl*), यानी मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से। हम सीधे तौर पर छवियों की दुनिया में विशेष रूप से रहते हैं।

यदि हम इस दृष्टिकोण को गंभीरता से लेते हैं, तो इसके अजीबोगरीब परिणाम होंगे, क्योंकि तब मानसिक तथ्यों की वास्तविकता को या तो ज्ञान की आलोचना के अधीन नहीं किया जा सकता है, या स्वाभाविक रूप से, वैज्ञानिक अनुभव के अधीन नहीं किया जा सकता है। एकमात्र प्रश्न होगा: क्या चेतना की कोई सामग्री है या नहीं? यदि यह मौजूद है, तो यह अपने आप मान्य होगा। प्राकृतिक विज्ञान को केवल तभी लागू किया जा सकता है, जब सामग्री की आवश्यकता हो, किसी वस्तु के बारे में बोलने के लिए जिसे बाहरी अनुभव में सामना किया जा सकता है; बदले में, ज्ञान की आलोचना की आवश्यकता तभी होती है जब अज्ञेय को ज्ञेय के पद पर उंचा किया जाता है। हम जो कुछ जानते हैं उसे एक उदाहरण के रूप में लेते हैं: प्राकृतिक विज्ञान ने ईश्वर को कहीं नहीं पाया है, ज्ञान की आलोचना ईश्वर को जानना असंभव साबित करती है, लेकिन आत्मा ईश्वर के अनुभव की पुष्टि के साथ आगे आती है। ईश्वर आत्मा का एक तथ्य है, जो सीधे अनुभव के लिए सुलभ है। यदि ऐसा न होता तो ईश्वर की कभी बात ही नहीं होती। यह तथ्य अपने आप में मान्य है, बिना किसी गैर-मनोवैज्ञानिक साक्ष्य की आवश्यकता के और किसी भी प्रकार की गैर-मनोवैज्ञानिक आलोचना के लिए दुर्गम है। यह सबसे तात्कालिक हो सकता है, और इसीलिए सबसे वास्तविक अनुभव, जिसे नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता है और जिसे विवादित नहीं किया जा सकता है। वास्तविकता की खराब विकसित भावना वाले या अंधविश्वासी हठ वाले लोग ही इस सच्चाई से बहरे हो सकते हैं। जब तक ईश्वर का अनुभव सार्वभौमिक महत्व या उसके निरपेक्ष होने का दावा करना शुरू नहीं करता है, तब तक कोई आलोचना संभव नहीं है, एक तर्कहीन तथ्य के लिए, जैसे कि यह तथ्य कि हाथी मौजूद हैं, की आलोचना नहीं की जा सकती। फिर भी परमेश्वर का अनुभव एक अपेक्षाकृत सामान्य वास्तविक अनुभव है, जिससे कि लगभग हर कोई सामान्य शब्दों में जानता है कि "ईश्वर के अनुभव" की अभिव्यक्ति का क्या अर्थ है। इसे वैज्ञानिक मनोविज्ञान द्वारा काफी सामान्य तथ्य के रूप में मान्यता दी जानी चाहिए। न ही हम उस बात को नज़रअंदाज कर सकते हैं जो बेहद अंधविश्वासी है। अगर कोई दावा करता है कि उसने आत्माओं को देखा है या वह मुग्ध है, और इसका मतलब उसके लिए साधारण बकवास से ज्यादा है, तो हम फिर से एक ऐसे तथ्य के बारे में बात कर रहे हैं जो इतना सामान्य है कि हर कोई जानता है कि "आत्मा" या "मंत्रमुग्धता" का क्या मतलब है। ". इसलिए, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि इस मामले में भी, हम एक निश्चित मानसिक परिसर से निपटेंगे, जो इस अर्थ में प्रकाश के रूप में "वास्तविक" है। हालांकि मुझे नहीं पता कि बाहरी अनुभव में मृत व्यक्ति की आत्मा के अस्तित्व को कैसे साबित किया जा सकता है, और मैं कल्पना नहीं कर

सकता कि मैं किस तार्किक तरीके से यह साबित कर पाऊंगा कि मृत्यु के बाद भी जीवन जारी है, लेकिन इसके बावजूद मुझे इस तथ्य पर विचार करना चाहिए कि आत्मा हर समय और सभी क्षेत्रों में आत्माओं के अनुभव की पुष्टि करती है, जैसे मुझे यह ध्यान रखना चाहिए कि बहुत से लोग इस व्यक्तिपरक अनुभव को पूरी तरह से नकारते हैं।

इस अधिक सामान्य व्याख्या के बाद, मैं अब आत्मा की अवधारणा पर लौटना चाहूंगा, जिसे हम अपने पिछले यथार्थवादी दृष्टिकोण से कभी नहीं समझ पाए हैं। "आत्मा" (साथ ही "ईश्वर") मानसिक अनुभव की एक वस्तु को दर्शाता है, जिसे बाहरी रूप से किसी भी चीज़ में सिद्ध नहीं किया जा सकता है, और इसे तर्कसंगत रूप से भी नहीं जाना जा सकता है। यहाँ हम जर्मन शब्द Geist का उच्चतम अर्थ में प्रयोग करते हैं। यदि हम पहले से ही अपने आप को इस पूर्वाग्रह से मुक्त करने में कामयाब हो गए हैं कि अवधारणा को या तो बाहरी अनुभव की वस्तुओं तक सीमित करना आवश्यक है, या किसी प्राथमिक श्रेणी के कारण, तो अब हम अपना ध्यान और रुचि पूरी तरह से उस विशेष और अभी भी अज्ञात की ओर मोड़ सकते हैं जा रहा है, जिसे "आत्मा" शब्द से दर्शाया गया है। ऐसे मामले में, नाम की संभावित व्युत्पत्ति को देखना हमेशा उपयोगी होता है, क्योंकि यह अक्सर शब्द का इतिहास होता है जो अंतर्निहित विषय की प्रकृति पर अप्रत्याशित प्रकाश डालता है।

प्रारंभिक समय से ओल्ड हाई जर्मन गीस्ट और फिर एंग्लो-सैक्सन गैस्ट का शरीर के विपरीत एक अलौकिक अस्तित्व का अर्थ है। क्लूज के अनुसार, यह संभावना है कि शब्द का मुख्य अर्थ पुराने नॉर्स गीसा (क्रोध करने के लिए) से संबंधित है, गॉथिक हमें - गेस्यान (खुद को गुस्सा करने के लिए), स्विस-जर्मन uf - gaista (होने के लिए) अपने आप के बगल में) और अंग्रेजी को अचंभित (उत्तेजित, क्रोधित)। इस संबंध की पुष्टि-भाषण के अन्य रूपों से होती है। "क्रोध की शक्ति में होना" का अर्थ है: उस पर कुछ आ गया है, उस पर कब्जा कर लिया है, उस पर आग्रह किया है, उस पर एक राक्षस का कब्जा है, वह आविष्ट है, किसी ने उस पर हमला किया है, और इसी तरह। पूर्व-मनोवैज्ञानिक स्तर पर, और अब भी काव्यात्मक भाषा में, राक्षसों के रूप में प्रभावित होते हैं। प्रेम में होने का अर्थ है: वह कामदेव के बाण से छेदा गया था। एरिस ने लोगों आदि के बीच कलह का एक सेब फेंक दिया। जब हम "क्रोध से अपने आप के पास हो जाते हैं", तो, जाहिर है, हम अब खुद नहीं हैं, लेकिन एक राक्षस, एक आत्मा ने हम पर कब्जा कर लिया है।

प्राचीन वातावरण जिसने कभी "आत्मा" शब्द को जन्म दिया था, वह आज भी हमारे अंदर रहता है, हालांकि, एक मानसिक स्तर पर जो चेतना से कुछ कम है। हालाँकि, जैसा कि आधुनिक अध्यात्मवाद दिखाता है, आदिम आत्मा के उस हिस्से को सतह पर वापस लाने के लिए बहुत कम आवश्यकता होती है। यदि व्युत्पत्ति संबंधी व्युत्पन्न की हमारी धारणा सही निकली (जो अपने आप में बहुत संभावना है), तो "आत्मा" इस अर्थ में

एक व्यक्ति के प्रभाव का प्रतिबिंब होगी। अगर कोई अपने आप को बेहूदा बयान देता है, तो कहते हैं कि वह अपनी जुबान पर लगाम नहीं रखता; यह स्पष्ट रूप से व्यक्त करता है कि उनका भाषण एक स्वतंत्र प्राणी बन गया है जो मुक्त हो गया है और उससे भाग गया है। मनोवैज्ञानिक रूप से, हम कहेंगे कि कोई भी प्रभाव एक स्वायत्त परिसर बन जाता है, चेतना के पदानुक्रम से अलग हो जाता है और जहां भी संभव हो, "मैं" को अपने साथ खींच लेता है। इसलिए, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि आदिम मन इसमें एक विदेशी, अदृश्य प्राणी - आत्मा की गतिविधि को देखता है। इस मामले में, आत्मा एक स्वतंत्र प्रभाव का प्रतिबिंब है, और इसलिए प्राचीन लोग काफी उचित रूप से आत्माओं को भी कहते हैं, छवियों की भी कल्पना करते हैं।

आइए अब हम "आत्मा" की अवधारणा के अन्य पहलुओं की ओर मुड़ें! वाक्यांश "उसने अपने मृत पिता की आत्मा में बात की" अभी भी अस्पष्ट है, क्योंकि इस मामले में "आत्मा" शब्द मृतक की आत्मा और सोचने के तरीके को समान रूप से दर्शाता है। भाषण के अन्य मोड़ - "एक नई भावना लाओ", "एक नई भावना के साथ सांस लें" - सोचने के तरीके के नवीनीकरण को व्यक्त करना चाहिए। यहाँ मुख्य विचार फिर से आत्मा की शक्ति का विचार है, जो, उदाहरण के लिए, घर में बन गया स्पिरिट्स रेक्टर (मुख्य भावना (अव्य।)। - अनुवाद।)। लेकिन आप चिंता के साथ यह भी कह सकते हैं, "उस परिवार में एक दुष्ट आत्मा है।"

यहां हम अब प्रभाव के व्यक्तित्व के बारे में बात नहीं कर रहे हैं, बल्कि सोच के पूरे तरीके के दृश्य प्रतिनिधित्व के बारे में या मनोवैज्ञानिक रूप से, दृष्टिकोण के बारे में बात कर रहे हैं। नतीजतन, एक "बुरी आत्मा" के रूप में व्यक्त किया गया एक बुरा रवैया, भोले दृष्टिकोण के अनुसार, एक व्यक्ति के प्रभाव के रूप में लगभग एक ही मनोवैज्ञानिक कार्य है। कई लोगों के लिए, यह एक आश्चर्य के रूप में आ सकता है, क्योंकि "रवैया" को आमतौर पर "स्वयं-से-कुछ-कुछ" के रूप में समझा जाता है, अर्थात्, "मैं" की गतिविधि और इसलिए, जानबूझकर। हालांकि, एक दृष्टिकोण या सोचने का तरीका हमेशा इच्छा का उत्पाद नहीं होता है, और शायद पर्यावरण के उदाहरण और प्रभाव के लिए आध्यात्मिक संक्रमण के लिए इसकी मौलिकता अधिक बार होती है। जैसा कि आप जानते हैं, ऐसे लोग हैं जिनका नकारात्मक रवैया वातावरण को जहर देता है, उनका बुरा उदाहरण संक्रामक है, उनकी असहिष्णुता दूसरे लोगों को परेशान करती है। यह ज्ञात है कि एक स्कूल में एक अकेला मनहूस छात्र पूरी कक्षा की भावना को खराब कर सकता है और इसके विपरीत, एक बच्चे का हंसमुख और हानिरहित स्वभाव परिवार के अन्यथा उदास वातावरण को रोशन और प्रबुद्ध कर सकता है, जो निश्चित रूप से संभव है केवल तभी, सकारात्मक उदाहरण के लिए धन्यवाद प्रत्येक व्यक्ति के दृष्टिकोण में सुधार होता है। इस प्रकार, सचेत इच्छा के विरुद्ध रवैया भी निचोड़ा जा सकता है - "बुरी कंपनी अच्छी नैतिकता को खराब

करती है।" यह सामूहिक सुझाव में सबसे स्पष्ट रूप से प्रकट होता है।

या सोचने के तरीके को चेतना पर बाहर से या भीतर से उसी तरह थोपा जा सकता है जैसे एक प्रभाव, और इसलिए उसी भाषाई रूपकों के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता है। पहली नज़र में, रवैया प्रभाव से कहीं अधिक जटिल लगता है। लेकिन करीब से जांच करने पर, यह पता चलता है कि ऐसा नहीं है, क्योंकि अधिकांश दृष्टिकोण होशपूर्वक या अनजाने में आधारित होते हैं, इसलिए बोलने के लिए, एक कहावत पर, जिसमें अक्सर एक कहावत का चरित्र भी होता है। ऐसे प्रतिष्ठान हैं जहां उनके पीछे स्थित कहावत है, जिसमें एक बुद्धिमान कहावत सन्निहित है, महसूस किया जाता है और एक बार में भी दिखाई देता है। अक्सर, एक इंस्टॉलेशन को एक शब्द द्वारा भी चित्रित किया जा सकता है, आमतौर पर आदर्श। अक्सर एक दृष्टिकोण की सर्वोत्कृष्टता न तो एक कहावत है और न ही एक आदर्श, बल्कि एक सम्मानजनक व्यक्तित्व में सन्निहित है जिसका अनुकरण करने की कोशिश की जाती है।

शिक्षा मनोवैज्ञानिक तथ्यों का उपयोग करती है और आदर्शों और आदर्शों के माध्यम से उचित दृष्टिकोण विकसित करने का प्रयास करती है, जिनमें से कई, वास्तव में, जीवन भर निरंतर उच्च विचारों के रूप में सक्रिय रहते हैं। वे आत्माओं जैसे व्यक्ति पर कब्जा कर लेते हैं। अधिक आदिम स्तर पर, यह एक संरक्षक, एक चरवाहे की छवि भी है, जो एक आलंकारिक घटना तक अग्रणी उच्च विचार को मूर्त रूप देता है और उसे मूर्त रूप देता है।

यहां हम "आत्मा" की अवधारणा के करीब पहुंच रहे हैं, जो योको द्वारा शब्द के एनिमिस्टिक रूप से परे है। एक शिक्षाप्रद कहावत या एक बुद्धिमान कहावत, एक नियम के रूप में, कुछ अच्छी तरह से लक्षित शब्दों में समृद्ध अनुभव और व्यक्तियों के प्रयासों का परिणाम, समझ और निष्कर्ष का योग है। यदि, उदाहरण के लिए, हम एक विस्तृत विश्लेषण के लिए इंजील सिद्धांत "है जैसे कि आपने इसे नहीं खाया था" के अधीन, उन सभी अनुभवों और प्रतिक्रियाओं को फिर से बनाने की कोशिश कर रहे हैं जो जीवन के ज्ञान की इस सर्वोत्कृष्टता को जन्म देते हैं, कोई मदद नहीं कर सकता है लेकिन आश्चर्यचकित हो सकता है जीवन के अनुभव की समृद्धि और परिपक्वता जो इसके पीछे निहित है। यह एक "प्रभावशाली" शब्द है जो दिमाग पर शक्तिशाली रूप से अंकित होता है और शायद इसे हमेशा के लिए अपने कब्जे में ले लेता है। वे कहावतें या आदर्श जिनमें सबसे समृद्ध जीवन का अनुभव होता है और सबसे गहरे प्रतिबिंब होते हैं, जिसे हम शब्द के उच्चतम अर्थ में "आत्मा" कहते हैं। यदि इस प्रकार का उच्च विचार असीमित प्रभुत्व प्राप्त करता है, तो हम उसके मार्गदर्शन में जीवन को आध्यात्मिकता या आध्यात्मिक जीवन कहते हैं। उच्च प्रतिनिधित्व का प्रभाव जितना अधिक बिना शर्त और अधिक स्थिर होता है, उतना ही इसमें एक स्वायत्त परिसर का चरित्र होता है, जो "मैं" -चेतना के लिए

एक अडिग तथ्य है।

हालांकि, यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि ये अधिकतम या आदर्श - यहां तक कि सबसे अच्छे लोगों को छोड़कर नहीं - जादुई शब्द नहीं हैं जिनका बिना शर्त प्रभाव पड़ता है ; वे केवल कुछ शर्तों के तहत प्रभुत्व प्राप्त कर सकते हैं, अर्थात् जब भीतर से, विषय से, कुछ उनकी ओर आता है। यह "कुछ" एक प्रभाव है जो प्रस्तावित रूप को जब्त करने के लिए तैयार है। यह केवल आत्मा की प्रतिक्रिया के माध्यम से है कि विचार, या जो हमेशा उच्चतम प्रतिनिधित्व है, एक स्वायत्त परिसर बन सकता है; इसके बिना, विचार चेतना के विवेक के अधीन एक अवधारणा बनकर रह जाएगा, ऊर्जा को केवल बुद्धि की गिनती के टोकन के रूप में परिभाषित करने से रहित होगा। एक विचार, सिर्फ एक बौद्धिक अवधारणा होने के कारण, जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, क्योंकि इस अवस्था में यह केवल एक शब्द से ज्यादा कुछ नहीं है। इसके विपरीत, यदि कोई विचार एक स्वायत्त परिसर का अर्थ प्राप्त करता है, तो यह व्यक्ति के जीवन को आत्मा के माध्यम से प्रभावित करता है।

लेकिन यहां भी किसी चीज के लिए वही स्वायत्त रवैया नहीं अपनाया जा सकता है जो हमारी चेतना के लिए धन्यवाद - हमारी सचेत पसंद है। जब मैंने उससे पहले कहा था, इसके अतिरिक्त यहाँ आत्मा की क्रिया आवश्यक है, तो उसी कारण से मैं कह सकता हूँ कि एक स्वायत्त मनोवृत्ति उत्पन्न करने के लिए चेतना के दूसरी ओर एक अचेतन तत्परता पड़ी होनी चाहिए। मनमानी करना। इसलिए बोलने के लिए कोई आध्यात्मिक नहीं होना चाहता। हम जो कुछ भी चुन सकते हैं और उसके लिए प्रयास कर सकते हैं, वह हमेशा-हमारे विवेक और हमारी चेतना के अधीन होता है और इसलिए कभी भी ऐसा कुछ नहीं बन सकता जो सचेत मनमानी से बचा हो। इस प्रकार, कौन सा सिद्धांत हमारी स्थापना को नियंत्रित करेगा, यह भाग्य की बात है।

बेशक, यह पूछा जा सकता है, क्या ऐसे लोग नहीं हैं जिनका सर्वोच्च सिद्धांत उनकी अपनी स्वतंत्र इच्छा है, ताकि कोई भी रवैया उनके द्वारा जानबूझकर चुना जाए। मुझे नहीं लगता कि कोई भी देवताओं के समान हो सकता है, लेकिन मैं जानता हूँ कि पूर्ण स्वतंत्रता के वीर विचार से ग्रस्त बहुत से लोग इस आदर्श की आकांक्षा रखते हैं। सभी लोग किसी न किसी तरह से आश्रित हैं, कुछ मायनों में वे स्वतंत्र नहीं हैं, क्योंकि वे देवता नहीं हैं।

हमारी चेतना किसी भी तरह से मानवीय समग्रता को व्यक्त नहीं करती है; इसके विपरीत, यह एक हिस्सा है और रहता है। जैसा कि आपको याद है, मेरी प्रस्तुति की शुरुआत में, मैंने इस संभावना की ओर इशारा किया था कि हमारी "मैं" -चेतना हमारे सिस्टम में एकमात्र चेतना नहीं है और शायद, यह अनजाने में एक बड़ी चेतना के अधीन है, जैसे कि सरल परिसर होते हैं "I" कॉम्प्लेक्स के अधीन। "।

शायद मैं नहीं जानता कि हम कैसे साबित कर सकते हैं कि "यांग चेतना" की तुलना में हमारे अंदर एक उच्च या व्यापक चेतना है; लेकिन अगर यह अस्तित्व में है, तो इसे "मैं" -चेतना का उल्लंघन करना चाहिए और स्पष्ट रूप से उल्लंघन करेगा। इससे मेरा क्या मतलब है, मैं एक सरल उदाहरण के साथ समझाना चाहूंगा। आइए मान लें कि हमारे ऑप्टिकल सिस्टम की अपनी चेतना है और इसलिए यह एक प्रकार का व्यक्तित्व है, जिसे हम "दृश्य व्यक्तित्व" कहेंगे। दृश्य व्यक्तित्व के सामने एक सुंदर दृश्य खुलता है, जिसमें वह चिंतन में डूबा रहता है। अचानक, स्पीकर सिस्टम कार सिग्नल सुनता है। यह धारणा ऑप्टिकल सिस्टम के लिए बेहोश रहती है। अब "मैं" से, फिर से ऑप्टिकल सिस्टम के लिए बेहोश, मांसपेशियों के लिए एक आदेश, शरीर को अंतरिक्ष में दूसरी जगह ले जाने के लिए। गति के कारण, वस्तु अचानक दृश्य चेतना से दूर हो जाती है। अगर आंखें सोच सकती हैं, तो शायद वे इस निष्कर्ष पर पहुंचें कि प्रकाश की दुनिया सभी प्रकार के अतुलनीय परेशान करने वाले कारकों के अधीन है।

यदि कोई बड़ी चेतना होती, एक चेतना होती, जो, जैसा कि मैंने पहले कहा था, पूरे व्यक्ति का प्रतिबिंब होगी, तो हमारी चेतना के साथ भी कुछ ऐसा ही होना होगा। क्या वास्तव में ऐसे अतुलनीय उल्लंघन हैं जिनका सामना वसीयत में नहीं किया जा सकता है और जिन्हें जानबूझकर समाप्त नहीं किया जा सकता है? और क्या हममें कहीं कोई ऐसी बात अछूती है जिस पर हमें ऐसे उल्लंघनों के स्रोत के रूप में संदेह हो सकता है? हम पहले प्रश्न का उत्तर तुरंत सकारात्मक में दे सकते हैं। विक्षिप्त व्यक्तित्वों का उल्लेख नहीं करने के लिए, हम आसानी से सामान्य लोगों में किसी अन्य क्षेत्र से स्पष्ट हस्तक्षेप और गड़बड़ी का पता लगा सकते हैं: मूड अचानक बदल सकता है, एक क्षणभंगुर सिरदर्द गायब हो जाता है, एक परिचित का नाम जिसकी कल्पना की जानी चाहिए थी अचानक हमारे सिर से उड़ जाता है, हम हैं दिन भर प्रेतवाधित। माधुर्य, मैं कुछ करना चाहता था, लेकिन इसकी इच्छा बेवजह गायब हो गई, एक व्यक्ति भूल जाता है कि उसे किसी भी मामले में नहीं भुलाया जा सकता है, किसी को सोना अच्छा लगेगा, लेकिन सपना एक मंत्र की तरह है, अंत में वह सो जाता है, लेकिन विज्ञान कल्पना शारीरिक बुरे सपने नींद में खलल डालते हैं, एक व्यक्ति अपनी नाक पर बैठे चश्मे की तलाश में है, पता नहीं एक नया छाता कहाँ छोड़ा गया है। इस सूची को अनिश्चित काल तक आसानी से जारी रखा जा सकता है। हालांकि, अगर हम न्यूरोटिक्स के मनोविज्ञान का अध्ययन करना शुरू करते हैं, तो हम तुरंत सबसे विरोधाभासी गड़बड़ी के बीच घूमना शुरू कर देते हैं। शानदार दर्दनाक लक्षण हैं, और फिर भी एक भी अंग बीमार नहीं है। शरीर के हिस्से में थोड़ी सी भी गड़बड़ी के बिना, तापमान 40 डिग्री तक उछल जाता है, भय की पूरी तरह से अनुचित घुटन की स्थिति, जुनूनी विचार, जिस अर्थहीनता को रोगी स्वयं स्वीकार करता है, चकत्ते जो बिना किसी कारण या चिकित्सा के आते हैं और चले जाते हैं। और यहाँ सूची भी अंतहीन है। बेशक, प्रत्येक

मामले के लिए कम या ज्यादा स्वीकार्य स्पष्टीकरण होता है, हालांकि, अगले मामले के लिए अब उपयुक्त नहीं है। लेकिन उल्लंघनों के अस्तित्व पर अनिश्चितता हावी नहीं हो सकती।

दूसरे प्रश्न के संबंध में, गड़बड़ी की उत्पत्ति के संबंध में, चिकित्सा मनोविज्ञान द्वारा विकसित अचेतन की अवधारणा पर ध्यान देना चाहिए और यह सबूत अचेतन प्रक्रियाओं पर इन गड़बड़ी को आधारित करने के पक्ष में प्रदान करता है। यह एक ऐसी स्थिति की तरह है जहां हमारे दृश्य व्यक्तित्व को पता चलेगा कि स्पष्ट निर्धारण कारकों के अलावा, अदृश्य भी होना चाहिए। यदि सब कुछ झूठ नहीं है, तो अचेतन प्रक्रियाएं बिल्कुल भी अनुचित नहीं लगती हैं। उनके पास स्वचालित और यांत्रिक का बिल्कुल कोई चरित्र नहीं है। यही है, वे किसी भी तरह से सचेत प्रक्रियाओं की सूक्ष्मता से हीन नहीं हैं, इसके अलावा, उनके लिए चेतना की विवेकशीलता से काफी अधिक होना असामान्य नहीं है।

यह संभव है कि जिस प्रकाशिक व्यक्तित्व का हमने आविष्कार किया है, उसमें संदेह होगा कि उसके प्रकाश के जगत् की अचानक गड़बड़ी चेतना से आती है, और हम एक व्यापक चेतना के अस्तित्व पर भी संदेह कर सकते हैं, जिसके पास ऑप्टिकल व्यक्तित्व की तुलना में संदेह के लिए अधिक आधार नहीं हैं। लेकिन चूंकि हम व्यापक चेतना को समझने में असफल होते हैं, क्योंकि हम ऐसा करने में सक्षम नहीं हैं, तो शायद हम उस क्षेत्र को अचेतन बताकर सही काम कर रहे हैं जो हमारे लिए अचेतन है।

प्रस्तुति में इस बिंदु पर, मैं फिर से उच्च स्तर की चेतना के बारे में शुरुआत में उठाए गए प्रश्न पर लौटता हूं, क्योंकि आत्मा की जीवन-निर्धारण ऊर्जा की समस्या जो हमें यहां रूचि देती है, उन प्रक्रियाओं से जुड़ी है जो दूसरे पर झूठ बोलती हैं "मैं" -चेतना के पक्ष में। मैंने पहले टिप्पणी की थी, जैसे कि गुजरते हुए, कि बिना प्रभाव के कोई विचार कभी भी जीवन-निर्धारक मात्रा नहीं बन सकता। इसके अलावा, मैंने सोचने के एक निश्चित तरीके के उद्भव को भाग्य की बात कहा, इसके द्वारा व्यक्त करने के लिए कि हमारी चेतना मनमाने ढंग से एक स्वायत्त परिसर बनाने में सक्षम नहीं है। यदि यह हमारे लिए बंद नहीं है और सचेत इच्छा पर स्पष्ट श्रेष्ठता साबित नहीं करता है, तो यह कभी भी स्वायत्त नहीं होगा। वह, वास्तव में, उन विकारों में से एक है जो मानस के अंधेरे क्षेत्रों से आते हैं। जब मैंने पहले कहा था कि एक मानसिक प्रतिक्रिया को एक विचार की ओर जाना चाहिए, तो मेरा मतलब एक अचेतन तत्परता से था, जो अपने भावात्मक आवेश के कारण उन गहराई तक पहुँचती है जो अब हमारी चेतना के लिए दुर्गम हैं। इस प्रकार, हमारी चेतना का सामान्य ज्ञान तंत्रिका लक्षणों की जड़ों को नष्ट करने में पूरी तरह असमर्थ है; इसके लिए भावनात्मक प्रक्रियाओं की आवश्यकता होती है जो स्वयं सहानुभूति तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करने में सक्षम होती हैं। इसलिए, हम ठीक ही कह सकते हैं कि "मैं" -चेतना को एक बिना शर्त आदेश के रूप में एक तत्काल विचार दिया गया है, और इस तरह का एक सूत्रीकरण व्यापक चेतना की विशेषता के लिए काफी स्वीकार्य है। वह जो उस मूल सिद्धांत

से अवगत है जिसके द्वारा उसे निर्देशित किया जाता है, वह जानता है कि यह सिद्धांत हमारे जीवन पर किस निर्विवाद अधिकार के साथ शासन करता है। लेकिन, एक नियम के रूप में, चेतना अपने भ्रामक लक्ष्यों को प्राप्त करने में बहुत व्यस्त है और इसलिए कभी भी आत्मा की प्रकृति का लेखा-जोखा नहीं देती है जो उसके जीवन को निर्धारित करती है।

एक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से माना जाता है, आत्मा की घटना, किसी भी स्वायत्त परिसर की तरह, खुद को "मैं" -चेतना से ऊपर खड़े होने या अचेतन के इरादे के रूप में प्रकट होती है जो इसमें शामिल हो गई है। जिसे हम आत्मा कहते हैं, उसके सार को सही ढंग से परिभाषित करने के लिए, अचेतन के बजाय, हमें उच्च स्तर की चेतना की बात करनी चाहिए, क्योंकि अवधारणा भावना का उपयोग अपने साथ आत्मा की श्रेष्ठता का विचार लाता है। "मैं" -चेतना पर। इस तरह की श्रेष्ठता को चेतना के विचारों के परिणामस्वरूप आत्मा के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, लेकिन इसकी अभिव्यक्ति की एक अनिवार्य विशेषता है, जैसा कि सभी समय के दस्तावेजों से स्पष्ट है, पवित्र शास्त्र से नीत्शे के जरथुस्त्र तक। मनोवैज्ञानिक रूप से, आत्मा स्वयं को एक व्यक्ति के रूप में प्रकट करती है, कभी-कभी रहस्यमय विशिष्टता के साथ। ईसाई हठधर्मिता में, वह ट्रिनिटी में तीसरा हाइपोस्टैसिस भी है। ये तथ्य इस बात की गवाही देते हैं कि आत्मा हमेशा केवल एक तैयार विचार या कहावत नहीं होती है, बल्कि अपनी सबसे मजबूत और सबसे प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति में यह एक विशेष स्वतंत्र जीवन को भी प्रकट करती है, जिसे कुछ लोगों के जीवन के रूप में महसूस किया जाता है जो हमसे स्वतंत्र हैं। सच है, जब तक आत्मा को एक बोधगम्य सिद्धांत या विचार के माध्यम से व्यक्त या वर्णित किया जा सकता है, तब तक इसे एक स्वतंत्र प्राणी के रूप में महसूस नहीं किया जाएगा। लेकिन अगर उसका विचार या उसका सिद्धांत अमूर्त है, अगर उसके इरादों की उत्पत्ति और उद्देश्य समझ से बाहर है, और फिर भी वे लगातार अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हैं, तो वह निश्चित रूप से एक स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में, अपने तरीके से एक उच्च चेतना के रूप में महसूस किया जाएगा, और उसकी असीम, श्रेष्ठ प्रकृति को अब मानव मन के संदर्भ में व्यक्त नहीं किया जा सकता है। तब हमारी अभिव्यक्ति की क्षमता अन्य साधनों का सहारा लेती है: यह एक प्रतीक बनाता है।

मैं किसी भी तरह से प्रतीक द्वारा एक रूपक या केवल एक संकेत नहीं समझता; बल्कि, इससे मेरा तात्पर्य एक ऐसी छवि से है जो, जहाँ तक संभव हो, आत्मा की अस्पष्ट रूप से मानी जाने वाली प्रकृति की विशेषता होनी चाहिए। प्रतीक में शामिल नहीं है और व्याख्या नहीं करता है, लेकिन स्वयं के माध्यम से एक अलग, समझ से बाहर, केवल अस्पष्ट रूप से ग्रहण किए गए अर्थ को इंगित करता है, जिसे हमारी आधुनिक भाषा के किसी भी शब्द द्वारा संतोषजनक ढंग से व्यक्त नहीं किया जा सकता है। आत्मा, जिसे एक अवधारणा में अनुवादित किया जा सकता है, एक मानसिक जटिल है जो हमारी "मैं"

-चेतना की सीमा के भीतर संचालित होती है। यह कुछ भी उत्पन्न नहीं करता है और जो कुछ हम इसमें डालते हैं उससे ज्यादा कुछ नहीं करता है। आत्मा, जिसके लिए एक प्रतीक की आवश्यकता होती है, एक मानसिक परिसर है जिसमें रचनात्मक मूल तत्व होते हैं, जिसकी संभावनाएं अभी भी असीमित हैं। सबसे परिचित और सबसे अच्छा उदाहरण-ईसाई प्रतीकों की ऐतिहासिक और अच्छी तरह से देखी गई प्रभावकारिता है। यदि, बिना किसी पूर्वाग्रह के, हम दूसरी शताब्दी के सामान्य सामान्य लोगों के मन पर प्रारंभिक ईसाई भावना के प्रभाव पर विचार करते हैं, तो यह केवल आश्चर्य का कारण बन सकता है। लेकिन यह भावना रचनात्मक थी और इस मायने में इसकी तुलना शायद ही किसी और से की जा सकती है। इसलिए, इसमें कुछ भी अजीब नहीं है कि इसे दिव्य के रूप में महसूस किया गया था।

यह स्पष्ट रूप से महसूस की गई श्रेष्ठता है जो आत्मा की अभिव्यक्ति को रहस्योद्घाटन का चरित्र और बिना शर्त अधिकार, एक खतरनाक गुण देता है; क्योंकि जिसे हम शायद उच्च चेतना कह सकते हैं, वह हमारे सचेत मूल्यांकन के अर्थ में हमेशा "उच्च" नहीं होता है, और यह अक्सर हमारे मान्यता प्राप्त आदर्शों के पूर्ण विरोधाभास में होता है। वास्तव में, इस काल्पनिक चेतना को केवल "व्यापक" कहा जा सकता है ताकि इस पूर्वाग्रह से बचा जा सके कि यह हमेशा बौद्धिक या नैतिक रूप से बेहतर होता है। सोचने का तरीका अलग है - हल्का और उदास। इसलिए, कोई इस विचार से बहरा नहीं हो सकता है कि आत्मा भी निरपेक्ष नहीं है, बल्कि कुछ सापेक्ष है, जिसे जीवन के साथ जोड़ने और पुनःपूर्ति की आवश्यकता है। तथ्य यह है कि हमारे पास बहुत सारे उदाहरण हैं जब आत्मा ने एक व्यक्ति को इतना धारण किया कि वह अब जीवित व्यक्ति नहीं था, बल्कि केवल एक आत्मा थी, और जीवन के अर्थ में एक व्यक्ति के लिए अमीर और समृद्ध नहीं था, लेकिन, पर इसके विपरीत, विपरीत जीवन में। अर्थ। मेरा मतलब यह नहीं है कि ईसाई शहीदों की मृत्यु एक मूर्खतापूर्ण और लक्ष्यहीन आत्म-विनाश थी - इसके विपरीत, ऐसी मृत्यु का अर्थ किसी अन्य की तुलना में एक पूर्ण जीवन भी हो सकता है - बल्कि, मेरा मतलब कुछ लोगों की आत्मा है जो पूरी तरह से संप्रदायों के जीवन को नकारें। ऐसी आत्मा क्यों, अगर उसने लोगों को नष्ट कर दिया? कठोर पर्वतीय दृष्टिकोण, निश्चित रूप से, उस समय की उच्चतम नैतिक आवश्यकताओं के अनुरूप था, लेकिन यह जीवन-विनाशकारी था। इसलिए, मेरा मानना है कि हमारे उच्चतम आदर्शों के अनुरूप आत्मा भी जीवन में अपनी सीमा पाती है। बेशक, वह जीवन को दरकिनार नहीं करता है, क्योंकि एक साधारण "मैं" -जीवन, जैसा कि हम अच्छी तरह से जानते हैं, एक अत्यंत अपर्याप्त और असंतोषजनक चीज है। केवल वही जीवन जो आध्यात्मिक है, वास्तव में मूल्यवान है। एक आश्चर्यजनक तथ्य: एक जीवन जो केवल एक "मैं" के आधार पर रहता है, एक नियम के रूप में, न केवल स्वयं व्यक्ति पर, बल्कि उसके आसपास के लोगों पर भी घुटन का प्रभाव

पड़ता है। जीवन के पूर्ण नोट के लिए केवल "मैं" से अधिक की आवश्यकता होती है; इसके लिए एक आत्मा की आवश्यकता है, जो कि एक स्वतंत्र और श्रेष्ठ परिसर है, जो स्पष्ट रूप से उन सभी मानसिक संभावनाओं को जीवन में लाने में सक्षम है, जिन तक "मैं" -चेतना नहीं पहुंच सकती है।

लेकिन जैसे अंधे, अव्यवस्थित जीवन के लिए प्रयास होता है, वैसे ही रचनात्मक श्रेष्ठता प्राप्त करने के लिए आत्मा को अपना पूरा जीवन बलिदान करने का प्रयास होता है। यह प्रयास आत्मा को एक घातक ट्यूमर बनाता है जो मानव जीवन को संवेदनहीन रूप से नष्ट कर देता है।

जीवन आत्मा के सत्य की कसौटी है। एक आत्मा जो किसी व्यक्ति को जीवन की सभी संभावनाओं से वंचित करती है वह एक भटकती हुई आत्मा है - उस व्यक्ति की गलती के बिना नहीं जो स्वयं को त्यागने के लिए स्वतंत्र है या नहीं।

जीवन और आत्मा दो शक्तियां या आवश्यकताएं हैं जिनके बीच मनुष्य खड़ा है। आत्मा अपने जीवन को अर्थ और सबसे बड़े फलने-फूलने की संभावना के साथ समाप्त करता है। आत्मा के लिए जीवन आवश्यक है, इसकी सच्चाई के लिए, यदि यह व्यवहार्य नहीं है, तो इसका कोई मतलब नहीं है।

zlibrary

Your gateway to knowledge and culture. Accessible for everyone.



z-library.sk

z-lib.gs

z-lib.fm

go-to-library.sk



[Official Telegram channel](#)



[Z-Access](#)



<https://wikipedia.org/wiki/Z-Library>